



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

सामान्य परामर्शन कौशल (बीएपीवाई(N)- 221

Basic Counselling Skills (BAPY(N)- 221)

इकाई संख्या	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
खण्ड 1.	परामर्श: एक परिचय (Introduction of Counselling)	
इकाई-1	परामर्श का अर्थ, आवश्यकता, प्रकृति एवं क्षेत्र (Scope) Meaning, Nature and Scope of Counselling)	1-9
इकाई-2	परामर्श में नैतिकता (Ethics in Counselling)	10-20
इकाई-3	परामर्श की विधियाँ: व्यक्तिगत, पारिवारिक, कैरियर, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष (Technique of Counselling; Personal, Family, Career, Directive, Non-Directive)	21-33
खण्ड 2.	परामर्श के प्रकार (Types of Counselling)	
इकाई-4	निर्देशित, गैर निर्देशित एवं चयनात्मक (सारग्राही) परामर्श, बाल संरक्षण और बाल अधिकार परामर्श (Directive, Non-directive and Eclectic Counselling; Child Protection and Child right Counselling)	34-51
इकाई-5	परामर्श- समाधान केंद्रित, एकीकृत, एच आई वी एड्स और लत/चिंता (Counselling Solution- focused, Integrated, HIV/AIDS and Addiction/ Anxiety)	52-70
इकाई-6	परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका और एक अच्छे परामर्शदाता की विशेषताएँ (Role of Counsellors in Guidance & Counselling and Characteristics of a Good Counsellor)	71-86
इकाई-7	परामर्श कार्यक्रम की तर्कसंगतता एवं उद्देश्य (Rationalization and Purpose of Guidance & Counselling Programme)	87-98
खण्ड 3	परामर्श में मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप (Assessment and Intervention in Counselling)	
इकाई 8.	परामर्श के उद्देश्य, परिवार और समूह परामर्श; एक परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका (Aim of Counselling, Family & Group Counselling; Role of teacher as a Counsellor)	99-112
इकाई 9.	साक्षात्कार, व्यक्तिवृत्त विधि और मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Interview, Case History and Psychological Testing)	113-137
इकाई 10	परामर्श में नाटक, कला एवं अन्य चिकित्सा (व्यक्ति और समाधान केंद्रित परामर्श) (Drama, Art and other Therapy (Person and solution centered	138-155

	counselling)	
इकाई 11	मूल्यांकन एवं परामर्श के लिए संज्ञानात्मक, व्यक्ति-केंद्रित एवं वर्णनात्मक दृष्टिकोण (Cognitive, Person Centered and Narrative Approaches to Assessment and Counselling)	156-174
खण्ड 4	परामर्श का आयोजन और भविष्य के दिशा-निर्देश (Organizing Counselling and future guidelines)	
इकाई 12	परामर्श कार्यक्रम:- उद्देश्य आयोजन और विकास (Counselling Programmes:- Purpose, Organization and Development)	175-189
इकाई 13	परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन (Evaluation of Counselling Programme)	190-202
इकाई 14	परामर्श के लिए शिक्षण एवं प्रशिक्षण, भविष्य में शोध हेतु दिशा-निर्देश (Teaching and Training for Counselling, Guidelines for future research)	203-217

इकाई 1. परामर्श का अर्थ, आवश्यकता, प्रकृति एवं क्षेत्र (Meaning, Nature and Scope of Counselling)

इकाई का स्वरूप

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 परामर्श का अर्थ एवं परिभाषायें
 - 1.3.1 परामर्श का अर्थ
 - 1.3.2 परिभाषायें
- 1.4 परामर्श की आवश्यकता और महत्व
 - 1.4.1 मनोवैज्ञानिक कारण
 - 1.4.2 सामाजिक कारण
- 1.5 परामर्श की प्रकृति
- 1.6 परामर्श के क्षेत्र
- 1.7 सारांश
- 1.9 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 1.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
- 1.11 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

बढ़ती हुयी जनसंख्या, विज्ञान और तकनीकी के कारण, नित हो रहे परिवर्तनों के फलस्वरूप व्यक्ति को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं के समाधान के साथ ही वह जीवन में आगे बढ़ता है। समस्या समाधान की इस प्रक्रिया में समुचित मार्गदर्शन प्राप्त करना सदैव से एक स्वाभाविक प्रक्रिया रही, जिसमें वयस्क तथा परिपक्व व्यक्तियों द्वारा अपेक्षाकृत अपरिपक्व व्यक्तियों के लिये निर्देशक की भूमिका निभाई जाती रही है। समस्या समाधान हेतु सहायता प्रदान की दिशा में निर्देशन प्रक्रिया की भूमिका अहम् महत्व रखती है। जिसमें विभिन्न सेवाओं का संगठन किया जाता है। इनमें से परामर्श सेवा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन समय से ही व्यक्ति अथवा छात्र को परामर्श सेवा की आवश्यकता रही है। लेकिन पिछले 30 वर्षों में आये बदलावों के कारण केवल छात्रों को ही नहीं अपितु प्रत्येक व्यक्ति को

अपनी समस्याओं के समाधान के लिये कुशल, योग्य एवं प्रशिक्षित विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ रही है।

परामर्श एक पेशेवर संबंध है जो व्यक्तियों को मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत विकास और निर्णय लेने में स्पष्टता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाता है। इसमें एक प्रशिक्षित परामर्शदाता एक गोपनीय सेटिंग में क्लाइंट की भावनाओं, विचारों, व्यवहारों और लक्ष्यों का पता लगाने में मदद करता है।

परामर्श सहायता प्रदान करने वाली प्रक्रिया है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं की खुशी और समाज के विकास में योगदान करने के लिये अपनी क्षमताओं का आकलन कर, कुशलताओं को विकसित करता है। परामर्श का परम् उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करने में सहायता देना है।

प्रस्तुत इकाई में आप परामर्श का अर्थ क्या है, उसकी प्रकृति कैसी है। वह क्यों आवश्यक है। परामर्श प्रक्रिया के विभिन्न चरण कौन से हैं तथा परामर्श कितने प्रकार का है, उसका अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप अग्रांकित के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे-

1. परामर्श के अर्थ को समझ सकेंगे।
2. परामर्श की आवश्यकता का वर्णन कर सकेंगे।
3. परामर्श की प्रक्रिया का विश्लेषण कर सकेंगे।
4. परामर्श के विभिन्न प्रकारों से अवगत हो सकेंगे।

1.3 परामर्श का अर्थ परिभाषायें

1.3.1 परामर्श का अर्थ

सामान्यतः परामर्श शब्द का अर्थ किसी एक व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु किये गये प्रयासों की तकनीक से लगाया जाता है। यहां हम परामर्श के प्रत्यय और उसके अर्थ को विद्यालयीय परिदर्शन में समझने का प्रयास करेंगे।

‘उतरा’ गाँव की रहने वाली एक मेधावी छात्रा है। जिसने इस वर्ष ही हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की है। आस-पास कहीं भी आगे पढाई जारी रखने के लिये विद्यालय नहीं है। उतरा और उसके माता-पिता को इस बात की चिन्ता है कि उसे कब, कहाँ और कैसे विद्यालय में प्रवेश मिलेगा। स्वयं उतरा भी एक निर्णय नहीं कर पा रही है कि उसे 11वीं में क्या-क्या विषय लेने चाहिये। क्या चुने हुये विषय भावी जीवन के लिये व्यवसाय के चयन में सहायक होंगे या नहीं।

इस प्रकार की कई समस्यायें उतरा के सामने हैं। लगातार उसके मन में योग्यताओं और महत्वाकांक्षाओं के बीच संघर्ष चल रहा है। वर्तमान में व्यावसायिक अनिश्चितता और उतरा की शैक्षिक आकांक्षाओं की पूर्ति करने हेतु विद्यालयों में परामर्श सेवाओं की नितान्त आवश्यकता है।

1.3.2 परिभाषायें

निर्देशन कार्यक्रम के अन्तर्गत सबसे महत्वपूर्ण स्थान परामर्श सेवा का है। परामर्श एक प्रक्रिया है जिसमें एक विशेषज्ञ द्वारा, व्यक्ति को समस्या समाधान हेतु आवश्यक सहायता प्रदान की जाती है। वैबस्टर शब्दकोश (Webster Dictionary) के अनुसार- परामर्श का अर्थ 'सलाह करना परस्पर विचारों का आदान-प्रदान और मिलकर साथ सोचना है'।

कार्ल रोजर्स (Carl Rogers) के अनुसार- 'परामर्श एक निश्चित रूप से स्वीकृत सम्बन्ध है जो परामर्शी को उस मात्रा में स्वयं समझने में सहायता प्रदान करता है, जिससे उसका अधिक से अधिक विकास हो सके'।

क्रुम्बोल्ट्स (Krumholtz) के अनुसार- 'परामर्श ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा सेवार्थी को ऐसे कार्यों में व्यस्त कर दिया जाता है जो उसे समस्या के समाधान तरफ ले जाते हैं'।

"परामर्श एक ऐसी प्रक्रिया है जो तब होती है जब एक ग्राहक और परामर्शदाता कठिनाइयों का पता लगाने के लिए समय निकालते हैं जिसमें ग्राहक की तनावपूर्ण या भावनात्मक भावनाएँ शामिल हो सकती हैं" - ब्रिटिश एसोसिएशन फॉर काउंसलिंग एंड साइकोथेरेपी (BACP, 2020) विद्वानों ने परामर्श की कई परिभाषायें दी हैं जिनके आधार पर संक्षेप में परामर्श-

एक सतत प्रक्रिया है।

परामर्शी (छात्र) और परामर्शदाता के मध्य अन्तक्रियात्मक सम्बन्ध है।

परामर्श, का मुख्य उद्देश्य परामर्शी को सहायता प्रदान करना है।

समायोजन की प्रक्रिया है।

परामर्शन का स्वरूप विकासात्मक, निरोधात्मक तथा उपचारात्मक होता है।

यह एक विशिष्ट तकनीकी सेवा है।

ध्यान रखें परामर्श नहीं है -

निर्देश देना

सलाह देना

आलोचना करना

प्रशंसा करना

विचारों को थोपना

नैतिकता का पाठ

व्याख्यान देना

1.3.3 परामर्श के उद्देश्य

ब्याय एवं पाइन (Boy & Pine) के अनुसार- परामर्श का उद्देश्य है- विद्यार्थी को और परिपक्व बनाने में सहायता प्रदान करना, स्वयं सक्रिय बनने और स्वयं के सही मूल्यांकन कर सकने में सहायता देना है।

लियाना टेलर (Liana Taylor) के अनुसार- ".....परामर्श का उद्देश्य व्यक्ति को परिवर्तित करना नहीं है वरन् उसको उन स्रोतों के उपयोग में सक्षम बनाना है जो उसके पास इस समय जीवन का सामना करने हेतु उपलब्ध है।"

रोलो मे (Rollo May) के अनुसार- "परामर्श का उद्देश्य परामर्श प्रार्थी (परामर्श लेने वाला) का सामाजिक दायित्वों को स्वीकार करने में सहायता देना तथा उसे साहस देना जिससे उसमें हीन भावना का उदय न हो।"

संक्षेप में परामर्श के उद्देश्य निम्न हैं-

व्यक्ति को स्वयं के वास्तविक स्वरूप, को पहचानने में सहायता प्रदान करना।

व्यक्तित्व विकास करना।

आत्म-ज्ञान और आत्म-स्वीकृति का विकास करना।

विभिन्न मानसिक और सांवेगिक समस्याओं से सुरक्षा प्रदान करना।

मानसिक स्वास्थ्य को सामान्य बनाना।

वैयक्तिक क्षमताओं का विकास करना।

समस्याओं का समाधान करना।

निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।

सामाजिक सामंजस्य का विकास करना।

1.4 परामर्श की आवश्यकता और महत्व

बढ़ती हुयी जनसंख्या, विज्ञान और तकनीकी के कारण तेजी से हो रहे परिवर्तनों के फलस्वरूप मानव जीवन कठिन होता जा रहा है और उसे जीवन के हर मोड़ पर परामर्श की आवश्यकता है। रूचियां, अभिक्षमतार्यें, अभिवृत्तियां, व्यक्तित्व, सामाजिक, वृत्तिक और पारिवारिक दशार्यें कभी भी दो व्यक्तियों की एक जैसी नहीं होती हैं। वैयक्तिक विभिन्नताओं, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारणों से वह विभिन्न परिस्थितियों के साथ समायोजन करने में असहाय महसूस करता है। अतः परामर्श सेवा कई कारणों से आवश्यक हो गयी है।

यहां हम निम्न उदाहरणों के माध्यम से परामर्श की आवश्यकता एवं महत्व को जानने का प्रयास करेंगे।

उदाहरण 1-एक व्यक्ति अपने विद्यार्थी जीवन में कुशल खिलाड़ी था। उसने कई बार अपने विद्यालय का नेतृत्व किया। उसके लिये बहुत अच्छा होता कि उसे ऐसी नौकरी मिलती जिसमें वह एक जगह न बैठता और जहाँ प्रेरणा, साहस, धैर्य, नेतृत्व आदि कुशल खिलाड़ी के गुणों की आवश्यकता होती। परन्तु वह वर्तमान में इस तरह की नौकरी नहीं करता है। उसके कार्यस्थल की परिस्थितियां बिल्कुल अलग हैं, जिससे वह अक्सर चिड़चिड़ा हो गया और उसका काम में मन नहीं लगता तथा अनेक व्यक्तिगत समस्याओं से घिर गया है। उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि यह सब जीवन में उचित व्यावसायिक परामर्श न मिलने के कारण हुआ।

उदाहरण 2-एक छात्र स्कूल से भाग जाता है, इधर-उधर अवारागर्दी करता है, नाना प्रकार के अपराधों में पड़ गया है। स्कूल में उसका मन नहीं लगता है। वह घर में झूठ बोलता है। इन सब समस्याओं का कारण यह भी हो सकता है कि उसने पाठ्यक्रम का चुनाव ठीक से नहीं किया है। यहां वर्णित उदाहरणों से स्पष्ट है कि इस प्रकार की समस्याओं का निवारण सही समय पर उचित परामर्श प्राप्त कर किया जा सकता है।

इन्हीं कारणों को ध्यान में रखकर मुख्यतः परामर्शन सेवा की आवश्यकता को दो भागों में बाँटा गया है।

मनोवैज्ञानिक कारण

सामाजिक कारण

1.4.1 मनोवैज्ञानिक कारण

विकास की विभिन्न अवस्थाएँ

जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य विकास की विभिन्न अवस्थाओं-शैशावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और प्रौढ़ावस्था से गुजरता है। प्रत्येक अवस्था में व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास की दशाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं और उसे अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उदाहरणस्वरूप यौन शिक्षा के अभाव, व्यवसायों के चयन, आत्मबोध, शारीरिक बनावट आदि कारणों से वह तनाव में रहता है। ऐसी परिस्थितियों में परामर्शदाता द्वारा आवश्यक सहायता प्रदान की जाती है।

वैयक्तिक विभिन्नताएँ

रंग-रूप, लम्बा, पतला, छोटा, विकलांग, क्रोधी, चिड़चिड़े, विनोदप्रिय, शान्त, बुद्धिलब्धि आदि सभी गुणों के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। अतः एक ही परिस्थितियों में कोई व्यक्ति सरलता से समायोजन कर लेता है तो कोई परेशानी महसूस करता है। अतः वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर परामर्श की आवश्यकता पड़ती है।

1.4.2 सामाजिक कारण

पारिवारिक कारण

संयुक्त परिवार में बच्चों में प्यार, स्नेह एवं सहयोग की भावनाओं का विकास होता था तथा उन पर परिवार के सभी सदस्य ध्यान देते थे। लेकिन बढ़ती हुयी जनसंख्या, शहरीकरण तथा बेरोजगारी के कारण संयुक्त परिवारों में आये विधटन से व्यक्ति कई मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समस्याओं से घिरा है, जिसके कारण उसे परामर्श की आवश्यकता है।

खाली समय का सदुपयोग

कहावत है कि 'खाली दिमाग शैतान का घर होता है', सही है। अतः वर्तमान में खाली समय का कैसे सही ढंग से सदुपयोग किया जाए, जिससे शैक्षिक, व्यावसायिक या आर्थिक रूप से वृद्धि हो।

पाठ्यक्रम विषयों के चयन में

छात्रों को उनकी रुचियों, अभिवृत्तियों एवं बौद्धिक और शारीरिक क्षमताओं के अनुरूप विषयों के चयन में परामर्श की आवश्यकता पड़ती है। ताकि भविष्य में सफल हो सके।

शिक्षा का मूल्य जानने हेतु

शिक्षित व्यक्ति देश के विकास में बहुमूल्य योगदान देता है। अतः समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा के अर्थ से परिचित कराना तथा शिक्षा प्राप्त करने हेतु परामर्श की आवश्यकता होती है।

समायोजन हेतु

परिवार, विद्यालय, कक्षा तथा कार्यालय में व्यक्तियों को अन्य सहपाठियों अथवा सहकर्मियों के साथ समायोजन हेतु परामर्श की आवश्यकता होती है।

व्यावसायिक अवसरों की जानकारी प्रदान करना

परामर्श द्वारा छात्रों को विभिन्न व्यवसायों की जानकारी प्रदान की जाती है तथा उनकी योग्यताओं, क्षमताओं, रुचियों, अभिरूचियों एवं विरक्तियों के अनुरूप विषयों के चयन में सहायता प्रदान कर भावी जीवन के लिये तैयार किया जाता है।

स्वास्थ्य के लिये

छात्रों को अच्छे स्वास्थ्य हेतु परामर्श की आवश्यकता होती है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। मानसिक और शारीरिक रूप से कैसे स्वस्थ रहा जाए। परामर्श सहयोगी होता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. बढ़ती हुयी जनसंख्या, विज्ञान और तकनीकी के कारण तेजी से हो रहे परिवर्तनों के फलस्वरूप मानव जीवन कठिन होता जा रहा है और उसे जीवन के हर मोड़ परकी आवश्यकता है।
2. यौन शिक्षा के अभाव, व्यवसायों के चयन, आत्मबोध, शारीरिक बनावट आदि कारणों से छात्र में रहता है।
3. शिक्षित व्यक्ति देश के में बहुमूल्य योगदान देता है।

1.5 परामर्श की प्रकृति

परामर्श की प्रकृति को निम्नलिखित विशेषताओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

a. सहायता संबंध

परामर्श एक पारस्परिक संबंध पर आधारित है, जहाँ परामर्शदाता क्लाइंट को मुद्दों को स्पष्ट करने और आत्म-समझ हासिल करने में मदद करता है (गिब्सन और मिशेल, 2016)।

b. गोपनीयता

परामर्श का एक मूलभूत पहलू, यह सुनिश्चित करता है कि क्लाइंट द्वारा साझा की गई व्यक्तिगत जानकारी सुरक्षित है, सिवाय उन स्थितियों के जिनमें जीवन को जोखिम हो (कोरी, 2017)।

c. स्वैच्छिक और सहयोगात्मक

क्लाइंट स्वेच्छा से मदद मांगता है, और परामर्शदाता और क्लाइंट दोनों इस प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं (ग्लैडिंग, 2018)।

d. लक्ष्य-उन्मुख

परामर्श व्यक्तियों को विशिष्ट व्यक्तिगत, सामाजिक या मनोवैज्ञानिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करने की दिशा में निर्देशित होता है (नेल्सन-जोन्स, 2014)।

e. नैतिक और व्यावसायिक

चिकित्सक अमेरिकन काउंसलिंग एसोसिएशन (एसीए, 2014) या बीएसीपी द्वारा निर्धारित पेशेवर आचार संहिता का पालन करते हैं।

1.6 परामर्श के क्षेत्र

छात्रों की वैयक्तिक विशेषताओं, आवश्यकताओं और विभिन्न परिस्थितियों के साथ समायोजन से सम्बन्धित समस्याओं के कारण विद्यालय में परामर्श सेवा को कई क्षेत्रों में बांटा गया है तथा उन क्षेत्रों के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का यहाँ पर वर्णन किया जा रहा है।

परामर्श सेवा के क्षेत्र, उनके लक्ष्य एवं उद्देश्य:

क्षेत्र लक्ष्य एवं उद्देश्य

शैक्षिक

वैयक्तिक भिन्नता के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना।

छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को जांचना तथा वांछित स्तर बनाये रखना।

उच्च शिक्षा हेतु प्रेरित करना/शिक्षा जारी रखना।

संगत पाठ्यक्रम का चयन।

कैरियर सूचनायें प्रदान करना।

अधिगम समस्याओं का समाधान।

खाली समय/अवकाश का समुचित उपयोग करना।

छात्रों को अन्य शैक्षिक क्रियाकलापों में प्रतिभाग करने के लिये अवसर प्रदान करना।

छात्रों की हॉबी और रुचिपरक कार्य करने में सहायता प्रदान करना।

खेलों और मनोरंजन के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

सामाजिक

समुचित स्थानापन का महत्वा

सामाजिक मूल्यों और अभिवृत्तियों का विकास।

नेतृत्व क्षमता के गुणों का विकास।

समूह में कार्य करने के कौशलों का विकास।

जनसंख्या वृद्धि की समस्या का समाधान।

	महिलाओं को व्यावसायिक समायोजन करने में सहायता करना मूल अधिकारों और कर्तव्यों के लिये जागरूक करना। राष्ट्रीय एकता और अन्तरराष्ट्रीय भावना का विकास करना। नैतिक मूल्यों का विकास करना।
वैयक्तिक	छात्रों को स्वयं के विकास के लिये उत्तरदायी बनाने हेतु आवश्यकता सहायता प्रदान करना। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का विकास। व्यक्तित्व का विकास करने में सहायक। संवेगात्मक सहजन को बनाए रखना।
व्यावसायिक	व्यवसाय से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्रित करना। छात्रों की योग्यताओं तथा क्षमताओं का मूल्यांकन करना। छात्रों को विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षणों से अवगत कराना। व्यवसाय के चयन में सहायता देना ।
स्वास्थ्य	अच्छे स्वास्थ्य की आवश्यकता की जानकारी प्रदान करना। यौन शिक्षा। शारीरिक क्रियाकलापों हेतु संतुलित कार्य योजना का निर्माण करना। आवश्यक जागरूक करना।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. परामर्श एकप्रक्रिया है
2. समस्या के स्वरूप के आधार पर लक्ष्यों की स्पष्ट रूप से पहचान की जाती है।
जिनको प्राप्त करने के लिये और.....मिलकर कार्य करते हैं
3. समापन के लिये परामर्श प्रक्रिया की सफलता का.....किया जाता है।

1.7 सारांश

परामर्श एक प्रक्रिया है जिसमें परामर्शी की समस्याओं के समाधान करने के लिये परामर्शदाता द्वारा सहायता प्रदान की जाती है जिससे वह स्वयं (परामर्शी) ही अपनी समस्याओं के समाधान करने के योग्य बन जाय।

परामर्श का उद्देश्य छात्र में आत्मबोध का विकास करना है।

परामर्श विकासशील तथा तकनीकी प्रक्रिया है।

परामर्श सुसंगठित सेवा है।

परामर्श त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है, जिसमें परामर्शदाता, परामर्शी तथा परामर्श के उद्देश्य निहित होते हैं।

विभिन्न कार्यों के आधार परामर्श की प्रक्रिया को मुख्यतः छः चरणों में बाँटा गया है।
वर्तमान समय में किसी भी व्यक्ति अथवा छात्र को व्यक्तिगत, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक, समस्याओं के कारण परामर्श सेवा की आवश्यकता रहती है।

1.9 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

इकाई 1.4 के प्रश्न संख्या 1 का उत्तर - परामर्श

इकाई 1.4 के प्रश्न संख्या 2 का उत्तर - तनाव

इकाई 1.4 के प्रश्न संख्या 3 का उत्तर - विकास

इकाई 1.6 के प्रश्न संख्या 1 का उत्तर - त्रिध्रुवीय

इकाई 1.6 के प्रश्न संख्या 2 का उत्तर – परामर्शदाता , परामर्शी

इकाई 1.6 के प्रश्न संख्या 3 का उत्तर – मूल्यांकन

1.10 संदर्भग्रंथ सूची

- पशरिचा, पी० (1977), गाइडेन्स एण्ड कान्सिलिंग इन इण्डिया, एन०सी० ई० आर० टी०, न्यू दिल्ली।
- अग्रवाल जे० सी० (1989), 'एजुकेशनल वुकेशनल गाइडेन्स एण्ड कान्सिलिंग', दुआबा हाउस, दिल्ली।
- क्रो डी० एण्ड क्रो (लेटेस्ट् एडीसन), 'एन इंट्रोडक्शन टू गाइडेन्स', यूरोशिया पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली।
- आनन्द एस० पी० (1994), ए वी सी ऑफ गाइडेन्स इन एडुकेशन, यूनीक पब्लिसर, पठानकोट, ।
- बेंगले, एम० टी० (1984), गाइडेन्स एण्ड कान्सिलिंग, सेठ पब्लिसर, बम्बई।

1.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. "परामर्श का सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन की सभी अवस्थाओं और विभिन्न क्षेत्रों से है"। इस कथन की विवेचना कीजिए।
2. विद्यालय में छात्रों के लिये परामर्श क्यों आवश्यक है और इसके महत्व की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के किसी छात्र के शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर परामर्श की प्रक्रिया का आयोजन कर मूल्यांकन कीजिए।

इकाई 2. परामर्श में नैतिकता (Ethics in Counselling)

इकाई संरचना

- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 उद्देश्य
- 2.3 परामर्श में नैतिकता
- 2.4 परामर्श में नैतिकता या नीति संहिता
- 2.5 नैतिक सिद्धांत या नीति संहिता
- 2.6 परामर्शदाता के लिए सुझाव
- 2.7 सारांश
- 2.8 संदर्भ ग्रन्थ
- 2.9 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी से मार्गदर्शन एवं परामर्श एवं प्राप्त करता ही रहता है। बाल्यकाल में ही माँ द्वारा बच्चे को उसका हाथ पकड़कर चलना सिखाना, बड़े होने पर उसे नैतिक कहानियाँ सुनाना तथा उसी के द्वारा अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने के लिए प्रेरित करना भी तो एक प्रकार का मार्गदर्शन एवं परामर्श ही है। एक सहायता परक पेशे और चिकित्सीय संबंध के रूप में परामर्श अब लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है और बड़े पैमाने पर समाज और दुनिया में सक्रिय भाग ले रहा है। दुनिया के अधिकांश हिस्सों में पेशेवर परामर्शदाताओं के लिए आयु सीमा नहीं है, हालाँकि अनुभवों पर सीमाएँ हैं। पेशेवर परामर्शदाताओं को पेशेवर आचार संहिता और नीतियों द्वारा निर्देशित किया जाता है। ये आचार संहिता स्कूल परामर्शदाता और सामाजिक कार्यकर्ताओं के क्षेत्रों को स्पष्ट करने में मदद करती है लेकिन कुछ समानताएँ भी हैं क्योंकि दोनों निर्धारित दिशानिर्देशों का उपयोग कर रहे हैं।

परामर्श आम तौर पर किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत, शैक्षिक, कैरियर या मनोवैज्ञानिक समस्याओं को हल करने के लिए पेशेवर सहायता प्रदान करने का एक क्षेत्र है। परामर्श एक पेशा है और प्रकृति तथा चरित्र में मानवतावादी है। मार्गदर्शन और परामर्श में कठोर और पेशेवर प्रशिक्षण व्यक्ति को बच्चे के समग्र विकास को सुनिश्चित करने में मदद करता है। परामर्श प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य बच्चे को जीवन में अच्छी तरह से समायोजित करने में मदद करना है। इसलिए यह आवश्यक है कि परामर्शदाता के पास कुछ गुण, विशेषताएँ और

नैतिक/नैतिकता हो ताकि उसे इस विशाल कार्य को पूरा करने के लिए सशक्त बनाया जा सके।

स्कूल परामर्शदाताओं को सामाजिक मानदंडों समाज के मूल्य और संरचना के संबंध में छात्रों के व्यवहार को संशोधित करने, मदद करने करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। किसी पेशेवर परामर्शदाता की आचार संहिता और परामर्श की नीतियों का उनके पेशेवर क्षेत्र या कार्यस्थल में उत्पन्न होने वाली समस्याएंके निष्पादन पर प्रभाव पड़ना चाहिए।

2.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप –

- परामर्श में नैतिकता के महत्त्व को समझ पायेंगे।
- परामर्शदाताओं के नैतिक सिद्धांतों से परिचित हो पायेंगे।

परामर्श

परामर्श किसी व्यक्ति की आयु या अवस्था से बंधा हुआ नहीं होता है। यह जीवन पर्यन्त विद्यमान रहने वाली आवश्यकता है। परामर्श बच्चों, किशोर, प्रौढ़ों एवं वृद्धों सभी के लिए महत्वपूर्ण होता है। परामर्श की प्रक्रिया के अन्तर्गत परामर्श प्राप्त करने वाले व्यक्ति में निहित विशेषता को तथा शैक्षिक, व्यावसायिक एवं वैयक्तिक क्षेत्र से सम्बन्धित जानकारी का समन्वित अध्ययन आवश्यक है। परामर्श का महत्त्व मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होता है। शिक्षा, व्यक्तिगत समस्याएँ, व्यावसायिक, स्वास्थ्य, विकास की प्रक्रिया एवं चिकित्सा के ये विभिन्न क्षेत्र हैं, इन सभी क्षेत्रों में परामर्श एवं परामर्श की विशेष आवश्यकता होती है।

2.3 परामर्श में नैतिकता

परामर्श में नैतिकता को समझाने से पूर्व आवश्यक है कि नैतिकता के बारे में अवगत हों।

नैतिकता: नैतिकता मानव समाज का एक अभिन्न अंग है। हमारे द्वारा किए गए किसी भी निर्णय में नैतिक आधार होता है। मानव समाज में नैतिकता की भूमिका वांछित या अवांछित क्या है यह निर्धारित करने में निहित है। इस प्रकार, नैतिकता एक दार्शनिक अवधारणा है जिसमें सही और गलत की अवधारणाओं को व्यवस्थित करना, बचाव करना और अनुशंसा करना शामिल है। यह जरूरी है कि मनुष्यों के नैतिक व्यवहार को शामिल किया जाए। नैतिकता अच्छे और बुरे, सही और गलत की चिंताओं से संबंधित है।

हालाँकि, "नैतिकता" शब्द के कई अर्थ हैं। आमतौर पर, नैतिकता कुछ निश्चित, आकांक्षी नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों के एक समूह को संदर्भित करती है जिनका उद्देश्य नैतिक आचरण का मार्गदर्शन करना है। एक "नैतिकता संहिता" नैतिक "सिद्धांतों" और "मूल्यों" के अनुप्रयोग का प्रतिनिधित्व करती है, जो नैतिक कार्रवाई के लिए ठोस, लागू करने योग्य "मानक" व्यवहार में निर्धारित हैं। नैतिकता अच्छे जीवन की ओर एक चिंता से प्रेरित होती है। अगर कुछ मानव जाति के अच्छे होने की दिशा में ड्राइव के विपरीत है, जिसे नैतिक रूप में नहीं देखा जा सकता है। यही

कारण है कि, कई दार्शनिकों ने अच्छे जीवन की अवधारणा के लिए महान मूल्य का श्रेय दिया है। नैतिकता को नैतिक सिद्धांतों के रूप में परिभाषित किया गया है जो अच्छे और बुरे और सही और गलत के मानदंडों का वर्णन करता है। फ्रांसीसी लेखक, अल्बर्ट कैमस के अनुसार, “नैतिकता के बिना एक व्यक्ति इस दुनिया पर जंगली जानवर है”।

नैतिकता को लागू करना हमारे दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यहां कुछ कदम दिए गए हैं जो आपको अपने जीवन में नैतिकता लागू करने में मदद कर सकते हैं: अपनी नैतिकता को पहचानें, अन्य लोगों के प्रति नैतिक आचरण करें, सामान्य अनैतिक आचरण से बचें, अपने करियर में नैतिकता लागू करें प्रगति से जुड़ें।

2.4 परामर्श में नैतिकता या नीति संहिता

प्रश्न यह है कि परामर्श में नैतिकता का नीति संहिता की आवश्यकता क्यों है? इसके विभिन्न कारण हो सकते हैं-

१. प्रथम कारण यह है कि नीति संहिता के बना समान रुचियों वाले लोगों के एक समूह को संव्यवसायिक संगठन नहीं माना जा सकता है।
२. Allen (1986) ने कहा, नीतिशास्त्र केवल सामान्य स्तर पर किसी संगठन के संव्यवसायीकरण में ही सहायता नहीं देता है, बल्कि इसे इस प्रकार तैयार किया जाता है कि एक संव्यवसायिक स्तर पर सदस्यों के व्यावसायिक व्यवहार हेतु कुछ दिशा निर्देशों को भी प्रदान किया जाये।

Levenson (1986), Pops & Vetter (1992) तथा Swanson (1983) के अनुसार अनैतिक व्यवहार निम्न प्रकार से हो सकते हैं-

1. गोपनीयता का अतिक्रमण।
2. अपनी संव्यवसायिक दक्षता से आगे बढ़ना।
3. उपेक्षित प्रैक्टिस।
4. विशेषता न होने पर भी उसका दावा करना।
5. किसी सेवार्थी पर अपने मूल्यों को अधिरोपित करना।
6. किसी सेवार्थी में निर्भरता उत्पन्न करना।
7. किसी सेवार्थी के साथ लैंगिक क्रियाकलाप।
8. परस्पर विरोधी हित, जैसे दोहरे सम्बन्ध।
9. विवादास्पद वित्तीय प्रबन्ध, जैसे अधिक शुल्क लेना।
10. अनुचित विज्ञापन।

Von Hoose and Kotler (1985) ने नीति संहिता के अस्तित्व के लिए तीन कारण बताये हैं-

1. नैतिक मानक संव्यवसाय की सरकार से रक्षा करते हैं। इससे संव्यवसाय को विधान द्वारा नियंत्रित होने के स्थान पर स्वयं से ही विनियमित होने तथा सफलतापूर्वक कार्य करने की अनुमति प्राप्त हो जाती है।
2. नैतिक मानक आन्तरिक असहमति तथा कलह को नियंत्रित करने में सहायता करते हैं, इस प्रकार से संव्यवसाय के अन्दर स्थिरता को प्रोन्नत करते हैं।
3. नैतिक मानक प्रैक्टिशनर की जनता से सुरक्षा करते हैं। विशेष रूप से अनाचार से सम्बन्धित वादों में इनके द्वारा बचाव करने में सहायता मिलती है। यदि संव्यवसायिक का व्यवहार नैतिक मार्ग-निर्देशों के अनुसार ही है तो ऐसे व्यवहार को स्वीकृत मानकों के साथ अनुपालन करने वाला माना जाता है।

एक बार यदि हम यह समझ लें कि अनैतिक व्यवहार क्या है तो फिर नीति संहिता के महत्व को समझना सरल हो जाता है। अनैतिक व्यवहार के बहुत रूप हो सकते हैं, परन्तु सर्वाधिक प्रचलित रूप ही यहाँ दिया जा रहा है।

सामान्यतः नैतिक मानक आदर्शात्मक होते हैं तथा इसलिए अधिकतर दशाओं में दिये गये मानकों का पालन करना व्यवहारिक रूप से असम्भव हो जाता है क्योंकि ये मानक विशिष्ट प्रश्नों का उत्तर नहीं देते हैं।

उदाहरण के लिए, जब एक सेवार्थी एक प्रत्यक्ष प्रश्न पूछता है-“क्या आपके विचार में मैं बहुत बुद्धिमान हूँ?” इसका उत्तर यह है कि, “सेवार्थी औसत बुद्धि वाला है।”

इस प्रकार की किसी परिस्थिति में परामर्शदाताओं को एक अपरिहार्य चयन का सामना करना पड़ता है तथा उन्हें सच्चाई बतानी होती है। परन्तु सेवार्थी इस सच्चाई का सामना करने के लिए तैयार नहीं भी हो सकता है। इसीलिए किसी नैतिक मानकों की संहिता में बहुत सी विशिष्ट सीमाएँ हो सकती हैं।

Beyner (1971), Talbault (1988) ने कुछ सीमाओं का वर्णन इस प्रकार किया है-

1. कुछ समस्याएँ ऐसी होती हैं जिनका समाधान नीति संहिता के द्वारा नहीं हो सकता है।
2. नीति संहिता में सुधार लाने में कठिनाइयाँ हैं।
3. संहिता द्वारा निरूपित मानकों में द्वन्द्व भी हो सकता है।
4. कुछ ऐसे कानूनी मुद्दे हो सकते हैं जो संहिता में सम्मिलित न हों।
5. नीति संहिताएँ ऐतिहासिक अभिलेख होते हैं। अतः एक समय में जो व्यवहारिक रूप से स्वीकार्य हैं, बाद के समय या आने वाले समय में उसे अनैतिक माना जा सकता है।
6. कभी-कभी नैतिक तथा कानूनी संहिता के मध्य द्वन्द्व की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।
7. नीति संहिता में अन्तः सांस्कृतिक मुद्दे सम्मिलित नहीं होते हैं।
8. नीति संहिता के अन्दर हर एक सम्भव परिस्थिति सम्मिलित नहीं होती है।

9. किसी नैतिक विवाद में सम्मिलित समस्त पक्षों के हित को एक साथ क्रमबद्ध रूप से लाना बहुधा कठिन होता है।

10. नवीन परिस्थिति में क्या किया जाये? परामर्शदाता को यह निर्णय लेने में सहायता देने हेतु नीति संहिताएँ अग्रोन्मुखी अभिलेख नहीं होते हैं।

यद्यपि नीति संहिताएँ लाभदायक तथा अनेकों प्रकार से सफल भी हैं, परन्तु निश्चित रूप से उनकी कुछ सीमाएँ भी हैं। परामर्शदों को ज्ञात होना चाहिए कि इन अभिलेखों पर विचार करते समय वे सदैव उस दिशा-निर्देश को प्राप्त नहीं कर सकेंगे, जिसकी उनको आवश्यकता होती है। परामर्शद सेवार्थियों को परामर्श प्रदान करते समय भ्रमित हो जाते हैं क्योंकि विभिन्न संगठनों ने अलग-अलग नीति संहिताएँ दी हैं। इसलिए परामर्शदों को परामर्श देते समय सही एवं गलत के बारे में स्वयं ही निर्णय लेना चाहिए तथा एक आदर्शक नीति संहिता को भी ध्यान में रखना चाहिए।

क्या नैतिक रूप से कार्य करने हेतु किसी प्रकार के दिशा-परामर्श हैं? इसका उत्तर हाँ है। परन्तु भारतवर्ष में नहीं है। अतः कोई भी भारतीय विद्वान इसका उत्तर हाँ में नहीं दे सकता है। अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न दिशा-निर्देश प्रस्तुत किये तथा इनमें से अधिकतर लगभग समान हैं।

Stadler (1986) ने परामर्श की गतिविधियों तथा परामर्शदाताओं द्वारा लिए जाने वाले नैतिक निर्णयों से सम्बन्धित चार नैतिक सिद्धान्त दिये हैं-

1. परोपकार-इसका तात्पर्य है, दूसरों की भलाई के लिए कार्य करना तथा उसे हानि से बचाना।
2. अपकार न करना-इसका तात्पर्य है दूसरों को कष्ट या दुःख न पहुँचाना।
3. स्वायत्तता-इसका तात्पर्य है चयन की स्वतंत्रता तथा आत्मनिर्धारण का सम्मान करना।
4. न्याय-निष्पक्षता।

अतः उपर्युक्त सिद्धान्तों में सम्पूर्ण परामर्श प्रक्रिया के दौरान परामर्शदाता को सतर्कता के साथ निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। तत्पश्चात् यह ज्ञात किया जाता है कि परामर्शद ने नैतिक रूप से जिम्मेदारी के साथ कार्य किया है या नहीं।

इसके लिए **Swanson (1983)** ने चार दिशा-निर्देश बताये हैं, जो निम्नलिखित हैं-

1. व्यक्तिगत संव्यवसायिक ईमानदारी बनाये रखना।
2. सेवार्थियों के सर्वोत्तम हित में कार्य करना।
3. व्यक्तिगत लाभ का विचार लाये बिना कार्य करना।
4. इस कथन को न्यायोचित ठहराना कि किसी कार्य के प्रति दी गयी वर्तमान संव्यवसायिक स्थिति में लिया गया निर्णय ही सबसे उत्तम है।

परन्तु उपर्युक्त कथनों में से अन्तिम कथन समस्या उत्पन्न करने वाला है क्योंकि यदि वर्तमान स्थिति नैतिक नहीं है, तब उसके पश्चात् क्या होगा?

नैतिक व्यवहार उस विन्यास में जिसमें किसी व्यक्ति तथा उसके सहयोगियों द्वारा किया जाता है, के अन्दर प्रचलित मनोविकृतियों द्वारा अत्यधिक प्रभावित होता है। नैतिकता को परामर्शदाता के निर्णय पर छोड़ देना चाहिए, क्योंकि परामर्शदाता ही सबसे अच्छा निर्णायक है। यदि परामर्शदाता संव्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित हो तथा उसके अन्दर परामर्श हेतु आवश्यक समस्त गुण हों तो वह एक अच्छा निर्णायक हो सकता है।

2.5 नैतिक सिद्धांत या नीति संहिता

संहिता में चार समग्र नैतिक सिद्धांत शामिल हैं जिनमें कई विशिष्ट नैतिक मानक हैं।

1. **सेवार्थी के अधिकारों और गरिमा का सम्मान** पहला है जो कहता है, मार्गदर्शन परामर्शदाताओं को सभी सेवार्थियों के मौलिक अधिकार, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य, गरिमा और मूल्य का सम्मान और प्रचार करना चाहिए। परामर्शदाताओं को कानून के अनुरूप सेवार्थियों की निजता, गोपनीयता, आत्मनिर्णय और स्वायत्तता के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। जहां तक संभव हो, वे यह सुनिश्चित करना कि सेवार्थी उनके द्वारा प्रस्तावित किसी भी पेशेवर कार्रवाई को समझें और उस पर सहमति दें। इसका मतलब है कि वे सेवार्थियों के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आदर सम्मान रखते हैं और लिंग, यौन अभिविन्यास, विकलांगता, धर्म, जाति, नस्ल, उम्र, राष्ट्रीय मूल, राजनीति और सामाजिक वर्ग जैसे कारकों के कारण अपनी सेवाओं को कम नहीं होने देते हैं। परीक्षण और मूल्यांकन की प्रकृति, उद्देश्य और परिणाम की भाषा में पूर्ण व्याख्या प्राप्त करने के क्लाइंट के अधिकारों का हमेशा सम्मान करें। उन निर्णयों में दूसरों से यथासंभव पूर्ण और सक्रिय भागीदारी की मांग करें जो उन्हें प्रभावित करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि सेवार्थियों के साथ परामर्श उचित वैयक्तिक और गोपनीयता की स्थिति में किया जाता है।

2. योग्यता-

- मार्गदर्शन परामर्शदाता अपने पेशेवर कौशल को अद्यतन बनाए रखते हैं।
- उन्हें अपनी विशेषज्ञता की सीमाओं को पहचानना चाहिए और स्वयं की देखभाल में संलग्न होना चाहिए और अपने काम के मानक को बनाए रखने के लिए समर्थन और पर्यवेक्षण लेना चाहिए।
- मार्गदर्शन परामर्शदाताओं को केवल वही सेवाएँ प्रदान करनी चाहिए जिनके लिए वे शिक्षित हैं, जिसमें उनका प्रशिक्षण और अनुभव हैं।
- मार्गदर्शन परामर्शदाता प्रशिक्षण और अनुभव की सीमाओं को पहचानें और ध्यान रखें कि उससे अधिक न हो।
- जहां एक परामर्शदाता सक्षम महसूस नहीं करता है, वहां पर क्लाइंट को पेशे के भीतर या बाहर दूसरों को उचित तरीके से रेफर कर दें।

- मार्गदर्शन परामर्शदाता अपने कर्तव्यों के निर्वाहन कारण तनावग्रस्त या असुरक्षित महसूस होने पर सहकर्मियों से समर्थन या पर्यवेक्षण लें।
- मार्गदर्शन पेशेवरों को अपनी शिक्षा, प्रशिक्षण, लाइसेंस, प्रमाणन, प्राप्त परामर्श, पर्यवेक्षित अनुभव, या अन्य प्रासंगिक पेशेवर अनुभव के सीमाओं के भीतर ही सेवाएँ प्रदान करनी चाहिए और प्रतिनिधित्व करना चाहिए जिनमें वे स्वयं को सक्षम मानते हैं।

3. उत्तरदायित्व-

- मार्गदर्शन परामर्शदाताओं को सेवार्थियों, सहकर्मियों और जिस समुदाय में वे काम करते हैं और रहते हैं, उसके प्रति भरोसेमंद, प्रतिष्ठित और जवाबदेह तरीके से कार्य करने की अपनी पेशेवर जिम्मेदारी के बारे में पता होना चाहिए।
- उन्हें नुकसान करने से बचना चाहिए और अपने पेशेवर कार्यों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए और नैतिक दुविधाओं को हल करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
- पेशेवर गतिविधियों में इस तरह व्यवहार करें कि सेवार्थियों के हितों को नुकसान न पहुंचे या पेशे में जनता का विश्वास कम न हो।
- ऐसी किसी भी गतिविधि को समाप्त करें जो स्पष्ट रूप से सेवार्थी के लिए फायदेमंद होने की बजाय हानिकारक हो।
- नैतिक मुद्दों की जांच और नैतिक दुविधाओं को हल करने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया का उपयोग करने का प्रयास करें।

4. सत्यनिष्ठा

- सत्यनिष्ठा का दृढ़ पालन करना और उसे बढ़ावा देना चाहिए। वे खुद का सटीक रूप से प्रस्तुत करना चाहिए अन्य ईमानदारी, स्पष्टता और निष्पक्षता के साथ पेश अना चाहिए। वे हितों के टकराव से सक्रिय रूप से निपटते हैं, दूसरों का शोषण करने से बचते हैं और सहकर्मियों के साथ अनुचित व्यवहार के प्रति सचेत रहते हैं।
- परामर्शदाता को अनुबंध के तहत अग्रिम रूप से सहमत शुल्क या महत्वपूर्ण उपहारों से अधिक शुल्क या लाभ की मांग को स्वीकार नहीं करना चाहिए, इस प्रकार की स्वीकृति निष्पक्षता को कमजोर कर देती है।
- सेवार्थियों का भावनात्मक, यौन, आर्थिक या किसी अन्य तरीके से शोषण न करें और जब कोई सहकर्मि अनैतिक कार्य करता हुआ दिखाई दे तो कार्रवाई करें, परामर्श में आचार संहिता का प्रभावी उपयोग करें।

पेशेवरों को निम्नलिखित के प्रति सचेत रहना चाहिए या होना चाहिए:

- केस का सामना करते समय विश्वसनीयता, सेवा वितरण में ईमानदारी, व्यावसायिकता बनाए रखना, सहानुभूति, पारदर्शिता, सक्षमता मामलों को संभालना, सेवा वितरण में सेवार्थी के आत्मनिर्णय या सहमति का सम्मान करना, मामले के प्रबंधन में उनकी पेशेवर स्थिति और सीमा सीमा के बारे में जागरूकता और सेवार्थियों की गरिमा और मूल्य का सम्मान करना चाहिए।
- परामर्शदाता के व्यक्तिगत नैतिक गुण सेवार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। महत्वपूर्ण माने जाने वाले कई व्यक्तिगत गुणों में सेवाओं का प्रावधान एक नैतिक या नैतिक घटक होता है और इसलिए उन्हें गुण या अच्छे व्यक्तिगत गुण माना जाता है। व्यक्तिगत प्रतिबद्धता से विकसित होते हैं।
- यह उचित नहीं है कि सभी पेशेवर परामर्शदाताओं में ये गुण हों, क्योंकि यह आधारभूत बात है कि ये व्यक्तिगत गुण संबंधित व्यक्ति में गहराई से निहित हैं। ये शायद किसी बाहरी प्राधिकारी की आवश्यकता के बजाय व्यक्तिगत प्रतिबद्धता से विकसित हुए हैं।
- परामर्शदाताओं को जिन व्यक्तित्व गुणों की आकांक्षा करने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित करना चाहिए, वे हैं - दूसरे की भावनाओं, अनुभव या अनुभव की समझ को संप्रेषित करने की क्षमता जैसा कि व्यक्ति उस क्षण महसूस करता है जब आप उसके साथ होते हैं - यही सहानुभूति है।
- ईमानदारी बीच में निरंतरता के प्रति एक व्यक्तिगत प्रतिबद्धता है। क्या दावा किया जाता है और क्या किया जाता है।

Stadler (1986) ने परामर्श की गतिविधियों तथा परामर्शदाताओं द्वारा लिए जाने वाले नैतिक निर्णयों से सम्बन्धित चार नैतिक सिद्धान्त दिये हैं-

- परोपकार-इसका तात्पर्य है, दूसरों की भलाई के लिए कार्य करना तथा उसे हानि से बचाना।
- अपकार न करना-इसका तात्पर्य है दूसरों को कष्ट या दुःख न पहुँचाना।
- स्वायत्तता-इसका तात्पर्य है चयन की स्वतंत्रता तथा आत्मनिर्धारण का सम्मान करना।
- न्याय-निष्पक्षता।
- अतः उपर्युक्त सिद्धान्तों में सम्पूर्ण परामर्श प्रक्रिया के दौरान परामर्शदाता को सतर्कता के साथ निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। तत्पश्चात् यह ज्ञात किया जाता है कि परामर्शदाता ने नैतिक रूप से जिम्मेदारी के साथ कार्य किया है या नहीं।

2.6 परामर्शदाता के लिए सुझाव

- सेवार्थियों को उन सभी चर्चाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें जो उन्हें प्रभावित करती हैं।
- सेवार्थियों को सेवा वितरण में आत्मनिर्णय के लिए प्रोत्साहित करें।
- सेवार्थी मामले या सेवार्थी मामले से संबंधित किसी भी सामग्री या दस्तावेज़ से निपटने में गोपनीयता बनाए रखें।
- सेवार्थियों के व्यवहार को देखें और पहचानें, उन पर ध्यान दें और उन्हें स्वीकार करें।
- सेवार्थियों की भावनाओं और कथनों को स्पष्ट और सारांशित करें।
- सेवार्थियों के साथ व्यवहार करते समय हमेशा खुले और बंद प्रश्नों का उपयोग करें/पूछें।
- जहां आवश्यक हो, सेवार्थी को जानकारी प्रदान करें और एक रोल मॉडल बनें।
- सेवार्थियों के साथ सहानुभूति रखें और नकारात्मक व्यवहार का सामना करें।
- सेवार्थियों को जो कुछ उन्होंने सीखा है उसे एकीकृत करने और लागू करने में मदद करें और अनुभव को अर्थ दें।
- समूह अभ्यास के नैतिक और व्यावसायिक मानकों का प्रदर्शन करें।
- सेवार्थियों को काम पर रखें और उन्हें पूरा करने में मदद करें और उनके लक्ष्य साझा करें।
- पेशेवरों को सेवार्थियों को सेवा वितरण के दौरान और उसके बाद पेशेवर मूल्यांकन का पालन करना चाहिए।
- पेशेवरों को सेवार्थियों को अपनी सेवा प्रदान करने में वित्त की मांग करनी चाहिए या किसी कदाचार या धोखाधड़ी वाले तरीकों में शामिल नहीं होना चाहिए या नहीं करना चाहिए।

2.7 सारांश

पेशेवर परामर्शदाता की यह एकमात्र जिम्मेदारी है कि उन्हें परामर्शदाताओं के अनैतिक व्यवहार से बचाया जाए, क्योंकि अधिकांश सेवार्थी असुरक्षित महसूस करते हैं, इसलिए इसलिए प्रमाणित परामर्शदाताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए परामर्श नैतिकता के बारे में जागरूक होना महत्वपूर्ण है। यह लाभार्थी के आत्म-जागरूकता और आत्म-प्रकटीकरण में मदद करता है प्रत्येक पेशेवर परामर्शदाता की बहुत सारी जिम्मेदारियाँ होती हैं जनता के विश्वास को बनाए रखें इसलिए परामर्श पद्धतियों का नैतिक अनुप्रयोग, उच्च स्तर का प्रशिक्षण हासिल करना चाहिए, पेशे की प्रकृति के अनुसार, परामर्शदाताओं से कार्य करने की अपेक्षा की जाती है सेवार्थी की रुचि के अनुसार सर्वोत्तम तरीके से उसके लक्ष्यों को बढ़ावा दें, सेवार्थी के अधिकारों की रक्षा करें और

किसी को नुकसान या हानि न पहुँचाएँ, सेवा प्रदान करते समय पेशेवर सीमा बनाए रखना। संहिता में चार समग्र नैतिक सिद्धांत शामिल हैं जिनमें कई विशिष्ट नैतिक मानक हैं। सेवार्थी के अधिकारों और गरिमा का सम्मान पहला है जो कहता है, मार्गदर्शन परामर्शदाताओं को सभी सेवार्थियों के मौलिक अधिकार, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य, गरिमा और मूल्य का सम्मान और प्रचार करना चाहिए। परामर्शदाताओं को कानून के अनुरूप सेवार्थियों की निजता, गोपनीयता, आत्मनिर्णय और स्वायत्तता के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। जहां तक संभव हो, वे यह सुनिश्चित करना कि सेवार्थी उनके द्वारा प्रस्तावित किसी भी पेशेवर कार्रवाई को समझें और उस पर सहमति दें। इसका मतलब है कि वे सेवार्थियों के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आदर सम्मान रखते हैं और लिंग, यौन अभिविन्यास, विकलांगता, धर्म, जाति, नस्ल, उम्र, राष्ट्रीय मूल, राजनीति और सामाजिक वर्ग जैसे कारकों के कारण अपनी सेवाओं को कम नहीं होने देते हैं। परीक्षण और मूल्यांकन की प्रकृति, उद्देश्य और परिणाम की भाषा में पूर्ण व्याख्या प्राप्त करने के क्लाइंट के अधिकारों का हमेशा सम्मान करें। उन निर्णयों में दूसरों से यथासंभव पूर्ण और सक्रिय भागीदारी की मांग करें जो उन्हें प्रभावित करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि सेवार्थियों के साथ परामर्श उचित वैयक्तिक और गोपनीयता की स्थिति में किया जाता है।

परामर्शदाता को सेवार्थियों को उन सभी चर्चाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें जो उन्हें प्रभावित करती हैं। सेवार्थियों को सेवा वितरण में आत्मनिर्णय के लिए प्रोत्साहित करें। सेवार्थी मामले या सेवार्थी मामले से संबंधित किसी भी सामग्री या दस्तावेज से निपटने में गोपनीयता बनाए रखें। सेवार्थियों के व्यवहार को देखें और पहचानें, उन पर ध्यान दें और उन्हें स्वीकार करें। सेवार्थियों की भावनाओं और कथनों को स्पष्ट और सारांशित करें। सेवार्थियों के साथ व्यवहार करते समय हमेशा खुले और बंद प्रश्नों का उपयोग करें/पूछें। सेवार्थियों के साथ सहानुभूति रखें और नकारात्मक व्यवहार का सामना करें। सेवार्थियों को जो कुछ उन्होंने सीखा है उसे एकीकृत करने और लागू करने में मदद करें और अनुभव को अर्थ दें।

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. जायसवाल सीताराम (शिक्षा में परामर्श एवं परामर्श), अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा (2009)
2. सिंह रामपाल राधावल्लभ उपाध्याय, (शैक्षिक एवं व्यवसायिक परामर्श) विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
3. Agrawal Rashmi, (Education Vocational Guidance and counseling) Shipra Publications, Delhi- 11092 (2006)
4. Albert Camus (Stanford Encyclopedia of Philosophy)
5. International Journal of Scientific Engineering and Science Volume 4, Issue 8, pp. 14-18, 2020. ISSN (Online): 2456-7361

6. Literature and Ethics: History, memory, and cultural identity in albert camus's le premier homme on jstor
7. Martha Fanta Mansaray, Eric KombaFoyoh Mani Eastern Polytechnic, Private Mail Bag, Kenema, The Importance of Ethical Codes in Guidance and Counseling Profession. *International Journal of Scientific Engineering and Science* Volume 4, Issue 8, pp. 14-18, 2020. ISSN (Online): 2456-7361
8. Sharma R.A., (Career information in career guidance) Surya Publication Meerut (2004)
9. Sharma R.A (Guidance and counseling) Vinay Rakheia c/o R. Lall book Depot Meerut (2010)
10. Suri S.P., T.S. Sodhi, (Guidance and counseling), Bawa Publication Patiala (1997)
11. <https://doi.org/10.1002/j.1556-6676.1986.tb01124.x>

2.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. "नैतिकता" शब्द का क्या अर्थ है?
2. हम नैतिकता को कैसे लागू कर सकते हैं?
3. परामर्श में नैतिकता का महत्त्व बताइए।

इकाई-3 परामर्श की विधियाँ: व्यक्तिगत, पारिवारिक, कैरियर, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष (Technique of Counselling; Personal, Family, Career, Directive, Non-Directive)

इकाई संरचना

- 3.1 प्रस्तावना
- 3.2 उद्देश्य
- 3.3 व्यक्तिगत परामर्श
- 3.4 समूह परामर्श और व्यक्तिगत परामर्श का तुलनात्मक अध्ययन
- 3.5 करियर परामर्श
- 3.6 पारिवारिक परामर्श
- 3.7 निर्देशित परामर्श-केन्द्रित परामर्श
- 3.8 अनिर्देशीय परामर्श
- 3.9 सारांश
- 3.10 शब्दावली
- 3.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 3.12 संदर्भ ग्रन्थ
- 3.13 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

पूर्व की इकाइयों में आप परामर्श की अवधारणा को भली भाँति समझ चुके हैं। अब आपको यह समझना है कि सहायता प्रदान करने की यह प्रक्रिया दो विधियों द्वारा सम्पन्न की जाती है। प्रथम विधि में, उपबोधक केवल एक व्यक्ति को सहायता प्रदान करने के लिए परामर्श कार्य सम्पन्न करता है, इसे व्यक्तिगत परामर्श कहते हैं। द्वितीय विधि में, उपबोधक परामर्श की क्रिया को समूह में सम्पन्न करता है जिसे समूह परामर्श कहते हैं। वास्तव में परामर्श की क्रिया को सदैव से व्यक्ति या उपबोधक केन्द्रित माना जाता रहा है। परन्तु बदलते समय व परिस्थितियों के अनुसार परामर्श में भी नवीन तरीकों का प्रयोग बढ़ा है। इस क्रम में परामर्श के क्षेत्र में समूह परामर्श की अवधारणा का प्रयोग भी बढ़ चला है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप व्यक्तिगत परामर्श पारिवारिक, कैरियर, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष के महत्त्व को समझा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप

1. व्यक्तिगत परामर्श की अवधारणा, आवश्यकता एवं उद्देश्यों को व्यक्त कर सकेंगे।
2. पारिवारिक, कैरियर परामर्श की आवश्यकता एवं उद्देश्यों को व्यक्त कर सकेंगे।
3. प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष परामर्श को समझ सकेंगे।

3.3 व्यक्तिगत परामर्श

परामर्श की प्रक्रिया दो प्रकार की विधियों के द्वारा सम्पन्न की जाती है जिन्हे हम क्रमशः समूह परामर्श एवं व्यक्तिगत परामर्श कहते हैं। परामर्श की अवधारणा को हम भली-भाँति समझ चुके हैं। हम यह भी समझ चुके हैं कि कुछ परिस्थितियों में समूह परामर्श का उपयोग फलदायी नहीं होता है। बहुत सारी परिस्थितियाँ ऐसी होती है जहाँ परामर्श व्यक्तिगत रूप में देना अधिक श्रेयस्कर है। व्यक्ति की कुछ समस्याएँ अत्यंत निजी होती है। इसके समाधान के लिए उसे व्यक्तिगत परामर्श की आवश्यकता होती है। जैसे- शारीरिक स्वास्थ्य रोग (संबंधी) की समस्याएँ, मानसिक एवं सांवेगिक समस्याएँ (चिंता, अवसाद, क्रोध आदि संबंधी), घरेलु समस्याएँ (घरेलु हिंसा, पति-पत्नी के बीच मतभेद) वैवाहिक व पूर्व वैवाहिक समस्याएँ, आर्थिक व व्यावसायिक समस्याएँ, शिक्षा संबंधी समस्याएँ (विषय चयन, समायोजन आदि से संबंधी समस्याएँ) आदि।

व्यक्तिगत परामर्श का अर्थ

व्यक्तिगत परामर्श वह प्रक्रिया है जिसमें उपबोधक उपबोध्य के साथ आमने-सामने बैठकर अधिक सक्रिय, प्रत्यक्ष, वैयक्तिक व फोकस होकर उपबोध्य में स्वयं को पहचानने व स्वयं को समझने की शक्ति व समायोजन करने की क्षमता के विकास में सहायता प्रदान करता है।

यह एक परस्पर साझी प्रक्रिया है जिसमें उपबोधक व इच्छित उपबोध्य के बीच अनूठा व गोपनीय सहायतार्थ संबंध का विकास होता है। व्यक्तिगत परामर्श की प्रक्रिया में परामर्श की शुरूआत उपबोधक सहायता की ईच्छा रखने वाले उपबोध्य की समस्याओं को समझने व उन समस्याओं का उपबोध्य के जीवन पर पड़ने वाले भावी प्रभावों को पहचानने से करता है। तत्पश्चात् उपबोधक व उपबोध्य मिलकर लक्ष्यों को निर्धारित करते हैं तथा लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्य प्रारम्भ करते हैं। इस क्रम में उपबोधक प्रयासरत रहता है कि उपबोध्य में अंतःदृष्टि का विकास हो और वह अपनी समस्या का समाधान स्वयं बंहतर ढंग से कर सके। परामर्श सत्र समाप्त होने के कुछ समय पश्चात् उपबोधक अनुगमन द्वारा परामर्श की सफलता व असफलता की भी जाँच करता है।

3.3.1 व्यक्तिगत परामर्श के उद्देश्य

- i. व्यक्ति में आत्म समझ का विकास करना।

- ii. व्यक्ति में समायोजन की योग्यता का विकास करना।
- iii. व्यक्तिगत जीवन से संबंधित समस्याओं के सन्दर्भ में निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।
- iv. व्यक्ति को अपने अंतःद्वन्दों व नकारात्मक भावनाओं पर विजय प्राप्त करने हेतु तैयार करना।
- v. व्यक्ति में सकारात्मक मनोवृत्ति का विकास करना।
- vi. व्यक्ति में समाजिक, सांवेगिक व आध्यात्मिक लब्धि का विकास करना।

3.3.2 व्यक्तिगत परामर्श के चरण

1. उपबोधक सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण करता है, जिसमें उपबोध्य अपने विचारों को खुलकर अभिव्यक्त करता है।
2. उपबोधक समस्याजन्य दशाओं को परिभाषित करता है।
उपबोध्य को अपने विचारों व भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु स्वतंत्रता प्रदान करता है।
4. उपबोधक उपबोध्य के सकारात्मक व नकारात्मक भावों का वर्गीकरण करता है।
5. उपबोधक तकनीकों की सहायता से आँकड़ों का संग्रहण करता है।
6. आँकड़ों के संग्रहण के पश्चात् उपबोधक संबंधित समस्याओं का अध्ययन एवं मूल्यांकन करता है।
7. अध्ययन एवं मूल्यांकन के उपरान्त वास्तविक समस्या के समाधान की दिशा में व्यक्ति को परामर्श प्रदान करता है।
8. उपबोध्य में अन्तःदृष्टि का विकास होता है।
9. उपबोधक अनुगमन का कार्य करता है।

3.3.3 व्यक्तिगत परामर्श के लाभ एवं सीमाएँ

लाभ-

1. इसमें उपबोधक को सिर्फ एक उपबोध्य को सहायता देनी होती है अतः उपबोध्य, अधिक सरोकार व अवधान प्राप्त करता है।
2. उपबोधक को सूचना एकत्रित करने में आसानी होता है तथा वह अधिक प्रभावी ढंग से उपबोध्य को सहायता प्रदान करता है।
3. अधिक संवेदनशील समस्याओं का समाधान हो पाता है।
4. उपबोध्य के विचारों एवं व्यवहारों को उपबोधक अधिक बहतर ढंग से समझ पाता है।
5. इसमें उपबोध्य अपने पसंद के अनुसार अपनी जीवन में परिवर्तन लाने की शक्ति को प्राप्त कर पाता है।

6. इसमें उपबोधक को अनुगमन एक उपबोध्य का करना होता है तो यह कार्य भी उपबोधक अधिक आसानी से व प्रभावपूर्ण ढंग से करता है।

सीमाएँ-

1. व्यक्तिगत परामर्श में उपबोध्य बहुत सारे अधिगम अनुभवों को प्राप्त करने से वंचित रह जाता है जो वह समूह में वह बेहतर ढंग से करता है।
2. इसमें उपबोध्य में बहुत सारे सामाजिक कौशलों एवं मानवीय गुणों का विकास नहीं हो पाता है।
3. इसमें संसाधन, समय व शक्ति अधिक व्यय होता है।
4. इसमें उपबोध्य अंतर्व्यक्तिगत संबंधों को बेहतर ढंग से नहीं समझ पाते हैं।

3.4 समूह परामर्श और व्यक्तिगत परामर्श का तुलनात्मक अध्ययन

समूह परामर्श व व्यक्तिगत परामर्श का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि दोनों प्रकार के परामर्श के मध्य कुछ समानताएँ व कुछ विभिन्नताएँ हैं।

समानताएँ

1. दोनों का उद्देश्य समान है अर्थात् उपबोध्य में स्वयं को पहचानने व स्वयं को समझने की क्षमता का विकास करना है।
2. दोनों में परामर्श हेतु बहुत सारे समान तकनीकों का प्रयोग होता है।
दोनों में गोपनीयता को बनाए रखने की नैतिक जिम्मेवारी होती है।
4. दोनों प्रकार के परामर्श में उपबोधक को सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण करना आवश्यक होता है।
5. दोनों माध्यमों से परामर्श प्राप्त करने वाले व्यक्ति सामान्य हैं जो तनाव, मायूसी, कुंठा, उत्तेजना या अन्य विकासपरक समस्याओं से संघर्ष करने की चेष्टा कर रहे हैं।

विभिन्नताएँ

1. व्यक्तिगत परामर्श एकैकी तथा मुखाभिमुख संबंध को दर्शाता है जिसमें उपबोधक केवल एक उपबोध्य के साथ आमने-सामने बैठकर परामर्श देता है। लेकिन समूह परामर्श में उपबोधक उपबोध्यों की बड़ी संख्या को एक साथ परामर्श प्रदान करता है।
2. व्यक्तिगत परामर्श में उपबोध्य सिर्फ सहायता की प्राप्ति करता है जबकि समूह परामर्श में उपबोध्य दूसरों को भी सहायता भी प्रदान करता है।
3. समूह परामर्श में समूह गतिकी के सिद्धांत के काफी अनुप्रयोग शामिल होते हैं, जबकि व्यक्तिगत परामर्श में उपबोधक और उपबोध्य का आपसी संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

4. व्यक्तिगत परामर्श में अधिक संवेदनशील निजी व गोपनीय समस्याओं को रखा जाता है जबकि समूह में प्रकृति में कम संवेदनशील व सामाजिक रूप से स्वीकृत योग्य समस्याओं को रखा जाता है।

इस प्रकार हम स्पष्ट रूप से समझ चुके हैं कि व्यक्तिगत परामर्श व समूह परामर्श की अपने-अपने लाभ व अपनी-अपनी सीमाएँ हैं। दोनों में कुछ समानताएँ व कुछ विभिन्नताएँ हैं। यह कहना अत्यंत कठिन है कि दोनों में अधिक श्रेष्ठ व उपयोगी कौन है। वास्तव में दोनों के अपने-अपने महत्त्व हैं। कुछ परिस्थितियों में समूह परामर्श अधिक प्रभावशाली होता है वहीं कुछ परिस्थितियों में व्यक्तिगत परामर्श अधिक उपयोगी माना जाता है।

अभ्यास प्रश्न

1. व्यक्तिगत परामर्श के क्या-क्या उद्देश्य हैं?
2. व्यक्तिगत परामर्श व समूह परामर्श के मध्य दो अंतर बताइए?
3. व्यक्तिगत परामर्श में एक उपबोधक उपबोधक के साथ आमने-सामने बैठकर परामर्श प्राप्त करता है।(सत्य/असत्य)
4. व्यक्तिगत परामर्श में धन व समय की बचत होती है। (सत्य/असत्य)

3.5 करियर परामर्श

मनोविज्ञान कहता है कि हर व्यक्ति बचपन से ही रुचि दिखाने लगता है, जब बच्चा तर्क करने की क्षमता विकसित करता है। माता-पिता को सबसे पहले अपने बच्चे की रुचि को देखने और पहचानने के लिए समय निकालना चाहिए और फिर उसके अनुसार बच्चे को मार्गदर्शन, अवसर और संपर्क प्रदान करना चाहिए। यह समस्या तभी हल हो सकती है जब माता-पिता, शिक्षक, छात्र, सरकार और शैक्षिक संगठन एक ही पृष्ठ पर हों, बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि छात्र फेसबुक के पेज पर हैं, शिक्षक लिंकडइन पर हैं और माता-पिता ट्वीट कर रहे हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो रातों-रात पूरी हो सकती है, शैक्षिक संस्थानों और नियोक्ता संगठनों को छात्रों के पेशेवर करियर विकास और परामर्श को बढ़ावा देने के लिए अवसर प्रदान करके नियमित आधार पर सहयोग करना चाहिए। शैक्षिक क्षेत्र और जॉब मार्केट के बीच मजबूत संबंध किसी भी देश के विकास और किसी भी व्यक्ति की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

- कैरियर परामर्श, व्यक्तियों को उनके कैरियर पथ के बारे में उचित निर्णय लेने में मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है, जिसमें आमतौर पर मूल्यांकन, विकल्पों की खोज और कौशल विकास शामिल होता है।
- करियर काउंसलिंग व्यक्तियों को उनकी रुचियों, कौशलों, मूल्यों और व्यक्तित्व लक्षणों के साथ संरेखित उपयुक्त करियर विकल्पों की पहचान करने में मदद करती है।

- करियर काउंसलर शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार विकल्पों पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, आत्म-जागरूकता को सुविधाजनक बनाते हैं और व्यक्तियों को अच्छी तरह से उचित निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं।
- इसका अंतिम लक्ष्य व्यक्तियों को उनकी अनूठी शक्तियों और प्राथमिकताओं की गहन समझ के आधार पर संतुष्टिदायक और पुरस्कृत करियर को आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाना है।
- कैरियर परामर्श व्यक्तियों को निम्नलिखित में सहायता करता है
- आत्म-अन्वेषण
- निर्णय लेने में सहायता
- लक्ष्य निर्धारण
- व्यावसायिक विकास
- कार्य-जीवन संतुलन

3.5.1 करियर काउंसलिंग के शामिल चरण

मूल्यांकन: व्यक्ति की रुचियों, कौशलों, मूल्यों, व्यक्तित्व लक्षणों और करियर लक्ष्यों का मूल्यांकन करता है।

अन्वेषण: विभिन्न करियर विकल्पों पर शोध और अन्वेषण करता है जो व्यक्ति के मूल्यांकन परिणामों के साथ संरेखित होते हैं।

लक्ष्य निर्धारण: अन्वेषण और मूल्यांकन के आधार पर सहयोगात्मक रूप से प्राप्त करने योग्य अल्पकालिक और दीर्घकालिक करियर लक्ष्य निर्धारित करता है।

कार्य योजना: स्थापित करियर लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण, नेटवर्किंग और कौशल विकास सहित आवश्यक कदमों की रूपरेखा तैयार करते हुए एक स्पष्ट योजना विकसित करता है।

अनुवर्ती और मूल्यांकन: व्यक्ति की प्रगति की निरंतर निगरानी करता है, निरंतर सहायता प्रदान करता है, और आवश्यकतानुसार लक्ष्यों और रणनीतियों का पुनर्मूल्यांकन करता है।

कुल मिलाकर, करियर काउंसलिंग व्यक्तियों को आत्मविश्वास और संतुष्टिदायक करियर विकल्प बनाने के लिए सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे कार्यस्थल में अधिक सफलता और संतुष्टि मिलती है।

3.6 पारिवारिक परामर्श

पारिवारिक परामर्श चिकित्सा का एक अनुशासन है जो पारिवारिक जीवन में आने वाली चुनौतियों और जटिलताओं के समाधान खोजने पर केंद्रित है। इसे विवाह और पारिवारिक चिकित्सा भी कहा जाता है, चिकित्सक परिवार के सदस्यों के बीच संचार को बेहतर बनाने और परिवार के सदस्यों के बीच गतिशीलता को समायोजित करने का काम करते हैं जिसके परिणामस्वरूप शिथिलता हो सकती है। "पारिवारिक परामर्श" और "पारिवारिक चिकित्सा" शब्दों का अक्सर समानार्थक रूप से उपयोग किया जाता है, लेकिन यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पारिवारिक परामर्श, परामर्श के अन्य रूपों की तरह, कुछ चिकित्सकों द्वारा पारिवारिक चिकित्सा की तुलना में अवधि में कम और अधिक समाधान-केंद्रित के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

1. पारिवारिक परामर्श एक प्रकार का उपचार है जिसे उन मुद्दों में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो विशेष रूप से परिवारों के मानसिक स्वास्थ्य और कामकाज को प्रभावित करते हैं। यह व्यक्तिगत पारिवारिक सदस्यों को मजबूत संबंध बनाने, संचार में सुधार करने और पारिवारिक प्रणाली के भीतर संघर्षों को प्रबंधित करने में मदद कर सकता है। परिवार के सदस्यों के एक-दूसरे के साथ बातचीत और संबंध बनाने के तरीके में सुधार करके, पारिवारिक चिकित्सा करीबी रिश्तों में बदलाव को बढ़ावा दे सकती है। पारिवारिक चिकित्सा के कुछ प्राथमिक लक्ष्य बेहतर घरेलू माहौल बनाना, पारिवारिक मुद्दों को हल करना और उन अनूठी समस्याओं को समझना है जिनका सामना एक परिवार कर सकता है।

3.6.1 पारिवारिक परामर्श के लक्ष्य

परिवारों के पास पारिवारिक परामर्श में जाने के कई कारण हो सकते हैं, जैसे, आक्रामक माता-पिता, बच्चे का दुर्व्यवहार, परिवार के किसी सदस्य में मादक द्रव्यों का सेवन, घरेलू हिंसा, आदि। अक्सर, परिवार किसी ऐसे व्यक्तिगत पारिवारिक सदस्य के उपचार के लिए परामर्शदाता के पास जाते हैं, जो पहचाना गया रोगी होता है।

पहचाना गये रोगी को परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा परिवार में परेशानी पैदा करने वाला माना जाता है। वह व्यक्ति है जिसके लक्षण हैं और जिसके लिए परिवार ने परामर्श मांगा है।

माता-पिता आमतौर पर बच्चे को परिवार में समस्याओं का कारण मानते हैं और उसे परामर्श के लिए लाते हैं। बच्चे को बलि का बकरा बनाया जाता है और परिवार में समस्या का स्रोत माना जाता है ताकि अन्य सदस्यों या पूरे परिवार में मौजूद समस्याओं का सामना न करना पड़े।

हालांकि, परामर्शदाता पहचाना गये रोगी को अकेले समस्या के स्रोत के रूप में नहीं देखता है और पूरे परिवार के साथ एक प्रणाली के रूप में काम करता है।

पारिवारिक परामर्श के विशिष्ट लक्ष्य इस प्रकार हैं:

- पारिवारिक संरचना और परिवार के भीतर गतिशीलता को समझना, जैसे परिवार के सदस्यों के बीच भेदभाव, सामंजस्य और अनुकूलनशीलता।
 - पहचाने गए रोगी के रूप में परिवार के सदस्य द्वारा निभाई गई भूमिका के कारणों की जांच करना।
 - परिवार के सदस्यों के बीच बातचीत का अध्ययन करना और नकारात्मक और अनुत्पादक पैटर्न की पहचान करना।
 - परिवार के भीतर उपसमूहों की पहचान करना और पारिवारिक संघर्षों को पैदा करने और बनाए रखने में ऐसे समूहों द्वारा निभाई गई भूमिकाओं की पहचान करना।
 - परिवार द्वारा नियोजित समस्या-समाधान व्यवहार और रणनीतियों की पहचान करना।
 - पहचाने गए रोगी की भूमिका, दोषपूर्ण संचार पैटर्न और अनुचित समस्या-समाधान व्यवहार के बारे में परिवार के सदस्यों के बीच समझ को सुविधाजनक बनाना।
- परिवार की भलाई और बेहतर कामकाज को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी संचार और उचित समस्या-समाधान तकनीकों के बारे में जानकारी प्रदान करना।
- नियोजित अनुवर्ती कार्रवाई के साथ परामर्श को समाप्त करना ताकि परामर्श में प्राप्त लक्ष्यों को बनाए रखा जा सके

3.6.2 पारिवारिक परामर्श के लाभ

चूँकि उपचार का यह रूप संचार को संबोधित करता है, इसलिए परिवार के सदस्य सीख सकते हैं कि अपने विचारों और ज़रूरतों को बेहतर तरीके से कैसे साझा किया जाए और संघर्षों को इस तरह से हल किया जाए जिससे रिश्तों को नुकसान पहुँचाने की संभावना कम हो।

इस प्रकार की चिकित्सा इस बात पर भी ध्यान केंद्रित करती है कि परिवार के सदस्य किसी एक परिवार के सदस्य की कठिनाइयों को कैसे संबोधित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि परिवार के किसी सदस्य को मानसिक स्वास्थ्य की समस्या है, तो पारिवारिक चिकित्सा कुछ स्थितियों को बदलने में मदद कर सकती है जो कभी-कभी समस्या में योगदान करती हैं।

जब व्यक्ति मानसिक बीमारी से प्रभावित होते हैं, तो परिवार के सदस्यों को कभी-कभी इस बात की जानकारी नहीं होती कि कैसे मदद की जाए। नतीजतन, वे ऐसे व्यवहार में संलग्न हो सकते हैं जो बीमारी के पहलुओं को बनाए रखते हैं या और भी खराब कर देते हैं।

3.6.3 तकनीकें

पारिवारिक परामर्श में उपयोग की जाने वाली तकनीकें आमतौर पर चिकित्सक के सैद्धांतिक अभिविन्यास और परिवार की विशिष्ट आवश्यकताओं जैसे कारकों पर निर्भर करती हैं। कुछ विधियाँ जिनका उपयोग किया जा सकता है, उनमें शामिल हैं:

व्यवहार तकनीकें: ये विधियाँ अक्सर परिवार के सदस्यों को विशिष्ट समस्याओं का समाधान करने में मदद करने के लिए कौशल प्रशिक्षण और मनो-शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती हैं। उदाहरण के लिए, परिवार के सदस्यों को संचार समस्याओं को हल करने में मदद करने के लिए मॉडलिंग और रोल-प्लेइंग का उपयोग किया जा सकता है।

मनोगतिक तकनीकें: इन विधियों में यह आकलन करना शामिल है कि प्रत्येक परिवार का सदस्य अपनी समस्याओं की व्याख्या कैसे करता है और उनका जवाब कैसे देता है। चिकित्सक परिवार के साथ मिलकर नई भावनात्मक अंतर्दृष्टि विकसित करता है और अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया करने के नए तरीकों का पता लगाता है।

संरचनात्मक तकनीकें: ये विधियाँ परिवार के सदस्यों को परिवार के भीतर सीमाओं और शक्ति गतिशीलता के साथ मदद करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। ऐसी तकनीकें परिवारों को नई सीमाएँ बनाने और दिनचर्या स्थापित करने में मदद कर सकती हैं जो परिवार के कामकाज को बेहतर बनाती हैं।

पारिवारिक परामर्श में उपयोग की जाने वाली तकनीकें भावनात्मक जागरूकता में सुधार करने, परिवार के भीतर बड़े बदलावों में सहायता करने, लोगों को उन चीजों को स्वीकार करने में मदद करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं जिन्हें वे नियंत्रित नहीं कर सकते हैं, और संचार और सहयोग में सुधार करते हैं।

3.7 निर्देशित परामर्श-केन्द्रित परामर्श (Directive or Counselor Centered)

इसमें परामर्शदाता का अधिक महत्व होता है, वह प्रार्थी की समस्याओं के समाधान के लिए उपाय बताता है और निर्देश देता है। निर्देशित परामर्श परामर्शदाता के इर्दगिर्द घूमता है। वह मैत्री और सहायता द्वारा मधुर-सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करता है। इसमें परामर्शदाता बहुत

सक्रिय होता है और वह अपने स्वयं के दृष्टिकोण और भावनाएं स्वतंत्र रूप से प्रकट करता रहता है। वह प्रार्थी की अभिव्यक्तियों का मूल्यांकन करता है। इसमें परामर्शदाता प्रमापीकृत प्रश्नों की एक शृंखला (Series of Standardized Questions) बनाता है तथा प्रत्येक का संक्षिप्त उत्तर तय करता है। वह प्रार्थी का अभिव्यक्ति और भावनाओं का व्यक्त करने की आज्ञा नहीं देता। एक विशेषज्ञ के तौर पर वह नेतृत्व करता है, मूल्यांकन करता है और सुझाव या सलाह देता है।

इस इस विचारधारा के मुख्य प्रवर्तक मिनिसोटा विश्वविद्यालय के ई0जी0 विलियमसन है। इसमें परामर्शदाता प्रार्थी की समस्या को हल करने का मुख्य उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेता है। इस प्रक्रिया में परामर्शदाता समस्या की खोज और उसे परिभाषित करता है, निदान (Diagnose) करता है तथा समस्या के बारे में बताता है।

निर्देशित परामर्श(Directive Counselling) का विस्तृत अध्ययन आप इकाई 4 में कर सकेंगे।

3.8 अनिर्देशीय परामर्श (Non-Directive Counselling)

अनिर्देशीय परामर्श या प्रार्थी-केन्द्रित परामर्श के प्रमुख कार्ल रोजर्स है। इस सिद्धान्त का विकास बहुत वर्षों में हुआ है। इसलिए इस प्रकार के परामर्श में कई क्षेत्र शामिल होते रहे जैसे- व्यक्तित्व का विकास, सामूहिक नेतृत्व, शिक्षा एवं अधिगम, सृजनात्मकता, पारस्परिक सम्बन्ध इस सिद्धान्त के अनुसार स्वयं व्यक्ति में इतनी क्षमता होती है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान खुद कर सकता है। परामर्शदाता का कार्य तो केवल इतना ही है कि ऐसा वातावरण प्रदान करें जिसमें प्रार्थी वृद्धि के लिए स्वतन्त्र होता है ताकि वह जैसा चाहे वैसा ही व्यक्ति बन सके। इसमें व्यावसायिक और शैक्षिक समस्याओं के संवेगात्मक पक्षों को महत्व दिया जाता है।

प्रार्थी-केन्द्रित परामर्श प्रार्थी के इर्द-गिर्द घूमता है। इसमें प्रार्थी को वार्तालाप करने के लिए और स्वयं के दृष्टिकोणों, भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसमें परामर्शदाता अधिकतर निष्क्रिय ही रहता है। वह प्रार्थी के विचारों, भावों, भावनाओं और अभिव्यक्तियों में हस्तक्षेप नहीं डालता। परामर्शदाता प्रार्थी की बातचीत करने में पूरी सहायता करता है। शुरुआत में परामर्शदाता प्रार्थी के साथ मधुर संबंध बनाने का प्रयास करता है और धीरे-धीरे विश्वास की भावना उत्पन्न करने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार के परामर्श में मुक्त अन्त प्रश्न ही पूछे जाते हैं। ये प्रश्न पूर्ण रूप से रचित नहीं होते। परामर्शदाता का अधिकतर सम्बन्ध प्रार्थी द्वारा बताई गई संवेगात्मक विषय-वस्तु के साथ से होता है। इसमें प्रार्थी अपनी भावनाओं एवं विचारों को खुलकर प्रकट करता है।

जब प्रार्थी उत्तर दे रहा होता है। उसे इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वह अपनी बात खुलकर बताये। जिस प्रकार के प्रश्न परामर्शदाता प्रार्थी से पूछता है उससे प्रार्थी यह महसूस करने लगता है कि परामर्शदाता वास्तव में ही व्यक्तिगत तौर पर प्रार्थी के विचारों का सम्मान करता है और साक्षात्कारकर्ता प्रार्थी में रूचि ले रहा है। अनिर्देशीय परामर्श में प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार दिया जाता है कि वह खुलकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करे। इस प्रकार के परामर्श में निदानात्मक यंत्रों का या तो बहुत ही कम प्रयोग होता है या फिर होता ही नहीं। इसमें प्रार्थी अपनी बुद्धि या समझ से कार्य कर सकता है। इसमें बौद्धिक पक्षों की अपेक्षा संवेगात्मक या भावात्मक पक्षों पर बल दिया जाता है।

अनिर्देशीय परामर्श (Non-Directive Counselling) का विस्तृत अध्ययन आप इकाई 4 में कर सकेंगे

3.9 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह जान चुकें हैं कि समूह परामर्श व व्यक्तिगत परामर्श की दो महत्वपूर्ण विधियाँ हैं। परामर्श को सदैव से 'उपबोध्य केन्द्रित' प्रक्रिया माना जाता रहा है। व्यक्तिगत परामर्श इसी अवधारणा पर आधारित है। इसमें उपबोध्य उपबोधक के सामने बैठकर अधिक सक्रिय होकर अपने व्यक्तिगत जीवन से संबंधित निजी समस्याओं के समाधान हेतु सहायता प्राप्त करता है।

- कैरियर परामर्श व्यक्तियों को आत्म-अन्वेषण, निर्णय लेने में सहायता, लक्ष्य निर्धारण, व्यावसायिक विकास, कार्य-जीवन संतुलन में सहायता करता है। पारिवारिक परामर्श चिकित्सा का एक अनुशासन है जो पारिवारिक जीवन में आने वाली चुनौतियों और जटिलताओं के समाधान खोजने पर केंद्रित है। इसे विवाह और पारिवारिक चिकित्सा (एमएफटी) भी कहा जाता है, चिकित्सक परिवार के सदस्यों के बीच संचार को बेहतर बनाने और परिवार के सदस्यों के बीच गतिशीलता को समायोजित करने का काम करते हैं जिसके परिणामस्वरूप शिथिलता हो सकती है। "पारिवारिक परामर्श" और "पारिवारिक चिकित्सा" शब्दों का अक्सर समानार्थक रूप से उपयोग किया जाता है, लेकिन यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पारिवारिक परामर्श, परामर्श के अन्य रूपों की तरह, कुछ चिकित्सकों द्वारा पारिवारिक चिकित्सा की तुलना में अवधि में कम और अधिक समाधान-केंद्रित के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। निर्देशित परामर्श के मुख्य प्रवर्तक ई0जी0 विलियमसन थे। निर्देशित परामर्श का केन्द्र बिन्दु परामर्शदाता होता है अर्थात् उसकी मुख्य भूमिका होती है। वह सक्रिय रहता है तथा अपने स्वयं के दृष्टिकोण एवं भावनार्य स्वतंत्र रूप से प्रकट करता है। अनिर्देशित परामर्श के मुख्य

प्रवर्तक कार्ल आर रोजर्स है। इस परामर्श में प्रार्थी केन्द्र होता है और उसे उसके विचारों, भावनाओं को अभिव्यक्त करने को प्रोत्साहित किया जाता है।

3.10 शब्दावली

1. व्यक्तिगत उबोधन: परामर्श की वह विधि जिसमें उपबोधक केवल एक उपबोध्य को परामर्श प्रदान करता है, व्यक्तिगत परामर्श कहते हैं।

3.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

- 1 . व्यक्तिगत परामर्श के उद्देश्य हैं-
 - i. व्यक्ति में आत्म समझ का विकास करना।
 - ii. व्यक्ति में समायोजन की योग्यता का विकास करना।
 - iii. व्यक्तिगत जीवन से संबंधित समस्याओं के संदर्भ में निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।
 - iv. व्यक्ति को अपने अंतःद्वन्द्वों व नकारात्मक भावनाओं पर विजय प्राप्त करने हेतु तैयार करना।
 - v. व्यक्ति में सकारात्मक मनोवृत्ति का विकास करना।
 - vi. व्यक्ति में सामाजिक, सांवेगिक व आध्यात्मिक लब्धि का विकास करना।
- 2 . व्यक्तिगत परामर्श व समूह परामर्श के मध्य दो अंतर-
 - i. व्यक्तिगत परामर्श में उपबोधक केवल एक उपबोधक के साथ आमने-सामने बैठकर परामर्श देता है। लेकिन समूह परामर्श में उपबोध्य उपबोध्यों के छोटे समूह (6-10 उपबोध्यों) को एक साथ परामर्श प्रदान करता है।
 - ii. व्यक्तिगत परामर्श में उपबोध्य केवल सहायता की प्राप्ति करता है जबकि समूह परामर्श में उपबोध्य दूसरों को सहायता भी प्रदान करता है।
- 3 . सही
- 4 . गलत

3.12 संदर्भ ग्रन्थ

1. जायसवाल, सीताराम (1887) “शिक्षा में निर्देशन और परामर्श”, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. नायक, ए0के0 एण्ड भी0 के राव (2004) “गाइडेन्स एण्ड कैरियर कॉन्सलिंग”, ए0पी0 एच पब्लिशिंग कॉरपरेषन, न्यू देलही।
3. मंगल, एस0 के (2011) “शिक्षा मनोविज्ञान” पी एच एल लरनिंग प्राइवेट लिमिटेड, न्यू देलही।

4. बंगाली, एम. (1984) “गाइडेन्स एण्ड कॉन्सिलिंग”, सेठ पब्लिशर्स, बॉम्बे।
5. क्रो एण्ड क्रो “इंट्रोडक्सन टु गाइडेन्स”, सेकेण्ड, एडीषन, युरेपिया पब्लिशिंग को., न्यू देलही।
6. जयसवाल, मोनिका (1968) “गाइडेन्स एण्ड कॉन्सिलिंग”, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ।
7. राव. एस. एन. (1992) “कॉन्सिलिंग एण्ड गाइडेन्स”, टाटा मेकग्राहिल, न्यू देलही।
8. “इंट्रोडक्सन टु गाइडेन्स एण्ड कॉन्सिलिंग” (2009) बी0एड0 के छात्रों के लिए स्व अध्ययन सामग्री, स्कूल ऑफ एजुकेशन, इंदिरा गांधी नेशनल ओपेन यूनीवर्सिटी, न्यू देलही।
9. “निर्देशन: विधियाँ एवं तकनीक” (2010) एम0एड0 के छात्रों के लिए स्वअध्ययन सामग्री, स्कूल ऑफ एजुकेशन, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, न्यू दिल्ली।
10. गुप्ता, एस0पी0 एवं अल्का गुप्ता (2012) “उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान”, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

3.13 निबंधात्मक प्रश्न

1. व्यक्तिगत परामर्श से आप क्या समझते हैं। समूह परामर्श से तुलना करते हुए इसके महत्त्व एवं उद्देश्यों पर दृष्टिपात कीजिए।
2. कैरियर परामर्श के क्या क्या लाभ हैं?
3. विवाह पूर्व परामर्श सफल पारिवारिक जीवन के लिये आवश्यक है आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए

टिप्पणी लिखिए-

4. I. पारिवारिक चिकित्सा के लाभ
5. II. व्यक्तिगत परामर्श में शामिल तकनीकें

इकाई 4. निर्देशित, गैर निर्देशित एवं चयनात्मक (सारग्राही) परामर्श, बाल संरक्षण और बाल अधिकार परामर्श (Directive, Non-directive and Eclectic Counselling; Child Protection and Child right Counselling)

इकाई की रूपरेखा

- 4.1 प्रस्तावना
- 4.2 उद्देश्य
- 4.3 निर्देशित परामर्श
- 4.4 अनिर्देशित परामर्श
- 4.5 समन्वित अथवा सारग्राही परामर्श
- 4.6 बाल संरक्षण एवं बाल अधिकार परामर्श
- 4.7 सारांश
- 4.8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- 4.9 निबंधात्मक प्रश्न
- 4.10 सन्दर्भ सूची

4.1 प्रस्तावना:-

परामर्श एक बहुआयामी प्रक्रिया होती है। जिसमें अनेक उपागमों एवं प्रविधियों को प्रयुक्त करके व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास, समस्याओं का समाधान अथवा उपचार द्वारा व्यक्ति के जीवन को सहज, उद्देश्यपूर्ण एवं सन्तोषप्रदायी बनाने का प्रयास किया जाता है। निर्देशन एवं सहायता है जो किसी व्यक्ति को अपनी समस्याओं को सुलझाने योग्य बनाने के लिए दी जाती है, निर्देशन सहायता क्रमबद्ध, सुनियोजित तथा सुसंगठित होती है। प्रस्तुत इकाई में आप निर्देशित, अनिर्देशित एवं समन्वित परामर्श के बारे में अध्ययन करेंगे साथ ही बाल संरक्षण एवं बाल अधिकार के बारे में एवं अतिसंवेदनशील (असुरक्षित) बालकों के परामर्श विधियों का अध्ययन करेंगे।

4.2 उद्देश्य:-

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप

- निर्देशित परामर्श का अर्थ समझ पायेंगे
- निर्देशित परामर्श की अवधारणायें, चरण, विशेषताये एवं लाभ-हानि को समझ पायेंगे
- अनिर्देशित परामर्श की अवधारणायें, चरण, विशेषताये एवं लाभ-हानि को समझ पायेंगे
- समन्वित परामर्श के चरण, विशेषतायें, लाभ व सीमायें जान सकेंगे
- बाल अधिकार एवं बाल संरक्षण का अर्थ समझ सकेंगे
- असुरक्षित/अति संवेदनशील बालकों के परामर्श को जान सकेंगे।

परामर्श के प्रकार

परामर्श प्रक्रिया की प्रकृति को देखते हुए तथा परामर्शदाता की भूमिका को देखते हुए परामर्श के तीन प्रमुख प्रकार हैं, जो कि निम्नलिखित है।

1. निर्देशित या परामर्श -केन्द्रित (Directive or Counsellor Centred)
2. अनिर्देशीय या प्रार्थी-केन्द्रित या अनुमत परामर्श (Non-Directive or Client Centred)
3. समन्वित परामर्श (Eclectic Counselling)

4.3 निर्देशित परामर्श-केन्द्रित परामर्श (Directive or Counselor Centered)

इसमें परामर्शदाता का अधिक महत्व होता है, वह प्रार्थी की समस्याओं के समाधान के लिए उपाय बताता है और निर्देश देता है। निर्देशित परामर्श परामर्शदाता के इर्दगिर्द घूमता है। वह मैत्री और सहायता द्वारा मधुर-समबन्ध स्थापित करने का प्रयास करता है। इसमें परामर्शदाता बहुत सक्रिय होता है और वह अपने स्वयं के दृष्टिकोण और भावनाएं स्वतंत्र रूप से प्रकट करता रहता है। वह प्रार्थी की अभिव्यक्तियों का मूल्यांकन करता है। इसमें परामर्शदाता प्रमापीकृत प्रश्नों की एक शृंखला (Series of Standardized Questions) बनाता है तथा प्रत्येक का संक्षिप्त उत्तर तय करता है। वह प्रार्थी का अभिव्यक्ति और भावनाओं का व्यक्त करने की आज्ञा नहीं देता। एक विशेषज्ञ के तौर पर वह नेतृत्व करता है, मूल्यांकन करता है और सुझाव या सलाह देता है।

इस इस विचारधारा के मुख्य प्रवर्तक मिनेसोटा विश्वविद्यालय के ई0जी0 विलियमसन है। इसमें परामर्शदाता प्रार्थी की समस्या को हल करने का मुख्य उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेता है। इस

प्रक्रिया में परामर्शदाता समस्या की खोज और उसे परिभाषित करता है, निदान (Diagnose) करता है तथा समस्या के बारे में बताता है।

4.3.1 निर्देशीय परामर्श की अवधारणाएं

1. **सलाह देने की सक्षमता (Competency in Giving Advice)**- परामर्शदाता के पास प्रशिक्षण, अनुभव और सूचना होती है। वह समस्या को समझता है और उसके समाधान के बारे में सलाह देने के लिए सक्षम होता है।

2. **परामर्श एक बौद्धिक प्रक्रिया है (Counseling is an Intellectual Process)**- परामर्श प्राथमिक रूप से बौद्धिक प्रक्रिया है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व के संवेगात्मक पक्षों की बजाए बौद्धिक पक्षों पर बल देती है। यदि कोई कुसमायोजित होता है तो उसकी बौद्धिक क्षमता को ध्यान में रखते हुए उसे परामर्श दिया जाता है।

3. **परामर्श के उद्देश्य समस्या-समाधान स्थिति के रूप में (Counseling Objectives as Problem Solving Situation)**-परामर्श के उद्देश्य समस्या-समाधान स्थिति के माध्यम से उपलब्ध किए जाते हैं।

4. **प्रार्थी की समस्या-समाधान में अक्षमता (Client's Incapability of Solving the Process)**-इस परामर्श की यह अवधारणा भी है कि प्रार्थी में सदा ही समस्या के समाधान की क्षमता नहीं होती। इसलिये उसे परामर्श दाता की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार के परामर्श में प्रार्थी को परामर्शदाता के अधीन कार्य करना होता है न कि उसके साथ मिलकर। परामर्शदाता उसकी समस्या का समाधान करने हेतु स्वयं सक्रिय रहता है।

विलियमसन (Williamson)- के अनुसार, इस प्रकार के निर्देशन की मूलभूत धारणाएं निम्नलिखित हैं।

1. इस परामर्श का लक्ष्य है- व्यक्ति के व्यक्तित्व का सभी दिशाओं में विकास में सहायता करना।
2. यह परामर्श व्यक्ति की विशेषता (Uniqueness)-को मानता है।
3. यह परामर्श वांछनीयता (Desirability)-पर आधारित है न कि परामर्श को व्यक्ति पर थोपना।
4. यह परामर्श केवल तभी दिया जाना चाहिए जब विद्यार्थी किसी समस्या का सामना करें और वह स्वयं इसका
5. इस परामर्श में आपसी सम्बन्ध निष्पक्ष (Neutral)- होते हैं।

6. इस परामर्श प्रार्थी की समस्या के बारे में स्वयं की धारणा पर केन्द्रित होता है।
7. परामर्श प्रार्थी की मर्यादा का सम्मान करता है।
8. परामर्श एक बौद्धिक प्रक्रिया है।
9. अपने प्रशिक्षण, अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर परामर्शदाता समस्या के समाधान के लिए अच्छी पहल कर सकता है।

इस प्रकार विलियमसन परामर्शदाता को अध्यापक के रूप में देखता है जिसका कर्तव्य है व्यक्ति को स्वयं की क्षमताएं, दृष्टिकोण और रुचियों को समझने योग्य बनाना, स्वयं की अभिप्रेरणा और जीवन-प्रविधियों को पहचानना आदि।

4.3.2 निर्देशीय परामर्श के चरण (Directive or Counsellor Centred)

निर्देशीय परामर्श के निम्नलिखित चरण हैं:-

i. **विश्लेषण** इसमें स्थिति या प्रार्थी के बारे में आकड़े और सूचनाएं इकट्ठी की जाती हैं जिन्हें एक सत्य और विश्वसनीय आधार के रूप में परामर्श-प्रक्रिया में प्रयुक्त किया जा सकता है। विश्लेषण के लिए इन यंत्रों का प्रयोग किया जाता है

- a. संचित अभिलेख
- b. साक्षात्कार
- c. समय विभाजन फार्म
- d. आत्मकथा
- e. उपारव्यानक रिकॉर्ड
- f. मनोवैज्ञानिक परीक्षण

इसके अलावा सभी आँकड़ों के एकीकरण के लिए केस-हिस्ट्री विधि का प्रयोग किया जाता है। इसमें पारिवारिक इतिहास, मनोरंजनात्मक रुचियाँ और आदतें आदि शामिल होती हैं।

ii. **संश्लेषण** इसमें प्राप्त आँकड़ों का इस प्रकार से संक्षिप्तीकरण और संगठन किया जाता है, जिससे विद्यार्थी की सम्पत्ति, उत्तरदायित्व, समायोजन और कुसमायोजनों का पता चलता है।

iii. **निदान** इसके अन्तर्गत समस्या के रूप में जो आँकड़े दिये होते हैं उनकी व्यवस्था की जाती है। इसमें विद्यार्थियों की विशेषताओं, दुर्बलताओं और दायित्वों को भी शामिल किया जाता है।

निदान में निम्नलिखित तीन मुख्य पद होते हैं

- समस्या की पहचान करना
- कारणों को ढूँढना

- पूर्वानुमान

iv. **पूर्वानुमान** इस प्रकार किसी भी समस्या की पहचान करके, उसके कारणों को ढूँढकर फिर उसके पूर्वानुमान द्वारा उसे निर्देशित किया जाता है।

v. **परामर्श या उपचार** जब परामर्शदाता प्रार्थी की सहायता करता है, तो इसमें कई प्रश्नों के उत्तर दिए जाते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर प्रार्थी स्वयं ही अपने लिए देता है, जैसे-मैं स्वयं में ये परिवर्तन किस प्रकार कर सकता हूँ? इसका दूसरा विकल्प क्या हो सकता है? यदि ऐसा ही चलता रहा तो भविष्य में विकास कैसा होगा? आदि। इसके पश्चात् उसे उपचार या परामर्श दिया जाता है।

vi. **अनुवर्तन** इसके अन्तर्गत परामर्श-प्रक्रिया की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है तथा यह देखा जाता है कि विद्यार्थी की परामर्श के माध्यम से क्या क्या उपलब्धियाँ रही। उसे कितना फायदा हुआ?

4.3.3 निर्देशीय परामर्श की विशेषताएं

- प्रक्रिया में परामर्शदाता मुख्य भूमिका होती है।
- वह प्रार्थी को सलाह प्रदान करता है।
- इस प्रक्रिया में केन्द्र-बिन्दु व्यक्ति नहीं, बल्कि समस्या है।
- प्रार्थी परामर्शदाता के अधीन कार्य करता है न कि साथ में।
- इस परामर्श में, जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है वे प्रत्यक्ष, प्रभावी और व्याख्यात्मक होती हैं।
- परामर्श व्यक्ति के व्यक्तित्व के संवेगात्मक पक्ष की बजाय बौद्धिक पक्ष पर अधिक बल देता है।

4.3.4 निर्देशीय परामर्श के लाभ

- a. यह विधि समय की दृष्टि से लाभकारी है। इसमें समय की बहुत बचत होती है।
- b. इस प्रकार के परामर्श से समस्या पर अधिक ध्यान दिया जाता है तथा व्यक्ति पर कम।
- c. परामर्शदाता प्रार्थी को प्रत्यक्ष रूप से देख सकता है।
- d. परामर्श व्यक्ति के व्यक्तित्व के संवेगात्मक पक्ष की अपेक्षा बौद्धिक पक्ष पर बल देता है।
- v. इस प्रक्रिया में परामर्शदाता प्रार्थी की सहायता के लिए शीघ्र ही उपस्थित हो जाता है, जिससे उसे प्रसन्नता होती है।

4.3.5 निर्देशीय परामर्श की सीमाएं

- इस प्रक्रिया में प्रार्थी अधिक निर्भर होता है और वह अपनी समस्याओं का समाधान करने के भी अयोग्य होता है।
- इसमें प्रार्थी परामर्शदाता से कभी भी स्वतन्त्र नहीं हो पता, यह उत्तर और प्रभावी निर्देशन नहीं है।
- इस प्रकार के निर्देशन में यह अभाव रहता है कि व्यक्ति स्वयं का कोई निर्णय नहीं ले सकता है।
- परामर्शदाता प्रार्थी को भविष्य में गलतियों को करने से बचाने में असमर्थ रहता है।
- विद्यार्थी के बारे में जानकारी का अभाव रहता है जिससे गलत परामर्श सम्भव है।

4.4 अनिर्देशीय परामर्श या प्रार्थी केन्द्रित या अनुमत परामर्श (Non-Directive of Client-Centred)

अनिर्देशीय परामर्श या प्रार्थी-केन्द्रित परामर्श के प्रमुख कार्ल रोजर्स है। इस सिद्धान्त का विकास बहुत वर्षों में हुआ है। इसलिए इस प्रकार के परामर्श में कई क्षेत्र शामिल होते रहे जैसे- व्यक्तित्व का विकास, सामूहिक नेतृत्व, शिक्षा एवं अधिगम, सृजनात्मकता, पारस्परिक सम्बन्ध इस सिद्धान्त के अनुसार स्वयं व्यक्ति में इतनी क्षमता होती है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान खुद कर सकता है। परामर्शदाता का कार्य तो केवल इतना ही है कि ऐसा वातावरण प्रदान करें जिसमें प्रार्थी वृद्धि के लिए स्वतन्त्र होता है ताकि वह जैसा चाहे वैसा ही व्यक्ति बन सके। इसमें व्यावसायिक और शैक्षिक समस्याओं के संवेगात्मक पक्षों को महत्व दिया जाता है।

प्रार्थी-केन्द्रित परामर्श प्रार्थी के इर्द-गिर्द घूमता है। इसमें प्रार्थी को वार्तालाप करने के लिए और स्वयं के दृष्टिकोणों, भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसमें परामर्शदाता अधिकतर निष्क्रिय ही रहता है। वह प्रार्थी के विचारों, भावों, भावनाओं और अभिव्यक्तियों में हस्तक्षेप नहीं डालता। परामर्शदाता प्रार्थी की बातचीत करने में पूरी सहायता करता है। शुरुआत में परामर्शदाता प्रार्थी के साथ मधुर संबंध बनाने का प्रयास करता है और धीरे-धीरे विश्वास की भावना उत्पन्न करने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार के परामर्श में मुक्त अन्त प्रश्न ही पूछे जाते हैं। ये प्रश्न पूर्ण रूप से रचित नहीं होते। परामर्शदाता का अधिकतर सम्बन्ध प्रार्थी द्वारा बताई गई संवेगात्मक विषय-वस्तु के साथ से होता है। इसमें प्रार्थी अपनी भावनाओं एवं विचारों को खुलकर प्रकट करता है।

जब प्रार्थी उत्तर दे रहा होता है। उसे इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वह अपनी बात खुलकर बताये। जिस प्रकार के प्रश्न परामर्शदाता प्रार्थी से पूछता है उससे प्रार्थी यह महसूस करने लगता है कि परामर्शदाता वास्तव में ही व्यक्तिगत तौर पर प्रार्थी के विचारों का सम्मान

करता है और साक्षात्कारकर्ता प्रार्थी में रूचि ले रहा है। अनिर्देशीय परामर्श में प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार दिया जाता है कि वह खुलकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करे। इस प्रकार के परामर्श में निदानात्मक यंत्रों का या तो बहुत ही कम प्रयोग होता है या फिर होता ही नहीं। इसमें प्रार्थी अपनी बुद्धि या समझ से कार्य कर सकता है। इसमें बौद्धिक पक्षों की अपेक्षा संवेगात्मक या भावात्मक पक्षों पर बल दिया जाता है।

4.4.1 अनिर्देशीय परामर्श की मूलभूत अवधारणाएं

1. **व्यक्ति की मर्यादा में विश्वास** (Belief in the dignity of man)-रोजर्स व्यक्ति की मान-मर्यादा में सशक्त विश्वास रखता है। वह व्यक्ति को स्वयं निर्णय लेने में सक्षम मानता है तथा ऐसे करने के उसके अधिकतर को स्वीकार करता है। व्यक्ति अपने निर्णयों में चाहें सही हो या गलत उनमें विश्वास करता है।

2. **वास्तवीकरण की ओर प्रवृत्ति** (Tendency toward actualization) -रोजर्स के प्रारम्भिक लेखों में इस बात पर बल दिया गया है कि व्यक्ति या प्रार्थी की वृद्धि और विकास की क्षमता व्यक्ति की वह आवश्यक विशेषता है जिस पर परामर्श और मनोचिकित्सा विधियाँ निर्भर करती हैं। रोजर्स के अनुसार व्यक्ति की वंशानुक्रम प्रवृत्ति में वृद्धि, समायोजन, सामाजीकरण, स्वतंत्रता आदि दिशाएं सम्मिलित हैं।

3. **व्यक्ति विश्वास योग्य है** (Man is Trustworthy)- रोजर्स व्यक्ति को बुनियादी तौर पर अच्छा और विश्वास के योग्य मानता है। कभी-कभी व्यक्ति बहुत बार अविश्वसनीय ढंग से भी व्यवहार करता है। व्यक्ति कुछ शक्तियों के साथ पैदा होता है जिन पर नियंत्रण करना आवश्यक है यदि स्वस्थ व्यक्तित्व-विकास होने देना है।

4. रोजर्स के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी बुद्धि से विवेकशील होता है तथा सही अथवा गलत का निर्णय ले सकता है।

5. **जीवन लक्ष्य में स्वतंत्रता**:- प्रार्थी अपने जीवन के उद्देश्य को निर्धारित करने में स्वतंत्र है, चाहें परामर्शदाता की, राय कुछ भी हो।

6. **अधिकतम सन्तोष**: प्रार्थी अपने उद्देश्य को जब स्वयं चुनता है तो उसे अधिकतम संतोष की प्राप्ति होती है।

7. **स्वतन्त्र निर्णय क्षमता का विकास**: - परामर्श प्रक्रिया के थोड़े समय बाद प्रार्थी स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर लेता है।

जीवन के लक्ष्यों का चयन

1. वह अपने जीवन के लक्ष्यों का चयन स्वयं करे।
2. प्रार्थी को यदि अवसर दिया जाता है तो वह उन लक्ष्यों का चयन करेगा जिससे उसे महान सम्भावित प्रसन्नता प्राप्ति हो।
3. परामर्श-परिस्थिति में उपयुक्त संक्षिप्त समय में इस बिन्दु पर पहुच प्रवर्ति जाना चाहिए जहाँ से प्रार्थी स्वतंत्र रूप से कार्य करने के योग्य हो सके।
4. किसी व्यक्ति को उपयुक्त ढंग से समायोजित होने में संवेगात्मक गड़बड़ी ही प्रारम्भिक रूप से रोकती है।

4.4.2 अनिर्देशीय परामर्श के चरण

कार्ल रोजर्स ने अनिर्देशीय परामर्श के निम्नलिखित चरण बताए हैं।

1. **समस्यात्मक परिस्थिति को परिभाषित करना (Defining the problematic situation)**-सर्वप्रथम परामर्शदाता को समस्यात्मक परिस्थिति को परिभाषित करना होता है।
2. **भावनाओं की स्वतंत्र अभिव्यक्ति (Free Expression of feeling)** - इसके पश्चात् प्रार्थी को इस बात के प्रति जागरूक किया जाता है कि प्रार्थी अपनी भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकता है तथा परामर्शदाता इस बात की स्वीकृति देता है।
3. **सकारात्मक और नकारात्मक भावनाओं का वर्गीकरण (Classification of Positive & Negative Feeling)**-जब प्रार्थी अपनी भावनाओं को व्यक्त कर देता है उसके बाद उसके नकारात्मक और सकारात्मक भावनाओं की पहचान करनी है और उनका वर्गीकरण होता है।
4. धीरे-धीरे प्रार्थी में सूझ बूझ या अन्तर्दृष्टि का विकास होने लगता है और इसके बाद परामर्शदाता उसकी नई भावनाओं के बाने में चिन्हित करता है।
5. **परामर्श स्थिति समाप्त करना (Termination of Counselling Situation)** -इन उपरोक्त चरणों के पश्चात् परामर्शदाता उस स्थिति या बिन्दु (चवपदज) की तलाश में रहता है जहाँ से परामर्श स्थिति को समाप्त किया जा सके। इसके अनुसार प्रार्थी या परामर्शदाता इस समाप्ति का सुझाव दे सकते हैं। जब दोनों को यह लगने लगे कि परामर्श के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं।

4.4.3 अनिर्देशीय परामर्श की विशेषतायें

- I. यह प्रार्थी केन्द्रित परामर्श (Client Centered Counselling) है।
- II. यह इस सिद्धान्त पर आधारित होता है कि व्यक्ति में इतनी क्षमता और शक्ति होती है जिससे कि उसकी वृद्धि और विकास हो सके ताकि वह व्यक्ति वास्तविकता में परिस्थितियों का सामना कर सके।
- III. इस परामर्श में परामर्शदाता सबसे अधिक निष्क्रिय होता है।
- IV. व्यक्ति जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार किया जाता है और वह अपने किसी भी दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने में स्वतंत्र होता है।
- V. इसके द्वारा मनोवैज्ञानिक समायोजन में सुधार होता है।
- VI. इसके प्रयोग से मनोवैज्ञानिक तनाव कम होते हैं।
- VII. इस प्रकार के परामर्श से सुरक्षात्मकता में कमी आती है।
- VIII. प्रार्थी का व्यवहार संवेगात्मक रूप से अधिक परिपक्व माना जाता है।
- IX. प्रार्थी केन्द्रित परामर्श से सम्बन्धित शोध के द्वारा ये पता चला है कि प्राथमिक स्कूल के विद्वार्थियों को यदि इस तरह का परामर्श दिया जाये तो उनमें पठन सुधार देखने को मिलता है।
- X. प्रार्थी केन्द्रित परामर्श में परामर्शदाता का लक्ष्य होता है कि वह प्रार्थी के स्वयं के संगठन और कार्यशीलता में परिवर्तन लाये।
- XI. इस परामर्श की विचारधारा निर्देशीय परामर्श (Directive Counselling) के बिल्कुल उल्टी है।
 - i. इस परामर्श में सम्पूर्ण उत्तर दायित्व प्रार्थी या व्यक्ति पर ही रहता है।

4.4.4 अनिर्देशीय परामर्श के लाभ

- I. इस परामर्श से प्रार्थी में समस्या-समाधान की योग्यता उत्पन्न होना निश्चित है चाहे यह प्रक्रिया बहुत धीमी हो।
- II. प्रार्थी-केन्द्रित विचारधारा होने के कारण अन्य अनावश्यक गतिविधियों और परीक्षणों आदि से बचाव हो जाता है।
- III. इसमें समस्या को प्रार्थी के अचेतनमन के स्तर से चेतनमन के स्तर पर लाते हैं जिससे वह तनाव मुक्त होता है।
- IV. इस प्रकार का परामर्श बहुत लम्बी अवधि तक के लिए अपने प्रभाव छोड़ता है।

4.4.5 अनिर्देशीय परामर्श की सीमाएं (Advantages of Non-Directive Counseling)

1. इसमें प्रार्थी को अपने वर्तमान दृष्टिकोणों की स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति की आज्ञा होती है, लेकिन इसमें यह बताने का प्रयास नहीं किया जाता है कि ये वर्तमान दृष्टिकोण क्यों होते हैं। इसमें भूतकाल के बारे में कोई खोज नहीं, कोई सुझाव नहीं है।
2. परामर्शदाता का लचीलेपन की आज्ञा का अभाव भी इस परामर्श की एक कमी है।
3. इसमें बात की ओर ध्यान नहीं दिया जाता कि उद्दीपक स्थिति और वातावरण की प्रकृति व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करती है।
4. प्रार्थी-केन्द्रित परामर्श सिद्धान्त के अन्तर्गत बहुत सी परामर्श-परिस्थितियाँ सफलतापूर्वक नहीं आती।
5. प्रार्थी के साधनों, निर्णयों और बुद्धि पर निर्भर नहीं रहा जा सकता।
6. सभी समस्याएं केवल बोलकर ही हल नहीं हो सकती।
7. यह सभी स्कूलों में संभव नहीं क्योंकि परामर्शदाता को कई विद्यार्थियों को देखना होता है।
8. कई बार परामर्शदाता की निष्क्रियता से प्रार्थी अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति में झिझक महसूस करता है।

4.5 समन्वित परामर्श (Eclectic Counselling)

अर्थ (Meaning)

कई बार कई परामर्शदाता न तो निर्देशीय परामर्श की विचारधारा से सहमत हैं और न ही अनिर्देशीय परामर्श की विचारधारा से, ऐसी परिस्थिति में परामर्शदाता एक अन्य प्रकार की परामर्श प्रक्रिया को चुनता है। यह विचारधारा निर्देशीय और अनिर्देशीय (Directive & Non-directive Counselling) परामर्श की विचारधाराओं के मध्य का परामर्श है। इसी मध्य के परामर्श की विचारधारा को ही 'समन्वित परामर्श' या 'समाहारक परामर्श' या 'संकलक परामर्श' कहा जाता है।

इस प्रकार के परामर्श में परामर्शदाता न तो अधिक सक्रिय होता है और न ही अधिक निष्क्रिय होता है। इस प्रकार के परामर्श में पहले व्यक्ति की आवश्यकताओं और उसके व्यक्तित्व का अध्ययन परामर्शदाता द्वारा ही किया जाता है। उसके बाद परामर्शदाता उन प्रविधियों का चयन करता है जो व्यक्ति के लिए अधिक उपयोग या सहायक रहेगी।

इस परामर्श-प्रक्रिया में परामर्शदाता पहले निर्देशीय परामर्श विधि के अनुसार शुरू कर सकता है तथा कुछ समय बाद अनिर्देशीय परामर्श विधि को शुरू कर सकता है तथा कुछ समय बाद

अनिर्देशीय परामर्श विधि का अनुसरण कर सकता है या इसके विपरीत-जैसा स्थिति चाहें। इसमें प्रविधियों परिस्थिति और प्रार्थी के अनुसार होती है। इस प्रकार के परामर्श में जो प्रतिधियों प्रयोग की जाती है- वे हैं पुनः विश्वास, सूचना प्रदान करना, केस-हिस्ट्री, परीक्षण इत्यादि। इस प्रकार इस समन्वित परामर्श में दोनो, परामर्शदाता और प्रार्थी सक्रिय और सहयोगात्मक होते है। दोनों बारी-बारी में वार्तालाप करते है और संयुक्त रूप से समस्या का समाधान करते है।

4.5.1 समन्वित परामर्श के चरण (Steps in Eclectic Counselling)

समन्वित परामर्श के मुख्य चरण निम्नलिखित है।

1. **प्रार्थी की आवश्यकताओं और व्यक्तित्व की विशेषताओं का अध्ययन (Study of the needs & Personality Characteristics of client)**- इसके अन्तर्गत परामर्शदाता सबसे पहले प्रार्थी की आवश्यकताओं के बारे में छानबीन करता है। इसके बाद वह व्यक्ति के व्यक्तित्व की विशेषताओं के बारे में जानकारी एकत्रित करता है।
2. **प्रविधियों का चयन (Selection of Techniques)**- इसके बाद आवश्यकतानुसार उपयुक्त प्रविधियों चयन किया जाता है तथा उनका प्रयोग किया जाता है। इन प्रविधियों का प्रयोग व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुसार ही किया जाता है। ताकि परिणाम सही प्राप्त हो सकें।
3. **प्रविधियों का प्रयोग (Application of Techniques)**- जिन प्रविधियों को चुना जाता है उनकी उपयोगिता प्रार्थी की परिस्थिति के अनुसार ही देखी जाती है और परिस्थिति अनुसार उनका प्रयोग किया जाता है।
4. **प्रभावशीलता का मूल्यांकन (Evaluation of Effectiveness)**- इसके अन्तर्गत प्रभावशीलता का मूल्यांकन विभिन्न विधियों से किया जाता है।
5. **परामर्श की तैयारी** -प्रार्थी की समस्या व स्थिति के अनुसार परामर्श की आवश्यक तैयारी की जाती है।
6. **प्रार्थी और अन्य व्यक्ति की राय प्राप्त करना**- परामर्श सम्बन्धी कार्यक्रम एवं अन्य उद्देश्यों के लिए प्रार्थी तथा उससे सम्बन्धित अन्य व्यक्तियों से राय प्राप्त की जाती है और तब उसे आगे बढ़ाया जाता है।

4.5.2 समन्वित परामर्श की विशेषताएं (Characteristics of Eclectic Counselling)

समन्वित परामर्श की विशेषताएं निम्नलिखित है:-

1. इसमें वस्तुनिष्ठ एवं समन्वयपरक विधियों का प्रयोग किया जाता है।
2. परामर्श के शुरू में प्रार्थी की सक्रियता वाली प्रविधियों का प्रयोग अधिक होता है और इसमें परामर्शदाता निष्क्रिय होता है।

3. इसमें कार्य-कुशलता एवं उपचार प्राप्त करने को विशेष महत्व प्रदान किया जाता है।
4. इसमें प्रार्थी के व्यय को ध्यान में रखा जाता है।
5. इस प्रकार के परामर्श में समस्त विधियों और प्रविधियों के प्रयोग के लिए परामर्शदाता में व्यावसायिक कुशलता एवं दक्षता का होना अनिवार्य होता है।
6. प्रार्थी की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही निर्णय लिया जाता है कि निर्देशीय विधि का प्रयोग किया जाए या अनिर्देशीय विधि का।
7. प्रार्थी को अवसर उपलब्ध कराया ताकि वह स्वयं समस्या का हल खोज सके।

4.5.3 समन्वित परामर्श के लाभ (Advantage of Eclectic Counselling)

1. यह परामर्श प्रार्थी के लिए लाभदायक होता है।
2. इसमें परामर्शदाता पहले उसके व्यक्तित्व का अध्ययन करता है।
3. इस परामर्श में दोनों का परस्पर सहयोग होता है।
4. इसमें प्रार्थी के संवेगात्मक एवं बौद्धिक पक्ष दोनों पर ध्यान दिया जाता है।

4.5.4 समन्वित परामर्श की विशेषताएं

समन्वित परामर्श की सीमाएं हैं:-

1. कुछ लोगों का कहना है कि परामर्श का यह प्रकार अस्पष्ट और अवसरवादी है।
2. निर्देशीय और अनिर्देशीय प्रकार के परामर्शों को मिश्रित नहीं किया जा सकता।
3. इसमें यह प्रश्न उठता है कि प्रार्थी को कितनी स्वतन्त्रता प्रदान की जाए? इसके बारे में कोई निश्चित नियम नहीं हो सकता।

4.6 बाल संरक्षण एवं बाल अधिकार

भारत में 1974 में एक राष्ट्रीय पालिसी बनाई गयी। इसके अन्तर्गत ये प्रावधान रखा गया कि जन्म से पहले एवं बाद में अर्थात् बच्चे की वृद्धि अवधि में उसके शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक विकास हेतु पर्याप्त सेवाओं की आवश्यकता है। बाल अधिकारों की सुरक्षा के लिए भारत सरकार ने 29 दिसम्बर 2006 को भारत के राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग का गठन हुआ।

इस आयोग के निम्नलिखित दायित्व हैं:-

- बच्चों के अधिकारों के संरक्षण के लिए सुझाये गये उपायों की निगरानी व जाँच करना।
- आतंकवाद, हिंसा, दंगों, घरेलु हिंसा, तस्करी, एचआईवी/एड्स, शोषण, अश्लील साहित्य से प्रभावित कारकों की जाँच करना और उसके लिये उपचारात्मक उपायाएं को बताना।

- समाज के विभिन्न वर्गों के बीच बाल अधिकार एवं संरक्षण साक्षरता का प्रचार-प्रसार करना। इसके अन्तर्गत उन श्रोतों पर ध्यान केन्द्रित करना है जो कुछ परिस्थितियों में पिछड़े हैं।

बाल अधिकार एवं बाल संरक्षण में अन्तर

इन दोनों अवधारणाओं के बीच अन्तर को समझना महत्वपूर्ण है।

बाल अधिकार, सिद्धान्तों या आदर्शों का एक समूह है। जबकि बाल संरक्षण एक प्रणाली है, जिसके द्वारा एक बच्चे के अधिकारों का प्रयोग किया जा सकता है।

बाल अधिकार के प्रकार

1. **जीवन जीने का अधिकार:-** पहला हक जीने का होता है, फिर खाने-पीने का। चाहे लड़का हो या लड़की।
2. **संरक्षण का अधिकार:-** शोषण से रक्षा का अधिकार। एक बच्चे का शोषण, का अधिकार घर-परिवार एवं बाहर।
3. **सहभागिता का अधिकार:-** एक बच्चे को अधिकार होता है कि वह स्वयं से जुड़े हुए मुद्दों के बारे में फैसला लें। इसके अन्तर्गत अपने भावों की अभिव्यक्ति, सूचना आदि आते हैं। प्रत्येक बच्चे का ये अधिकार होता है कि अपने मूलभूत अधिकार एवं उसकी स्थिति को जानें।
4. **विकास का अधिकार:-** इसके अन्तर्गत बच्चों का संवेगात्मक, मानसिक, शारीरिक विकास का अधिकार है। संवेगात्मक विकास पर्याप्त एवं स्नेह के द्वारा मानसिक विकास, शिक्षा एवं शिक्षण के द्वारा शारीरिक विकास खेलकूद, मनोरंजन एवं पोषण के द्वारा पूरा होता है।

4.6.1 असुरक्षित/अतिसंवेदनशील बाल का अर्थ

वह बाल जो स्वयं की रक्षा करने में असमर्थ हो, उसे अतिसंवेदनशील बाल की श्रेणी में रखा जाता है। इस प्रकार का बच्चा बचाव नहीं कर सकता और परिस्थितियों से मुकाबला करने में असमर्थ होता है। जैसे बाल शोषण, गली के बच्चे, असक्षम बच्चे और औषधि व्यसन आदि। असुरक्षा अथवा अतिसंवेदनशीलता को शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसके लिए कई कारक जिम्मेदार होते हैं जो निम्न प्रकार से हैं:-

1. **आयु:** वह बच्चे जिनकी उम्र 06 वर्ष से कम हो, वह ज्यादा सुरक्षा के लिये आश्रित होते हैं।
2. **शारीरिक एवं मानसिक अक्षमता:** वह बच्चे जो किसी भी शारीरिक एवं मानसिक अक्षमता से ग्रस्त होते हैं, वह ज्यादा अपेक्षित होते हैं। समाज द्वारा उन्हें हीन भावना से देखा जाता है।

3. **शक्तिहीनता:** यदि बच्चे को उसके परिवार एवं समाज के द्वारा शक्ति/उत्साह नहीं दिया जाता है और उनके अधिकारों को पूरा करने की जिम्मेदारी नहीं दी जाती है वह असुरक्षित एवं संवेदनशील होते हैं। अर्थात् शक्ति अथवा शक्तिहीनता बच्चे को बाहरी वातावरण एवं परिस्थितियों से प्राप्त होती है।

4. **अदृश्य:** वह बच्चे जो समाज के या परिवार द्वारा बहिष्कृत होते हैं, जिनकी कोई पहचान नहीं होती है, वह अधिक असुरक्षित होते हैं। इस प्रकार से आपने असुरक्षित/अतिसंवेदनशील बच्चों के कारकों का पढ़ा, इसी आधार पर इन बच्चों को परामर्श दिया जाता है जो निम्न प्रकार से है:-

4.6.2 शोषित बालकों का परामर्श:- बाल शोषण की समस्या अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार के अन्तर्गत एक गम्भीर मुद्दा है। विभिन्न प्रकार के शोषण में 05 से 12 वर्ष के उम्र के बच्चे शोषण एवं दुर्व्यवहार के सबसे अधिक शिकार होते हैं। इन शोषणों में शारीरिक, यौन एवं भावनात्मक शोषण शामिल होता है। इन स्थितियों में बच्चे एवं परामर्शदाता के बीच परिपक्व सम्बन्ध स्थापित होने चाहिए ताकि उसे जो आघात पहुँचा है, उसे परामर्शदाता पुनःस्थिति में लाने का प्रयास कर सके। सर्वप्रथम आशा एवं विश्वास दिलाना होता है। इसके बाद जब इन मुद्दों पर परामर्शदाता की एक उपयुक्त सूझ/समझ स्थापित हो जाती है तब वह बच्चे के घरवालों से सम्पर्क करता है और उन्हें सम्बन्धित उपचार योजना को बताता है जिसमें हफ्तों एवं महिने का समय लग सकता है। बच्चे को पुनःस्थिति में लाने हेतु परिवार वालों के विशेष सहयोग की आवश्यकता होती है अर्थात् स्नेह एवं सही देखभाल।

परामर्शदाता एक समूह सत्र भी आयोजित करता है, जिससे यह लाभ होता है कि जो शोषित बालक है उसे अपनी तरह के बालकों का साथ मिलता है और सभी की भावनार्यें, समस्यायें, एक प्रकार की होती हैं जिससे वह स्वयं को अकेला महसूस नहीं करता है। इसके अलावा शारीरिक शोषण बालक की आयु, प्रकार पर निर्भर करता है कि उसे किस तरह की उपचार विधि प्रदान की जाये। इसके लिए मनोविश्लेषण, खेल उपचार विधि, संज्ञानात्मक-व्यवहार चिकित्सा, विश्रान्ति विधि आदि हैं।

1. **अक्षम बालकों का परामर्श:-** जब बालकों में शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार की अक्षमता हो तो उसे अक्षम बालकों की श्रेणी में रखा जाता है। इसके कई कारण हो सकते हैं।

- a. संक्रमित बिमारियाँ
- b. बाल्यकाल में संक्रमण
- c. पोषण की कमी
- d. पूर्व मातृत्वता

e. अन्तर्जातीय विवाह

इन बालकों में शारीरिक अक्षमता के साथ-साथ मानसिक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। इनके परामर्श हेतु सामूहिक परामर्श, व्यक्ति प्रबन्धन, पुर्नवास परामर्श, पारिवारिक परामर्श आदि विधियाँ प्रयुक्त की जा सकती हैं।

2. **व्यवहारात्मक चिकित्सा-** इसमें माता-पिता, एवं केयर को यह सहायता दी जाती है कि वह किस तरह से प्रार्थी को प्रोत्साहित करे और समाज में सफलता प्राप्त कर सके।
3. **पारिवारिक सहायता एवं शिक्षा-** इसके अन्तर्गत असक्षम बालकों के माता-पिता को उनसे सम्बन्धित सूचना दी जाती है और उन्हें उस समस्या अथवा बीमारी के बारे में अवगत कराया जाता है ताकि बालक को वह पर्याप्त सहायता दे सके। इसके साथ ही शिक्षा द्वारा बालक की मानसिक स्थिति को भी सुधारा जा सकता है। इसके अलावा निम्न प्रकार की अन्य सेवायें भी दी जाती हैं।
4. **चिकित्सकीय व्यवहारात्मक सेवा-** जब बालक की स्थिति अत्यधिक गम्भीर होती है और उसे चिकित्सालय में भर्ती करवाने की स्थिति आ जाती है तब इस सेवा का प्रयोग किया जाता है। इसके साथ ही माता-पिता को भी पर्याप्त परामर्श दिया जाना सुनिश्चित होता है।
5. **व्यवहारात्मक जीवन कोचिंग-** बाल्यावस्था, जिसे संक्रमण अवस्था भी कहा जाता है, उस समय इस कोचिंग के द्वारा उसे विकासात्मक कौशल सिखाये जाते हैं। जिससे वह आत्मनिर्भर बन सके एवं अपनी अक्षमता के कारण उसकी हीन भावना को निकाला जा सके।
6. **औषधि व्यसन का परामर्श-** वह नशीले पदार्थ जो शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से हानिकारक है। जिनसे क्षणिक प्रसन्नता प्राप्त होती है औषधि व्यसन वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति शरीर संचालन हेतु मादक पदार्थों या औषधियों पर निर्भर हो जाता है। इनमें मुख्य पदार्थ हैं:- धूम्रपान, चरस, गॉजा, अफीम, कोकीन, मर्फीन के इन्जेक्शन, शराब। इन व्यसनों का पता चलने पर इनका उपचार संभव हो पाता है। बालकों में इन व्यसन की लत होने पर सर्वप्रथम परामर्श की मुख्य भूमिका होती है। इसके द्वारा व्यवहार में सकारात्मक सुधार अथवा बदलाव देखे जाते हैं।

व्यवहार चिकित्सा के अन्तर्गत परामर्श मनोविश्लेषण, सामूहिक एवं परिवार चिकित्सा आदि इसके उपचार हेतु प्रयोग किये जाते हैं।

परामर्श के निम्न उद्देश्य होते हैं।

- **संज्ञानात्मक:-** समस्या को समझना एवं समाधान
- **व्यवहारात्मक:-** नई आदतों को विकसित करना और पुरानी आदतों को छोड़ना।
- **परिवारिक:-** पारिवारिक सदस्यों को समस्या से अवगत कराना और उनसे सहयोग की अपेक्षा करना। इस तरह की समस्या से जूझ रहे बालक को संवेगात्मक सहयोग की आवश्यकता होती है जो उसे परिवार वालों से प्राप्त होती है।

यूनिसेफ मानता है कि बाल संरक्षण बच्चों के दुरुपयोग, शोषण, हिंसा एवं अपेक्षा का निवारण करता है। यह बच्चों को अपने अस्तित्व एवं विकास के अन्य अधिकारों तक प्रवर्तित करने की अनुमति भी देता है। बाल संरक्षण यह सुनिश्चित करता है कि बच्चों के पास निर्भर होने के लिए एक सुरक्षा जाल है और यदि वे किसी जोखिम या असुरक्षित परिस्थिति में आ जाते हैं तो उन्हें बचाने एवं उनकी देखभाल की पूरी जिम्मेदारी सरकार की योजना के अन्तर्गत आती है। सरकार द्वारा एकीकृत बाल संरक्षण योजना चलाई गयी है। जिसके मुताबिक संरक्षण का अर्थ है बच्चों के बचपन को सुरक्षित रखना एवं जो बच्चे कमजोर हैं तो उनकी यह कमजोरी उन्हें किसी हानि एवं हानिकारक परिस्थितियों से बचाकर की जा सकती है।

4.7 सारांश

प्रकृति एवं परामर्शदाता की भूमिका के अनुसार परामर्श के मुख्य तीन प्रकार होते हैं:-

1. निर्देशित परामर्श
 2. अनिर्देशित परामर्श
 3. समन्वित परामर्श
- निर्देशित परामर्श के मुख्य प्रवर्तक ई0जी0 विलियमसन थे।
 - निर्देशित परामर्श का केन्द्र बिन्दु परामर्शदाता होता है अर्थात् उसकी मुख्य भूमिका होती है।
 - वह सक्रिय रहता है तथा अपने स्वयं के दृष्टिकोण एवं भावनार्यें स्वतंत्र रूप से प्रकट करता है।
 - अनिर्देशित परामर्श के मुख्य प्रवर्तक कार्ल आर रोजर्स हैं।
 - इस परामर्श में प्रार्थी केन्द्र होता है और उसे उसके विचारों, भावनाओं को अभिव्यक्त करने को प्रोत्साहित किया जाता है।
 - रोजर्स के अनुसार व्यक्ति की मर्यादा में विश्वास, व्यक्ति विश्वास योग्य एवं बुद्धि से अधिक विवेकशील है।

- परामर्श का तीसरा प्रकार समन्वित परामर्श है। इसमें प्रार्थी एवं परामर्शदाता दोनों की भूमिका होती है।
- इसमें परामर्शदाता न तो सक्रिय होता है और ना ही निष्क्रिय।
- भारत में 1974 में एक राष्ट्रीय पालिसी बनाई गयी।
- 2006 में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग का गठन हुआ।
- बाल अधिकार के निम्नलिखित प्रकार हैं: जीवन जीने का अधिकार, संरक्षण का अधिकार, सहभागिता का अधिकार एवं विकास का अधिकार
- असुरक्षित एवं अतिसंवेदनशील वह बालक है जो स्वयं की रक्षा करने में असमर्थ हो।
- इन बालकों के परामर्श निम्न प्रकार के हैं: शोषित बालकों का परामर्श, अक्षम बालकों का परामर्श, औषधि व्यसन का परामर्श

4.8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

सत्य/असत्य में उत्तर दीजिये:-

1. निर्देशित परामर्श के प्रवर्तक कार्ल रोजर्स थे।
2. निर्देशित परामर्श में परामर्शदाता की मुख्य भूमिका होती है।
3. अनिर्देशित परामर्श को प्रार्थी केन्द्रित परामर्श भी कहते हैं।
4. सुग्राहि परामर्श में प्रार्थी केन्द्र बिन्दु होता है।
5. राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग का गठन 2006 में हुआ।
6. परामर्श एक बौद्धिक प्रक्रिया है।
7. अनिर्देशित परामर्श का अन्तिम चरण अनुवर्तक है।
8. प्रार्थी केन्द्रित परामर्श की अवधारणा है कि व्यक्ति विश्वास योग्य है।

उत्तर

1. असत्य
2. सत्य
3. सत्य
4. असत्य
5. सत्य
6. सत्य
7. असत्य
8. सत्य

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. परामर्श से आप क्या समझते हैं? निर्देशित परामर्श की विशेषतायें, अवधारणायें बताइये।
2. अनिर्देशित परामर्श के चरण, अवधारणायें एवं लाभ-सीमाओं को बताइये।
3. सुग्राही (समन्वित) परामर्श के चरण एवं विशेषताओं को लिखिये।
4. बाल संरक्षण एवं बाल अधिकार में अन्तर बताइये एवं असुरक्षित बालकों के परामर्श विधियों पर प्रकाश डालिये।

4.10 सन्दर्भ सूची:-

1. बाल मनोविज्ञान (1995) डा0 प्रफुल्ल एन0 दबे, डा0 विपिन सिंह रायजादा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. निर्देशन एवं परामर्शन (2005) अमरनाथ राय, मधु अस्थाना, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
3. <https://hi.m.wikipedia.org>
4. <https://wikaspedia.org>
5. IGNOUS (2005) Counselling Psychology MPCE-021
6. शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका (2015) राधाबल्लभ उपाध्याय, सीताराम जायसवाल, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

इकाई 5. परामर्श- समाधान केंद्रित, एकीकृत, एच आई वी एड्स और लत/चिंता (Counselling Solution- focused, Integrated, HIV/AIDS and Addiction/ Anxiety)

इकाई संरचना

- 5.1 प्रस्तावना
- 5.2 उद्देश्य
- 5.3 समाधान केन्द्रित चिकित्सा परामर्श
- 5.4 समाधान-केंद्रित चिकित्सीय प्रक्रिया
- 5.5 समाधान-केंद्रित चिकित्सा के मूल सिद्धांत
- 5.6 समाधान-केंद्रित चिकित्सा के सामान्य घटक
- 5.7 समन्वयवादी परामर्श
- 5.8 एच.आई. वी/एड्स परामर्श
- 5.9 एच आई वी/एड्स में मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप
- 5.10 व्यसन/चिंता परामर्श
- 5.11 सारांश
- 5.12 शब्दावली
- 5.13 संदर्भ
- 5.14 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने निर्देशित एवं अनिर्देशित परामर्श के बारे में जाना। प्रस्तुत इकाई में आप समाधान केन्द्रित परामर्श, समन्वयवादी परामर्श का अध्ययन करेंगे साथ ही एच आई वी/एड्स परामर्श एवं व्यसन/चिंता परामर्श के बारे में जानेंगे।

5.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- परामर्श के विशिष्ट प्रकारों की गिनती कर सकेंगे।
- समाधान केन्द्रित परामर्श की व्याख्या कर सकेंगे।
- समन्वयवादी परामर्श को स्पष्ट कर सकेंगे।
- एच आई वी/एड्स परामर्श का वर्णन कर सकेंगे।
- व्यसन/चिंता परामर्श को स्पष्ट कर सकेंगे।

- विभिन्न परामर्शों में प्रयुक्त उपचारों को स्पष्ट कर सकेंगे।

5.3 समाधान केन्द्रित परामर्श

समाधान केन्द्रित परामर्श (SFBT), जिसे केवल सॉल्यूशन-फोकस्ड थेरेपी भी कहा जाता है, एक लक्ष्य केंद्रित मनोचिकित्सा दृष्टिकोण है जिसे स्टीव डे शजर (1940-2005), और इनसो किम बर्ग (1934-2007) और 1970 के अंत में उनके सहयोगियों ने (मिल्वौकी, विस्कॉन्सिन में) शुरू किया था। इसकी मान्यता यह है कि प्रार्थी स्वयं परामर्श के उद्देश्य का चयन करेगा तथा परिवर्तन के लिए ज़रूरी उपायों को वह स्वयं ही धारण करता है। परामर्शदाता विशिष्ट, लघु व सकारात्मक पदों में विवरण को प्रोत्साहित करता है। विवरण समस्या की अनुपस्थिति के बजाय समाधान की उपस्थिति का समर्थन करता है। पूर्व घटित घटनाओं के विषय में विमर्श क अपेक्षा अपेक्षित समाधान की अपेक्षा को रोकने के बजाय नयी शुरुआत का समर्थन करता है। परामर्शदाता प्रार्थी के लक्ष्यों को तथा प्रार्थी के सन्दर्भ ढाँचा के अनुसार सम्मानपूर्ण, दोषारोपण न करने उपायों को अपनाता है।

5.4 समाधान-केंद्रित चिकित्सकीय प्रक्रिया:

- यह समस्या-समाधान के बजाय समाधान-निर्माण पर आधारित है।
- चिकित्सक का ध्यान अतीत की बजाय परामर्शी के वांछित भविष्य पर होना चाहिए।
- परामर्शी को वर्तमान उपयोगी व्यवहारों की आवृत्ति बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- चिकित्सक परामर्शी के संज्ञान्त्मक अवांछित पैटर्न की पहचान कर सभी सही संभावित विकल्प खोजने में मदद करते हैं।
- कौशल निर्माण और व्यवहार चिकित्सा हस्तक्षेप से इतर भ, इस मॉडल के अनुसार समस्या का समाधान स्वयं परामर्शी के पास मौजूद होता है।
- परिवर्तन छोटी से बड़ी वृद्धि की ओर अगुवाई करता है।
- परामर्शी के समाधान, परामर्शी या चिकित्सक द्वारा पहचान की गई समस्या से सीधे संबंधित नहीं होते हैं।
- समस्याओं के निदान और उपचार हेतु परामर्शी को प्रोत्साहित करने के लिए चिकित्सक का संवादात्मक कौशल आवश्यक है।

Corey (1985) के अनुसार “Solution-Focused Brief Therapy differs from traditional treatment in that traditional treatment focuses on exploring problematic feelings, cognitions, behaviors, and/or interaction, providing interpretations, confrontation, and client education.

इसके विपरीत, एसएफबीटी परामर्शी को भविष्य हेतु एक वांछित दृष्टि विकसित करने में मदद करती है, जिसमें समस्या हल हो जाती है। इस प्रकार प्रत्येक परामर्शी लक्ष्यों, रणनीतियों, शक्तियों और संसाधनों की उनकी अपनी उभरती परिभाषाओं के आधार पर समाधान के लिए अपना रास्ता खुद ढूंढता है। यहां तक कि उन मामलों में जहां परामर्शी समाधान के लिए बाहरी संसाधनों का उपयोग करने के लिए आते हैं, उन संसाधनों की प्रकृति को परिभाषित करने व वे कैसे उपयोगी होंगी इसका वह स्वयं नेतृत्व करता है।

5.5 समाधान-केंद्रित चिकित्सीय प्रक्रिया:

एसएफबीटी एक दृष्टिकोण है जो समस्याओं के निदान और उपचार पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय परामर्शी को कैसे बदलता है, इस पर केंद्रित है। जैसे, यह परिवर्तन की भाषा का उपयोग करता है। समाधान-केंद्रित साक्षात्कारों में उपयोग किए जाने वाले हस्ताक्षर प्रश्नों का उद्देश्य एक चिकित्सीय प्रक्रिया स्थापित करना है जिसमें व्यवसायी परामर्शी के शब्दों और अर्थों (परामर्शी के लिए क्या महत्वपूर्ण है, वे क्या चाहते हैं, और संबंधित सफलताएं), को सुनते और आत्मसात करते हैं फिर परामर्शी के प्रमुख शब्दों और वाक्यांशों से जोड़कर अगला प्रश्न तैयार करते और पूछते हैं। चिकित्सक फिर से सुनना और आत्मसात करना जारी रखते हैं क्योंकि परामर्शी फिर से उनके संदर्भ के प्रेम से उत्तर देते हैं, इस प्रकार फिर से परामर्शी की प्रतिक्रियाओं से जुड़कर अगला सवाल तैयार करते और पूछते हैं। यह प्रक्रिया सुनने, आत्मसात करने, जुड़ने की निरंतर प्रक्रिया के माध्यम से होती है। परामर्शी जवाब देता है, चिकित्सक और परामर्शी (client) साथ मिलकर नए और परिवर्तित अर्थों का और समाधानों का निर्माण करते हैं।

5.6 समाधान-केंद्रित चिकित्सा के सामान्य घटक:

अधिकांश मनोचिकित्सा बातचीत (conversation) पर आधारित होती है SFBT में इन वार्तालापों के लिए तीन मुख्य सामान्य तत्व हैं।

- इसमें सर्व समावेशी विषय होते हैं, SFBT वार्तालाप परामर्शी की चिंताओं पर केंद्रित होते हैं। इसमें परामर्शी के अपवाद, शक्ति, दृष्टिकोण से संबंधित साधन, समाधान प्राप्त करने हेतु परामर्शी के प्रेरणा स्तर एवं आत्मविश्वास का मापन, और पसंदीदा भविष्य तक पहुँचने की परामर्शी की प्रगति के लिए चल रही स्केलिंग को प्राथमिकता दी जाती है।

- समाधान-केंद्रित (SF) वार्तालाप में सह-निर्माण या परामर्शी में नए अर्थों की एक चिकित्सीय प्रक्रिया शामिल होती है जो काफी हद तक चिकित्सक द्वारा निर्धारित की जाती है, जिसमें परामर्शी द्वारा पूर्व में किये गए वार्तालाप से सम्बन्धित विषयों के बारे में पूछा जाता है
- चिकित्सक कई विशिष्ट प्रतिक्रिया और प्रश्नावली तकनीकों का उपयोग करते हुए परामर्शी को एक पसंदीदा भविष्य दृष्टि का निर्माण करने, अतीत और भविष्य की सफलतम प्रयासों को देखने एवं उसके व्यवहार को वास्तविक बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है

भविष्य में अलग-अलग परामर्शी (client) क्या चाहते हैं, इसके बारे में समाधान केंद्रित (SF) वार्तालाप के माध्यम से लक्ष्य तैयार और प्रवर्धित किया जाता है। नतीजतन, एसएफबीटी में, परामर्शी लक्ष्य निर्धारित करता है। प्रारंभिक सूत्रीकरण होने के उपरांत परामर्शी चिकित्सा लक्ष्यों से संबंधित अपवादों पर ध्यान केंद्रित करता है साथ ही परामर्शी अपने लक्ष्य प्राप्ति की उपयोगी अगले चरणों का सह-निर्माण करता है।

5.7 समन्वयवादी परामर्श

विगत कुछ दशकों से परामर्शन के क्षेत्र में विभिन्न उपागमों के समन्वयन का प्रचलन बढ़ा है। अनेक समन्वयवादी उपागमों का विकास हुआ तथा अनेक पुस्तकों का प्रकाशन भी हुआ। समन्वयन की दिशा में यह प्रगति एक आन्दोलन का रूप ले चुकी है। होलैंडर्स (2003) इस आन्दोलन के कारण के रूप में निम्नवत पाँच आधुनिक प्रवृत्तियों को रेखांकित करते हैं।

- i. **परामर्शन के क्षेत्र की परिपक्वता-** होलैंडर्स समन्वयन की दिशा में हो रही प्रगतियों को परामर्शन मनोविज्ञान की परिपक्वता की एक स्वाभाविक परिणति मानते हैं।
- ii. **अस्त व्यस्त दशा से सुव्यवस्था की दिशा में अग्रसर होना-** उपागमों की बढ़ती हुई संख्या जहाँ उस क्षेत्र की बढ़ती परिपक्वता एवं संवृद्धि की परिचायक है, वहीं इस क्षेत्र के अस्त व्यस्त रूप को प्रस्तुत करती है जिससे बचने/बचाने के लिए परामर्शदाता समन्वय की दिशा में, संघटन की दिशा में कार्य करने लगे। होलैंडर्स की इस विषय में प्रतिक्रिया यह
- iii. है कि अभी तक इस दिशा में प्रगति मात्र आरंभिक है और अभी तक इस प्रवृत्ति द्वारा उपागमों की संख्या में वृद्धि मात्र ही हुयी है। वास्तविक समन्वयन अभी बाकी प्रतीत होता है।
- iv. **पूर्व उपागमों की समालोचनात्मक व्याख्या-** गुरु परंपरा से दूर उपागमों की समालोचनात्मक व्याख्या की दिशा में बढ़ते कदम परामर्शन के क्षेत्र में फ्रॉयड, राजर्स, युंग, स्किनर जैसे मुख्य धारा के उपागमों को विकसित करने वाले परामर्शदाताओं की दशा गुरु जैसी हो गयी जिसके अनुयायी उनके द्वारा सुझाये गए मार्ग का

अन्धानुकरण करने लगे, किन्तु वैज्ञानिक या दार्शनिक सोच वाले परामर्शदाताओं को इन उपागमों की समालोचनात्मक व्याख्या एवं मूल्यांकन की आवश्यकता का अनुभव हुआ। पॉल (1967) ने परामर्शदाताओं से आग्रह किया कि उपागमों की सीमा रेखा से बाहर निकलें, उपागमों के विषय में पूछें कि “किसके द्वारा कौन-सा उपचार इस व्यक्ति की इस विशिष्ट समस्या के लिए किन विशिष्ट दशाओं में अधिक प्रभावशाली होगा?”

v. **व्यक्तिगत लक्ष्य अनुसरण की अपेक्षा सामूहिक वृत्तियात्मक जिम्मेदारी पर बल-** जैसे-जैसे परामर्शन के क्षेत्र का प्रसार हुआ परामर्शदाताओं को वृत्तियात्मक संगठनों के माध्यम से अधिकार पत्र की व्यवस्था द्वारा नियंत्रित किया जाने लगा। इस कारण जहाँ परामर्शदाताओं को कोई उपागम अपनाने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है वही सामूहिक जिम्मेदारी, एक कूपरे के विचारों को सुनने और लोगों के हित में एककूपरे के समीप आकर कार्य करने का आग्रह भी प्रस्तुत होता है।

vi. **दार्शनिक परिवेश-** बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में दार्शनिक चिंतन के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों, विशेषतः उत्तर आधुनिकतावाद का प्रभाव परामर्शन उपागमों के समन्वयन के रूप में भी प्रकट हुआ। उत्तर आधुनिकतावाद के कारण ऐसे सामाजिक वैचारिक परिवेश की रचना हुई जिसके कारण परामर्शन मनोविज्ञान के क्षेत्र में समन्वयन एक प्रभावशाली आन्दोलन के रूप में प्रकट हुआ है।

१. संज्ञानात्मक-विश्लेषणात्मक उपचार (Cognitive Analytic Therapy)- संज्ञानात्मक विश्लेषणात्मक उपागम का विकास एंथानी राइल (Anathony Ryle, 1927) द्वारा 1980 एवं 1990 के दशक में किया गया। राइल ने इस विषय में तीन पुस्तकों- Cognitive-Analytic Therapy 1990; Cognitive-Analytic Therapy: Developments in Therapy and Practices (Edited), 1995; Cognitive-Analytic Therapy Borderline Personality Disorders: the Method and the Model 1997; का लेखन/संपादन किया। यह सिद्धांत संक्षिप्त नाम CAT रूप में जाना जाता है।

संज्ञानात्मक विश्लेषणात्मक उपचार- परामर्शन प्रणाली के तीन चरण होते हैं-

- वर्णन
- हचान/प्रत्यभिज्ञा
- और संशोधन।

इस अवस्था में, जो बहुधा एक ओर से चार सत्रों तक चलती है। परामर्शदाता प्रार्थी के इतिहास का वर्तमान समस्याओं के साथसम्बन्ध की दृष्टि से अध्ययन करता है। प्रार्थी को परामर्शन के मुख्य बिंदु को समझने में सहायता दी जाती है। परामर्शदाता समस्या निरूपण के बाद पुनर्निरूपण पत्र लिखता है जिसमें प्रार्थी आवश्यक संशोधन करता है तथा यह जान पाता है कि परामर्शदाता उसे किस सीमा तक समझ रहा है। आपने जीवन की कथा को इस प्रकार प्रस्तुत किये जाने से परामर्शी

के अतीत के साथ संपर्क घटाने में सहायता मिलती है तथा अपनी कथा में संशोधन करने की क्रिया में सशक्तिकरण का बोध होता है। पत्र में अधिगम सम्बन्धी आवश्यकताओं का भी वर्णन किया जाता है। समस्या का वर्णन और अतीत एवं वर्तमान अनुभवों से इसका सम्बन्ध स्पष्ट हो चुकने के पश्चात प्रत्यभिज्ञा चरण का आरम्भ होता है। इस चरण में प्रार्थी वर्णन को अर्थपूर्णता प्रदान करने के लिए संघर्ष करता है। यह समझने का प्रयत्न करता है कि “क्या हो रहा है”, “क्या चल रहा है”。 व्यक्ति के अवलोकन आत्म को सशक्त किया जाता है जिसके आधार पर घटनाओं के क्षितिज पर विचार करते हुए यह समझने का प्रयत्न किया जाता है कि (प्रार्थी द्वारा) वह प्रक्रियात्मक प्रतिक्रिया पर किस प्रकार नियंत्रण स्थापित कर सकता है।

उक्त प्रत्यक्षण के विकास के पश्चात संशोधन कार्य आरम्भ होता है जहाँ नए विकल्पों का अन्वेषण किया जाता है, प्रक्रिया के बंद चक्रव्यूह को तोड़ा जाता है तथा नए निर्णय अपनाये जाते हैं।

संज्ञानात्मक विश्लेषणात्मक उपागम में उपचार का संयुक्त रूप में मूल्यांकन किया जाता है। सत्रों (प्रायः सोलह) के अंत में चेतन अभिप्राय पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है। परामर्शदाता अपनी अन्य सहयोगी क्षमताओं स्वप्न विश्लेषण, सृजनात्मक कला, अंतर्वैयक्तिक अन्वेषण और गेस्टाल्ट संपर्क का भी उपयोग कर सकता है। इस प्रकार का अवसर मनोपचारक और प्रार्थी की सृजनात्मकता को फलीभूत होने का अवसर प्रदान करता है। परामर्शदाता प्रार्थी के साथ किसी प्रकार के कार्य के उद्देश्य को स्पष्ट करने की आवश्यकता आने पर स्पष्टीकरण भी देता है।

CAT की प्रक्रिया आत्म-प्रत्यावर्तन प्रतिरूप में देखी जा सकती है। यह प्रक्रिया प्राप्त लाभ को बनाये रखने में सहायक होती है। व्यक्ति जीवन की संभावनाओं के प्रति खुला दृष्टिकोण अपनाता है तथा निरंतर आत्म-प्रत्यावर्तन करते रहता है।

२. बहुआयामी उपचार (Multimodal Therapy) लजारस (Arnold Lazarus, 1932) का प्रशिक्षण मनोविश्लेषणात्मक, मनोगत्यात्मक और व्यक्ति केन्द्रित सिद्धांत एवं प्रणाली में हुआ था और 1958 में उन्होंने सर्वप्रथम व्यवहार चिकित्सक और व्यवहार उपचार पदों का एक शैक्षिक पत्र में उपयोग किया। लजारस ने व्यवहार उपचार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के अनुवर्ती अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि उनमें समस्या की पुनरावृत्ति अन्य व्यक्तियों जिन्होंने व्यवहार उपचार के साथ संज्ञानात्मक प्रविधियों का भी लाभ प्राप्त किया था, की तुलना में अधिक थी। अतः 1970 के दशक में लजारस संज्ञानात्मक-व्यवहारात्मक प्रविधियों की एक व्यवस्थित विस्तृत श्रृंखला का उपयोग किये जाने के लिए वकालत करने लगे। अपने अनुवर्ती अध्ययनों से वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि परामर्शन से प्राप्त लाभों के अनुरक्षण में कई प्रविधियों के सम्मिलित उपयोग का योगदान किया जाना उपयोगी होता है। इस ध्येय से लजारस ने बहुआयामी उपचार उपागम विकसित किया जिसमें मानव व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों की व्यापक रूप में पहचान करके उपचार पर बल दिया जाता है।

प्रविधियों एवं हस्तक्षेपों का उपयोग परामर्शदाता और प्रार्थी की विशेषताओं एवं दक्षताओं, परामर्शन सम्बन्ध और प्राविधि की विशिष्टता के आधार पर किया जाता है। अनेक संज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक प्रविधियों के अतिरिक्त अन्य उपागमों, जैसे गेस्टाल्ट उपागम की प्रविधियों (रिक्त स्थान विधि) का भी उपयोग किया जाता है। एक 15 पृष्ठीय बहुआयामी जीवन वृत्तांत अनुसूची (Multimodel life history inventory-MLHI) तैयार की जाती है जिसमें आवश्यक सूचनाएं प्रार्थी द्वारा सत्रों के मध्य में घर पर भर ली जाती हैं। इसका एक दूसरा भाग होता है जो उस समय उपयोग में लिया जाता है जब प्रयुक्त प्रविधि विफल हो जाती है। लजारस (1989) ने 1 से 7 बिंदु मापन के आधार पर एक संरचनात्मक रूपरेखा भी तैयार करने का सुझाव दिया जिसमें प्रार्थी सैट आयामों पर अपना आत्मनिष्ठ मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। स्टेफेन पामर (1996, 2000) के अनुरूप प्रयुक्त प्रविधियों की चित्रण तालिका निम्नवत प्रस्तुत है।

तालिका: बहुआयामी उपचार में बहुधा प्रयुक्त होने वाली तकनीकें

आयाम (Modality)	तकनीकें एवं हस्तक्षेप (Techniques and interventions)
व्यवहार (Behaviour)	व्यवहार पूर्वाभ्यास (Behaviour rehearsal) रिक्त कुर्सी (Empty Chair) प्रदर्शन कार्यक्रम (Exposure Programme) स्थिर भूमिका चिकित्सा (Fixed role therapy) प्रतिरूपण (Modelling) विरोधाभासी आशय (Paradoxical intention) मनो-नाटक (Psychodrama) प्रबलन कार्यक्रम (Reinforcement Programme) प्रतिक्रिया निरोधन/मूल्य (Response prevention/cost) जोखिम अनुभव (Risk training experience) आत्म निरीक्षण एवं आलेख (Self monitoring and recording)
भाव (Affect)	उद्दीपक नियंत्रण (Stimulus control) शर्म-आक्रमण (Shame attacking) क्रोध प्रदर्शन/प्रबंधन (Anger expression/management) चिंता प्रबंधन (Anxiety management) अनुभूति पहचान (Feeling identification)

संवेदना (Sensation)	जैव पुनर्निविशान (Bio-feed back) सम्मोहन (Hypnosis) ध्यान (Meditation) विश्रान्ति प्रशिक्षण (Relaxation Training) संवेदी केन्द्रण प्रशिक्षण (Sensate focus training) देहली प्रशिक्षण (Threshold training)
बिम्ब (Imagery)	भविष्य विरोधी आघात बिम्ब (Anti future shock imagery) सहचरित बिम्ब (Associated imagery) विकर्षणात्मक बिम्ब (Aversive imagery) सामंजस्यीकरण बिम्ब (Coping imagery) काल्पनिक प्रदर्शन (Imaginal exposure) विधेयात्मक बिम्ब (Positive imagery) तार्किक सांवेगिक बिम्ब (Rational motive imagery) काल प्रक्षेपण बिम्ब (Time Projection imagery)
संज्ञान (Cognition)	बिबलियोथेरेपी (Biblio-therapy) त्रुटिपूर्ण अनुमानों को चुनौती (Challenging faulty inferences) संज्ञानात्मक रिहेर्सल (Cognitive rehearsal) सामंजस्यकारी कथन (Coping statements) मिथ्या धारणाओं में सुधार (Corrective misconceptions) विवादास्पद अतार्किक विश्वास (Disputing irrational beliefs) केन्द्रण (Focusing) विधेयात्मक आत्म कथन (Positive self statements) समस्या समाधान प्रशिक्षण (Problem solving training) तार्किक मतान्तरण (Rational proselytization) आत्मस्वीकृति प्रशिक्षण (Self acceptance training) चिंतन विराम (Thought stopping)
अन्तःवैयक्तिक (Interpersonal)	आग्रह प्रशिक्षण (Assertion training) संचार प्रशिक्षण (Communication training) अनुबंध (Contracting) स्थिर भूमिका चिकित्सा (Fixed role therapy)

	मित्रता/आत्मीयता प्रशिक्षण (Friendship/intimacy training) श्रेणीकृत यौनिक उपागम Graded sexual approaches) विरोधाभासी आशय (Paradoxial intentions) भूमिका वहन (Role play) सामाजिक कौशल प्रशिक्षण (Social skill training)
औषधि/जैविक (Drug/Biology)	मदिरा न्यूनीकरण कार्यक्रम (Alcohol reduction programme) जीवन शैली परिवर्तन, उदा० व्यायाम, पौष्टिक भोजन आदि (Life style changes, exercise, nutrition etc.) चिकित्सक या अन्य विशेषज्ञ को संदर्भित (Referred to physicians or other specialists) धूम्रपान विराम कार्यक्रम (Stop smoking programme) भार में कमी तथा अनुरक्षण कार्यक्रम (Weight reduction and maintenance programme)

दक्ष-सहयोगी मॉडल (Skilled Helper Model)

दक्ष-सहयोगी मॉडल का विकास गेरार्ड ईगन (**Gerard Egan**, 1975) ने किया है से सतत करते आ रहे हैं। आरम्भ में गेरार्ड ने व्यक्तिक एवं समूह कार्य की दशाओं से सहयोगी (परामर्शदाता) के लिए संचारण/सम्प्रेषण दक्षताओं का वर्णन किया। गेरार्ड का यह विचार था कि “जीवन की समस्याओं की व्याख्या मात्र (जैसा कि उनके उपागमों में होता है) एक अपर्याप्त प्रयास है। इनका यह विश्वास था कि सामाजिक दशाओं एवं प्रणालियों के प्रभावों एवं अवसरों का समुचित प्रबंधन सहायता की प्रक्रिया के माध्यम से किया जा सकता है। दक्ष-सहयोगी मॉडल सहायता देने वाली तीन अवस्थाओं वाली प्रक्रिया है। इन तीन अवस्थाओं को आरम्भ में अन्वेषण, बोध और कार्यवाही कहा गया। गेरार्ड (2001) ने तीसरी अवस्था को “वहाँ पहुँचना” (Getting there) कहा है।

दक्ष-सहयोगी मॉडल समन्वयात्मक एवं पारसैद्धान्तिक हैं (**Connor**, 2000) यह मॉडल राजर्स के व्यक्तिगत केन्द्रित उपागम के तत्वों का उपयोग करता है किन्तु इसके मुख्य बल संज्ञानात्मक व्यवहारात्मक है जिसमें बैडूरा, बेक, इल्लिस, सेलिंगमैन और स्ट्रोंग का प्रभाव परिलक्षित होता है। ईगन ने इस मॉडल को ‘समस्या प्रबंधन मॉडल’ या सहायता के लिए प्रारूप के रूप में प्रस्तुत किया।

प्रार्थी में परिवर्तन उत्पन्न हो उसके लिए परामर्शदाता में कुछ विशेषताएं होनी चाहिए जैसे- निष्ठा (**genuineness**), सम्मान (**respect**), एवं परानुभूति (**empathy**)। कान्गर

(2000) ने प्रभावशाली कार्यकारी सम्बन्ध के विकास की आवश्यकता, जिसमें सहयोग एवं चुनौती की उपयुक्त मात्रा हो, को महत्वपूर्ण बताया है। सहायता एवं परिवर्तन की तीनों अवस्थाओं में संबंधों की जीवन्तता आवश्यक बताई गयी है।

➤ **प्रथम अवस्था** में प्रार्थी अपना वृत्तांत प्रस्तुत कर सके उसके लिए उसे सहयोग की आवश्यकता होती है। ध्यान देना, सुनना, सार संक्षेप करते रहना, अनुभूतियों का प्रत्यावर्तन, छानबीन और स्पष्टीकरण की माँग जैसी दक्षताओं की आवश्यकता होती है। अंध-क्षेत्रों की पहचान के लिए परानुभूति चुनौती द्वारा ही समस्या की उपयुक्त व्याख्या या संसाधनों एवं अवसरों के अनुपयोग या अल्प-उपयोग की दशा जैसे प्रार्थी के अंध-क्षेत्रों की पहचान संभव हो पाती है। प्रथम अवस्था के लिए परामर्शदाता (सहायक) की आवश्यक दक्षताओं में विषयों पर केन्द्रण, प्राथमिकताओं के निर्धारण एवं उत्तोलन का अन्वेषण की दक्षता की गणना की जाती है।

परिदृश्य की रूपरेखा विकसित करने के लिए सृजन एवं कल्पना की क्षमता होनी चाहिए, परामर्शदाता अनेक प्रकार से प्रार्थी के पार्श्वचिंतन को प्रोत्साहित कर सकता है। इसके लिए ड्राइंग, निबंध, चित्रांकन या मस्तिष्क उद्वेलन की क्रियाओं को प्रयुक्त किया जा सकता है। इन सबके पीछे यह प्रयास निहित होता है कि किसी प्रकार प्रार्थी के लिए संभावनाओं का द्वार खुले, वह अकल्पनीय के विषय में कल्पना करने लगे और वास्तविक संभावनाओं का अनुकरण होने लगे। परामर्शदाता के अन्दर यह दक्षता होनी चाहिए कि वह प्रार्थी की महत्वपूर्ण इच्छाओं को प्रोत्साहित करे तथा बाधित करने वाले कर्तव्यों को दूर करे।

➤ इस मॉडल के **द्वितीय चरण** की पूर्ति हेतु लक्ष्य निर्धारण एवं लक्ष्य के प्रति समर्पण के परीक्षण की दक्षता उपयोगी होती है।

इस दृष्टि

से **SMART (Specific Measurable Achievable, Realistic, Time frame)** को अच्छी रणनीति माना जाता है। लाभ हानि मूल्यांकन विधि द्वारा उपयुक्त लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है।

➤ **तृतीय अवस्था** के लक्ष्य को प्राप्त कर सकने में सहायक सिद्ध हो पाने के लिए परामर्शदाता/दक्ष सहायक में प्रार्थी के मस्तिष्क को उद्वेलित कर उसके लिए सर्वोपयुक्त योजना का चयन कर पाने की दक्षता होनी चाहिए, इस अवस्था में शक्ति क्षेत्र विश्लेषण जैसी विधियों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार के विश्लेषण द्वारा यह निर्धारित करके कि लक्ष्य प्राप्ति में कौन कारक सकारात्मक सहायक या नकारात्मक बाधक हैं। सकारात्मक घटकों को मजबूत करने और नकारात्मक घटकों को क्षीण करने का उपाय किया जा सकता है। चुनौतियों की पूर्व जानकारी से व्यक्ति को पूर्व तैयारी का अवसर

प्राप्त होता है। अतः परामर्शदाता चुनौतीपूर्ण मार्ग के विश्लेषण जैसी विधियों का उपयोग करता है।

पार-सैद्धांतिक उपागम (Trans-Theoretical Approach)

प्रोशास्का एवं डिक्लिमेंट (Prochaska and Diclemente) पार सैद्धांतिक उपागम को विकसित करने के लिए 1970 एवं 1980 के दशकों में अमेरिका में सामान्यतः आवश्यकता को महत्वपूर्ण कारण मानते हैं जिसके अंतर्गत प्रचलित मनोपचार प्रणालियों को संकुचित एवं अनिवार्य बताया गया। प्रायः सभी उपागम अपनी प्रणाली को उपयुक्त बताते हुए एक सैद्धांतिक ढाँचा भी विकसित कर लेते हैं। प्रोशास्का ने 1977 में विविध उपागमों के सामान्य तत्वों का सर्वेक्षण आरम्भ किया और 1984 में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी उपागमों में परिवर्तन के लिए मूलतः दस पृथक प्रक्रियाओं का प्रार्थी में परिवर्तन के लिए उपयोग करते हैं। बाद में प्रोशास्का एवं डिक्लिमेंट (1986, 1992) ने इस आधार का विस्तार, विकास एवं शोधकार्य संपन्न करके पार-सैद्धांतिक उपागम प्रस्तुत किया। यह उपागम प्रार्थी में परिवर्तन के लिए व्यावहारिकता पर बल देता है।

यह उपागम परिवर्तन की प्रक्रिया को मनोपचारी ढंग से, प्रकट हुई समस्याओं के विविध स्तरों के साथ समन्वित करता है। इसमें परिवर्तन की (i) प्रक्रियाओं (process), (ii) अवस्थाओं (stages) और (ii) स्तरों का वर्णन किया गया है।

परिवर्तन की दस प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है-

- i. चेतनशीलता का उत्थान- अपने एवं समस्याओं के बारे में सूचना विस्तार,
- ii. आत्म-मुक्ति- चयन, परिवर्तन के लिए विश्वास और समर्पण,
- iii. सामाजिक-मुक्ति- समाज में व्यवहार के लिए विकल्पों का बोध एवं विकल्प-बुद्धि,
- iv. प्रति अनुबंधन- समस्या व्यवहार के विकल्प प्रस्तुत करना,
- v. उद्दीपक नियंत्रण- समस्या व्यवहार बढ़ाने वाले उद्दीपकों का परिहार एवं प्रतिरोध,
- vi. आत्म-पुनर्मूल्यांकन- समस्या के सन्दर्भ में अपने विचार और अनुभूति का पुनर्मूल्यांकन,
- vii. परिवेशीय पुनर्मूल्यांकन- भौतिक परिवेश पर अपनी समस्या के प्रभाव का मूल्यांकन ,
- viii. पुनर्बलन प्रबन्धन- परिवर्तन के लिए स्वयं को पुरस्कृत करना या पुरस्कार पाना,
- ix. नाटकीय अभिव्यक्ति- समस्या और समाधान सम्बन्धी अनुभूतियों का अनुभव करना/अभिव्यक्त करना,
- x. सहायता सम्बन्ध- सहायता करने वालों के प्रति खुलापन रखना एवं विश्वास करना।

परिवर्तन की चार अवस्थाओं का वर्णन किया गया है-

- i. विचार पूर्ण अवस्था- समस्या का बोध नहीं,
- ii. विचार अवस्था- समस्या का बोध होना,
- iii. कार्य अवस्था- परिवर्तन के लिए निश्चयन, परिवर्तन के लिए कार्य करना,

- iv. अनुरक्षण अवस्था- परिवर्तन को सबल करना तथा नयी दक्षताओं का विकास।
परिवर्तन के लिए पाँच स्तरों का भी वर्णन किया गया है-
- i. लक्षण/पारिस्थितिक- समस्याओं की प्रस्तुत विशेषताएं,
 - ii. कुसमयोजनात्मक संज्ञान अनुपयुक्त विचार एवं विश्वास,
 - iii. वर्तमान अंतर्वैयक्तिक द्वन्द- सम्बन्ध समस्याएं,
 - iv. परिवाह/ व्यवस्था द्वन्द- तात्कालिक व्यवस्था की समस्याएँ,
 - v. आंतरिक द्वन्द- स्व के अन्दर की समस्याएँ।

प्रायः प्रथम स्तर की समस्या के लिए व्यावहारिक हस्तक्षेप, कुसमयोजनात्मक संज्ञान परिवर्तन के लिए संज्ञानात्मक प्रविधियाँ, तीसरे और चौथे (अंतर्वैयक्तिक/पारिवारिक द्वंदों) स्तर के लिए व्यवस्थागत हस्तक्षेप तथा व्यक्ति के स्व के अन्दर की समस्याओं के लिए मनोचिकित्सा की निति अपनाई जाती हैं।

विभिन्न अवस्थाओं में से पूर्व विचार अवस्था के लिए शिक्षा, सेल्फ मॉनिटरिंग, अन्वेषण, तादात्मीकरण की विधियाँ प्रयुक्त की जाती हैं। कार्य अवस्था के लिए संज्ञानात्मक व्यवहारात्मक हस्तक्षेप विधियाँ प्रयुक्त करके आत्म-प्रभाव का संवर्धन किया जाता है। अनुरक्षण अवस्था के लिए वैकल्पिक पुनर्बलन प्रणाली, नयी जीवन शैली, प्रति अनुबंधन, उद्दीपक नियंत्रण और आंतरिक द्वंदों के समाधान की प्रविधियों/विधियों को प्रयुक्त किया जाता है।

5.8 एच. आई. वी/एड्स परामर्श

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के युग में मानव जीवन के लिए दीर्घकाल तक टी0 बी0, मलेरिया कैंसर तीन चुनौतियाँ मानी गयी जिनसे बचाव के कारगर उपाय विकसित करने के क्रम में अभी भी प्रयास जारी हैं। तब तक एच आई वी/एड्स के रूप में एक नयी चुनौती प्रकट हो गयी जिसके विषय में आरम्भ में यह माना गया कि किसी व्यक्ति को एड्स होना उसके लिए मृत्यु दण्ड के आदेश पर हस्ताक्षर कर दिए जाने जैसा है। हालाँकि आज स्थिति इतनी विकराल नहीं है किन्तु समस्या अभी भी गंभीर बनी हुई है।

एड्स (**AIDS: Acquired Immune Deficiency Syndrome**) रोग प्रतिरोध की हमारी स्वाभाविक क्षमता को निर्बल बनाने वाला अर्जित रोग संलक्षण है। एड्स के फलस्वरूप जब रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है तब हम रोगों को तीव्रता से ग्रहण करने लग जाते हैं। एड्स का संक्रमण **HIV (Human Immuno-deficiency Virus)** श्रेणी के विषाणु के मानव शरीर में प्रवेश करने से होता है। एच आई वी का संक्रमण विषमलिंगी या समलिंगी यौनिक सम्बन्ध स्थापित करने अथवा एच आई वी संक्रमित व्यक्ति के रक्त का स्वस्थ व्यक्ति के रक्त में संचार से होता है।

एच आई वी/एड्स का उपचार अभी भी जन-सामान्य के लिए सहज व सुगम नहीं हो पाया है। एच आई वी/एड्स से बचाव के लिए आकर्षक एवं सरल उपाय का अभाव, उपचार के लिए औषधियों का अभाव, इनके अतिरिक्त इस रोग के साथ जुड़े लांछना तथा जीव के लिए गंभीर खतरों के कारण पीड़ित व्यक्ति, उसके परिवार, सम्बन्धियों एवं मित्रों के समक्ष मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक स्तरों पर अनेक गंभीर संकट उत्पन्न होते हैं अतः इन सभी लोगों के लिए विविध स्तरों पर परामर्शन आवश्यक हो जाता है।

एच आई वी/एड्स संक्रमित व्यक्ति को शारीरिक चुनौतियों के अतिरिक्त जीवन के सभी आयामों पर संकट का सामना करना पड़ता है। कुछ प्रमुख चुनौतियों को निम्नवत प्रस्तुत किया गया है -

- व्यक्ति समाज एवं परिवार द्वारा बहिष्कृत कर दिया जाता है, उसे सामाजिक लांछन का सामना करना पड़ता है।
- व्यक्ति अपनी दशा के लिए अत्यधिक आत्मग्लानि, पापबोध से पीड़ित देखा जाता है।
- प्रायः पीड़ित व्यक्ति को नौकरी से अलग कर दिया जाता है और इस प्रकार उसे आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है।
- पीड़ित व्यक्ति के समक्ष नयी समायोजनात्मक चुनौतियाँ प्रकट होती हैं।
- व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थ के विकास में इच्छा शक्ति की भूमिका होती है। एड्स से पीड़ित व्यक्ति में प्रायः जीवन के लिए इच्छा शक्ति का अभाव पाया जाता है।

5.9 एच आई वी/एड्स में मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप

एच. आई. वी./एड्स से प्रभावित व्यक्ति संक्रमण की पहचान होने के समय से ही अनेक समस्याओं का सामना कराता है। प्रथम उसे यह लगता है कि उसके मृत्यु दण्ड के आदेश की पुष्टि हो चुकी है। द्वितीय, वह सामाजिक/नैतिक स्तर पर लांछित किया जाता है। तृतीय, परिवार, मित्रों, सहकर्मियों आदि द्वारा सामाजिक स्तर पर बहिष्कृत कर दिया जाता है। यहाँ तक की उस व्यक्ति के उपचार से सरोकार रखने वाले लोग भी उपेक्षा करते हैं। चतुर्थ, उपचार की ऊँची कीमत के कारण उसके समक्ष आर्थिक संकट प्रकट होता है। उक्त सभी के संयुक्त प्रभाव का सामना कर पाने के लिए पीड़ित व्यक्ति को परामर्शन सहायता की आवश्यकता होती है। व्यक्ति की पहली आवश्यकता ऐसे स्वैच्छिक संगठनों के विषय में जानकारी प्राप्त करना होता है जो उसे विभिन्न स्तरों पर सहायता प्रदान कर सकते हैं। वस्तुतः एच आई वी/एड्स की जाँच होने से पहले ही मनोवैज्ञानिक परामर्शन की आवश्यकता समुत्पन्न हो जाती है क्योंकि पहले तो व्यक्ति को एच आई वी/एड्स की जाँच सम्बन्धी विचार/प्रस्ताव के साथ ही समायोजित होना पड़ता है तथा परीक्षणोंपरांत आने वाली किसी अशुभ सूचना का सामना कर पाने के लिए भी तैयार होना पड़ता है। परीक्षण से पूर्व सभी प्रार्थियों को मनोवैज्ञानिक परामर्शन एक नियमित प्रक्रिया के अधीन आवश्यक रूप से उपलब्ध कराया जाना चाहिए (Bernard Ratigan, 2000). ऐसा

परीक्षण कराने के विचार मात्र से अधिकतर व्यक्तियों में संवेगिक संकट प्रकट हो जाता है। ऐसे व्यक्ति भी एच आई वी/एड्स के भय से ग्रसित पाए जाते हैं जोकि संक्रमण मुक्त होते हैं। ऐसा भय मनोविक्षिप्तता या मनोग्रस्तता बाध्यता का परिणाम भी हो सकता है। ऐसे प्रार्थी के लिए संज्ञानात्मक व्यवहारात्मक उपचार पद्धति उपयुक्त मानी जाती है। एच. आई. वी./एड्स से पीड़ित व्यक्तियों के समक्ष जब अलग-थलग कर दिए जाने का संकट आता है तब परामर्शदाता का कर्तव्य उपलब्ध सेवाओं का सदुपयोग सहज बनाना होता है।

एच आई वी/एड्स के उपचार के लिए अनेक ऐसी कारगर औषधियों का अब विकास हो चुका है जो जीवन की संभावना को प्रबल करते हैं। किन्तु ऐसा पाया गया है कि जिन व्यक्तियों में स्वयं को मनोवैज्ञानिक स्तर पर संगठित करने की सामर्थ्य होती है वे उपचार अधिक अच्छे ढंग से स्वीकार करते हैं। परामर्शन सहायता के फलस्वरूप व्यक्ति लम्बी आयु से सम्बंधित चुनौतियों का सामना कर सकता है।

एच. आई. वी./एड्स परामर्शन/उपचार के क्षेत्र में मानवतावादी, संज्ञानात्मक अस्तित्ववादी एवं सर्वांग उपागम अधिक प्रयुक्त होता है। प्रार्थी को जिस प्रकार परिवार/प्रणालीगत स्तर पर सहायता की आवश्यकता होती है उसे देखते हुए सर्वांग उपागम की उपयोगिता महत्वपूर्ण हो सकती है। चूँकि समस्या का मौलिक समाधान विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा किया जाना होता है अतः परामर्शदाता/मनोपचारक को कार्यदल के सक्रिय सदस्य के रूप में कार्य करने की आवश्यकता होती है।

एच. आई. वी. संक्रमित व्यक्ति परीक्षणोंपरांत सर्वप्रथम परिणाम के बारे में अविश्वास की प्रतिक्रिया से आरम्भ करता है किन्तु तत्पश्चात यह पूरी तरह टूट जाने की अवस्था में पहुँचता है। परामर्शन कार्य द्वारा उसे अपनी दशा का सृजनात्मक रूप में सामना करते हुए लम्बी आयु तक सफलता पूर्वक जीवन यापन करने की दशा में सहायता दी जा सकती है। व्यक्ति के समक्ष जीवन के संकट के फलस्वरूप खतरे एवं चुनौतियाँ दोनों ही प्रकट होती हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए निराशा, असहायता जैसी नकारात्मक अनुभूतियाँ उपयुक्त नहीं होती हैं। सामाजिक स्तर पर क्या उचित और अनुचित है इस विषय का पुनर्मूल्यांकन किया जा सकता है। व्यक्ति के लिए आत्मग्लानि एवं लज्जा की अनुभूति से बाहर आने की आवश्यकता होती है। मनोपचार/परामर्शन के अंतर्गत इस विषय में कार्य किया जा सकता है। प्रार्थी के लिए समग्र प्रयास में गोपनीयता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

कुछ प्रार्थी द्वारा आत्महत्या, ऐच्छिक मृत्यु की माँग जैसे विचार प्रस्तुत किया जा सकता है, वे अपनी वसीयत तैयार कराना चाहते हैं। ऐसे सन्दर्भ में परामर्शन कार्य का उद्देश्य लम्बी आयु के लिए संघर्ष हेतु प्रार्थी को तैयार करना होना चाहिए क्योंकि जीवन समापन एवं जीवनोपरांत विषयों पर विचार-विमर्श से उपचार एवं समायोजन कार्य प्रभावित होता है।

5.10 व्यसन/चिंता परामर्श

औषधि साधारणतः ऐसे पदार्थ के रूप में परिभाषित की जाती है जिसका सेवन पोषण के अतिरिक्त किसी अन्य कारण से किया जाता है तथा इसकी विवेचना उस दशा में की जाती है जब इसका अधिक-अनियंत्रित सेवन हमें व्यसन की ओर ले जाता है तथा हमारी शारीरिक, सामाजिक एवं आर्थिक कुशलता में पर्याप्त कमी आती हैं। (Phil and Peterson, 1992). इस प्रकार औषधि व्यसन साधारणतः व्यक्ति द्वारा चिंता, तनाव या पीड़ा के प्रतिरोध के लिए अथवा आनंदानुभूति के लिए बिना किसी उपचारात्मक उपयोग के अथवा चिकित्सकीय परामर्श के बिना स्वयं के स्तर पर किया जाने वाला उपयोग हैं। औषधि उपयोग से आरम्भ हुआ व्यवहार औषधि दुरुपयोग में परिवर्तित हो जाता है एवं लम्बे समय तक दुरुपयोग होने पर दुरुपयोग में लायी जा रही औषधि के लिए निर्भरता उत्पन्न हो जाती है, व्यक्ति में उस औषधि की लत लग जाती है, व्यक्ति औषधि व्यसनी बन जाता है।

औषधि व्यसन के कारण

औषधि व्यसन के कारणों को प्रस्तुत करने वाले मॉडलों को मुख्यतः तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है-

- **बायोपैथोलॉजिकल जेनेटिक मॉडल:** बायोपैथोलॉजिकल जेनेटिक मॉडल के अनुसार जेनेटिक विकृति सम्बन्धी कारणों से औषधि व्यसन की संभावना बढ़ जाती है। इस मॉडल के दूसरे रूप में औषधि व्यसन का कारण दैहिक कारकों में निहित बताया गया है।
- **साइकोपैथोलॉजिकल तथा पर्सनालिटी मॉडल:** साइकोपैथोलॉजिकल तथा पर्सनालिटी मॉडल में व्यक्तित्व की विशेषताओं अर्थात् व्यक्तित्व शीलगुणों को औषधि व्यसन की प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी बताया गया है। इसके अनुसार व्यक्तित्व में निहित व्यक्तित्व शीलगुण या मनोविकृति व्यक्ति में ऐसे संवेग विकसित करते हैं जिनके प्रभाव में (जिससे मुक्त होने के लिए) व्यक्ति औषधियों का दुरुपयोग करता है। इस सिद्धांत के अनुसार औषधि व्यसन व्यक्ति के व्यक्तित्व में निहित मनोवैज्ञानिक विकृति का एक लक्षण मात्र है। इस प्रकार इस मॉडल के अनुसार औषधि व्यसन की समस्या का समाधान करने के लिए अन्तर्निहित मनोवैज्ञानिक विकृति को दूर किया जाना चाहिए
- **सोशल तथा बिहेवियरल मॉडल:** सोशल तथा बिहेवियरल मॉडल के अनुसार औषधि व्यसन सामाजिक परिवेश के प्रभाव में सीखा गया व्यवहार है। हमारे समुदाय/समूह द्वारा अनेक प्रकार के व्यवहारों का प्रबलन (**Reinforcement**) अनेक व्यवहारों के सीखने का आधार होता है। मद्यपान एवं औषधि व्यसन ऐसे ही समाज अधिगमित व्यवहार हैं। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, व्यावसायिक

समारोहों में औषधि व्यसन का बढ़ता प्रचलन इसी व्याख्या के अनुरूप घटित हो रही घटना हैं।

औषधि व्यसन के बचाव के उपाय-

औषधि व्यसन से बचाव के उपाय निम्नवत प्रस्तुत हैं-

- औषधि व्यसन का आरम्भ औषधि उपयोग से होता है और परिहार या बचाव के लिए औषधि उपयोग की प्रक्रिया आरम्भ होने के लिए जिम्मेदार कारकों के प्रभाव को नियंत्रित अथवा सिमित करना होगा। किशोरों एवं नवयुवकों को औषधि के अवैध सेवन के लिये निर्धारित दण्ड एवं शारीरिक कुप्रभाव के विषय में शिक्षित किये जाने की आवश्यकता होती है। जब बच्चे सांवेगिक असुरक्षा की अवधि में हों तब उन्हें समुचित सां वेगिक संरक्षण प्राप्त होना चाहिए।
- औषधि व्यसन से बचाव के लिए कुछ सकारात्मक प्रयास भी महत्वपूर्ण हो सकते हैं। पार्थक्य (**Alienation**) औषधि व्यसन का कारण बन जाता है। पार्थक्य का विपरीत घटक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में शामिल होना होता है। अतः किन्हीं जीवन क्षेत्रों में सहभागिता बढ़ाने के प्रयत्न किये जा सकते हैं जिससे यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि पार्थक्य में कमी आएगी और इस प्रकार औषधि व्यसन की सं भावना को कम किया जा सकेगा। योग एवं ध्यान जैसी प्रणालियों का अभ्यास करते हुए स्वास्थ्य को विकसित करने के प्रयास में सम्मिलित होने पर युवक स्वतः स्वास्थ्य को क्षति पहुँचाने वाले तत्वों से अपना बचाव करने लगे।

औषधि व्यसन की समस्या के लिए उपचार-

गपी एवं वुड्स (2000) ने औषधि व्यसन के उपचार हेतु नार्कोटिक एनानिमस/अल्कोहलिक एनानिमस उपागम, क्षति न्यूनीकरण उपागम एवं मनोवैज्ञानिक परामर्शन उपागम का वर्णन किया है। अल्कोहलिक एनानिमस और उसके प्रारूप के आधार पर विकसित नारकोटिक्स एनानिमस के उपचारात्मक उपागम में सम्मिलित प्रमुख प्रविधियाँ कुछ बातों पर विशेष ध्यान देती है-

- उपचार प्रक्रिया में किसी व्यक्ति को व्यसनी जैसा नामकरण नहीं दिया जाना चाहिए,
- शरीर में विद्यमान औषधि अवशेष के विषैले एवं आपूर्ति की माँग उत्पन्न करने वाले प्रभाव को डीटोक्सिफिकेशन के माध्यम से दूर करना चाहिए
- यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि व्यक्ति स्वयं को नियंत्रित कर पाने में अक्षम है,
- व्यक्ति द्वारा किसी उपचारक या मनोपचारक को अधिक सक्षम व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए,
- व्यक्ति की उपचार प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी प्रोत्साहित की जानी चाहिए
- प्रार्थी व्यक्ति को अपनी कमियों की जानकारी होनी चाहिए तथा उसे दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए

- उपचारात्मक प्रक्रिया में सम्पूर्ण परिवार को सम्मिलित किया जाना चाहिए
- उपचार प्रक्रिया को अनेक आयामों साइकियाट्रिक, साइकोलॉजिकल, आध्यात्मिक, सामाजिक: पर ध्यान देना चाहिए,
- उपचार प्रक्रिया दीर्घकालिक होनी चाहिए, जिसमें जीवन के लिए आशा का तत्व सम्मिलित होना चाहिए।
- ऐसे व्यक्तियों में अपने जैसे अन्य व्यक्तियों की सहायता करने के लिए समर्पण/वचनबद्धता होनी चाहिए।

क्षति न्यूनीकरण उपागम का अभिग्रह यह है कि औषधि का दुरुपयोग करने वाले व्यक्तियों का उपचार उनकी शर्तों पर किया जाना चाहिए। इसके प्रथम चरण में औषधि सेवन की मात्रा को स्थिर किया जाता है अर्थात् मात्रा को बढ़ने से रोका जाता है। अगले चरण में स्थिर मात्रा को घटाया जाता है। प्रायः उपचार की पूरी अवधि में मनोपचार प्रदान किया जाता है। सामाजिक कार्यकर्ताओं की भी सहायता ली जाती है तथा समस्या केन्द्रित निर्देशात्मक परामर्शन प्रक्रिया में उनकी सहभागिता हो सकती है, यद्यपि कि इस उपागम की इस आधार पर आलोचना की जाती है कि यह प्रक्रिया व्यक्ति को औषधि व्यसन की वर्तमान मात्रा को बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित करती है किन्तु दूसरी दृष्टि से विचार करने पर यह प्रक्रिया कहीं अधिक यथार्थवादी प्रकट होती है।

- i. औषधि व्यसन के मनोपचार हेतु मुख्यतः संज्ञानात्मक-व्यवहारात्मक उपागम एवं आरईबीटी (**REBT**) उपागम का उपयोग किया जाता है। अनुबंधन आधारित प्रक्रियाओं की श्रेणी में प्रमुख लाभकारी प्रविधियां निम्नलिखित हैं-
- ii. प्रच्छन्न विलोप (**Covert extinction**)
- iii. विरुचिकारक प्रति अनुबंधन (**Aversive counter conditioning**) एवं
- iv. प्रच्छन्न संवेदीकरण (**Covert sensitization**)

औषधि व्यसन उपचार प्रक्रिया का एक अन्तरंग पक्ष पुनरावृत्ति की समस्या का प्रबंधन है (Marlatt and Grdon 1985). यदि किसी व्यक्ति की यह जीवन शैली बन गयी है कि वह जीवन की समस्याओं तथा तनाव का सामना करने से बचाता है तथा औषधि सेवन के शरण में तनाव से विश्रान्ति का अन्वेषण करता है तो उसके द्वारा उपचारोपरांत पुनः सेवन आरम्भ किये जाने की संभवना प्रबल होती है। ऐसे व्यक्ति को तनाव प्रबंधन सीखना, जीवन की समस्या का डटकर सामना करने की प्रवृत्ति विकसित करना उपयोगी होगा।

5.11 सारांश

समाधान केन्द्रित परामर्श विधि के अधिगामोपरांत परामर्शदाता अपने अनुभव के आधार पर स्वयं की विधि/पैटर्न विकसित करता है तथा प्रयोग करता है। यद्यपि कि वाद्य यन्त्र बजाना सीखने की भाँती इसमें भी बुनियादी कौशलों से शुरू करना अनिवार्य होता है। ठीक इसी प्रकार

साक्षात्कार का प्रवाह महत्वपूर्ण हैं। यदि कोई परामर्शदाता अजूबा प्रश्न, या मापनी या प्रतिशत प्रयोग करता है तो परामर्शदाता बिना पारंपरिक अनुक्रम का अनुकरण किये एक बार में ही प्रकरण पर पहुँच सकता है। मापनियों या उद्देश्यों से सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर इतने विस्तृत एवं सकारात्मक हो सकते हैं कि अजूबा प्रश्नों की आवश्यकता ही न हो।

उत्तर आधुनिकतावाद के कारण ऐसे सामाजिक वैचारिक परिवेश की रचना हुई जिसके कारण परामर्शन मनोविज्ञान के क्षेत्र में समन्वायन एक प्रभावशाली आन्दोलन के रूप में प्रकट हुआ है।

इस श्रेणी के अंतर्गत आने वाले परामर्शन प्रारूपों में से प्रमुख प्रारूप निम्नवत हैं-

- i. संज्ञानात्मक-विश्लेषणात्मक उपागम
- ii. बहुआयामी उपचार
- iii. दक्ष-सहयोगी प्रतिरूप
- iv. पार-सैद्धांतिक उपागम

एच आई वी संक्रमित व्यक्ति परीक्षणोंपरांत सर्वप्रथम परिणाम के बारे में अविश्वास की प्रतिक्रिया से आरम्भ करता है किन्तु तत्पश्चात यह पूरी तरह टूट जाने की अवस्था में पहुँचता है। परामर्शन कार्य द्वारा उसे अपनी दशा का सृजनात्मक रूप में सामना करते हुए लम्बी आयु तक सफलता पूर्वक जीवन यापन करने की दशा में सहायता दी जा सकती है। व्यक्ति के समक्ष जीवन के संकट के फलस्वरूप खतरे एवं चुनौतियाँ दोनों ही प्रकट होती हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए निराशा, असहायता जैसी नकारात्मक अनुभूतियाँ उपयुक्त नहीं होती हैं।

सामाजिक स्तर पर क्या उचित और अनुचित है इस विषय का पुनर्मूल्यांकन किया जा सकता है। व्यक्ति के लिए आत्मग्लानि एवं लज्जा की अनुभूति से बाहर आने की आवश्यकता होती है। मनोपचार/परामर्शन के अंतर्गत इस विषय में कार्य किया जा सकता है। प्रार्थी के लिए समग्र प्रयास में गोपनीयता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। कुछ प्रार्थी द्वारा आत्महत्या, ऐच्छिक मृत्यु की माँग जैसे विचार प्रस्तुत किया जा सकता है, वे अपनी वसीयत तैयार कराना चाहते हैं। ऐसे सन्दर्भ में परामर्शन कार्य का उद्देश्य लम्बी आयु के लिए संघर्ष हेतु प्रार्थी को तैयार करना होना चाहिए क्योंकि जीवन समापन एवं जीवनोपरांत विषयों पर विचार-विमर्श से उपचार एवं समायोजन कार्य प्रभावित होता है।

औषधि व्यसन उपचार प्रक्रिया का एक अन्तरंग पक्ष पुनरावृत्ति की समस्या का प्रबंधन है (Marlatt and Grdon, 1985). यदि किसी व्यक्ति की यह जीवन शैली बन गयी है कि वह जीवन की समस्याओं तथा तनाव का सामना करने से बचाता है तथा औषधि सेवन के शरण में तनाव से विश्रान्ति का अन्वेषण करता है तो उसके द्वारा उपचारोपरांत पुनः सेवन आरम्भ किये जाने की संभवना प्रबल होती है। ऐसे व्यक्ति को तनाव प्रबंधन सीखना, जीवन की समस्या का डटकर सामना करने की प्रवृत्ति विकसित करना उपयोगी होगा।

5.12 शब्दावली

MSFBT: Solution Focused Brief Therapy (समाधान केन्द्रित संक्षिप्त उपचार)

एच आई वी (HIV) Human Immuno-deficiency Virus

एड्स (AIDS) Acquired Immune Deficiency Syndrome

औषधि व्यसन: औषधि व्यसन साधारणतः व्यक्ति द्वारा चिंता, तनाव या पीड़ा के प्रतिरोध के लिए अथवा आनंदानुभूति के लिए बिना किसी उपचारात्मक उपयोग के अथवा चिकित्सकीय परामर्श के बिना स्वयं के स्तर पर किया जाने वाला उपयोग है।

5.13 निबंधात्मक प्रश्न

समाधान केन्द्रित परामर्श से आप क्या समझते हैं? समाधान केन्द्रित परामर्श के सन्दर्भ को प्रभावित करने वाली मान्यताओं का वर्णन कीजिये।

- समन्वयवादी परामर्श क्या है? इसमें प्रयुक्त उपागमों पर प्रकाश डालें।
- एच आई वी/एड्स परामर्श से आप क्या समझते हैं? एच आई वी/एड्स में मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप के महत्त्व को स्पष्ट कीजिये।
- औषधि व्यसन को स्पष्ट कीजिये तथा इस समस्या के उपायों का वर्णन कीजिये।

5.14 संदर्भ ग्रंथ सूची

- चौहान, विजयलक्ष्मी एवं जैन, कल्पना (2014), निर्देशन एवं परामर्श, अंकुर प्रकाशन, उदयपुर,
- राय, अमरनाथ एवं अस्थाना, मधु (2012), आधुनिक परामर्शन मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.
- राय, अमरनाथ एवं अस्थाना, मधु (2012), निर्देशन एवं परामर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.
- चौहान, विजयलक्ष्मी एवं जैन, कल्पना (2014), निर्देशन एवं परामर्श, अंकुर प्रकाशन, उदयपुर,
- राय, अमरनाथ एवं अस्थाना, मधु (2012), आधुनिक परामर्शन मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.
- राय, अमरनाथ एवं अस्थाना, मधु (2012), निर्देशन एवं परामर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.
- अस्थाना, निधि एवं अस्थाना, बिपिन (2013-14), निर्देशन और उपबोधन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

**इकाई 6. परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका और एक अच्छे परामर्शदाता की विशेषताएँ
(Role of Counsellors in Guidance & Counselling and Characteristics of a
Good Counsellor)**

इकाई का स्वरूप

- 6.1 प्रस्तावना
- 6.2 उद्देश्य
- 6.3 परामर्शदाता
 - 6.3.1 परामर्शदाता के गुण
 - 6.3.2 परामर्शदाता का प्रशिक्षण
 - 6.3.3 प्रशिक्षण से सम्बन्धित अध्ययन क्षेत्र
 - 6.3.4 परामर्शदाता के गुणों का विकास
 - 6.3.5 परामर्श कौशल
- 6.4 परामर्शदाता के कार्य
 - 6.4.1 कार्य क्षेत्र
- 6.5 परामर्शदाता की भूमिका
 - 6.5.1 मनोविश्लेषणात्मक उपागम
 - 6.5.2 व्यक्ति केन्द्रित उपागम
 - 6.5.3 संज्ञानात्मक उपागम
 - 6.5.4 व्यवहार उपागम
- 6.6 परामर्शदाता के उत्तरदायित्व
 - 6.6.1 कार्यकारी उत्तरदायी

6.6.2 नैतिक उत्तरदायित्व

- 6.7 सारांश
- 6.8 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 6.9 संदर्भ ग्रंथ सूची
- 6.10 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

परामर्श की प्रक्रिया में परामर्शदाता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। परामर्शदाता ही परामर्श से सम्बन्धित सभी कार्यों के सफल संचालन के लिये उत्तरदायी होता है।

इस इकाई में आप परामर्शदाता के गुणों, भूमिका तथा उत्तरदायित्वों का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप परामर्श की प्रक्रिया में परामर्शदाता के महत्व को समझ सकेंगे। एक अच्छे परामर्शदाता में क्या-क्या गुण होने चाहिये तथा इन गुणों का विकास कैसे किया जाए, से अवगत हो सकेंगे।

6.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप-

1. बता सकेंगे कि परामर्शदाता कौन होता है।
2. परामर्शदाता के गुणों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।
3. विभिन्न परामर्श कौशलों को जान सकेंगे।
4. परामर्श प्रक्रिया में परामर्शदाता की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे।
5. परामर्शदाता के उत्तरदायित्वों से अवगत हो सकेंगे।

6.3 परामर्शदाता

परामर्शदाता से तात्पर्य उस व्यक्ति अथवा शिक्षक से होता है जिसके ऊपर विद्यालयी परामर्श और निर्देशन सेवाओं को संचालित करने की जिम्मेदारी होती है। वह अपने कौशलों के द्वारा परामर्शी

अथवा छात्रों को समस्याओं के समाधान की ओर अग्रसर कर भावी जीवन को तैयार करने में मदद करता है।

परामर्शदाता कौन है-

परामर्शदाता वह है जो-

1. परामर्शी (छात्र) की भावनाओं को भलीभांति समझकर तथ्यात्मक जानकारी हासिल करे।
2. सभी प्राप्त सूचनाओं को गोपनीय रखे।
3. परामर्शी को अभिव्यक्ति का पूरा मौका दे।
4. परामर्शी के आत्मविश्वास में वृद्धि कर सके।
5. परामर्शी की भावनाओं और विचारों का सम्मान कर सके।
6. परामर्शी यदि असुरक्षित महसूस करें तो उसमें सुरक्षा की भावना का विकास कर सके।
7. परामर्शी जिसके साथ सकारात्मक सम्मान और संगति का अनुभव कर सके।
8. परामर्शी की आवश्यकताओं को समझकर लक्ष्यों का निर्धारण कर सके।
9. अपने को विशेषज्ञ समझने की भूल न करे।

9.3.1 परामर्शदाता के गुण

एक अच्छे परामर्शदाता में निम्नलिखित गुण होने चाहिए।

व्यक्तिगत गुण- परामर्शदाता को विनोदप्रिय, धैर्यवान, मृदुभाषी, स्वस्थ एवं आकर्षित व्यक्तित्व वाला होना चाहिए। उसमें नागरिकता का भाव हो। उसका जीवन-दर्शन सकारात्मक और आचरण उत्तम होना चाहिए। उसका व्यवहार एवं वेशभूषा ऐसी न हो जिसकी कोई हंसी न उड़ाये।

बौद्धिक क्षमता- परामर्शदाता को विभिन्न व्यावसायिक, अध्ययन एवं परामर्श क्षेत्रों का ज्ञान होना चाहिए। उसमें तर्कयुक्त एवं व्यवस्थित चिन्तन करने की योग्यता होनी चाहिए। ताकि वह सूचनाओं को एकत्र कर योजनाबद्ध ढंग से परामर्शी को आवश्यक सहायता प्रदान कर सके।

ऊर्जावान- परामर्श सेवा एक भावात्मक मांग है। परामर्श के सामने कई समस्याएँ होती हैं। वह अपने को कमजोर और असहाय समझता है। परामर्शदाता के उत्साह के द्वारा परामर्शी में आत्मविश्वास और स्वयं कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

लचीलापन- अच्छा परामर्शदाता कभी भी परामर्श के दौरान एक विधि का अनुसरण नहीं करता है। वह छात्र की व्यक्तिगत विभिन्नताओं और समस्या के स्वरूप को ध्यान में रखकर यह निर्णय लेता है कि-कौन सी विधि, तकनीक एवं व्यवहार छात्र की समस्या समाधान हेतु उपयुक्त होगी।

सहयोग- परामर्शदाता को सहयोगी प्रवृत्ति का होना आवश्यक है। तभी छात्र उसका आदर व सम्मान करते हैं।

स्वतत्परता- परामर्शदाता के मनोभावों, विचारों और कार्य का प्रभाव परामर्शी के व्यवहार पर पड़ता है। परामर्शदाता की मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक तत्परता के द्वारा परामर्शी से वांछनीय सहयोग मिलता है।

संवेदनशीलता- परामर्शदाता को अपने व्यवसाय और परामर्शी (छात्र) के प्रति संवेदनशील होना चाहिए तभी वह पूर्ण तत्परता के साथ अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर पायेगा।

परानुभूति- परानुभूति परामर्शदाता के व्यवहार की वह विशेषता अथवा योग्यता है जिसके द्वारा वह परामर्शी के द्वारा संसार को देखने की कोशिश करता है और वह अपने विचार मतों को परामर्शी की भावनाओं के साथ जोड़ने की जरा सी भी भूल नहीं करता है। इस गुण के द्वारा परामर्शदाता अपने सेवार्थी को भलीभांति जान सकता है।

सकारात्मक सोच- “परामर्शदाता परामर्शी को बिना किसी शर्त के आत्म महत्व के रूप में स्वीकार करता है चाहे उसकी दशा जैसी भी हो फिर भी वह मूल्यवान है” (राजर्स)। परामर्शदाता जब बिना किसी शर्त के परामर्शी का आदर व सम्मान करता है तो दोनों के मध्य उपयुक्त सम्बन्ध स्थापित होता है जिससे सहजता के साथ परामर्श की प्रक्रिया को पूरा किया जाता है। परामर्श के बाद कई बार वांछनीय परिणाम प्राप्त नहीं होते, ऐसी परिस्थितियों में परामर्शदाता यह निर्णय नहीं देता कि ‘तुम यह कभी नहीं कर सकते हो’। परामर्शदाता को आशावादी और सकारात्मक सोच वाला होना चाहिए।

संगति- परामर्शन के दौरान परामर्शदाता जो अनुभव कर रहा है और परामर्शी (छात्र) को जो कुछ अनुभव संप्रेषित कर रहा है उसमें कोई भी द्वन्द्व नहीं है यदि है भी तो वह न्यूनतम है। यह तभी सम्भव है जब परामर्शदाता का व्यवहार दिखावटी न हो वह परामर्शी के सम्मुख ईमानदार और वास्तविक दिखाई पड़े ऐसा न हो कि परामर्शदाता कोई ड्रामा कर रहा हो।

9.3.2 परामर्शदाता का प्रशिक्षण

परामर्शन की सफलता परामर्शदाताओं के प्रशिक्षण एवं अनुभव पर निर्भर करती है। यदि छात्रों को अप्रशिक्षित और अनुभवहीन व्यक्तियों को सौंप दिया जाता है तो उनको अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता। परामर्श सेवा में संलग्न व्यक्तियों के लिये निर्देशन व परामर्शन से सम्बन्धित आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। सामान्य रूप से परामर्शदाता को मनोविज्ञान विषय का ज्ञान होना चाहिए।

इसके लिये प्रशिक्षण को तीन स्तरों में बांटा जा सकता है।

1. प्रथम स्तर- स्नातक तथा बी0 एड0/ आवश्यक अनुभव
2. द्वितीय स्तर- परामर्शन सम्बन्धी कोर्स में स्नातकोत्तर उपाधि / एम0 एड0
3. तृतीय स्तर- पी0 एच0 डी0 उपाधि प्राप्त / शोध अनुभव

9.3.3 प्रशिक्षण से सम्बन्धित अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा निर्देशन एवं परामर्श से सम्बन्धित सर्टीफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर के कोर्सों के साथ ही शोध कार्यों का संचालन किया जा रहा है। जिनके अर्न्तगत निम्न विषयों का अध्ययन करना अनिवार्य है।

व्यावसायिक पहचान

निर्देशन और परामर्श

सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता

बाल मनोविज्ञान

मानव वृद्धि और विकास

वृत्तिक विकास

पारस्परिक सम्बन्ध विकास का अध्ययन

सामूहिक कार्य

मापन और मूल्यांकन

शोध की विधियां

9.3.4 परामर्शदाता के गुणों का विकास

परामर्शदाता के गुणों का विकास करने में महत्वपूर्ण बिन्दु-
दूसरों के विचारों, भावनाओं, हावभावों के द्वारा वर्तमान को समझने का प्रयास करना।
स्वयं तथा दूसरे की भावनाओं को स्वीकार करना।

स्वयं की राय को अलग रखना जिससे परामर्शन सेवा में परेशानियां उत्पन्न न हो।

परामर्शी को खुले मन से स्वीकार करना तथा आत्मीयता के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।

लगातार सक्रिय रूप से सुनने की क्षमता का विकास व अभ्यास करना इसके लिये धैर्य की आवश्यकता होती है।

उदाहरण- छात्र: मैं कल बाजार में था, लेकिन गणित विषय के शिक्षक को देखते ही छिप गया और डर के मारे पसीने से तर-बतर हो गया।

परामर्शदाता-अच्छा तुमने गृहकार्य नहीं किया होगा (यह निर्णय लेना एकदम गलत होगा)।

परामर्शदाता को छात्र से बातचीत कर ऐसा माहौल तैयार करना होगा ताकि छात्र स्वयं ही इस भय का कारण बता सके अथवा परामर्शदाता को अन्य स्रोतों के माध्यम से तथ्यात्मक जानकारी एकत्रित कर किसी नतीजे पर पहुंचना चाहिए।

9.3.5 परामर्श कौशल

एक अच्छे परामर्शदाता के लिये परामर्श सम्बन्धी कौशलों की जानकारी होनी चाहिये। परामर्श की सफलता परामर्शदाता तथा छात्र के मध्य मानवीय सम्बन्धों की प्रगाढता पर निर्भर करती है। सभी प्रकार के परामर्श में दो प्रकार के अन्तर्सम्बन्ध निहित होते हैं।

1. परामर्शदाता का छात्र से सम्बन्ध तथा
2. छात्र का परामर्शदाता से सम्बन्ध

सभी प्रकार के परामर्श में परामर्शदाता को विशेष कौशलों की आवश्यकता होती है। फ्रेन्सिसका इंसकिप्प (Francesca Inskipp, 2000) ने परामर्श के लिये छः सामान्य कौशलों का वर्णन किया है।

1. परामर्शी से सम्पर्क स्थापित करना
2. परामर्शन दशा की संरचना सुनिश्चित करने का कौशल
3. सम्बन्ध विकास करना
4. परामर्शी के साथ अन्तःक्रिया का विकास एवं अनुरक्षण
5. मूल्यांकन कार्य
6. परामर्शन की प्रक्रिया में स्वयं का अनुश्रवण (मॉनिटरिंग) करना।

यदि आप परामर्शदाता के रूप में कार्य करना चाहते हैं तो निम्न कौशलों में दक्ष होना अनिवार्य है।

1. ध्यान देना
2. श्रवण कौशल
3. चुनौती देना
4. प्रश्न पूछना
5. प्रत्यावर्तन
6. पुनःकथनीकरण
7. व्यवस्था सम्बन्धी कौशल

(1) ध्यान देना- ध्यान देना किसी व्यक्ति के व्यवहार और अभिव्यक्ति का संयुक्त रूप है। ध्यान देने की प्रक्रिया में किसी सम्प्रेषण से सम्बन्धित शाब्दिक और अशाब्दिक पक्षों की जटिल श्रृंखला निहित होती है।

परामर्शी पर ध्यान देने से वह सकारात्मक संगति का अहसास करता है जिससे वह सुरक्षा की भावना महसूस करता है। इसके लिये परामर्शदाता को ध्यान व्यवहारों के प्रयोग में दक्ष होना चाहिए। यहाँ पर संक्षेप में कुछ ध्यान व्यवहारों के नाम दिये हैं।

चेहरा परामर्शी की तरफ रखना
 सिर हिलाना
 सही ढंग से बैठना
 शाब्दिक तालमेल एवं प्रवाह
 वाणी
 परामर्श की तरफ झुकाव
 नजरें मिलाना
 शान्त अथवा धैर्य रखना

(2) श्रवण कौशल- परामर्श की प्रक्रिया में श्रवण कौशल का सम्बन्ध कान और आंख से है। परामर्शी के शाब्दिक और अशाब्दिक व्यवहार तथा संकेतों को सुनकर व देखकर परामर्शदाता, समस्या की पहचान कर आवश्यक सहायता प्रदान करता है।

श्रवण कौशल में तीन मुख्य पक्ष होते हैं।

भाषा-परामर्शदाता को भाषा की अच्छी जानकारी होनी चाहिये जिससे परामर्शी के शब्दों, वाक्यों, उक्तियों, अलंकारों आदि का सही अर्थापन कर उसकी सही दशा का आंकलन किया जा सके।

भाषाई संकेत-जैसे उच्चारण, लय, सुर, गति, विराम, वलाघात् आदि पर ध्यान देना तथा उनका सही अर्थापन करना।

अशाब्दिक संकेत-जैसे परामर्शी के चेहरे के हावभाव, शारीरिक स्थिति, हिलना-डुलना, हाथ-पैरों के इशारे तथा परामर्शदाता की निकटता (ध्यान रखें-एक निश्चित सीमा में रहकर परामर्शी को छूना विशेषकर परामर्शी के विषम लिंगी होने पर) का ज्ञान।

उपरोक्त तीनों पक्ष परामर्शी के आन्तरिक व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं। अतः परामर्श के लिये परामर्शदाता को श्रवण कौशल में दक्ष होना चाहिए।

(3) चुनौती देना- परामर्शी को लक्ष्य एवं उद्देश्य की दिशा में अग्रसर करने के लिये ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करता है जो परामर्शी के लिये चुनौती पूर्ण हो तथा वह स्वयं समाधान के

मार्ग को ढूँढकर उसका अनुसरण कर सके। अथवा स्वयं की समझ को विकसित कर सका। अतः एक ठंग से संसार को देख सके।

चुनौती देने के लिये परामर्शदाता को परामर्शी के बारे में ज्ञान होना चाहिये। उसे स्वयं तथा परामर्शी के भय और क्रोध अथवा अन्य कुसामायोजित व्यवहार की संभावना का बोध होना चाहिए। चुनौती देने के लिये उपयुक्त समय कब होगा। इसका ज्ञान परामर्शदाता को होना चाहिये।

(4) प्रश्न पूछना- परामर्श की प्रक्रिया में परामर्शदाता प्रश्न के माध्यम से आवश्यक सामग्री एकत्रित कर लेता है। प्रश्न पूछने की कला में दक्ष होना चाहिये। प्रश्न क्यों, क्या, किसका, कब और कैसे से सम्बन्धित होने चाहिये ताकि परामर्शी से सम्बन्धित सही जानकारी प्राप्त हो, लेकिन प्रश्न को परामर्शी की मनोदशा को ध्यान में रखकर उचित समय पर पूछा जाना चाहिये।

उदाहरण-

परामर्शदाता -

- 1 अपने परिवार के बारे में बताइए।
- 2 आपका परिवार आपके लिये क्यों महत्वपूर्ण है?
- 3 क्या आपके माता-पिता आपकी बातों पर ध्यान देते हैं?
- 4 आपको ऐसा क्यों लगता है, कि आपके माता-पिता आपकी बातों पर ध्यान नहीं देते हैं।
- 5 आपके परिवार में दुर्घटना कब हुई?
- 6 यह दुर्घटना कैसे हुई?
- 7 दुर्घटना के बाद आप कैसा महसूस करते हैं?

(5) प्रत्यावर्तन-प्रत्यावर्तन का अर्थ परामर्शी द्वारा अभिव्यक्त के किये गये विचारों, शब्दों आदि के कुछ अंशों का परामर्शदाता द्वारा दोहराना है।

उदाहरण-

परामर्शी- परीक्षाओं के लिये एक महीना शेष है। जब भी मैं पढ़ने बैठती हूँ मुझे लगता है कि मैं सब कुछ भूल गई हूँ और मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।

परामर्शदाता-अच्छा आपको लगता है कि आप सब कुछ भूल गए हो।

(6) पुनर्कथनीकरण-परामर्शदाता परामर्श के दौरान परामर्शी के द्वारा दी जाने वाली सूचनाओं का सही अर्थ जानने तथा किसी नतीजे पर पहुँचने के लिये कथनों को सही ढंग से अभिव्यक्त करता है।

उदाहरण

छात्र- गणित विषय में बहुत डर लग रहा है मेरा परीक्षाफल ठीक नहीं रहेगा। यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जो मेरी सहायता कर सके।

परामर्शदाता-यदि कोई आपके गणित के कठिन पाठों को समझने में आपकी सहायता करे तो क्या आपका परीक्षाफल अच्छा रहेगा।

(7) व्यवस्था सम्बन्धी कौशल-परामर्शदाता को अच्छी व्यवसायिक वृत्ति से सम्बन्धित कौशलों में निपुण होना चाहिए। इसके लिये कॉलिन फैल्थम (2000) ने निम्न कौशलों को सूचीबद्ध किया गया है।

अर्पण प्राप्त करना।

परामर्शी तथा परामर्शदाता दोनों की सुरक्षा को ध्यान में रखना।

परामर्श के लिये उपयुक्त भौतिक परिवेश (कक्ष, मेज, कुर्सी, लाइट तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं आदि की व्यवस्था) का निर्माण।

अभिलेख तैयार करना।

इसके अलावा परामर्शदाता को आधुनिक उपकरणों जैसे-कम्प्यूटर, मोबाइल, क्लोज सफ्टवेयर, कैमरा, आडियो-विडियो रिकॉर्डिंग आदि के संचालन में दक्ष होना चाहिये।

परामर्शी कई प्रकार के शाब्दिक और अशाब्दिक व्यवहार करता है। जिसमें वाणी की गुणवत्ता, सांस लेना, आँखों के इशारे, चेहरे के भाव, हाथ-पैरों और अन्य शारीरिक गतिविधियाँ शामिल हैं। जिनके अध्ययन के द्वारा परामर्शदाता किसी नतीजे पर पहुँच सकता है। यहाँ पर कुछ संकेत और उनके सम्भावित अर्थ को सूचीबद्ध किया गया है। आप इनका अध्ययन कर किसी एक छात्र के व्यवहार का अध्ययन करें-

अंग	अशाब्दिक संकेत (परामर्शी के)	सम्भावित अर्थ
मुख	हंसमुख चेहरा	सकारात्मक रूख
	होंठों को दबाना	चिन्ता/क्रोध
	होंठों को चबाना	चिन्ता/बुरी हालत
	खुला मुँह	अवाक् रहना/थकान/अपने में रहना (ध्यान न देना)
आँख	नजरें मिलाना	ध्यान प्रदर्शित करना
	आँखें नीची रखना या	कम ध्यान देना,
	इधर-उधर देखना	
	पलकें झपकाना	ज्यादा उत्साह न दिखाना, झेंपना।

आँखें एक जगह पर स्थिर रखना	चिन्ता/उत्साह का प्रदर्शन मानसिक रूप से परेशान रहना
चेहरा मुहं खोलते हुये आँखों को बड़ी कर देखना	अवाक रहना/ संयश का प्रकटीकरण
उदासीन चेहरा	चिन्ता/उत्साह न दिखाना/
आन्तरिक रूप से कमजोर मानसिक आघात	
हाथ हाथों को मसलना	चिन्ता/भय
नाखून चबाना	
नाखून के सामने की त्वचा छीलना	चिन्ता/एकाग्रता की कमी/चिन्ता/क्रोध/मानसिक आघात
कंधा झुके हुये कंधे	दुःख/संकोची
अकड़ कर बैठना	क्रोध/आत्मविश्वास में कमी
पैर पैर हिलाना	चिन्ता/एकाग्रता की कमी
बार-बार पैरों को क्रास कर बैठना	/आत्मविश्वास की कमी।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. परामर्शन की सफलता के प्रशिक्षण एवं अनुभव पर निर्भर करती है।
2. अच्छा परामर्शदाता कभी भी परामर्श के दौरान एक विधि का नहीं करता है।
3. चुनौती देने के लिये परामर्शदाता को परामर्शी के बारे में होना चाहिये।

6.4 परामर्शदाता के कार्य

विद्यालयीय परामर्शन में परामर्शदाता बहुत से कार्यों और सेवाओं का निर्वहन करता है।

व्यक्तिगत परामर्श- परामर्शदाता विद्यालय में अलग से समय निर्धारित कर छात्रों को उनकी शैक्षिक और व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिये परामर्श प्रक्रिया को पूरा करता है।

सामूहिक परामर्श- परामर्शदाता छात्रों के छोटे-छोटे समूह बनाकर उनको समस्याओं के समाधान हेतु प्रेरित करता है। छात्रों के विचारों और आवश्यकताओं को समझकर शैक्षिक योजना का निर्माण करता है।

अर्पण कार्य- परामर्शदाता एक अर्पण कार्यकर्ता की भांति कार्य करता है। वह छात्रों की समस्या समाधान हेतु उनके परिवार और अन्य स्रोतों से प्राप्त अभिलेखों के साथ परामर्शी को अन्य परामर्शदाता के पास भी भेज सकता है अथवा दूसरों से प्राप्त करता है।

सलाह देना- परामर्शदाता छात्र की योग्यता और आवश्यकता के अनुरूप शिक्षकों ओर अभिभावकों सलाह व सुझाव देता है।

वृत्तिक सहायता- छात्रों की अभिवृत्ति, रुचि, योग्यता, शारीरिक क्षमता के अनुरूप उन्हें रोजगार परक विषयों के चयन करने में सहायता प्रदान करता है ताकि भविष्य में जीवन में सफल हो सकें।

समन्वय- परामर्शदाता अपने कार्यों और सेवाओं द्वारा छात्र, परिवार, शिक्षकों, प्रधानाचार्य एवं चिकित्सकों के मध्य समन्वय स्थापित करने का कार्य करता है। उदाहरण के तौर पर परामर्शदाता विद्यालयों में मानकीकृत परीक्षण के सत्र के आयोजन के लिये छात्रों, शिक्षकों और प्रशासकों के मध्य समन्वय का कार्य करता है।

मूल्यांकन- मूल्यांकन के द्वारा परामर्शी की क्रियाओं और सफलता की प्रभावकता का मापन किया जाता है।

शोधकार्य- परामर्शदाता निरन्तर शोधकार्य में संलग्न रहता है तथा उस कार्य का उपयोग भावी परिस्थितियों में परामर्शदाता स्वयं अथवा अन्य परामर्शकों द्वारा परामर्शन सेवाओं में किया जाता है।

6.4.1 कार्य क्षेत्र

परामर्शदाता कहां कार्य करता है?

- शैक्षिक संस्थाओं में
- पुनर्वास केन्द्रों में
- उद्योगों में
- सामुहिक या विभिन्न संगठनों में
- व्यक्तिगत व्यवसाय के रूप में
- चिकित्सालयों में।

6.5 परामर्शदाता की भूमिका

किसी भी व्यक्ति की समस्यायें और आवश्यकतायें भिन्न-भिन्न होती हैं जो परामर्शी के व्यवहार को प्रभावित करती है। शैक्षणिक आधार पर परामर्शन की तकनीकियों और प्रक्रिया लक्ष्यों में

भिन्नता पायी जाती है। परामर्शन की प्रक्रिया का कई उपागमों में अध्ययन किया जाता है और प्रत्येक उपागम के अनुसार परामर्शदाता की भूमिका अलग-अलग होती है।

6.5.1 मनोविश्लेषणात्मक उपागम

परामर्शी को वार्ता के दौरान प्रेरित करना ताकि वह अपने मस्तिष्क में निहित बालवस्था के अनुभवों की अभिव्यक्ति कर सके।

वार्ता हेतु उपयुक्त परिवेश का निर्माण करना।

मनोवैज्ञानिक परिक्षणों के द्वारा परामर्शी का मूल्यांकन करना।

परामर्शी के चिन्ताग्रस्त रहने के कारणों की खोज करना जिनके कारण उसकी सोच व व्यवहार में अवांछनीय बदलाव आये।

परामर्शी को उसकी सामर्थ्य से अवगत कराना तथा जीवन को बेहतर स्थिति में लाने के लिये सामाजिक जागरूकता का विकास करना।

अनुभव, भावनाओं और विचारों को परामर्शी के साथ बांटना तथा मनोचिकित्सीय सम्बन्धों को स्थापित करना।

परामर्शदाता एक मनोचिकित्सक तथा मित्र की भूमिका का निर्वहन करता है।

6.5.2 व्यक्ति केन्द्रित उपागम

परामर्शदाता एक सहायता प्रदान करने वाले व्यक्ति की भूमिका का निर्वहन करता है। वह निर्देशक के रूप में कार्य नहीं करता।

परामर्शदाता एक ऐसे परिवेश का निर्माण करता है जिसमें परामर्शी को सहज और मुक्त वातावरण की अनुभूति हो तथा वह अपनी समस्याओं से सम्बन्धित समाधान की खोज कर सके।

6.5.3 संज्ञानात्मक उपागम

इस प्रकार के परामर्शन में परामर्शदाता एक शिक्षक अथवा समन्वयक की तरह कार्य करता है। वह परामर्शी की क्षमताओं और योग्यताओं का मूल्यांकन कर शिक्षण कार्य करता है या अन्य शिक्षकों को परामर्शी के संज्ञानात्मक व्यवहार के बारे में अवगत कराकर उसके अनुरूप शिक्षण कार्य के लिये जानकारी प्रदान करता है।

6.5.4 व्यवहार उपागम

इस प्रकार के परामर्शन में परामर्शदाता सलाहकार, दिशा निर्देशन तथा प्रेरक का कार्य करता है वह परामर्शी के सामें एक आदर्श प्रस्तुत करता है जिससे वह परिस्थितियों के साथ समायोजन कर सके।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. शैक्षणिक आधार पर की तकनीकियों और प्रक्रिया लक्ष्यों में भिन्नता पायी जाती है।
2. एक सहायता प्रदान करने वाले व्यक्ति की भूमिका का निर्वहन करता है।
3. किसी भी व्यक्ति की समस्यायें और आवश्यकतायें भिन्न-भिन्न होती हैं जो के व्यवहार को प्रभावित करती है।

6.6 परामर्शदाता के उत्तरदायित्व

यहां परामर्शदाता के उत्तरदायित्वों का वर्णन दो भागों में किया गया गया है। प्रथम भाग उसके कार्यों तथा दूसरा प्रथम भाग व्यवसायिक नैतिकता से सम्बन्धित है।

6.6.1 कार्यकारी उत्तरदायी

परामर्शदाता परामर्शन सम्बन्धी कार्यों कार्य के सफल संगठन और संचालन के लिये उत्तरदायी होता है। उसके कार्यकारी उत्तरदायित्व निम्न हैं-

परामर्श कार्यक्रम की योजना करना।

परामर्शन/निर्देशन समितियों के कार्यों का समन्वयन।

व्यवसायिक वार्ताओं एवं सम्मेलन दिवसों का आयोजन करना।

अनुस्थापन कार्य।

विषयों के चयन में सहायता देना।

अध्ययन-आदतों का अध्ययन कर मार्गदर्शन करना।

व्यवसायों के चयन में सहायता देना।

उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना।

शोध कार्य करना।

प्रकाशन कार्य करना।

अभिभावकों, शिक्षकों, माता-पिता, सम्बन्धित अधिकारियों, व्यक्तियों और चिकित्सकों से

परामर्शी के बारे में सूचनायें लेना तथा उन्हें यथास्थिति से अवगत कराना।

अभिलेखों का संग्रहण कर संरक्षित रखना।

6.6.2 नैतिक उत्तरदायित्व

परामर्शदाता के नैतिक उत्तरदायित्व निम्न हैं।

परामर्शदाता को मानकों और अपनी सीमाओं का ज्ञान होना चाहिए। परामर्शदाता को परामर्शी की समस्या की पहचान कर उस पर अनावश्यक प्रयोग करने से बचना चाहिए।

परामर्शदाता को अपनी क्षमताओं के अनुरूप निर्णय लेना चाहिए-कि क्या इस समस्या के समाधान में छात्र की सहायता कर सकता हूँ या नहीं, यदि नहीं तो किसी अन्य एजेन्सी या परामर्शदाता के पास भेज देना चाहिए।

परामर्शदाता को परामर्शी से प्राप्त सूचनाओं को गोपनीय रखना चाहिए।

परामर्शदाता को परामर्शी के अधिकारों के बारे में उचित ज्ञान होना चाहिए।

परामर्शदाता को नैतिक संहिता की जानकारी होनी चाहिए।

व्यवसायिक संविदा सम्बन्धी शर्तों की अग्रिम एवं लिखित जानकारी परामर्शी को देना।

परामर्शी का किसी भी रूप या यौनिक शोषण नहीं किया जाना चाहिए।

परामर्शदाता द्वारा परामर्शी के प्रति धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र आदि आधार पर भेदभाव नहीं करना।

प्राप्त सूचनाओं का ईमानदारी से विश्लेषण करना।

परामर्शी और परामर्शदाता के हितों को संरक्षित करने के लिये भारत में नैतिक संहिता और निर्देशक नियमों से सम्बन्धित

भारतीय पुर्नवास परिषद द्वारा लागू किया गया अधिनियम महत्वपूर्ण है।

जबकि अमेरिका में अमेरिकन पर्सनल गाइडेन्स एसोसिएसन द्वारा लागू की गयी संहिता है।

6.7 सारांश

परामर्शदाता एक विशेषज्ञ होता है जिसके ऊपर विद्यालय परामर्शन और निर्देशन सेवाओं को सम्पादित करने की जिम्मेदारी होती है। विद्यालयों में परामर्शदाता का कार्य कुशल तथा अनुभवी शिक्षक करता है। परामर्शदाता का मुख्य उद्देश्य छात्रों को शैक्षिक, व्यवसायिक और वैयक्तिक समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने और उनका समाधान करने में सहायता प्रदान करना है। एक अच्छे परामर्शदाता को बौद्धिक, शैक्षिक तथा वैयक्तिक रूप से योग्य होना चाहिए तथा उसने परामर्श सेवा से सम्बन्धित आवश्यक प्रशिक्षण किया हो। परामर्शदाता को विभिन्न परामर्श की विभिन्न विधियों तथा परीक्षण एवं उपकरणों के प्रशासन के बारे में ज्ञान होना चाहिए। परामर्शदाता को अपने व्यवसाय से सम्बन्धित नैतिक उत्तरदायित्वों की सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिये। इसके लिये उसे समय-समय पर सेवा सम्बन्धी आचार संहिता का अध्ययन करना चाहिये। कैरियर के रूप में एक परामर्शदाता शैक्षिक संस्थाओं, पुर्नवास केन्द्रों, उद्योगों, सामुदायिक केन्द्रों, चिकित्सालयों अथवा व्यक्तिगत व्यवसाय के रूप में कार्य कर सकता है। परामर्शदाता, परामर्शन हेतु शिक्षक, मित्र, अभिभावक अथवा चिकित्सक की भांति कार्य करता है। विद्यालयीय सन्दर्भ में परामर्शदाता

का कार्य परामर्श प्रक्रिया का सफल संचालन करना है। सम्बन्धित सूचनाओं की जानकारी से शिक्षकों, अभिभावकों तथा अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों को अवगत करना है।

6.8 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

इकाई 6.3 के प्रश्न संख्या 1 का उत्तर - परामर्शदाताओं

इकाई 6.3 के प्रश्न संख्या 2 का उत्तर - अनुसरण

इकाई 6.3 के प्रश्न संख्या 3 का उत्तर - ज्ञान

इकाई 6.5 के प्रश्न संख्या 1 का उत्तर - परामर्शन

इकाई 6.5 के प्रश्न संख्या 2 का उत्तर – परामर्शदाता

इकाई 6.5 के प्रश्न संख्या 3 का उत्तर – परामर्शी

6.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

- बारकी वी० जी० एण्ड मुखोपपध्याय, वी० (1991), गाइडेन्स एण्ड कॉन्सिलिंग-ए मैनुयुल, स्टर्लिंग पब्लिसर प्रा० लि०, न्यू दिल्ली।
- शर्मा आर० ए०, शैक्षिक एवं व्यायसायिक निर्देशन तथा परामर्श, सूर्या पब्लिकेसन, मेरठ।
- राय, अमरनाथ एवं अस्थाना (2006), निर्देशन एवं परामर्शन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेसन, दिल्ली।
- कक्कड़, एस० बी० (1989), 'एजुकेशनल साइकोलॉजी एण्ड गाइडेन्स, द इण्डियन पब्लिकेसन, हिल रोड, अम्बाला केन्ट।
- भटनागर, आशा तथा गुप्ता निर्मल (1999), गाइडेन्स एण्ड कॉन्सिलिंग: थ्योरिटिकल
- [http:// www addictionfo.org/articles/II/I/stages –of–changes model / page 1.html.](http://www.addictionfo.org/articles/II/I/stages-of-changes-model/page-1.html)

6.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित सूची को ध्यान में रखकर आप अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं का आकलन कीजिए।

(1) बौद्धिक क्षमता

- (2) अन्य व्यक्तियों को सक्रियता के साथ सुनने की क्षमता
 - (3) सहनशीलता
 - (4) आदर करना
 - (5) व्यवहार में लचीलापन
 - (6) दूसरों की भावनाओं को स्वीकार करना
 - (7) प्रयत्नशील
 - (8) ईमानदारी
2. एक अच्छे परामर्शदाता में कौन कौन से मुख्य गुण होने चाहिए?
 3. विद्यालयीय सन्दर्भ में परामर्शदाता के कार्यों का वर्णन कीजिए?

इकाई 7. परामर्श कार्यक्रम की तर्कसंगता एवं उद्देश्य (Rationalization and Purpose of Guidance & Counselling Programme)

इकाई की संरचना:

- 7.1 प्रस्तावना
- 7.2 उद्देश्य
- 7.3 परामर्श के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण
- 7.4 निर्देशन एवं परामर्श कार्य की तर्कसंगता एवं उद्देश्य
- 7.5 सारांश
- 7.6 शब्दावली
- 7.7 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न एवं उनके उत्तर
- 7.8 निबन्धात्मक प्रश्न
- 7.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

7.1 प्रस्तावना:

मार्गदर्शन और परामर्श का तात्पर्य प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं को समझने, समाज को समझने और समायोजित करने तथा शैक्षिक और व्यावसायिक अवसरों में से बुद्धिमानी से चयन करने के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सहायता करना है।

लोगों के व्यक्तिगत विकास और विकास को सुविधाजनक बनाने पर जोर देने से मार्गदर्शन सेवाओं का व्यवसायीकरण हुआ है। मार्गदर्शन और परामर्श मुख्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति को एक ओर सामाजिक अवसरों और स्वतंत्रता तथा दूसरी ओर सामाजिक वास्तविकताओं और जिम्मेदारियों के संदर्भ में व्यक्तिगत नियोजन, निर्णय लेने और विकास के उच्च स्तर की ओर ले जाने में सहायता करने से संबंधित है।

इस प्रकार मार्गदर्शन और परामर्श की प्रक्रिया में व्यक्ति में उसकी शक्तियों, क्षमताओं और सीमाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना, उन चीजों को स्वीकार करना जिन्हें वह बदल नहीं

सकता है और समस्याओं को हल करने, विकल्प बनाने और निर्णय लेने में स्वयं निर्देशित होना शामिल है।

मार्गदर्शन और परामर्श की अवधारणा मानवीय विशिष्टता, अच्छाई, मूल्य और गरिमा के दर्शन पर आधारित है।

ऐसा माना जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को उचित समय पर कुछ परिस्थितियाँ प्रदान की जाती हैं, तो उसके चुनाव और निर्णय लेने की क्षमता का उपयोग व्यक्ति के स्वयं के लिए और जिस समाज में वह रहता है, उसके लिए अधिकतम लाभ के लिए किया जा सकता है।

इसके लिए घर (माता-पिता और भाई-बहन), स्कूल (शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारी, सहकर्मी, प्रशासन) और कार्यस्थल सहित समाज के लोगों की संयुक्त जिम्मेदारी की आवश्यकता होती है। उन्हें ऐसी परिस्थितियाँ प्रदान करनी होती हैं जो व्यक्ति को सही निर्णय लेने और अधिकतम योगदान देने की क्षमता हासिल करने में मदद करें।

यहाँ मार्गदर्शन और परामर्श की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति को अधिकतम आउटपुट के लिए अपनी शक्तियों और क्षमताओं के बारे में जागरूकता पैदा करने और समस्याओं पर काबू पाने और कठिनाइयों को हल करने में मदद करता है। इस प्रकार, मार्गदर्शन और परामर्श के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

आत्म-समझ - अपनी शक्तियों, सीमाओं और उपलब्ध संसाधनों की समझ

- आत्म-स्वीकृति - उन चीजों को स्वीकार करना जिन्हें वह बदल नहीं सकता
- आत्म-निर्देशन - समस्याओं को हल करने, अपने दम पर चुनाव करने और निर्णय लेने की उसकी क्षमता

“परामर्श एक निर्धारित रूप से संरचित स्वीकृत सम्बन्ध हैं जो परामर्श प्रार्थी को पर्याप्त मात्रा में स्वयं के समझने में सहायता देता है जिससे वह अपने नवीन ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में ठोस कदम उठा सके।” कार्ल रोजर्स के ये विचार परामर्श के आधारों की ओर संकेत करते हैं जिनका सम्बन्ध सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से है। सिद्धान्त की व्याख्या प्रायः किन्हीं दृष्टिगोचर या घटनाओं के अन्तर्निहित नियमों अथवा दिखाई देने वाले सम्बन्धों के प्रतिवादनों के रूप में की जाती है जिनका एक निश्चित सीमा के अन्दर परीक्षण सम्भव है।

प्रस्तुत इकाई में हम परामर्श कार्यक्रम की तर्कसंगता एवं उद्देश्य को समझने से पूर्व परामर्श के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करेंगे।

7.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित बातों के बारे में जान जायेंगे-

- परामर्श के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण
- परामर्श की तर्कसंगतता
- परामर्श के उद्देश्य

7.3 परामर्श के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण

परामर्श पारस्परिक रूप से सीखने की प्रक्रिया है तथा इसके अन्तर्गत दो व्यक्ति सम्मिलित होते हैं- एक सहायता प्राप्तकर्ता और दूसरा वह व्यक्ति जो इस प्रथम व्यक्ति की सहायता इस प्रकार करता है कि उसका अधिकतम विकास हो सके। परामर्शकर्ता के लिए आवश्यक है कि वह परामर्श के सैद्धान्तिक आधारों के बारे में सम्यक् जानकारी हासिल करे। परामर्श के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण को सुविधा हेतु इन्हें निम्न वर्गों में रखा जा सकता है-

1. प्रभाववर्ती/अस्तित्ववादी सिद्धान्त (Affectively Oriented/Existential Theory)-इस सिद्धान्त का प्रारम्भ मूलतः अस्तित्ववादी-मानवतावादी दर्शन से होता है। इसमें उपबोध को प्रभावपूर्ण ढंग से समझने पर विशेष बल दिया जाता है। इस सिद्धान्त का उद्देश्य व्यक्ति का उपचार करना नहीं होता बल्कि दैनिक जीवन के द्वन्द्वों तथा विरोधाभासों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की दिशा में परामर्शी को सहायता प्रदान करना होता है। समस्याएँ मानव जीवन की अविभाज्य इकाई होती हैं। व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में अनेक समस्याओं से जूझता रहता है। प्रभाववर्ती सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति की सभी समस्याओं का समाधान सम्भव होता है। समस्या समाधान का सम्बन्ध हमारे दृष्टिकोण से होता है। किसी भी समस्या के लिए स्वयं का या परिस्थितियों को दोषी ठहराना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं होता और ना ही उससे कुछ लाभ होता है। प्रभाववर्ती सिद्धान्त के मुख्य अभिग्रह निम्नवत् हैं-

- i. यह सिद्धान्त व्यक्ति को उसके जीवन की जटिलताओं के साथ समायोजित करने में विशेष सहायक होता है।
- ii. व्यक्ति के जीवन में चिन्ता उसके जीवन की वास्तविकता को अर्जित करने का एक मूल्यवान साधन होता है। अतः चिन्ता का पूर्ण परिहार उचित नहीं होता है।
- iii. व्यक्ति कभी भी एकाकी अवस्था में नहीं होता, उसका अपना एक समाज, अपनी एक दुनिया होती है, जो कि उसके अनुभव और अनुभूतियों को प्रभावित करती है।
- iv. व्यक्ति के जीवन में दो पक्ष होते हैं-सकारात्मक तथा नकारात्मक। जीवन की तेजस्विता के लिए दोनों ही पक्षों की स्वीकृति होनी चाहिए।

- v. इसी प्रकार जीवन के मुख्यतः चार आयाम होते हैं-आध्यात्मिक, आन्तरिक, सामाजिक तथा भौतिक। ये चारों एक दूसरे से समन्वित रहते हैं।
- vi. जीवन की जटिलताओं में थोड़ी-सी सहायता से ही व्यक्ति जीवन के आवश्यक अधिगम को सहजता से प्राप्त कर सकता है। परामर्शदाता की सहायता के बिना जीवन की जटिलताएँ व समस्याएँ दिनों-दिन बढ़ती चली जाती हैं।
- vii. व्यक्ति में स्वयं को छलने की प्रवृत्ति होती है। आत्मबोध में सत्य का सामना करने तथा प्रमाणिकता के लक्ष्य प्राप्ति की शक्ति होती है।
- viii. व्यक्ति का स्व स्थूल व अपरिवर्तनशील नहीं होता। अतः उसमें सदैव रूपान्तरण होता रहता है।

प्रभाववर्ती या अस्तित्ववादी सिद्धान्त का उद्देश्य लोगों में उनकी बुद्धि, शक्तियों, क्षमताओं तथा संसाधनों के बारे में बोध विकसित करना तथा उनके नकारात्मक पक्ष को समझने में उनकी सहायता करना होता है। इस सिद्धान्त का यह विश्वास होता है कि अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दृष्टिकोण के परिवर्तन द्वारा किसी भी नियति को बदलना सम्भव होता है।

2. व्यवहारवादी सिद्धान्त (Behavioral Theory)-यह सिद्धान्त उपबोध्य के अवलोकनीय व्यवहारों पर बल देता है। परामर्शी के अनुभवों की अपेक्षा उसके व्यवहारों को जानने व समझने में व्यवहारवादी अधिक रुचि रखते हैं। व्यवहारवादी समस्याग्रस्त व्यक्ति के लक्षणों पर अधिक ध्यान देते हैं। ये समस्याएँ अधिकांशतः उपबोध्य द्वारा अपने व्यवहार करने के ढंग या व्यवहार में असफल होने से सम्बन्धित होती हैं। इस प्रकार व्यवहारवादी परामर्शदाता मुख्यतः क्रिया पर बल देते हैं। व्यवहारवादी सिद्धान्त की मान्यता है कि जब व्यक्ति उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार करने में असमर्थ होता है वह चिन्तित होने लगता है, तनाव में आ जाता है और सामान्यतया उसका व्यवहार भी अनुपयुक्त होता चला जाता है। उत्तरदायित्व विहीन व्यवहार के कारण व्यक्ति में आत्म-पराजय अर्थात् हीनभावना जाग्रत होने लगती है। व्यक्ति अपने वातावरण के साथ प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप व्यवहारों को जन्म देता है। व्यवहारवादी परामर्शदाता, उपबोध्य को उत्तरदायी रूप से व्यवहार करने के नये तरीके जानने तथा सफल होने के आत्मबोध को जाग्रत करने में सहायता करते हैं।

व्यवहारवादी सिद्धान्त की मुख्य मान्यताएँ निम्नवत् हैं-

- i. समकालीन वर्तमान व्यवहार पर पूरा ध्यान देना चाहिए क्योंकि कोई भी विगत व्यवहार परिवर्तन नहीं कर सकता।

- ii. परामर्श का मूल उद्देश्य परामर्शी का व्यवहार परिवर्तन ही होना चाहिए, क्योंकि व्यक्ति की भावनाओं, संवेगों या अभिवृत्तियों की अपेक्षा उसके व्यवहार को अधिक सुगमता से परिवर्तित किया जा सकता है।
- iii. परामर्श का लक्ष्य उत्तरदायी व्यवहार होता है। इसमें परामर्शदाता, परामर्शी को ऐसा मार्ग ढूँढ़ने में सहायता करता है जिससे वह दूसरों की आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक न बने साथ ही अपनी आवश्यकताएँ उत्तरदायी रूप से पूर्ण कर सकें।
- iv. सफलता-असफलता का आत्मबोध होना चाहिए।
- v. परामर्शदाता को परामर्शी के साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी उत्तरदायी ढंग से जुड़ना चाहिए।
- vi. परामर्शदाता का एक महत्वपूर्ण कार्य परामर्शी में परिवर्तन हेतु अनेक विकल्प उत्पन्न करने में उसकी सहायता करना भी होता है।
- vii. प्रत्येक व्यक्ति को सफल व उत्तरदायित्व वालों लोगों से सम्बद्ध होना चाहिए। यह वृद्धि बल सभी व्यक्ति में पाया जाता है। परामर्श द्वारा इसमें विकास किया जा सकता है।

इस प्रकार व्यवहारवादी सिद्धान्त परामर्श में मुख्य बल वर्तमान पर देते हैं अर्थात् अभी परामर्शी क्या कर रहा है तथा उसके सफल होने के प्रयासों की दिशा क्या है? परामर्शी में अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने की योजना बनाने की क्षमता जाग्रत कर, उसको उत्तरदायी व्यवहार चुनने में समर्थ बनाया जा सकता है।

3. बोधात्मक/संज्ञानात्मक सिद्धान्त (Cognitive Theory)- दार्शनिक इपिकटेटस का विश्वास था कि, “लोग वस्तुओं से परेशान नहीं होते हैं वरन् उनकी परेशानी का मूल कारण उनका वह अभिमत होता है जो वे उस वस्तु के विषय में रखते हैं।” बोधात्मक सिद्धान्त में यह स्वीकार किया जाता है कि बोध या संज्ञान व्यक्ति के संवेगों व व्यवहारों के सबसे प्रबल निर्धारक हैं। व्यक्ति जो सोचता है उसी के अनुसार अनुभव व व्यवहार करता है। घटनाएँ या लोग किसी व्यक्ति के जीवन में उसे अनुभव करने या किसी निश्चित रूप में व्यवहार करने हेतु वस्तुतः बाध्य नहीं करते। इस सिद्धान्त के समर्थकों का मानना है कि बाह्य घटनाएँ या कारक, प्रत्यक्ष रूप से सांवेगिक या व्यवहारजन्य प्रतिक्रियाओं की जनक या कारण नहीं होती हैं। इस सिद्धान्त के मूलभूत अभिग्रह निम्नवत् हैं-

- I. वातावरण के साथ समुचित समायोजन स्थापित करने के लिए वातावरण के साथ स्वयं के तथा अन्य लोगों के सम्बन्ध में यथार्थपूर्ण सूचनाओं की आवश्यकता होती है।
- II. व्यक्ति ज्ञानेन्द्रियाँ वातावरण के साथ मध्यस्थता स्थापित करके मौलिक सूचनाएँ प्राप्त करती हैं जिनका प्रभाव व्यक्ति की व्यवहारिकता पर देखा जा सकता है।
- III. व्यक्ति की अनुभूतियाँ, व्यवहार तथा दैहिक अवस्थाओं के साथ विश्वसनीय सम्बन्ध होता है।
- IV. व्यक्ति अपने उत्पन्न हुए संज्ञान का औचित्यपूर्ण मूल्यांकन कर सकता है तथा उसमें आवश्यकतानुसार संशोधन भी कर सकता है।

संज्ञानात्मक सिद्धान्त की मुख्य मान्यता यह होती है कि व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक या सांवेगिक समस्याओं का कारण व्यक्ति के विकृत चिन्तन में निहित होता है। व्यक्ति की इन समस्याओं का कारण अनुभव व परिस्थितियों में निहित नहीं होता। जब अस्वस्थ या कुसमायोजित स्कीमा विकसित व सक्रिय हो जाता है तो सूचना संसाधन में भी विकृति आ जाती है। इसके अतिरिक्त स्वतः स्फूर्ति विचार प्रणाली पर नकारात्मक रूप भी देखने में आता है। व्यक्ति का अस्वस्थ संज्ञान पुनर्बालित होता है जिसमें संवेगात्मक समस्याओं की निरन्तरता बनी रहती है। इस उपागम की सामान्य परिकल्पनाओं को हेरिस ने निम्न चार रूपों में दर्शाया है-

(क) मैं ठीक हूँ आप भी ठीक हैं-यह एक स्वस्थ मानसिक दशा है।

(ख) मैं ठीक हूँ आप ठीक नहीं हैं-यह उस व्यक्ति की मनोस्थिति है जो कि दूसरे को अपने दुःखों का कारण स्वीकार करता है।

(ग) मैं ठीक नहीं हूँ आप ठीक हैं-यह लोगों की सामान्य मनोस्थिति है जबकि वे अन्यो की तुलना में स्वयं को शक्तिहीन अनुभव करते हैं।

(घ) मैं ठीक नहीं हूँ आप भी ठीक नहीं हैं-यह जीवन में निराशावादी दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्तियों की मनोदशा है।

परामर्शदाता संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अन्तर्गत परामर्शी को उसकी नष्ट अहं दशा के पुनर्निर्माण हेतु प्रेरित करता है तथा उसे जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने व विकसित करने की क्षमता दृढ़ करने का सम्बल देता है।

4. व्यवस्थावादी विभिन्न दर्शनग्राही प्रारूप सिद्धान्त (Systematic Eclectic Model Theory)-परामर्शदाताओं में अपने को विभिन्न दर्शनग्राही घोषित करने की एक नई परम्परा 1977 से प्रारम्भ हुई। ऐसे परामर्शदाताओं का प्रतिशत लगभग 65 था जो कि मुख्यतः नैदानिक

मनोविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत थे। सामान्यतः विभिन्न दर्शनग्राही परामर्शदाता यह मानते हैं कि कोई भी सिद्धान्त इतना विकसित नहीं है कि सभी उपबोध्यों के लिए समान रूप से उपयोगी या लाभदायक हो। इसलिए ये परामर्शदाता अभियोग्यताओं, सम्प्रत्ययों, सुझावों, रणीनतियों आदि का ऐसा वृहत् परिप्रेक्ष्य निर्मित करना चाहते हैं जो कि उपबोध्यों की समस्या को तार्किक ढंग से समझने में सहायक सिद्ध हो सके। इस प्रकार के कुछ प्रारूप या मॉडल वर्तमान में प्रचलन में भी आ गये हैं, जिनमें राबर्ट कारविक्स का मानव संसाधन विकास मॉडल (1969), ब्लोनर का विकास मॉडल (1974), इवी तथा डाउनिंग का उद्देश्यपूर्ण परामर्श मॉडल (1980) तथा गजदा (1984) के बहुआयामी प्रशिक्षण एवं जीवन कुशलता मॉडल प्रमुख हैं।

इस सिद्धान्त की मुख्य विशेषता परामर्श प्रक्रिया का विभिन्न सेवाओं में संयोजित होना है। इन्हीं सोपानों/चरणों के अनुरूप इस सिद्धान्त में परामर्श की विभिन्न अवस्थाएँ स्वीकार की गई हैं। सभी अवस्थाएँ एक दूसरे से जुड़ी व अन्तःक्रियाशील मानी जाती हैं। यही व्यवस्था प्रारूप मूलतः उपागम का आधार है व परामर्श की एक विशिष्ट प्रविधि का जनक है।

संक्षेप में, इन अवस्थाओं को इस प्रकार से जाना जा सकता है-

क्र०सं०	परामर्श की अवस्था	परामर्श का क्रियान्वयन
१.	प्रथम अवस्था	समस्या का अन्वेषण करना
२.	द्वितीय अवस्था	द्विआयामी समस्या परिभाषा
३.	तृतीय अवस्था	विकल्पों का अभिज्ञान करना
४.	चतुर्थ अवस्था	योजना बनाना
५.	पंचम अवस्था	क्रिया-प्रतिबद्धता
६.	षष्ठ अवस्था	मूल्यांकन एवं पृष्ठपोषण

व्यवस्थावादी सिद्धान्त सिद्धान्त की ये व्यवस्थाएँ या चरण एक दूसरे से जुड़े अर्थात् अन्तःक्रियाशील होते हैं। इस सिद्धान्त की मुख्य मान्यता यह होती है कि व्यक्ति जीवन में एकीकरण के उच्चतम स्तर की प्राप्ति हेतु जीवनपर्यन्त प्रयासरत रहता है। इसलिए परामर्शी या उपबोध्य को दी जाने वाली परामर्श सेवा की व्यवस्था व्यावहारिक होनी चाहिए।

मार्गदर्शन और परामर्श सेवा के पीछे कुछ बुनियादी मान्यताएँ और दर्शन हैं। मार्गदर्शन और परामर्श के पेशे के साथ न्याय करने और प्रभावी और उचित मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करने

के लिए इन पर ध्यान देना आवश्यक है। निम्नलिखित कुछ मान्यताएँ हैं: • मानव स्वभाव मूल रूप से अच्छा है। • सभी मनुष्य सम्मान के पात्र हैं और उनमें गरिमा है। • सभी व्यक्तियों में समायोजन करने की क्षमता होती है, भले ही उन्हें अपने व्यवहार में बदलाव और संशोधन करना पड़े। • सभी को अपने निर्णय लेने के लिए पसंद की स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है और इस आवश्यकता को दूसरों द्वारा पहचाना जाना चाहिए। • प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और उसमें क्षमता है

7.4 निर्देशन एवं परामर्श कार्य की तर्कसंगता एवं उद्देश्य

व्यक्ति में पायी जाने वाली वैयक्तिक भिन्नता, उसकी एक जैसी क्षमताओं का न होना, उसके परिवेश की विविधता, निर्देशन एवं परामर्श की तर्कसंगता का सहज संकेत प्रस्तुत करते हैं। निर्देशन एवं परामर्श का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है। शिक्षा के उपरान्त निर्देशन ही एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के विकास एवं प्रगति हेतु सर्वाधिक सहायक होती है। निर्देशन का सामान्य उद्देश्य है व्यक्ति द्वारा अपने आपको अच्छी तरह जानना और समझना, अधिकांश लोग अपनी योग्यता और क्षमता के विषय में उचित जानकारी नहीं रखते। इसलिए उन्हें जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। निर्देशन एवं परामर्श के बिना मनुष्य प्रगति नहीं कर सकता। वह न तो अपने जीवन को सुखमय बना सकता है और न ही उत्तम व्यवसाय का चयन अपनी क्षमता के अनुरूप कर सकता है। अमेरिका के शिक्षा विभाग द्वारा निर्देशन का उद्देश्य इस प्रकार बताया गया है, किसी व्यक्ति की प्राकृतिक शक्तियों की खोजन करने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण की विभिन्न विधियों से अवगत कराना जिससे व्यक्ति अपने जीवन को अपने तथा समाज के लिए अधिक उपयोगी बना सके।

वर्तमान सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक असन्तोषों के कारण अनेक असमायोजनकारी तत्व उत्पन्न हो रहे हैं, जिनसे निपटने के लिए अनुभवी एवं भली प्रकार से प्रशिक्षित निर्देशन कार्यकर्त्ताओं एवं समस्याओं से ग्रस्त व्यक्ति के मध्य सम्बन्ध जोड़ने की आवश्यकता है। यद्यपि सभी मनुष्य कई दृष्टियों से समान हैं, तथापि व्यक्तिगत भिन्नताओं को पहचानना तथा व्यक्ति के निर्देशन या परामर्श के लिए उन पर विशेष ध्यान देना अपेक्षित है। निर्देशन एवं परामर्श का सम्बन्ध यद्यपि जीवन के हर पहलू से होता है, इसके अन्तर्गत सामान्यतः वे क्षेत्र आते हैं जिनमें इस बात में दिलचस्पी रखी जाती है कि व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उसके विद्यालय, परिवार तथा व्यावसायिक एवं सामाजिक माँगों एवं सम्बन्धों में किस सीमा तक बाधक होता है अथवा इन क्षेत्रों में पायी जाने वाली परिस्थितियों से व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य किस सीमा तक प्रभावित होता है। इसलिए निर्देशन एवं परामर्श का कार्य उन कतिपय व्यक्तियों में ही सीमित नहीं होना चाहिए और इसकी आवश्यकता स्पष्ट रूप में प्रदर्शित करते हैं, बल्कि इसे सभी

आयु वर्ग के उन लोगों के लिए उपलब्ध कराना चाहिए जो इससे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से लाभ उठा सकते हैं।

निर्देशन एवं परामर्श का उद्देश्य है व्यक्ति को सन्तुलित शारीरिक, मानसिक, भावात्मक एवं सामाजिक प्रगति में सहायता देना। उपबोध्य में स्वयं समस्या का समाधान खोजने एवं उसकी व्यवस्था कर सकने की क्षमता का विकास करना है। व्यक्ति के समक्ष उपस्थित समस्याओं के समाधान में सहायक हो जिससे वह तथ्यों को सही ढंग से समझ सके एवं विवेकपूर्ण चुनाव तथा अनुकूलन कर सके।

परामर्श का उद्देश्य उपबोध्य के व्यवहारों, अभिप्रेरणाओं एवं भावनाओं को समझना है। व्यक्ति की इन विशेषताओं को समझने के लिए अनेक तकनीकों एवं परीक्षणों की सहायता ली जाती है। निःसन्देह आवश्यकताओं एवं समस्याओं का निर्धारण वांछनीय है किन्तु व्यक्ति की वास्तविक प्रकृति एवं जीवन लक्ष्य को ध्यान में रखकर ही उन आवश्यकताओं एवं समस्याओं के समाधान का प्रयास परामर्शदाता को करना चाहिए। परामर्शदाता का उद्देश्य केवल परामर्शी को समझने तक ही सीमित नहीं है। परामर्श का उद्देश्य व्यक्ति की सहायता करना है जिससे वह तात्कालिक समस्या से निजात पा सके तथा भविष्य में भी अपनी समस्याओं का समाधान ढूँढ़ सके। परामर्श के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है कि परामर्श का लक्ष्य है कि उपबोध्य की सहायता इस तरह की जाय कि वह अपनी क्षमताओं को समझ सके। निर्देशन एवं परामर्श का उद्देश्य व्यक्ति में जीवन-मूल्यों के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्रदान करना है। परामर्श का उद्देश्य व्यक्ति को जीवन के श्रेष्ठतम धरातल पर पहुँचने में सहायता प्रदान करना है।

व्यक्ति का सर्वोत्तम एवं पूर्णतः परिष्कृत एवं सन्तुलित विकास करना निर्देशन एवं परामर्श का उद्देश्य है जिससे व्यक्ति आत्मसंयमी, आत्मनिर्देशित और आन्तरिक संसाधनों से पूर्ण हो सके। वैयक्तिक प्रसन्नता और सामाजिक निपुणता तथा व्यक्ति को बेहतर जीवन जीना सिखाना ही निर्देशन एवं परामर्श का उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त परिवारों की सहायता करना, नैतिक चरित्र के विकास में समुदायों की सहायता करना, बेहतर मानवीय सम्बन्धों का प्रोत्साहन एवं पोषण करना तथा अन्तर्राष्ट्रीय समझदारी के विकास को सम्मिलित किया जाता है। इस तरह स्पष्ट है कि निर्देशन एवं परामर्श का उद्देश्य उपबोध्य की सर्वांगीण उन्नति है। देशकाल परिस्थिति के अनुसार इसमें परिवर्तन होता रहता है। हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ भी इसे प्रभावित करते हैं।

7.5 सारांश

परामर्श के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण काफी व्यापक हैं। अध्ययन की सुविधानुसार इन्हें कई वर्गों में रखा जा सकता है-प्रभाववर्ती/अस्तित्ववादी सिद्धान्त, व्यवहारवादी सिद्धान्त, बोधात्मक/संज्ञानात्मक सिद्धान्त, व्यवस्थावादी विभिन्न दर्शनग्राही प्रारूप सिद्धान्त।

प्रभाववर्ती सिद्धान्त का प्रारम्भ मूलतः अस्तित्ववादी-मानवतावादी दर्शन से हुआ है। इसमें उपबोध्य को प्रभावपूर्ण ढंग से समझने पर विशेष जोर दिया जाता है। इस सिद्धान्त का उद्देश्य दैनिक जीवन के द्वन्द्वों एवं विरोधाभासों के साथ समायोजन स्थापित करने के लिए परामर्शी को सहायता प्रदान करना होता है। व्यवहारवादी सिद्धान्त उपबोध्य को निरीक्षणीय व्यवहारों पर जोर देता है। व्यवहारवादी परामर्शदाता मुख्यतः क्रिया पर बल देते हैं। बोधात्मक सिद्धान्त में यह स्वीकार किया जाता है कि बोध्य या संज्ञान व्यक्ति के संवेगों या व्यवहारों के सबसे प्रबल निर्धारक हैं। व्यक्ति जो सोचता है उसी के अनुसार व्यवहार करता है। व्यवस्थावादी विभिन्न दर्शनग्राही सिद्धान्त की मुख्य विशेषता परामर्श प्रक्रिया का विभिन्न सोपानों में संयोजित होना है। इन्हीं सोपानों के अनुरूप इस सिद्धान्त में परामर्श की विभिन्न अवस्थाएँ स्वीकार की गई हैं।

निर्देशन एवं परामर्श का उद्देश्य है उपबोध्य को अधिक अच्छा करने में सहायता देने अर्थात् उपबोध्य को अपने महत्व को स्वीकारने, वास्तविक 'स्व' एवं आदर्श 'स्व' के बीच में अन्तर को मिटाने में सहायता देने तथा लोगों को अपनी वैयक्तिक समस्याओं में अपेक्षाकृत स्पष्टता से विचार करने में सहायता देने से सम्बन्धित है। उपबोध्य की दृष्टि से निर्देशन एवं परामर्श के उद्देश्य हैं-व्यक्ति की क्षमता का अधिकतम विकास करना, उसके सम्मुख उपस्थित समस्याओं के समाधान में सहायता करना तथा प्रौढ़ समायोजन की शक्ति एवं प्रवृत्ति का विकास करना। उपबोध्य द्वारा अपनी क्षमताओं, अभिप्रेरकों तथा आत्मदृष्टिकोणों की यथार्थ स्वीकृति, सामाजिक-आर्थिक तथा व्यावसायिक परिवेश के साथ तर्कसंगत सामंजस्य की प्राप्ति। वैयक्तिक भिन्नताएँ, विशिष्टीकृत योग्यताओं का जन्मजात न होना, युवाओं की समस्याओं में सहायता की आवश्यकता आदि ऐसे बिन्दु हैं जो निर्देशन की तर्कसंगता एवं उद्देश्य को स्वयं परिभाषित करते हैं।

7.6 शब्दावली

सिद्धान्त- क्रमबद्ध रूप से संयोजित ज्ञान जो किसी वस्तु के परिकल्पनात्मक स्वरूप की ओर संकेत करता है।

परामर्शी/उपबोध्य- सेवार्थी अथवा सहायता प्राप्त करने वाला व्यक्ति जिसे निर्देशन व परामर्श प्रदान किया जा रहा है।

व्यक्ति-केन्द्रित उपागम- यह उपागम स्वीकार करता है कि व्यक्ति में अपना स्वस्थ एवं सृजनात्मक विकास सम्भव बनाने की सामर्थ्य होती है।

व्यवहारवादी सिद्धान्त- इसके प्रक्रियाओं के बाह्य अध्ययन की महत्ता पर मूल रूप से बल दिया जाता है।

7.7 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न एवं उनके उत्तर

1. निर्देशन एक प्रकार की-

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| (क) बाध्यता है। | (ख) सहायता है। |
| (ग) चयन प्रक्रिया है। | (घ) अध्ययन पद्धति है। |

2. निर्देशन का उद्देश्य है-

- | | |
|--|--|
| (क) व्यक्ति के द्वारा अपनी समस्याओं की पहचान करना। | (ख) व्यक्ति द्वारा अपनी समस्याओं को समझना। |
| (ग) समस्याओं के समाधान करने की प्रक्रिया में व्यक्ति की सहायता करना। | (घ) उपर्युक्त सभी। |

3. निर्देशन का सिद्धान्त आधारित है-

- | | |
|---|--------------------------------|
| (क) व्यक्ति के महत्व एवं प्रतिष्ठा की स्वीकृति। | (ख) स्वयं निर्देशन की योग्यता। |
| (ग) जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया। | (घ) उपरोक्त सभी। |

4. निम्न उद्देश्यों में से कौन-सा उद्देश्य परामर्श का अभीष्ट उद्देश्य नहीं है?

- | | |
|-------------------------------------|------------------------|
| (क) मानवीय स्वास्थ्य का विकास। | (ख) आत्मसिद्धि। |
| (ग) व्यक्ति के संसाधन का संवर्द्धन। | (घ) व्यवहार परिमार्जन। |

5. मानतावादी-अस्तित्ववादी दर्शन की उपज है-

- | | |
|----------------------------|-----------------------------|
| (क) प्रभाववर्ती सिद्धान्त। | (ख) व्यवहारवादी सिद्धान्त। |
| (ग) बोधात्मक सिद्धान्त। | (घ) व्यवस्थावादी सिद्धान्त। |

6. आपातकालीन हस्तक्षेप एवं प्रबन्धन परामर्श का उद्देश्य नहीं है।

- | | |
|---------|----------|
| (क) हाँ | (ख) नहीं |
|---------|----------|

7. परामर्श का उद्देश्य विकासात्मक होता है।

- (क) हाँ (ख) नहीं
8. जीवन में सार्थकता का विकास परामर्श का प्रमुख तात्कालिक उद्देश्य होता है।
- (क) हाँ (ख) नहीं

उत्तर-(1) ख, (2)घ, (3) घ, (4) घ, (5) क, (6) नहीं, (7) हाँ, (8) नहीं।

7.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. निर्देशन एवं परामर्श की तर्कसंगता का वर्णन कीजिए।
2. निर्देशन एवं परामर्श के उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए।
3. परामर्श के सैद्धान्तिक आधार कौन-कौन से हैं?
4. प्रभाववर्ती सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।
5. परामर्श के क्षेत्रों में प्रचलित किन्हीं दो सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

7.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अमरनाथ राय एवं मधु अस्थाना (प्रथम संस्करण-2010), आधुनिक परामर्शन मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी।
2. अमरनाथ राय एवं मधु अस्थाना (2006), निर्देशन एवं परामर्शन, मोतीलाल-बनारसीदास, वाराणसी।
3. उपाध्याय, राधाबल्लभ एवं जायसवाल, सीताराम (2013-14), शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. गुप्ता, महावीर प्रसाद एवं गुप्ता, ममता (2007), शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा।
5. एस0 एन0 शर्मा एवं एम0 के0 सोलंकी (प्रथम संस्करण-2011), निर्देशन एवं परामर्श, माधव प्रकाशन, ए-23, इन्द्रपुरी कॉलोनी, न्यू आगरा, आगरा।
6. शाह आलम एवं मोहम्मद गुफरान (2011), निर्देशन एवं परामर्श का मूलभूत आधार, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली।

इकाई 8. परामर्श के उद्देश्य, परिवार और समूह परामर्श; एक परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका (Aim of Counselling, Family & Group Counselling; Role of teacher as a Counsellor)

- 8.1. प्रस्तावना
- 8.2. उद्देश्य
- 8.3. परामर्श के उद्देश्य
- 8.4. समूह परामर्श
- 8.5. परिवार परामर्श
- 8.6. सारांश
- 8.7. शब्दावली
- 8.8. अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 8.9. संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 8.10. निबन्धात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

बाल्यकाल से वयस्क अवस्था तक विकास की प्रक्रिया में कुछ महत्वपूर्ण एवं सुनिश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति को प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक माना जाता है। सभी व्यक्तियों में आत्मनिर्भरता, स्वायत्तता, सक्षमता, ज्ञान, आत्मबोध, परिवेषीय सूझबूझ एवं जानकारी तथा व्यक्तिगत एवं सामाजिक दृष्टि से प्रभावशीलता का विकास आवश्यक समझा जाता है। विकास से सम्बन्धित लक्ष्यों की दिशा में व्यक्ति और समाज द्वारा अनेक प्रकार की योजनाओं एवं कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जाता है। विकास की पूरी प्रक्रिया में अवधि में अनेक संक्रमण काल आते हैं। अनेक प्रकार की दुविधाएं प्रकट होती हैं। व्यक्ति को उपयुक्त लक्ष्यों का चयन करना होता है। चयनित लक्ष्यों की सिद्धि हेतु उपयुक्त अनुक्रियाएं करनी पड़ती हैं। जीवन के विविध क्षेत्रों में समायोजन स्थापित करना पड़ता है, विकास के मार्ग में समुत्पन्न होने वाली बाधाओं, कठिनाइयों,

समस्याओं को दूर करना पड़ता है। इस पूरी प्रक्रिया को सहज और अधिक सफल बनाने के उद्देश्य होते हैं।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप-

1. परामर्श के उद्देश्य व्यक्त कर सकेंगे।
2. परिवार एवं समूह परामर्श की अवधारणाएँ, आवश्यकता एवं उद्देश्यों को व्यक्त कर सकेंगे।
3. एक परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका व्यक्त कर सकेंगे।

8.3 परामर्श के उद्देश्य

ब्याय एवं पाइन (Boy & Pine) के अनुसार- परामर्श का उद्देश्य है- विद्यार्थी को और परिपक्व बनाने में सहायता प्रदान करना, स्वयं सक्रिय बनने और स्वयं के सही मूल्यांकन कर सकने में सहायता देना है।

लियाना टेलर (Liana Taylor) के अनुसार- "परामर्श का उद्देश्य व्यक्ति को परिवर्तित करना नहीं है वरन् उसको उन स्रोतों के उपयोग में सक्षम बनाना है जो उसके पास इस समय जीवन का सामना करने हेतु उपलब्ध है।"

रोलो मे (Rollo May) के अनुसार- "परामर्श का उद्देश्य परामर्श प्रार्थी (परामर्श लेने वाला) का सामाजिक दायित्वों को स्वीकार करने में सहायता देना तथा उसे साहस देना जिससे उसमें हीन भावना का उदय न हो।"

संक्षेप में परामर्श के उद्देश्य निम्न हैं-

व्यक्ति को स्वयं के वास्तविक स्वरूप, को पहचानने में सहायता प्रदान करना।

व्यक्तित्व विकास करना।

आत्म-ज्ञान और आत्म-स्वीकृति का विकास करना।

विभिन्न मानसिक और सांवेगिक समस्याओं से सुरक्षा प्रदान करना।

मानसिक स्वास्थ्य को सामान्य बनाना।

वैयक्तिक क्षमताओं का विकास करना।

समस्याओं का समाधान करना।

निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।

सामाजिक सामंजस्य का विकास करना।

8.4 समूह परामर्श

हम पहले ही समझ चुके हैं कि परामर्श की प्रक्रिया दो प्रकार की विधियों के द्वारा सम्पन्न की जाती है जिन्हे हम क्रमशः समूह परामर्श एवं व्यक्तिगत परामर्श कहते हैं। यहाँ पर हम समूह परामर्श बारीकी से अध्ययन करेंगे।

8.3.1 समूह परामर्श अर्थ, अवधारणाएँ, उद्देश्य, चरण, अवस्थाएँ

परामर्श के क्षेत्र में समूह परामर्श की अवधारणा नवीनतम है। वर्तमान समय में समाज के सभी सेवा क्षेत्रों में, जिसमें विद्यालय, महाविद्यालय, मानसिक स्वास्थ्य संस्थान और दूसरे मानव सेवा एजेंसीयां सम्मिलित हैं, समूह परामर्श की प्रक्रिया का उपयोग बढ़ता जा रहा है।

संबंधित अध्ययन के क्रम में आगे बढ़ने से पूर्व हम यह समझ लेने का प्रयास करेंगे कि समूह परामर्श की आवश्यकता क्यों महसूस की जा रही है। वास्तव में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा वह अपनी समस्याओं का समाधान समूह की मदद से अधिक बेहतर ढंग से कर सकता है। मनुष्य सबसे अधिक प्रेम व जुड़ाव का भुखा होता है। मनुष्य की इस आवश्यकता की संतुष्टि समूह में होती है। व्यक्ति जब खुद की पहचान को खोने लगता है तब समूह व्यक्ति के चिंतन करने की प्रक्रिया को पुनर्व्यवस्थित करता है। समूह व्यक्ति के आत्म चेतना के विकास में सहायता करता है। इनके अतिरिक्त समूह परामर्श के बढ़ रहे उपयोग के पीछे एक सोंच यह भी है कि जैसे उपबोध जो व्यक्तिगत रूप से परामर्श में खुद को सहज नहीं पाते हैं उनके लिए समूह परामर्श विशेष रूप से लाभदायक है। समूह में बैठने से उपबोध की निजी पहचान छिप जाती है और वह इसी वजह से अधिक स्वाभाविक रूप से अनुक्रिया करता है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी देखा जाए तो यह कम खर्चीली है, क्योंकि धन के रूप में संसाधनों और प्रशिक्षित कार्मिकों की सदैव कमी रहती है। इसलिए यदि एक ही समय में व्यक्तियों के पूरे समूह को परामर्श प्रदान किया जाए तो यह अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा। इनके अतिरिक्त एक तथ्य यह भी है कि समूह परामर्श कुछ विशेष अभिवृत्तियों, धारणाओं, भावनाओं, आवश्यकताओं आदि में बदलाव लाने में सहायक होती है। ऐसे व्यक्तियों के लिए समूह परामर्श बड़े स्तर पर लाभदायक है जो अंतःव्यक्ति अंतःक्रियाओं में शर्मिले या आक्रामक है, समूहों में उत्तेजित या असुविधा अनुभव करते हैं या सामाजिक अपेक्षाओं के प्रति अनिच्छुक है। समूह परामर्श से किशोरों को भी अधिक लाभ पहुँचता है जिनके लिए मित्र समूह का विशेष महत्त्व है। पुनः समूह परामर्श से समाज के कुछ विशेष वर्ग जैसे नशा करने वाले, उत्पीड़ित वर्ग या ऐसे कुछ अन्य वर्ग अधिक फायदा उठा सकते हैं।

समूह परामर्श का अर्थ

समूह परामर्श में एक छोटे समूह के सदस्य सम्मिलित होते हैं जो अपने विशिष्ट लक्ष्यों को लेकर एकत्रित होते हैं, आपस में अपनी समस्याओं को बाँटते हैं, तदनुभूति पूर्ण व्यवहार का अदान-

प्रदान करते हैं। एक दूसरे को सहारा देते हैं और अपने व्यवहार के परिवर्तन हेतु व अंतर्वैयक्तिक समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी कौशलों के विकास करने में सहायता प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार समूह परामर्श वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत व्यक्तियों का समूह उपबोधक के साथ मिलजुल कर वैयक्तिक और अंतर्वैयक्तिक समस्याओं को दूर करने की कला सीखते हैं। इस प्रक्रिया में कुछ उपबोध्य अपनी समस्याओं की मिलजुल कर खोजबीन करते हैं और उनका विश्लेषण भी करते हैं जिससे समस्याओं को वे बेहतर तरीके से समझ सकें; समस्याओं का सामना करना सीख सकें और उपलब्ध विकल्पों में से सही विकल्प का चयन कर सकें और अंतिम निर्णय भी ले सकें। समूह परामर्श उपबोध्यों को एक-दूसरे के निकट लाने में सहायता प्रदान करता है और उन्हें संवेगात्मक सहयोग प्रदान करता है, ताकि वे अपने-आप को और अन्य व्यक्तियों को समझ सकें। जैसे-जैसे समूह संबंध सुदृढ़ बनते हैं, समान निर्देश के अंतर्गत सामूहिक उद्देश्यों की प्राप्ति पर आधारित भावना विकसित होती चली जाती है।

इस क्रम में डिकमायर एवं काल्डवेल के विचार भी उल्लेखनीय हैं जो समूह परामर्श को छात्र के स्वाभाविक विकास की प्रक्रिया को तीव्र व प्रभावशाली बनाने का साधन मानते हैं। उनके अनुसार “यह प्रत्येक छात्र को ऐसी अन्तर्वैयक्तिक प्रक्रिया में सम्मिलित होने का अवसर देता है जिसके द्वारा वह अपने सम-समूह के साथ कार्य करते हुए, अपनी विकासात्मक समस्याओं से अधिक सामर्थ्य से समाधान हेतु तैयार होता है।”

समूह परामर्श की अवधारणाएँ

समूह परामर्श कुछ विशेष अवधारणाओं पर आधारित है-

1. व्यक्तियों में समूह के सदस्यों में परस्पर विश्वास रखने और उनके विश्वास को प्राप्त करने की आवश्यक प्रतिभा क्षमता होनी चाहिए।
2. सदस्यों का एक-दूसरे के साथ सरोकार होना चाहिए।
3. प्रत्येक व्यक्ति में यह स्वाभाविक क्षमता होनी चाहिए कि वह आत्म परिवर्तन का उत्तरदायित्व ले सके।
4. समूह के सदस्यों में समूह गतिशीलता को समझने व ग्रहण करने की योग्यता होनी चाहिए।
5. सदस्यों में समस्या के स्व-समाधान करने की योग्यता का विकास होना चाहिए।
6. समूह परामर्श में कुछ नैतिक मूल्यों का भी विशेष रूप से धन रखा जाना चाहिए। जैसे- समूह परामर्श में अधिक गोपनीय व अत्यंत व्यक्तिगत समस्याओं को नहीं रखा जाना चाहिए। समूह में केवल उन्हीं समस्याओं पर विचार विमर्श होना चाहिए जो प्रकृति में कम संवेदनशील व सामाजिक रूप में स्वीकृति योग्य हों।

समूह के सदस्यों में नैतिक जिम्मेदारियां होनी चाहिए जैसे सदस्यों के प्रति ईमानदारी व सम्मानपूर्ण भावना, नियमितता, समयबद्धता, विचारों की स्पष्टता, दूसरों को पृष्ठपोषण देना, गोपनीयता को बनाए रखना आदि।

समूह का कोई सदस्य बिना पूर्व सूचना दिए व समूह छोड़ने का वैध कारण दिए बिना समूह नहीं छोड़ सकता है।

समूह परामर्श का उद्देश्य

समूह परामर्श की प्रक्रिया के कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं जिनकी प्राप्ति हेतु उपबोधक प्रयासरत रहते हैं। ये उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. व्यक्ति में सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।
2. आत्म निर्देशन द्वारा सीखने के अवसर प्रदान करना।
3. व्यक्ति में आवश्यकताओं एवं समस्याओं को पहचानने की शक्ति का विकास करना।
4. व्यक्ति को दूसरे व्यक्तियों एवं उनकी समस्याओं को समझने हेतु तैयार करना।
5. व्यक्ति में सामाजिक कौशलों का विकास करना।
6. संसाधनों के मितव्ययी एवं कुशलता पूर्वक उपयोग करने की क्षमता को प्रोत्साहित करना।
7. व्यक्ति में सहयोग व सद्भाव की भावना का विकास करना।
8. एक समय में एक साथ अधिक-से-अधिक छात्रों को लाभ पहुँचाना।
9. विद्यार्थियों के अनैतिक व्यवहारों, दृष्टियों एवं प्रवृत्तियों में परिष्करण कर उन्हें वांछनीय मान्यताओं एवं मानकों की ओर अग्रसरित करना।
10. व्यक्ति को सामाजिक समायोजन हेतु सहायता प्रदान करना।
11. व्यक्ति को शैक्षिक व व्यावसायिक चयन संबंधी निर्णय लेने में सहायता प्रदान करना।
12. व्यक्ति में आत्मविश्वास, विचारों को अभिव्यक्त करने व श्रवण की कला का विकास करना।
13. वैयक्तिक व अंतर्वैयक्तिक समस्याओं को सामूहिक प्रयास से दूर करने की क्षमता का विकास करना।

समूह परामर्श के चरण

समूह परामर्श की क्रिया को क्रमिक चरणों में सम्पन्न करने पर यह अधिक उपयोगी व सफल साबित होती है। ये चरण निम्नलिखित हैं-

- समय व स्थान का निर्धारण
- सदस्यों को आपस में परिचित कराना
- उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का स्पष्टीकरण
- उपबोधक द्वारा वार्तालाप के शीर्षक की प्रस्तावना

- सदस्यों द्वारा अपने-अपने विचारों को रखना
 - विचार-विमर्ष करना
 - निष्कर्ष
 - अगली सभा के संबंध में निर्णय
1. समय व स्थान का निर्धारण-इस चरण में उपबोधक परामर्श हेतु समय व स्थान का निर्धारण करता है और सभी सदस्यों को इसकी सूचना प्रदान करता है।
 2. सदस्यों का परिचय- इस चरण में उपबोधक मुख्य रूप से दो कार्य करता है-
 - सभी सदस्यों का स्वागत करना
 - सभी सदस्यों का परिचय करवाना
 - उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का स्पष्टीकरण-
 3. इस चरण में उपबोधक परामर्श के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के संबंध में सभी सदस्यों से स्पष्ट रूप से बातचीत करता है।
 4. वार्तालाप के शीर्षक की प्रस्तावना-इस चरण में उपबोधक वार्तालाप के शीर्षक की प्रस्तावना देता है।
 5. समूह सहभागिता- इस चरण में सदस्यगण अपने-अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। सभी सदस्यों के सक्रिय सहभागिता हेतु समूह का आकार अपेक्षाकृत छोटा होना चाहिए। लगभग छह से दस सदस्यों को ही किसी एक समूह में शामिल करना चाहिए। बड़े समूहों को नियंत्रित करना कठिन होता है।
 6. विचार-विमर्ष- इस चरण में समूह के सभी सदस्यों को अपनी-अपनी शंकाओं के निवारण हेतु संबंधित विषय पर वाद-विवाद कराया जाता है तथा यह अवसर प्रदान कराया जाता है कि वे अपने संदेहों को दूर करें।
 7. निष्कर्ष-अंत में उपबोधक बातचीत का सारांशीकरण करता है एवं संभावित नतीजे पर पहुँचता है। यह निष्कर्ष अगले बातचीत (आवश्यकता महसूस किए जाने पर) के लिए आधार का काम करता है।
 8. अगले सभा के संबंध में निर्णय- इस चरण में समूह परामर्श हेतु अगले मुलाकात के संबंध में निर्णय लिया जाता है तथा इसके लिए समय एवं स्थान का भी चयन कर लिया जाता है।

समूह परामर्श की अवस्थाएँ

समूह परामर्श प्रक्रिया को विभिन्न अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है। ये अवस्थाएँ हैं: निर्माण की अवस्था- इस अवस्था में निम्नलिखित कार्य सम्पन्न किए जाते हैं-

- सूचना, विज्ञापन व पोस्टर आदि का प्रयोग कर व्यक्तियों को समूह के बारे में जागरूक बनाना व सदस्य बनने हेतु तैयार करना।

- उपबोधक द्वारा उपयुक्त समूह का चयन करना
- समूह के सदस्यों को एक दूसरे से परिचित करवाना
- समूह क्रियाशीलता के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का स्पष्टीकरण करना
- क्रियाशीलता हेतु समय सारणी की रूपरेखा तैयार करना व स्थान तय करना

प्रारंभिक अन्वेषण अवस्था- इस अवस्था में उपबोधक समूह के सदस्यों को जो अभी तक एक दूसरे से अपरिचित होते हैं, आपस में खुलकर घुलने-मिलने के लिए तैयार करने हेतु अनुकूल वातावरण का निर्माण करता है। उपबोधक अपनी भूमिका की व्याख्या के साथ-साथ समूह के सदस्यों की भूमिका का वर्णन करता है। सौहार्द पूर्ण वातावरण का निर्माण कर व सदस्यों के विश्वास को जीतकर उन्हें खुलकर अभिव्यक्त करने हेतु प्रेरित करता है। सदस्यों के अपेक्षाओं के बारे में पता लगाता है

अवस्थान अवस्था- इस अवस्था को अपेक्षाकृत कठिन माना जाता है। इस अवस्था में उपबोधक समूह के प्रति व उपबोधक के प्रति अपने नकारात्मक सोचों व प्रवृत्तियों का खुलकर प्रदर्शन करते हैं। ऐसी अवस्था में उपबोधक अपने परामर्श कौशल का परिचय देते हुए बुद्धिमतापूर्ण ढंग से सदस्यों को अपने द्वंद्वों का समाधान करने हेतु प्रेरित करता है

कार्यकारी अवस्था-इस अवस्था में सदस्य समूह से घनिष्ठ रूप से जुड़ जाते हैं। दूसरे सदस्यों की समस्याओं के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं। इस अवस्था में समूह उत्पादक रूप धारण कर लेता है और महत्वपूर्ण समस्याओं के गूढ़ अध्ययन के प्रति वचनबद्ध हो जाता है और समूह में होने वाली अंतःपरिवर्तनों पर पूरा ध्यान देता है। इस अवस्था में सदस्य उपबोधक पर कम निर्भर करते हैं और विशिष्ट व्यक्तिगत लक्ष्यों व समूह लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए ध्यान केंद्रित करना शुरू कर देते हैं। समूह व सदस्य एक दूसरे से आसानी से तर्क-वर्तिक कर सकते हैं और चुनौतियों को बदलाव लाने के ठोस साधनों के रूप में स्वीकार करना पसंद करते हैं।

समेकन और समाप्ति की अवस्था- यह अवस्था सारांशीकरण व समूह अनुभवों के समन्वयीकरण का होता है। इस अवस्था में सदस्यगण अपने-अपने अनुभवों को आपस में बाँटते हैं। समूह परामर्श के द्वारा प्राप्त अधिगम व स्वयं में विकसित अंतःदुष्टि के बारे में दूसरों को सूचना प्रदान करते हैं। साथ ही इनका प्रयोग वे अपने व्यावहारिक जीवन में किस प्रकार करेंगे, इनकी जानकारी प्रदान करते हैं। सदस्य समूह परामर्श के दौरान प्राप्त अनुभव व अधिगम का प्रयोग अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य, करने के अवधारणात्मक रूपरेखा को विकसित करने में किस प्रकार करेंगे, इसके लिए उपबोधक उन्हें सहायता प्रदान करता है

अनुगमन सत्र- परामर्श सत्र के समाप्त होने के कुछ समय पश्चात् उपबोधक उपबोध्यों का अनुगमन कर यह जाँच करने का प्रयास करता है कि उपबोध्यों के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन हुआ है या नहीं अर्थात् परामर्श प्रदान करने में उसे सफलता प्राप्त हुई है या नहीं।

8.3.2 समूह परामर्श के लाभ और सीमाएँ

लाभ

- i. यह विविध रूपों से कम खर्चीला है क्योंकि समूह परामर्श के अन्तर्गत एक साथ व्यक्तियों की बड़ी संख्या को उपबोधक द्वारा लाभान्वित किया जा सकता है। इससे समय की भी बचत होती है।
- ii. इससे व्यक्तियों को अपनी अभिवृत्तियों, आदतों तथा निर्णयन को समाजीकृत करने में सहायता मिलती है।
- iii. इसमें दूसरे सदस्यों के साथ अधिगम व अनुभव को बाँटने हेतु स्वस्थ वातावरण प्राप्त होता है जिससे कि छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है।
- iv. समूह परामर्श में व्यक्ति को हर कार्य एवं व्यवहार को ऐसे सीखने की प्रेरणा मिलती है जैसे वह वास्तविक जीवन में कोई कार्य कर रहा है।
- v. इसमें अच्छे मानवीय संबंध स्थापित करने व सामूहिक निर्णय लेने की भावना का विकास होता है।

सीमाएँ

- i. समूह परामर्श में अत्यंत व्यक्तिगत और निजी समस्याओं को उजागर नहीं किया जा सकता है।
- ii. समूह परामर्श के दौरान स्थिति को नियंत्रित करना उपबोधक के लिए कठिन कार्य है।
- iii. इसमें सदस्यों के अवधान को प्राप्त करने हेतु सृजनात्मक तकनीकों का उपयोग नहीं किया जाता है।
- iv. समूह परामर्श सभी के लिए उपयुक्त नहीं है। कुछ व्यक्ति समूह में भय महसूस करते हैं व कुछ व्यक्तियों में सहनशक्ति का स्तर अत्यंत निम्न होता है और वे समूह की मांगों के अनुरूप व्यवहार बदलने में सक्षम नहीं होते।

कुछ बिन्दुओं को नजरअंदाज कर दिया जाए तो समूह परामर्श वास्तव में अधिगम अनुभव प्राप्त करने का प्रभावशाली रूप है जो व्यक्तियों को कोई महत्वपूर्ण मानवीय गुणों का विकास करता है। इसमें सदस्य अपने अनुभवों को बाँटते हैं व दूसरों से सीख सकते हैं। व्यक्ति यह जान पाता है कि बहुत सारे लोग हैं जो समान समस्याओं का सामना कर रहे हैं, वह ही अकेला संघर्ष नहीं कर रहा

है। समूह परामर्श विशेषकर विद्यालय एवं महाविद्यालय के वातावरण में अधिक सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जा सकता है जहाँ छात्र समूह में सीखने में सहजता व आनंद की अनुभूति करते हैं।

8.4 परिवार परामर्श: परिवार परामर्श हेतु इकाई -3 के बिन्दु 3.6 पारिवारिक परामर्श का अध्ययन करें।

8.5 परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका

स्कूल के संदर्भ में, शिक्षक परामर्शदाता होता है और छात्र या तो शिक्षक के पास तब जाता है जब उसे कोई समस्या होती है, जिसे वह स्वयं हल नहीं कर सकता। या शिक्षक समस्या को भांप लेता है और छात्र को समस्या को हल करने में मदद करता है। परामर्शदाता के रूप में शिक्षक न केवल स्कूल, पढ़ाई आदि से संबंधित समस्याओं को संबोधित करता है, बल्कि दोस्तों, परिवार, स्वास्थ्य आदि से संबंधित समस्याओं को भी संबोधित करता है।

एक परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी परिवार में माता-पिता, समाज में नेता, जहाज में कप्तान, और बाग में माली की है।

शिक्षक के परामर्श सम्बन्धी कार्य

परामर्शदाता के रूप में शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अनेक प्रकार से सहायता प्रदान करता है, शिक्षक के कार्यों को समझने के लिए हम उसके कार्यों को निम्नांकित दो भागों में विभाजित कर सकते हैं-

1. वैयक्तिक परामर्श
2. शैक्षिक परामर्श

वैयक्तिक परामर्श Personal Guidance- यद्यपि किसी भी प्रकार का परामर्श व्यक्ति विशेष को ही प्रदान किया जाता है, अतः प्रत्येक परामर्श वैयक्तिक परामर्श की श्रेणी में रखा जा सकता है तथापि अध्ययन की सुविधा के लिए हम वैयक्तिक परामर्श के प्रकारों का विभाजन निम्नांकित रूप में कर सकते हैं-

1. संवेगात्मक परामर्श Emotional Guidance -हमारा अधिकाँश जीवन संवेगों के द्वारा संचालित होता है अतः जीवन को उपयुक्त दिशा देने के लिए हमें संवेगों पर नियन्त्रण रखना आवश्यक है। किशोरावस्था में बालक का संवेगात्मक विकास तीव्रता से हो रहा होता है, एक शिक्षक के सम्पर्क में अधिकाँशतः किशोर अथवा युवा बालक आते हैं अतः परामर्शदाता के रूप में शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य बालक के संवेगों को सही दिशा देना है।
2. स्वास्थ्य सम्बन्धी परामर्श Health Related Guidance- किशोरावस्था तूफान की अवस्था कही जाती है, इस अवस्था में बालक का ध्यान अपने स्वास्थ्य पर या तो नहीं

रहता या वह स्वास्थ्य के प्रति बहुत सजग हो जाता है। इन दोनों ही स्थितियों में उसे शिक्षक के द्वारा कुशल परामर्श की आवश्यकता होती है, यदि वह अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग नहीं है तो उसे सचेत करने का दायित्व शिक्षक का बनता है। यदि वह अपने शरीर निर्माण के लिए गलत साधनों का प्रयोग कर रहा है तो उसे रोकना भी शिक्षक का दायित्व है।

3. व्यवहार सम्बन्धी परामर्श Behavioural Guidance- छात्र जीवन में व्यक्ति प्रायः व्यवहार कुशल नहीं होता जिस कारण उसके समक्ष सामाजिक समायोजन की समस्या उत्पन्न हो जाती है। एक कुशल परामर्शदाता के रूप में शिक्षक अपने विद्यार्थियों को इस प्रकार का परामर्श देता है जिससे वह अपने साथियों और समाज में भली-भाँति समायोजित हो सके।

शैक्षिक परामर्श

जैसा कि हम जानते हैं कि व्यक्ति के जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय उसका अध्ययन काल है, अतः व्यक्ति के लिए उचित शैक्षिक परामर्श अनिवार्य है, शिक्षक के शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी कार्य को हम निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित कर सकते हैं-

1. उपयुक्त विषय के चुनाव में सहायता करना Helpful in Selecting Appropriate Subject -पूर्व माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती अध्ययन के विषयों का चयन करना है, प्रायः विषय चयन के सम्बन्ध में विद्यार्थी अपने साथियों का अनुसरण करते हैं और गलत विषयों का चुनाव कर बैठते हैं। शिक्षक का दायित्व बनता है कि वह विद्यार्थी की रुचि और योग्यता का ध्यान रखते हुए उसे विषय चयन में इस प्रकार सहायता प्रदान करे जिससे विद्यार्थी अपना भविष्य सुरक्षित कर सके।
2. ज्ञान प्राप्ति में सहायता करना Helpful in Acquiring Knowledge- अनुपयुक्त परीक्षा प्रणाली और निम्नस्तरीय पुस्तकों की भीड़ ने विद्यार्थियों के ज्ञान प्राप्ति के स्तर को कम कर दिया है। शिक्षक का दायित्व यह है कि वह अपने विद्यार्थियों को विषय सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करे तथा ज्ञान वृद्धि के लिए आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध कराने में सहायता करे।
3. श्रेष्ठ अभिव्यक्ति की विद्या सिखाना Teaching, Better Style of Manifestation- आपने अपने विद्यार्थी जीवन में प्रायः यह अनुभव किया होगा कि जितना हम किसी विषय विशेष में जानते हैं, मौखिक अथवा लिखित अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होने पर हम स्वयं को उतना अभिव्यक्त नहीं कर पाते। इस तरह की समस्या अधिकांश विद्यार्थियों के जीवन में आती है। एक कुशल परामर्शदाता के रूप में शिक्षक का यह कर्तव्य बनता है

कि वह उन्हें मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के उपाय सिखाने हेतु उचित परामर्श प्रदान करें।

4. कक्षा कक्ष व्यवहार सम्बन्धी परामर्शGuidance Related to Class Room Behaviour- विद्यालय स्तर पर विद्यार्थी प्रायः कक्षा कक्ष में किये जाने वाले व्यवहारों से अनभिज्ञ रहता है। शिक्षक के कक्षा में प्रवेश करते समय, अध्यापन कार्य करते समय अथवा कक्षा से शिक्षक के बाहर जाते समय विद्यार्थी को किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए यह परामर्श देने का दायित्व शिक्षक का है। इतना ही नहीं शिक्षक के समक्ष अपनी जिज्ञासा अभिव्यक्त करने अथवा अपनी बात कहने का तरीका भी शिक्षक को ही सिखाना चाहिए।
5. अध्ययन सामग्री का चयन करने के लिए परामर्शGuidance to Select the Study-Material विद्यालय में पढ़ाये गये पाठ को आत्मसात करने के लिए विद्यार्थी को श्रेष्ठ अध्ययन सामग्री की आवश्यकता होती है। बाजार में उपलब्ध अनेक प्रकार की अध्ययन सामग्री में से कौन सी सामग्री स्तरीय एवं उपयोगी है इस बात का ज्ञान विद्यार्थी को नहीं होता। अतः उचित अध्ययन सामग्री का चयन करने हेतु विद्यार्थी को परामर्श प्रदान करना शिक्षक का दायित्व है।
6. प्रयोगात्मक कार्य के लिए परामर्शGuidance for Practical Work - विद्यालय की प्रयोगशालाओं में उपलब्ध उपकरणों तथा रसायनों से विद्यार्थी प्रायः अनभिज्ञ रहते हैं। ऐसी स्थिति में वे प्रयोगशाला उपकरण, रसायन अथवा स्वयं को गम्भीर क्षति पहुँचा सकते हैं। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह प्रयोगशाला में कार्य करते समय विद्यार्थियों के साथ स्वयं भी उपस्थित रहे तथा उन्हें प्रयोगात्मक कार्य के लिए उचित परामर्श प्रदान करे।

शिक्षक का परामर्श सम्बन्धी कार्यक्षेत्र (Scope of a Teacher as a Guide) - शिक्षक के परामर्श सम्बन्धी कार्यों की चर्चा करने से पूर्व हमें यह जान लेना आवश्यक है कि किन परिस्थितियों में विद्यार्थी को शिक्षक के परामर्श की आवश्यकता होती है। निम्नांकित कार्य क्षेत्र ऐसे हैं जहां विद्यार्थी को शिक्षक के परामर्श की आवश्यकता अनुभव होती है-

1. शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति का क्षेत्र
2. कुसमायोजित बालकों के समायोजन का क्षेत्र
3. शैक्षिक विकास का क्षेत्र
4. सूचनाओं को समझने एवं अनुसरण करने का क्षेत्र
5. शैक्षिक उपकरणों एवं रसायनों का प्रयोग
6. पुस्तकालय।
7. पाठ्य-सहगामी गतिविधियाँ में परामर्श

8. विशिष्ट बालकों के लिए परामर्श

परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका का निर्वहन निम्न रूपों में किया जा सकता है:-

- i. एक व्यक्ति के रूप में
- ii. कक्षा शिक्षक के रूप में
- iii. विषय शिक्षक के रूप में
- iv. खेल शिक्षक के रूप में
- v. प्रशासक के रूप में

अभ्यास प्रश्न

1. समूह परामर्श से क्या अभिप्राय है?
2. समूह परामर्श प्रक्रिया के कौन-कौन से चरण हैं?
3. समूह परामर्श के दो लाभ बताइए?
4. समूह परामर्श में कौन-कौन से दो नैतिक मूल्यों का ध्यान रखा जाना चाहिए?
5. समूह परामर्श की सीमाएँ कौन सी हैं।
6. समूह परामर्श में उपबोध्य की सहायतार्थ व्यावसायिक विशेषज्ञों का समूह होता है।(सत्य/असत्य)
7. समूह परामर्श मदिरापान करने वालों के लिए उपयुक्त है। (सत्य/असत्य)
8. समूह परामर्श में समूह के सदस्य एक दूसरे के प्रति सरोकार नहीं रखते हैं।(सत्य/असत्य)

8.6 सारांश

राबिन्सन के अनुसार“ परामर्श शब्द दो व्यक्तियों के सम्पर्क की उन सभी स्थितियों का समावेश करता है जिनमें से एक व्यक्ति को अपने एवं पर्यावरण के बीच प्रभावी समायोजन प्राप्त करने में सहायता की जाती है” परामर्श में दो तत्व महत्वपूर्ण है- मानवीय सम्बन्ध एवं सहायता।

परामर्श के लक्ष्यों के स्थान पर कई बार साधनों को अधिक महत्व दे दिया जाता है। किन्तु तकनीक या साधन को ही लक्ष्य मान बैठना भूल है। साध्य और साधन दोनों ही समान महत्व रखते हैं। साध्य कार्य के प्रारम्भ की ओर प्रेरित करता है। जबकि साधन लक्ष्य को प्रषस्त करते हैं। परामर्श के लक्ष्यों के निर्धारण की तीसरी बात यह है कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में उसे सहायता करनी चाहिए। उसे अपनी दृष्टि परिधि में समग्र व्यक्तित्व को ग्रहण करना चाहिए। व्यक्तियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में अर्थपूर्ण सम्बन्धों की आवश्यकता होती है और बहुतों को तो इन्हीं सम्बन्धों के आधार पर जीवन के महत्व और उद्देश्यों से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त होता है। अतः सामूहिक परामर्श में रुचि और इसका (सम्बन्धों का) प्रयोग अधिक होने लगा है। सामूहिक परामर्श के आधार पर निम्नलिखित हैं-

(1) व्यक्ति द्वारा अपनी क्षमताओं तथा सीमाओं का ज्ञान, (2) अपनी सम्भावनाओं की पूर्ति, (3) वैयक्तिक भिन्नताओं का प्रभाव, (4) विकासात्मक प्रक्रिया में सामूहिक अनुभव, (5) व्यक्ति के प्रत्यक्ष ज्ञान एवं संप्रत्यय में समूह के कारण होने वाले परिवर्तन।

समूह के सदस्यों में भी अन्तर होना स्वाभाविक है परन्तु उद्देश्यों की समानता के कारण उनमें एकता होती है और इसलिए वे मिलकर सामूहिक कार्य में भाग लेना चाहते हैं। समूह की प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण अंश भाग ग्रहण है। वही समूह सफल माना जाता है जिसके सभी सदस्य मन, वचन, कर्म से सामूहिक कार्य में भाग लेते हैं। समूह की प्रक्रिया जो कि सामूहिक गति का ही एक रूप है, सहयोग की अवस्था की ओर उस समय अग्रसर होती है, जबकि भाग ग्रहण के पश्चात् समूह के सदस्यों में सहयोग की भावना का उदया होता है।

यदि समूह को उपयुक्त नेत्त्व प्राप्त हो जाता है तो उसकी प्रक्रिया तथा गतिशीलता में अधिक कठिनाई नहीं होती, और वह कम से कम समय में अपने उद्देश्यों की पूर्ति की ओर अग्रसर हो जाता है।

8.7. शब्दावली

- समूह परामर्श : परामर्श की वह विधि जिसमें व्यक्तियों का एक छोटा समूह उपबोधक के साथ मिलकर समस्या का समाधान करना सीखता है, समूह परामर्श कहते हैं।
- वैयक्तिक परामर्श - व्यक्ति विशेष को ही प्रदान किया जाता है,

8.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. समूह परामर्श वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत व्यक्तियों का एक छोटा समूह उपबोधक के साथ मिलकर वैयक्तिक और अंतर्वैयक्तिक समस्याओं को दूर करने की कला सीखते हैं।
2. समूह परामर्श प्रक्रिया के चरण हैं-
 - i. समय व स्थान का निर्धारण
 - ii. सदस्यों को आपस में परिचित कराना
 - iii. उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का स्पष्टीकरण
 - iv. उपबोधक द्वारा वार्तालाप के शीर्षक की प्रस्तावना
 - v. सदस्यों द्वारा अपने-अपने विचारों को रखना।
 - vi. विचार-विमर्श करना
 - vii. निष्कर्ष
 - viii. अगले सभा के संबंध में निर्णय लेना
3. समूह परामर्श के दो लाभ-
 - i. यह मितव्ययी है

- ii. इससे व्यक्तियों को अपनी अभवृत्तियों, आदतों तथा निर्णयन को समानीकृत करने में सहायता मिलती है।
4. समूह परामर्श में निम्न दो नैतिक मूल्यों का ध्यान रखा जाना चाहिए-
- i. समूह के सदस्यों में नैतिक जिम्मेदारियां होनी चाहिए जैसे सदस्यों के प्रति ईमानदारी, गोपनीयता को बनाए रखना, समय बद्धता आदि।
- ii. समूह का कोई सदस्य बिना पूर्व सूचना दिए समूह को नहीं छोड़ सकता है।
5. समूह परामर्श की सीमाएँ हैं-
- i. समूह परामर्श में व्यक्तिगत और निजी समस्याओं को उजागर नहीं किया जा सकता है।
- ii. समूह परामर्श के दौरान स्थिति को नियंत्रित करना उपबोधक के लिए कठिन कार्य है।
- iii. इसमें सदस्यों के अवधान को प्राप्त करने हेतु सृजनात्मक तकनीकों का उपयोग नहीं किया जाता है।
6. गलत
7. सही
8. गलत

8.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Sharma R.A (Guidance and counseling) Vinay Rakheia c/o R. Lall book Depot Meerut (2010)
2. सिंह रामपाल राधावल्लभ उपाध्याय, (शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन) विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
3. जायसवाल सीताराम (शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श), अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा (2009)
4. “इंट्रोडक्सन टु गाइडेन्स एण्ड कॉन्सिलिंग” (2009) बी0एड0 के छात्रों के लिए स्व अध्ययन सामग्री, स्कूल ऑफ एजूकेषन, इंदिरा गांधी नेशनल ओपेन यूनीवर्सिटी, न्यू देलही।

8.10. निबन्धात्मक प्रश्न

1. समूह परामर्श के अर्थ एवं उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए इसके विभिन्न चरणों एवं अवस्थाओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. एक परामर्शदाता के रूप में शिक्षक के दायित्वों का वर्णन करो।
3. परामर्श सफल पारिवारिक जीवन के लिये आवश्यक है आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए

इकाई 9. साक्षात्कार, व्यक्तिवृत्त विधि और मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Interview, Case History and Psychological Testing)

इकाई संरचना

- 9.1 प्रस्तावना
- 9.2 उद्देश्य
- 9.3 साक्षात्कार
- 9.4 व्यक्ति इतिहास
- 9.5 परीक्षण
- 9.6 सारांश
- 9.7 तकनीकी पद
- 9.8 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न
- 9.9 निबंधात्मक प्रश्न
- 9.10 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

9.1 प्रस्तावना (Introduction)

निर्देशन तथा परामर्श, व्यक्ति के विकास की अनिवार्यता है। व्यक्ति का विकास दूसरे से निर्देशन तथा परामर्श पर अधिक निर्भर करता है। इसके अभाव में व्यक्ति प्रगति नहीं कर सकता। व्यक्ति अध्ययन में व्यक्ति के विषय में सूचनायें एकत्र हो जाती हैं और उस आधार पर निष्कर्ष निकालकर आवश्यक निर्देशन तथा उसके क्रियान्वयन के लिये परामर्श दिया जाता है। व्यक्ति का अध्ययन करने से व्यक्ति के विषय में अनेक सूचनायें प्राप्त होती हैं। ये सूचनायें व्यक्ति के विषय में सही तथा वस्तुनिष्ठ धारणायें बनाने में योग देती हैं।

रीवज एवं जड के अनुसार, विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि तथा उनके अनुभवों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किये बिना ही उन विद्यार्थियों के विकास में निर्देशन प्रदान करने का प्रयत्न किसी असम्भव कार्य के लिये प्रयत्न करने जैसा है।

जोन्स का कथन है, किसी व्यक्ति को चयन में सहायता का आधार उसके बारे में व्यापक अध्ययन, उसकी मूलभूत आवश्यकतायें, उसके निर्णयों को प्रभावित करने वाली वास्तविक परिस्थितियों का ज्ञान होता है।

निर्देशन , शिक्षण की भाँति एक प्रकार की सेवा है जो कि एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति को प्रदान की जाती हैं कहा यह जाता है कि शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहा जबकि वह कक्षा में प्रत्येक छात्र को सीखने में मात्र सहायता करता है। इसी प्रकार परामर्शदाता, बहुधा छात्रों के समूहों में मिलता है। जिसका उद्देश्य भी समूह के प्रत्येक सदस्य की सहायता होता है। लेकिन इस प्रकार की सहायता तब तक प्रभावपूर्ण नहीं हो सकती जब तक शिक्षक या परामर्शदाता छात्र की व्यक्तिगत समस्या, उसकी विशेषताओं या योग्यताओं को भली-भाँति न जानता हो। अतः छात्र या व्यक्ति की पूर्ण समझ ही सफल निर्देशन का आधार है। यही कारण है कि निर्देशन की दृष्टि से व्यक्ति का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। व्यक्ति का अध्ययन करने के लिये उसके जीवन एवं परिवेश, कार्यस्थल, कार्य-वातावरण, स्वभाव आदि सम्बन्धी जानकारी एकत्र करने के लिये अनेक प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

व्यक्ति से कुछ सूचनायें मानकृत उपकरणों द्वारा प्राप्त होती है। ये सूचनायें वस्तुनिष्ठ होते हुए भी अपूर्ण होती है। इसलिये अमानकीकृत उपकरणों तथा विधियों से भी सूचनायें एकत्र की जाती है। स्टैंग के शब्दों में-“सम्पूर्ण विद्यार्थी का अध्ययन करने के लिये अभी तक किसी ने भी एक पूर्ण विधि का निर्माण नहीं किया है। शायद उत्तम विधि वह है जिसके द्वारा विद्यार्थी का विभिन्न परिस्थितियों में अध्ययन किया जाये।

9.2. उद्देश्य:-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान पाएंगे कि-

- व्यक्ति -अध्ययन क्या है
- साक्षात्कार द्वारा किस तरह से व्यक्ति की समस्याओं तथा गुणों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। परामर्श द्वारा किस तरह से समस्याओं को समझ कर उनका समाधान किया जाता है।
- व्यक्ति का अध्ययन करने के लिए आवश्यक जानकारी किस तरह से एकत्रित की जाती है व्यक्ति अध्ययन से ही व्यक्तिगत मार्गदर्शन एवं परामर्श दिया जाना सम्भव है। इसी के द्वारा व्यक्ति का विकास किस तरह से सम्भव है।
- व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने के लिए मानकीकृत परीक्षणों का किस तरह से प्रयोग किया जाता है।

9.3 साक्षात्कार (Interview)

साक्षात्कार एक आत्मनिष्ठ विधि है जिसके द्वारा व्यक्ति की समस्याओं तथा गुणों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। साक्षात्कार निर्देशन कार्य-विधि का एक आवश्यक अंग है जिसे परामर्श प्रक्रिया

का हृदय माना जाता है। विद्यालयों में छात्रों के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इन समस्याओं के समझने तथा उनके समाधान में छात्रों को सहायता करने के लिए साक्षात्कार एक महत्वपूर्ण विधि है।

1. जॉन जी० डार्ले ने साक्षात्कार की परिभाषा इस प्रकार दी है, “साक्षात्कार एक उद्देश्यपूर्ण वार्तालाप है।”

2. गुड और हैड ने भी कहा है, “किसी उद्देश्य से किया गया गम्भीर वार्तालाप ही साक्षात्कार है।”

उपर्युक्त परिभाषाएँ स्पष्ट करती हैं कि साक्षात्कार में आमने-सामने बैठकर किसी उद्देश्य को लेकर व्यक्तियों में वार्तालाप होता है। सभी प्रकार के साक्षात्कार में निम्नलिखित तत्व समान रूप से पाये जाते हैं।

(1) व्यक्ति का व्यक्ति से सम्बन्ध।

(2) एक-दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने का साधन।

(3) साक्षात्कार में संलग्न दो व्यक्तियों में से एक को साक्षात्कार के उद्देश्य का ज्ञान रहता है।

9.3.1 साक्षात्कार के प्रकार (Types)

साक्षात्कार अनेक प्रकार के होते हैं। यहाँ कुछ प्रकार के साक्षात्कार का विवरण दिया जा रहा है।

i. **नियुक्ति साक्षात्कार-** किसी भी जीविका में नवीन नियुक्ति के लिये व्यक्ति का साक्षात्कार किया जाता है। इस साक्षात्कार का प्रमुख उद्देश्य जीविका के लिये व्यक्ति की उपयुक्तता निश्चित करना है। इसमें जीविका से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। ये प्रश्न साक्षात्कार करने वाले के द्वारा पूछे जाते हैं।

ii. **सूचनात्मक साक्षात्कार-** इस प्रकार के साक्षात्कार में छात्र को निष्पत्ति तथा विभिन्न परीक्षाओं में प्राप्त अंकों की व्याख्या सम्बन्धी सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं। छात्रों को भिन्न-भिन्न नौकरियों, जीविकाओं तथा शिक्षण संस्थाओं के सम्बन्ध में सूचनाएँ देना सूचनात्मक साक्षात्कार का उद्देश्य है।

iii. **अनुसंधान साक्षात्कार-** साक्षात्कार लेने वाला व्यक्ति साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति में रुचि न रखकर उन तथ्यों में रुचि लेता है। जो तथ्य साक्षात्कार देने वाला बताता है। इस प्रकार के तथ्य बहुत व्यक्तियों से प्राप्त किये जाते हैं।

- iv. **निदानात्मक साक्षात्कार-** इस साक्षात्कार का उद्देश्य छात्र के घर तथा वातावरण आदि से सम्बन्धित सूचनार्यें प्राप्त करना है। तथ्य-संकलन निदान का महत्वपूर्ण अंग होता है।
- v. **परामर्श साक्षात्कार-** साक्षात्कार परामर्श प्रक्रिया का मुख्य आधार माना जाता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति में सूझ-बूझ उत्पन्न करना जो कि आत्म-बोध प्राप्त करने में सहायक होती है।
- vi. **उपचारात्मक साक्षात्कार-** उपचारात्मक साक्षात्कार में व्यक्ति से इस प्रकार वार्तालाप किया जाता है कि उसको अपनी चिन्ताओं एवं परिस्थितियों से मुक्ति मिले, उसका समायोजन ठीक हो सके। वह अपनी सभी चिन्ताओं भावनाओं आदि को व्यक्त करके अपने मन के भार को दूर करता है।
- vii. **तथ्य संकलन साक्षात्कार-** इस साक्षात्कार में व्यक्ति या व्यक्तियों के समुदाय से मिलकर तथ्य संकलित किये जाते हैं। शिक्षक या निर्देशक भी इसी विधि द्वारा छात्रों के सम्बन्ध में तथ्य एकत्रित करते हैं। इसके तीन प्रमुख उद्देश्य हैं:
- अन्य विधियों द्वारा संग्रहित किये गये तथ्यों में न्यूवता-पूर्ति करना। कुछ तथ्य अन्य विधियों द्वारा प्राप्त नहीं हो पाते हैं। साक्षात्कार में उन सूचनाओं को एकत्रित करने का प्रयत्न किया जाता है जो मनोवैज्ञानिक जॉचों द्वारा प्राप्त नहीं हो पाती है।
 - पहले से संकलित की गयी सूचनाओं की पुष्टि करने के लिए तथ्य-संकलन साक्षात्कार किया जाता है।
 - तथ्य-संकलन साक्षात्कार की तीसरा उद्देश्य शारीरिक रूप का अवलोकन करना है। बहूत से छात्रों में अनेक दोष पाये जाते हैं जिनका ज्ञान मनोवैज्ञानिक जॉचों से नहीं हो सकता है। इसके साथ ही साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति का बातचीत करने का ढंग तथा आचरण करने का ढंग का ज्ञान होता है।

9.3.2 साक्षात्कार के भाग (Phases of Interview)

साक्षात्कार के तीन भाग होते हैं:

1. प्रारम्भ अवस्था (Preliminary)
2. मध्य अवस्था (Middle)
3. अन्त अवस्था (Termination)

1. साक्षात्कार का आरम्भ-

साक्षात्कार के इस भाग में साक्षात्कार करने वाले तथा प्रार्थी के मध्य मधुर सम्बन्ध स्थापित करना सम्मिलित है। साक्षात्कार की सफलता इन मधुर सम्बन्धों पर ही निर्भर रहती है। साक्षात्कार प्रारम्भ करने के लिये निम्नलिखित सुझावों के अनुसार कार्य आरम्भ करना चाहिए।

आत्मीयता स्थापित करना-साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के साथ एकात्मकता स्थापित करनी चाहिए। एकात्मकता स्थापन हेतु डेविस तथा राबिन्सन ने निम्न सुझाव दिये हैं:

- i. **सहानुभूति-** साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति को कुछ शब्दों या अन्य किसी विधि द्वारा साक्षात्कार देने वाले के साथ सहानुभूति प्रकट करनी चाहिए।
- ii. **विश्वास -**साक्षात्कारकर्ता या तो साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति में विश्वास पैदा करे तथा साथ ही उसको प्रोत्साहित करे कि उसकी समस्या का समाधान अवश्य होगा।
- iii. **स्वीकृति-** साक्षात्कारकर्ता या तो साक्षात्कार देने वाले के साथ अपनी सहमति प्रकट करता है या उसके कृत्यों को स्वीकृति प्रदान करता है। यह स्वीकृति व्यक्ति को उत्साहित करने के लिये दी जाती है। जिससे वह स्वयं भी भावनाओं को स्वतंत्रापूर्वक निस्संकोच होकर प्रकट कर सके।
- iv. **विनोद-** तनाव दूर करने के लिये हास्य का भी प्रयोग करना चाहिए।
- v. **व्यक्तिगत सन्दर्भ-** अपनी बातों को स्पष्ट करने के लिये साक्षात्कारकर्ता को अपने अनुभवों का उदाहरण देना चाहिए।
- vi. **प्रश्न पूछना-** व्यक्ति को अपनी समस्याओं के सम्बन्ध में अधिक विचार करने की प्रेरणा देने के लिये साक्षात्कारकर्ता को कुछ प्रश्न पूछने चाहिए।
- vii. **भय-** कभी-कभी साक्षात्कारकर्ता को यह भय दिखाना चाहिए कि अगर साक्षात्कार देने वाला सही सूचनाएँ नहीं देता है तो इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा।
- viii. **आश्चर्य-** साक्षात्कार देने वाले के कथन या क्रिया पर कभी-कभी साक्षात्कार लेने वाले को आश्चर्य भी प्रकट करना चाहिए। इस प्रकार व्यक्ति अपने कथन या व्यवहार में सुधार कर लेता है।
- ix. **प्रारम्भ में व्यवस्थित रचना पर कम ध्यान-** साक्षात्कार के प्रारम्भ में कोई भी व्यवस्थित रचना नहीं होनी चाहिए। प्रारम्भिक अवस्थाओं में साक्षात्कार स्वच्छन्द होना चाहिए। साक्षात्कारकर्ता को अपने उद्देश्य तक सीधे पहुँचने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।
- x. **अनुमोदन-** अनुमोदन से तात्पर्य है कि साक्षात्कारकर्ता, साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति को बातचीत की स्वतंत्रता प्रदान करता है वह उसके कथन पर कोई निर्णय नहीं देता है। उसमें विश्वास पैदा होता है कि वह जो कुछ कहेगा, वह स्वीकार किया जाएगा।

- xi. **बातचीत का समान समय-** साक्षात्कार में बातचीत के लिये दोनों को ही समान समय मिलना चाहिए। साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति को अगर बोलने के लिये पर्याप्त समय नहीं दिया जायेगा तो साक्षात्कार बहुत कम उपयोगी होगा।

2. साक्षात्कार का मध्य भाग-

साक्षात्कार का मध्य भाग महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इसके द्वारा ही इच्छित सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं। मध्य भाग को अधिक उपयोगी बनाने के लिये निम्नलिखित सुझावों पर ध्यान देना चाहिए।

- i. **प्रेरक प्रश्नों का प्रयोग-** प्रश्न इस प्रकार के हों जो साक्षात्कार देने वाले को प्रेरणा दें। प्रश्नों द्वारा ही व्यक्ति को बात करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। बहुत से प्रश्न 'हाँ' या 'नहीं' उत्तर वाले होते हैं। ये प्रश्न साक्षात्कार देने वाले को बात करने की या अधिक बोलने की स्वतंत्रता नहीं देते हैं। ऐसे प्रश्नों का उपयोग नहीं करना चाहिए।
- ii. **निस्तब्धता का रचनात्मक उपयोग-** निस्तब्धता का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। अगर साक्षात्कार देने वाला चुप हो जाता है तो इसका अर्थ है कि उसके मस्तिष्क में विचार द्रुत चल रहा है। साक्षात्कारकर्ता की चुप्पी का कारण साक्षात्कार की प्रगति के बारे में चिन्तन हो सकता है।
- iii. **सीमित सूचनाएँ -** साक्षात्कारकर्ता को एक बार के साक्षात्कार में ही छात्र के बारे में सब कुछ ज्ञात करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। सीमित सूचनाएँ ही एक बार के साक्षात्कार में संग्रह करनी चाहिए।
- iv. **साक्षात्कार देने वाले की भावना तथा अभिवृत्ति समझने का प्रयत्न-** साक्षात्कार देते समय व्यक्ति अपनी प्रतिगामी या नकारात्मक भावनाओं को प्रदर्शित करता है। परामर्शदाता को चाहिए कि वह उसकी भावनाओं के प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा। नियंत्रण से तात्पर्य है कि वार्तालाप के समय नाममात्र की स्वतंत्रता दी जाती है। और वार्तालाप के मध्य ही प्रत्यक्ष प्रश्न पूछकर वह साक्षात्कार देने वाले को विषय पर लाता है।

3. साक्षात्कार की समाप्ति -

साक्षात्कार की समाप्ति करना भी कठिन कार्य है। साक्षात्कार की समाप्ति दो रूपों में होती है:

साक्षात्कार की समाप्ति इस प्रकार करना कि छात्र को संतोष हो।

साक्षात्कार इस प्रकार समाप्त किया जाये कि दूसरे साक्षात्कार को प्रारम्भ में करने में कम समय लगे।

साक्षात्कार के समय साक्षात्कारकर्ता रुचि के कारण साक्षात्कार को इतना लम्बा कर देता है कि उसकी समाप्ति करना उसके लिये दुष्कर हो जाता है। उसको चाहिए कि साक्षात्कार के समय यह

ध्यान रखे कि साक्षात्कार का अन्त किस प्रकार करना है। अगर पुनः उसी व्यक्ति का साक्षात्कार लेना है तो इन शब्दों के साथ साक्षात्कार समाप्त किया जा सकता है-“अच्छा, आज के साक्षात्कार का समय पूरा हो चुका है परन्तु अगर तुमको सुविधाजनक हो तो एक सप्ताह के बाद हम लोग फिर मिल सकते हैं” साक्षात्कार की मुख्य बातें तुरन्त लिख लेनी चाहिए।

9.3.3 साक्षात्कार की तैयारी (Preparation):

- साक्षात्कार आरम्भ करने से पहले ही यह निश्चित कर लेना चाहिए कि साक्षात्कार का उद्देश्य क्या है? जो तथ्य साक्षात्कारकर्ता को प्राप्त करने हैं उनकी सूची पहले से ही बना लेनी चाहिए।
- साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। साक्षात्कार लेने वाला व्यक्ति छात्र के संचय आलेख-पत्र से उसके बारे में परिचय प्राप्त कर सकता है।
- साक्षात्कारकर्ता को चाहिए कि साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति से साक्षात्कार का दिन तथा समय निश्चित कर लिया जाय। समय ऐसा हो जो दोनों के अनुकूल हों।
- साक्षात्कार के लिये गुप्तता रखनी चाहिए। साक्षात्कार देते समय छात्र तभी तथ्य प्रकट करेगा, जब उसको यह विश्वास दिलाया जायेगा कि उसकी सभी सूचनाएँ गुप्त रखी जायेगी। गुप्त स्थान पर ही वह अपने विचारों को निस्संकोच व्यक्त करता है।
- साक्षात्कारकर्ता को पक्षपात नहीं करना चाहिए। साक्षात्कार के समय उसको निष्पक्ष रहना चाहिए।

9.3.4 साक्षात्कार करना (Implication)-

- i. साक्षात्कार करते समय परामर्शदाता को निम्नलिखित सुझाव ध्यान में रखने चाहिए:
- ii. साक्षात्कार देने वाले का विश्वास प्राप्त करना एक आवश्यक तत्व है। विश्वास प्राप्त करने के लिये साक्षात्कार करने वाले व्यक्ति को छात्र में रुचि तथा विश्वास दिखाना चाहिए। साक्षात्कारकर्ता को मित्र बनाने की कला में निपुण होना चाहिए।
- iii. साक्षात्कार देने वाले को यथार्थ सेवा प्रदान करनी चाहिए। उसको सहानुभूति तथा सहयोग की भावना रखनी चाहिए।
- iv. साक्षात्कार लेते समय इस बात का प्रयत्न किया जाये कि साक्षात्कार देने वाला आराम अनुभव करें। उसकी भावनाओं को चोट न पहुँचाई जाए। उसको वार्तालाप के लिये तैयार किया जाए। उसमें यह भाव पैदा कर दिया जाय कि वह साक्षात्कार लेने वाले के स्तर का है। अतः वह साक्षात्कारकर्ता के साथ विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है।
- v. साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति की बातें धैर्यपूर्वक सुननी चाहिए। बहुत से व्यक्ति सुनने की कला में प्रवीण नहीं होते हैं। साक्षात्कारकर्ता को चाहिए कि भले ही वह व्यक्ति इधर-उधर की बात करे तो भी उसे सुने।

- vi. साक्षात्कार को सफल बनाने के लिए आवश्यक है कि साक्षात्कार के लिये अधिक समय दिया जाय।
- vii. साक्षात्कार पर साक्षात्कारकर्ता का पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए। साक्षात्कारकर्ता को स्वयं चातुर्य से बीच-बीच में साक्षात्कार देने वाले को निश्चित उद्देश्य से परिचित कराते रहना चाहिए।

9.3.5 साक्षात्कार लेने वाले के गुण (Characteristics of the Interviewer)-

साक्षात्कार में सफलता प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि साक्षात्कार लेने वाले के कुछ अच्छे गुण हों। एक अच्छे साक्षात्कार लेने वाले में निम्नलिखित गुण होने चाहिए-

- i. **स्पष्ट वक्ता-** साक्षात्कारकर्ता को कोई भी बात घुमा-फिराकर नहीं करनी चाहिए। साक्षात्कार देने वाले पर वह यह प्रभाव डाले के वह उसमें अधिक रुचि रखता है।
- ii. **अच्छे-बुरे पर आश्चर्य प्रकट न करना-** साक्षात्कारकर्ता को छात्र की अच्छी या बुरी बातों पर आश्चर्य प्रकट नहीं करना चाहिए। छात्र को सभी त्रुटियों, कमियों को शांतिपूर्वक सुनना चाहिए।
- iii. **विनोद-** साक्षात्कारकर्ता को हँसमुख होना चाहिए। तनावपूर्ण स्थिति को समाप्त करने के लिये इस गुण का होना आवश्यक है।
- iv. **वार्तालाप पर एकमात्र अधिकार न करना-** साक्षात्कारकर्ता को वार्तालाप में साक्षात्कार देने वाले को समान समय देना चाहिए। उसे स्वयं वार्तालाप पर एकमात्र अधिकार नहीं करना चाहिए। वार्तालाप के समय अगर साक्षात्कार वाला बोर हो रहा हो तो मध्य में नहीं बोलना चाहिए।
- v. **आत्मविश्वास रखने का प्रयत्न-** साक्षात्कार द्वारा प्रकट किये गये विश्वास को अन्त तक बनाये रखने के लिये साक्षात्कारकर्ता को प्रयत्न करना चाहिए, साक्षात्कार देने वाले की स्वीकृति लिये बिना साक्षात्कारकर्ता को साक्षात्कार के विषय में उसके किसी परिचित से वर्णन नहीं करना चाहिए।
- vi. **अच्छा सुनने वाला हो-** साक्षात्कारकर्ता को चाहिए कि वह साक्षात्कार की बातों को धैर्य न खो बैठे। अपनी अभिवृत्ति तथा कथन द्वारा उसको यह प्रदर्शित करना चाहिए कि वह साक्षात्कार देने वालों में गहरी रुचि रखता है। साक्षात्कारकर्ता में दो गुण विशुद्धता तथा सद्भाव अवश्य होनी चाहिए।
- vii. **अभिवृत्तियों तथा भावनाओं को स्वीकार करना-** साक्षात्कारकर्ता को साक्षात्कार देने वाले की भावनाओं का आदर करना चाहिए जिससे वह व्यक्ति अपने संन्देह को व्यक्त कर सके। उसको किसी प्रकार का निर्णय नहीं देना चाहिए।
- viii. **सीमित सूचनाओं का संग्रह-** एक ही साक्षात्कार में अनेक तथ्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। उसको चाहिए कि पूर्व-निश्चित सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

रूथ स्टैग ने कहा है-“साक्षात्कार की सफलता साक्षात्कारकर्ता के व्यक्तित्व पर निर्भर रहती है।”

9.3.6 साक्षात्कार के लाभ-

साक्षात्कार विधि के निम्नलिखित लाभ हैं:

- इस विधि का प्रयोग समस्याओं तथा उद्देश्यों के लिये किया जा सकता है।
- साक्षात्कार विधि को प्रयोग में लाना सरल है।
- छात्रों की अंतर्दृष्टि को विकसित करने में सहायक होती है।
- निषेधात्मक भावनाओं को स्वीकार करने तथा उनको स्पष्ट करने का अवसर साक्षात्कार में प्राप्त होता है।
- सम्पूर्ण व्यक्ति को समझने की यह उत्तम विधि है। व्यक्ति की अभिवृत्ति संवेग, विचार आदि सभी का अध्ययन होता है।
- साक्षात्कार देने वाले को अपनी समस्याएँ प्रकट करने का साक्षात्कार अच्छा अवसर प्रदान करता है।
- विभिन्न दशाओं और परिस्थितियों में साक्षात्कार का प्रयोग करने के लिये उसे लचकदार बनाया जा सकता है।
- छात्र की समस्याओं के कारण ज्ञात करने में साक्षात्कार परामर्शदाता की सहायता करता है।

9.3.7 साक्षात्कार की परिसीमाएँ-

उपर्युक्त लाभ होने पर भी इस विधि में कुछ कमियाँ पायी जाती हैं।

- यह एक आत्मनिष्ठ विधि है।
- एक साक्षात्कार के परिणामों की व्याख्या करना कभी-कभी कठिन हो जाता है।
- पृथक सामाजिक पृष्ठभूमि भी साक्षात्कारकर्ता को प्रभावित करती हैं सभी व्यक्तियों पर समाज की मान्यताओं, धारणाओं और विश्वास पर प्रभाव रहता है साक्षात्कारकर्ता तथा साक्षात्कार देने वाले व्यक्तियों को सामाजिक पृष्ठभूमि में अन्तर होने पर साक्षात्कारकर्ता पर उस व्यक्ति द्वारा अनेक सूचनाओं पर ध्यान नहीं देता है।
- व्यक्तिगत भावनाओं द्वारा साक्षात्कार प्रभावित हो सकता है।
- यह तनाव को दूर करने में सहायक होता है।
- इस विधि में विश्वसनीयता तथा वैधता भी कम पायी जाती है।

9.4 व्यक्ति इतिहास/ व्यक्तित्व विधि (Case History)-

मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख परिवर्तन अध्ययन में बालक को प्रधानता देता है। अध्यापन तभी सफल माना जाता है जबकि अध्यापक अपनी कक्षा के सभी बालकों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देता है प्रत्येक बालक के विकास के क्रम एक-दूसरे से भिन्न होता है। उनकी आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। इसने अध्यापक को व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर ध्यान देने के लिये प्रेरित किया। छात्रों के सम्मुख बहुत सी समस्याएँ आती हैं। उन समस्याओं के समाधान के लिये उनको अनुभवी व्यक्ति की सहायता प्रदान की जाती है वह छात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं, योग्यताओं या इच्छाओं के जाने बिना प्रभावशाली नहीं हो सकती है। छात्रों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने का महत्व रीविस तथा जुड ने इस प्रकार व्यक्त किया है-“छात्रों की पृष्ठभूमि तथा उनके अनुभवों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किये बिना उनके विकास में पथ- प्रदर्शन का प्रयत्न असम्भव के लिये प्रयत्न करने के समान है”

भारत में माता-पिता अपने बच्चे की आवश्यकताओं तथा उनके गुणों का ज्ञान प्राप्त किये बिना ही उनका भविष्य निश्चित करते हैं। इसका परिणाम उपयोगी नहीं होता है। बहुत से व्यक्ति अपनी वृत्तियों को बदलते हुए पाये जाते हैं वे किसी एक वृत्ति में कुशलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं ऐसे व्यक्तियों को उचित निर्देशन की सहायता देने के लिये आवश्यक है कि उनकी विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाय। जोन्स ने कहा है कि “चुनाव करने में जो सहायता दी जाए उसका आधार व्यक्ति से सम्बन्धित पूर्ण ज्ञान, उनकी प्रमुख आवश्यकताएँ तथा उनके निर्णय को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों का ज्ञान होना चाहिए।” इस प्रकार स्पष्ट है कि अध्यापक, परामर्शदाता, निर्देशन कार्यकर्ता आदि सभी के लिये व्यक्ति से सम्बन्धित सम्पूर्ण सूचनाओं का अत्यधिक महत्व है।

9.4.1 आवश्यक सूचनाओं के प्रकार-

निम्न क्षेत्रों में सूचनाएँ प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है-

- i. **सामान्य सूचनाएँ** - इसके अन्तर्गत छात्र से सम्बन्धित व्यक्तिगत सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं। छात्र का नाम, उपनाम, घर का पता, लिंग, जन्म-स्थान तथा जन्मतिथि आदि सभी सूचनाएँ एकत्रित की जानी चाहिए। सामान्य सूचनाओं में वे सभी तथ्य सम्मिलित हैं जो छात्र से सम्पर्क स्थापित करने के लिये आवश्यक हैं। उन व्यक्तियों से भी सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है जो छात्र के निकट सम्बन्धी हैं।
- ii. **पारिवारिक तथा सामाजिक वातावरण**- यह बात मनोवैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा सिद्ध की जा चुकी है कि घर तथा सामाजिक वातावरण बालकों के शारीरिक तथा मानसिक विकास में अपना सहयोग देता है। अतः माता-पिता का व्यवसाय, शिक्षा, धर्म, स्वास्थ्य, जन्म स्थान, नागरिकता बोली जाने वाली भाषा आदि सभी तथ्य एकत्रित करने चाहिए? घरेलू परिस्थितियाँ किस प्रकार की हैं? घर के अन्य सदस्य क्या कार्य करते हैं? घर की आर्थिक दशा कैसी है? आदि

सूचनाएँ प्राप्त करना भी आवश्यक है। छात्र के भाई-बहिन के सम्बन्ध में भी सूचनाएँ एकत्रित करनी चाहिए। भाई-बहिनों के नाम, जन्मतिथि, शिक्षा, तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी आंकड़े संकलित करने चाहिए। यह जानना भी आवश्यक है कि माता-पिता जीवित हैं या मर गये हैं। या उसकी सौतेली माँ तो नहीं है? उसके घर के पास का सामाजिक वातावरण का ज्ञान भी निर्देशक को सहायक होता है। बालक के साथियों के बारे में सूचना प्राप्त करनी चाहिए।

- iii. **स्वास्थ्य-** तीसरे प्रकार की सूचनाएँ छात्रों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में एकत्रित करनी चाहिए। शारीरिक तथा मानसिक-दोनों ही प्रकार का स्वास्थ्य सम्मिलित किया जाय। परामर्श की दृष्टि, श्रवणेन्द्रिय, रूग्णतांत्रिक आदि सूचनाएँ उपयोगी रहती है। छात्र के स्वास्थ्य परीक्षण का सम्पूर्ण आलेख सुरक्षित रखना चाहिए। छात्र का अध्ययन करने के लिए उसकी बीमारी, कमियों तथा दुर्घटनाओं के सम्बन्ध में सूचनाएँ प्राप्त करना आवश्यक है बहुत से व्यक्तियों के शरीर अनेक प्रकार के दोषों से युक्त होते हैं। इन दोषों का ज्ञान रखना चाहिए उदाहरण के लिये हृदय या कमजोर दृष्टि वाले व्यक्ति वायुयान सम्बन्धी जीविका में प्रवेश नहीं पा सकते हैं। स्वास्थ्य से सम्बन्धित सूचनाएँ व्यावसायिक तथा शैक्षिक, दोनों प्रकार के निर्देशन के लिये आवश्यक रहती है।
- iv. **विद्यालयी इतिहास और कक्षा-** कार्य का उल्लेख-छात्र ने किन-किन विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की है तथा विद्यालय में उसको क्या-क्या कठिनाई अनुभव हुई आदि से सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित की जानी चाहिए। छात्र ने जिन विषयों का अध्ययन किया है, उन विषयों में उसकी प्रगति आदि का पूर्ण आलेख रखा जाये। छात्र को निर्देशित करते समय ये सूचनाएँ अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है।
- v. **साफल्य-** व्यक्ति की शिक्षा-सम्बन्धी योग्यता के बारे में भी ज्ञान रखना चाहिए। व्यक्ति ने क्या शिक्षा पायी है? उसने कौन सी कक्षा उत्तीर्ण की है? वह किन विषयों में अधिक ज्ञान रखता है? उसकी सफलता किन विषयों में संतोषजनक नहीं है? क्या उसने कभी कोई पारितोशिक या छात्रवृत्ति प्राप्त की है? केवल शिक्षा-सम्बन्धी प्रगति ज्ञात करना ही पर्याप्त नहीं है, इसके साथ ही सामाजिक समायोजन, भाषा प्रयोग आदि क्षेत्रों में प्राप्त साफल्य का ज्ञान भी प्राप्त करना चाहिए। ये सभी सूचनाएँ विद्यालय में छात्र को निर्देशन-सहायता प्रदान कराने के लिये ही उपयोगी नहीं है बल्कि उच्च संस्थाओं और व्यापारिक तथा औद्योगिक संगठनों में छात्रों के चुनाव करने की और निर्देशन करने के लिये प्रतिवेदन तैयार करने में भी सहायक होती है। विभिन्न विषयों में की गयी प्रगति का वैषयिक और विश्वसनीय मापन प्राप्त करने के लिये रूढ़िगत परीक्षाओं के स्थान पर नई प्रकार की परीक्षाओं का प्रयोग करना चाहिए। पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में की गयी प्रगति का भी आलेख रखना चाहिए।
- vi. **मानसिक योग्यता-** बुद्धि-परीक्षाओं द्वारा छात्रों की बुद्धि मापी जाती है। उच्च शिक्षा या कुछ व्यवसायों में सफलता प्राप्त करने के लिये छात्रों की बुद्धि-लब्धि उच्च होनी चाहिए। मन्द

बुद्धि बालकों को उच्च शिक्षा में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना कम रहती है। कुछ विषय अपेक्षाकृत अधिक कठिन होते हैं अतः उनमें सफलता प्राप्त करने के लिये अधिक बुद्धि की आवश्यकता होती है, उदाहरण के लिये- विज्ञान।

- vii. **अभियोग्यता-** अभियोग्यता का पता लगाने के लिये भी प्रमापीकृत परीक्षाओं का प्रयोग करना चाहिए। निर्देशन का एक उद्देश्य छात्र की उचित व्यवसाय का चयन करने में सहायता करना भी है। छात्र की विभिन्न कार्य-क्षेत्रों में क्षमता निश्चित करने के लिये सूचनाएँ की आवश्यकता हाती है। यांत्रिक, लिपिक, संगीतात्मक, कलात्मक तथा वैज्ञानिक अभियोग्यताओं से सम्बन्धित सूचनायें भी संकलित करनी चाहिए। ये सूचनायें पाठ्य विषयों या व्यवसाय के चुनाव करने में छात्रों को प्रदान की जाने वाली सहायता का आधार बनती है। माध्यमिक विद्यालय विशेष अभियोग्यताओं का आलेख नहीं रख सकते। क्योंकि इस स्तर पर छात्रों में किसी विशेष क्षेत्र में अभियोग्यता दिखाई दे तो इसकी सूचना परामर्शदाता को देनी चाहिए।
- viii. **रुचियाँ-** शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन के लिये छात्रों की इसी क्षेत्र से सम्बन्धित रुचियों की सूचना रखना भी आवश्यक होता है। प्रत्येक छात्र की रुचि के बारे में विद्यालय को दो प्रकार की सूचनायें रखनी चाहिए। प्रथम तो छात्र की क्रियाओं का आलेख जो उसकी कृत्यकारिणी रुचि के प्रकट करेगा। दूसरे, प्रमापीकृत परिसूचियों तथा निरीक्षण द्वारा प्राप्त रुचियों का आलेख। रुचियों में अवस्थानुसार परिवर्तन होता रहता है परामर्शदाता को व्यक्ति के वर्णन से कि वह अमुक कार्य में रुचि रखता है निर्णय नहीं कर लेना चाहिए।
- ix. **व्यक्तित्व-** छात्र के व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले गुणों की सूचना भी प्राप्त करनी चाहिए। छात्र के व्यक्तिगत-विकास पर आर्थिक ध्यान देना चाहिए। परन्तु यह बताना कठिन होगा कि व्यक्तित्व के लिये कौन-कौन से गुण होने चाहिए जो कि सभी के लिये संतोषप्रद हों। वर्ग-क्रम के द्वारा छात्रों के गुण ज्ञात करना कठिन है क्योंकि इस विधि से कार्य करने में बहुत सी त्रुटियाँ आ जाती है। व्यक्तित्व परीक्षाओं के लागू करने में बहुत सावधानी की आवश्यकता है। घटना-वृत्ति द्वारा ठीक प्रकार से व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण ज्ञात किये जा सकते हैं।
- x. **व्यक्तित्व समायोजन-** व्यक्तित्व से सम्बन्धित ही व्यक्तिगत समायोजन का क्षेत्र है। छात्र को अपने अध्यापक, मित्र, माता-पिता तथा अन्य छात्रों के साथ व्यक्तिगत, सामाजिक, सांवेगिक संबंध स्थापित करने होते हैं। छात्र का इस सभी व्यक्तियों के साथ समायोजन किस प्रकार का है, इससे सम्बन्धित सूचनाओं का आलेख रखना चाहिए। विद्यालय में विभिन्न प्रकार की क्रियायें होती रहती है। विद्यालयों की क्रियाओं जैसे-वाद-विवाद प्रतियोगिता, नाटक, खेल-कूद, छात्र परिषद्, आदि में छात्रों द्वारा लिये जाने वाले भाग अंकित कर लेने चाहिए। विद्यालय से बाहर की क्रियायें उसके सामाजिक समायोजन को स्पष्ट करती है। ये सभी सूचनायें छात्र के सामाजिक तथा सांवेगिक विकास का ज्ञान प्रदान करती है।

- xi. **भविष्य की योजना-** सफल निर्देशन के लिये आवश्यक है कि छात्रों की शैक्षिक या व्यावसायिक योजनाओं के बारे में भी सूचनायें एकत्रित की जायें। ये भविष्य की योजनाएं छात्र स्वयं या अपने माता-पिता की सहायता से बनाते हैं। अध्यापक या परामर्शदाता छात्रों की योग्यताओं, रुचियों या आंकाक्षा के अनुकूल ही भविष्य की योजनाओं के निर्माण में सहायता दे सकते हैं। भविष्य की योजनाओं से सम्बन्धित सूचनायें प्रश्नावली या साक्षात्कार द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

9.4.2 सूचनाएँ प्राप्त करने की विधियाँ

छात्रों से सम्बन्धित सूचनायें एकत्रित करने के लिये निर्देशन कार्यकर्ता को बहुत सी विधियाँ प्रयोग में लानी होती हैं। वह किसी एक विधि पर निर्भर नहीं रह सकता है। वही विधियाँ प्रयोग में लानी चाहिए जो विश्वसनीय तथा वस्तुनिष्ठ हों। सूचनाएँ एकत्रित करने के लिये दो विधियाँ प्रयोग में लायी जाती हैं-

(1) प्रमापीकृत विधियाँ

(2) अप्रमापीकृत विधियाँ

(1) प्रमापीकृत विधियाँ - निर्देशन कार्यक्रम में प्रमापीकृत परीक्षाओं को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इन प्रमापीकृत परीक्षाओं के व्यापक उपयोग के निम्नलिखित कारण हैं-

- प्रमापीकृत परीक्षायें निष्पक्ष तथा वस्तुनिष्ठ विधि
- अन्य विधियों की अपेक्षा प्रमापीकृत परीक्षाओं द्वारा सूचनायें एकत्रित करने में कम समय लगता है।
- परीक्षाओं द्वारा सूचनायें कम रूप में एकत्रित की जाती हैं कि एकत्रित निर्देशन कार्यकर्ताओं द्वारा उनका समान अर्थ लगाया जाता है।
- परीक्षाओं द्वारा व्यक्तित्व सम्बन्धी, समस्याओं या व्यवहार के क्षेत्र के तथ्यों का अप्रत्यक्ष रूप से पता लगाना सम्भव है।
- अध्यापक द्वारा किये गये निरीक्षण से बहुत से छात्र छूट भी सकते हैं। लेकिन परीक्षाओं द्वारा उन छात्रों का पता भी लग जाता है जिन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

यद्यपि प्रमापीकृत परीक्षाओं की उपयोगिता अत्यधिक है परन्तु इनकी भी कुछ परिसीमायें होती हैं इनकी परिसीमायें वैधता, विश्वसनीयता, उपयोगिता तथा प्रतिदर्शी के क्षेत्रों में पायी जाती है। इन परीक्षाओं के प्रयोग में भी निम्नलिखित त्रुटियाँ होने की सम्भावना पायी जाती है।

- परीक्षायें विस्तृत मापन प्रदान नहीं करती है।
- परीक्षायें यह स्पष्ट कर सकती है कि छात्र परीक्षा की परिस्थितियों में क्या कर सकता है लेकिन यह इसको स्पष्ट नहीं करती है कि छात्र अन्य परिस्थितियों में क्या करेगा।

- परीक्षायें कभी-कभी ऐसे उद्देश्यों के लिये प्रयोग में लायी जाती है जिनके लिये वे बनी ही नहीं।
- छात्र क्या कर सकता है, परीक्षायें प्रमाण दे सकती है, परन्तु उसके लिये निर्णय नहीं दे सकती है।
- परीक्षा कार्यक्रम निर्देशन कार्यक्रम का एक अंग है, न कि सब कुछ।

प्रमापीकृत परीक्षाओं का वर्गीकरण- प्रमापीकृत परीक्षाओं का वर्गीकरण अग्रलिखित प्रकार से किया जा सकता है-

- i. बुद्धि परीक्षायें
- ii. साफल्य परीक्षायें
- iii. विशेष योग्यतायें या अभियोग्यता परीक्षायें
- iv. रुचि परीक्षायें
- v. व्यक्तित्व परीक्षायें

अप्रमापीकृत विधियाँ -

छात्रों का अध्ययन करने के लिये आवश्यक है कि उनसे सम्बन्धित सभी प्रकार की सूचनायें प्राप्त की जायें। स्टैग ने कहा है-“सम्पूर्ण छात्र का अध्ययन करने के लिये अभी तक किसी ने भी एक पूर्ण विधि का प्रयोग नहीं किया है। सम्भवतः अच्छी विधि वह है जिसके द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में अध्ययन किया जाय।” छात्रों के बहुत से गुणों का ज्ञान प्रमापीकृत परीक्षाओं द्वारा नहीं हो पाता है। अतः अप्रमापीकृत विधियों का उपयोग करना पड़ता है। अप्रमापीकृत विधियाँ निम्नलिखित हैं-

- i. आकस्मिक निरीक्षण अभिलेख
- ii. आत्मकथा
- iii. निर्धारण
- iv. व्यक्ति -अध्ययन
- v. समाजमिति
- vi. प्रश्नावली
- vii. साक्षात्कार
- viii. सामूहिक अभिलेख पत्र
- ix. प्रक्षेपण विधियाँ

9.4.3 सूचनाओं का आलेख रखना-

सूचनायें एकत्रित कर लेना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन एकत्रित सूचनाओं का सुरक्षित आलेख रखना भी आवश्यक है सभी सूचनायें व्यवस्थित रूप में रखनी चाहिए तथा आवश्यकता होने पर उसको सरलता से प्राप्त किया जा सके। सूचनाओं के आलेख निम्नलिखित सामान्य सिद्धान्तों पर आधारित होने चाहिए-

- प्राप्त सूचनायें ऐसे व्यवस्थित की जाय कि वे कार्य-कारण सम्बन्ध स्पष्ट करें
- आलेख की सूची इस प्रकार संगठित की जाये कि सूचनायें सफलता से अंकित तथा प्राप्त की जा सकें।
- आलेख पत्र ऐसे स्थानों पर रखे जाये कि उनका उपयोग करने वाले सरलता से उनको प्राप्त कर सकें।
- आलेख का उपयोग करने के लिये स्पष्ट निर्देश आलेख के साथ लिख दिये जायें।
- जब छात्र एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय को जाये तो उसका आलेख भी उसके साथ जायें।
- इस प्रकार का प्रबन्ध किया जाय कि जिस व्यक्ति को अधिकार प्राप्त न हो वह उन आलेखों को न देख पायें।

आलेख की सामग्री के प्रकार- (a) अधिक टिकाऊ हो। (b) अधिक पतला हो
(c) कम भारी हो

(d) पेंसिल या स्याही से लिखने के उपयुक्त हों, (e) आकर्षक रंग का हो।

- फाइल व्यवस्था सादा होनी चाहिए
- सूचनाओं के प्राप्त करने, उनका आलेख रखने के लिये अध्यापक, प्रधानाध्यापक तथा परामर्शदाता को सम्मिलित रूप से कार्य करना चाहिए।

9.5 परीक्षण (Tests)

परीक्षणों को दो प्रकार से विभाजित किया जाता है-

9.9.1 मानकीकृत परीक्षण-

व्यक्ति से सम्बन्धित जानकारी एकत्र करने के लिये अनेक मनोवैज्ञानिक मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है। ऐसा इसलिये करते हैं कि इनके माध्यम से जो जानकारी प्राप्त होती है वह अधिक विश्वसनीय मानी जाती है। साथ ही मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की सहायता से व्यक्ति के विषय में उन बातों का भी ज्ञान होता है जो निर्देशन एवं परामर्श की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

- i. **सांस्कृतिक घटकों का प्रभाव-** अधिकतर मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण सांस्कृतिक घटकों से प्रभावित होते हैं। दूसरे शब्दों में-“व्यक्ति के सांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण में ही मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग करना उचित है। यह सही है कि कुछ ऐसे मानकीकृत परीक्षण बनाये गये हैं जो सांस्कृतिक प्रभाव से मुक्त होते हैं। लेकिन इसके विषय में भी मतभेद है। क्योंकि हमारे देश में मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रायः अभाव है, इसलिये देश के छात्रों एवं युवकों को वांछनीय शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श उपलब्ध नहीं हो पाता है।
- ii. **उद्देश्य पूर्ति-** परीक्षण मुख्य रूप से तीन उद्देश्यों के लिये किये जाते हैं। ये हैं- पूर्वानुमान, भविष्य कथन, निदान और शोध। परीक्षणों का प्रयोग प्रयोगकर्ता विशिष्ट उद्देश्य के लिये, परिक्षार्थियों की भविष्य की उपयुक्तता के लिये चुनाव, आदि में करता है। हम परीक्षणों का प्रयोग छात्रों के कॉलेजों अथवा विश्वविद्यालयों के प्रवेश में, व्यवसाय के लिये भविष्य कथन आदि में करते हैं। परीक्षणों के परिणाम व्यक्ति के भविष्य के बारे में कथन करते हैं और बताते हैं कि उसे जीवन में किस सीमा तक सफलता मिल सकती है, उनमें अपनी क्षमताएँ क्या हैं।
- iii. **विशेष परिस्थितियों में प्रयोग-** परीक्षणों का निर्देशन एवं परामर्श की स्थितियों में विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जैसे एक छात्र यदि स्कूल परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होता है तो उसे निर्देशनदाता को सौंप दिया जाता है कि वह उसकी असफलता के कारणों का पता लगाये।
- iv. **कई परिकल्पनाओं का निर्माण-** बालक का अध्ययन करते समय निर्देशनदाता कई कल्पनाओं का निर्माण करता है, जैसे-उच्च अध्ययन के लिये बालक में आवश्यक बौद्धिक क्षमता का कम होना, मूल ज्ञान का ही अभाव होना या बालक का गलत प्रकार से अध्ययन करने के कारण अनुत्तीर्ण होना, आदि। निर्देशनदाता भविष्य में बालक की क्षमताओं का भविष्य कथन करने के लिये उस बालक पर किये गये परीक्षण के प्राप्तांक तथा उसी परिस्थिति में अन्य बालकों के प्राप्तांकों से तुलना करता है।
- v. **विभिन्न परिस्थितियों के प्राप्तांकों का प्रयोग-** निदान के लिये निर्देशनकर्ता उसी बालक के विभिन्न परीक्षणों के प्राप्तांकों की तुलना करता है, जो उसे विभिन्न परिस्थितियों में दिये जाते हैं। यहाँ पर इस बात पर बल दिया जाता है कि बालक के विभिन्न परिस्थितियों में दिये गये परीक्षणों में क्या प्राप्तांक है उसका तुलनात्मक अध्ययन निदान में क्या सहायता प्रदान करता है। निर्देशनकर्ता बालक की कठिनाइयों के कारणों को जानकर ही उसे सहायता एवं निर्देशन दे सकता है। इस प्रकार परीक्षणों का प्रयोग नियंत्रित चर के रूप में, मानव व्यवहार के वर्णन तथा सम्बन्धों और व्यवहारों के अध्ययन के लिये और स्थापित परिकल्पनाओं के सत्यापन में किया जाता है।

संक्षेप में यह कह सकते हैं कि परीक्षण व्यक्तिगत व्यवहारों का विश्लेषण करने में वर्णन करने में, मूल्यांकन करने में, भविष्य कथन और निर्देशन में सहायक होते हैं तथा मानव व्यवहार एवं शिक्षा में सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

9.9.1.1 मानकीकृत परीक्षण के प्रकार (Types of Standardized Tests)

व्यक्ति के सम्बन्ध में जानकारी एकत्र करने के लिये प्रायः अग्रलिखित प्रकार के मानकीकृत परीक्षणों को काम में लाया जाता है-

1. बुद्धि परीक्षण
2. उपलब्धि परीक्षण
3. विशेष योग्यता अथवा अभिरुचि परीक्षण
4. रुचि परीक्षण
5. व्यक्तित्व परीक्षण

व्यक्ति के सम्बन्ध में एकत्र करने के लिये प्रयुक्त उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक मानकीकृत परीक्षणों की निर्देशन के क्षेत्र में भूमिका का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. **बुद्धि परीक्षण (Intelligence Tests)**- बुद्धि परीक्षणों का उपयोग मानसिक प्रक्रियाओं के खोज, ज्ञान के बीच सम्बन्ध तथा सहसम्बन्ध खोजने की योग्यता के लिये किया जाता है। स्पीयरमैन के बुद्धि के दो कारक सामान्य एवं विशेष बताये हैं। सभी व्यक्तियों में सामान्य तथा विशेष योग्यताएं होती हैं। थार्नडाईक ने बुद्धि का बहुकारक सिद्धान्त प्रतिपादित किया तो थर्स्टन ने समूह कारक सिद्धान्त प्रतिपादित किया। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर अनेक बुद्धि परीक्षणों का निर्माण किया गया।

बुद्धि का सामान्य अभिप्राय व्यक्ति की समस्या समाधान एवं नवीन परिस्थितियों में प्रभावक अनुक्रिया करने की योग्यता से लगाया जाता है निर्देशन के क्षेत्र में, बुद्धि परीक्षणों का उपयोग प्रायः किसी व्यवसाय में सफलता के लिये आवश्यक बौद्धिक स्तर के मापन हेतु किया जाता है। ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि निर्देशन की दृष्टि से मात्र बौद्धिक योग्यता में विशिष्टता किसी व्यवसाय में सफलता की द्योतक नहीं है। व्यावसायिक सफलता के लिये व्यक्ति में बौद्धिक योग्यताओं के अतिरिक्त अन्य गुणों का भी पाया जाना आवश्यक है। निर्देशन के क्षेत्र में व्यक्ति की व्यावसायिक सफलता का निर्धारण मूलतः दो आधारों पर किया जाता है। किसी व्यवसाय में सफल व्यक्ति में, उस व्यवसाय के लिये उपयुक्त सामान्य विशेषताएं या क्षमताएं पायी जाती हैं इस विचार के अन्तर्गत व्यक्ति के रुझान व बुद्धि का परीक्षण किया जाता है लेकिन इस बात का अब प्रचलन समाप्त हो रहा है। व्यावसायिक सफलता निर्धारण प्रक्रिया का द्वितीय या समकालीन आधार है- उन तत्वों समुच्चयों का कारकीय विश्लेषण, जो कि किसी एक व्यवसाय में व्यावसायिक सफलता के लिये आवश्यक स्वीकार किये जाते हैं। बहुकारकीय अन्वेषण के अन्तर्गत आजकल बुद्धि परीक्षणों को स्थान दिया जा रहा है निर्देशन के क्षेत्र में अब इनका कोई पृथक अस्तित्व नहीं पाया जाता है।

2. उपलब्धि परीक्षण(Achievements Tests)- व्यक्ति ने क्या सीखा या अर्जित किया है इसको जानने के लिये उपलब्धि परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। किसी अध्ययन या अभ्यास के एक निश्चित समय के उपरान्त व्यक्ति ने क्या ज्ञान अर्जित किया है या किस सीमा तक निपुणता प्राप्त की है। तथ्य से परिचित होने का उपलब्धि परीक्षण एक महत्वपूर्ण साधन है।

उपलब्धि परीक्षणों के प्रायः दो रूप प्रचलित है- शिक्षकों द्वारा निर्मित उपलब्धि परीक्षण तथा मानकीकृत उपलब्धि साधन। शिक्षकों द्वारा निर्मित उपलब्धि बहुधा निबन्धात्मक परीक्षण होते हैं। इधर शिक्षकों में वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के निर्माण की प्रवृत्ति भी बढ़ी है। लेकिन मानकीकरण तथा अन्य निर्माणगत त्रुटियों के कारण, उपलब्धियों के मूल्यांकन में शिक्षक निर्मित उपलब्धि परीक्षण अपेक्षाकृत रूप में वैध विश्वसनीय नहीं स्वीकार किये जाते हैं। इसके विपरीत मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण अधिक वैध एवं विश्वसनीय होते हैं। परामर्शदाता को उसकी कार्य-प्रगति, त्रुटियों इत्यादि के विषय में पर्याप्त जानकारी एकत्र करने में विशिष्ट सहायता मिलती है।

3. विशेष योग्यता अथवा अभिरुचि परीक्षण (Aptitude Tests)- अभिरुचि का अभिप्राय किसी निश्चित परिस्थिति में जैसे- कोई व्यावसाय या स्कूल में कार्य करने अथवा खेलने, वाद्य यंत्रों को बजाना, भाषा का सीखना, इत्यादि के लिये अभ्यास या प्रशिक्षण में सफलता की सम्भावना के मापन से है। दूसरे शब्दों में किसी कार्य या व्यवसाय में सफलता प्राप्ति की सम्भावनाएँ व्यक्ति के लिये क्या हैं? इस तथ्य का निर्धारण उसकी अभिरुचि के मापन द्वारा किया जाता है। अभिरुचि परीक्षण के द्वारा निर्देशनकर्ता व्यक्ति की आन्तरिक क्षमताओं से परिचित होता है। छात्र या व्यक्ति को किसी व्यवसाय के चयन हेतु परामर्श देते समय परामर्शदाता, व्यक्ति की अभिरुचि के अनुकूल ही उसके व्यावसायिक उद्देश्यों के निर्माण करता है। आजकल विभेदक अभिरुचि परीक्षण का व्यापक उपयोग व्यक्ति विषय में जानकारी एकत्र करने के लिये किया जा रहा है। इसी परीक्षण द्वारा- शाब्दिक तर्कणा, संख्यात्मक योग्यता, अमूर्त तर्कणा, स्थानिक सम्बन्ध, यांत्रिक तर्कणा, लिपिक गति एवं शुद्धता कर व्यक्ति की अभिरुचि का पता लगाया जाता है।

4. रुचि परीक्षण (Interest Tests)- रुचि के विषय में विंघम ने कहा है- रुचि किसी अनुभव में खो जाने या लिप्त हो जाने तथा उसे जारी रखने की प्रवृत्ति है। ड्रीवर ने कहा है- रुचि स्वभाव का गतिशील पक्ष है। इस दृष्टि से रुचियाँ चार प्रकार की होती हैं- 1. प्रदर्शित 2. अभिव्यक्त 3. प्रमाणित 4. परीक्षिता।

व्यक्ति अध्ययन के लिये इनका परीक्षण आवश्यक है। रुचि का अभिप्राय किसी विशिष्ट वस्तु या परिस्थिति से जुड़ी प्रतिक्रिया के प्रति व्यक्ति को अपनी पसन्द की भावना है। रुचि का सम्बन्ध चूँकि भावना से है अतः इसका वस्तुपरक मापन सम्भव नहीं है। केवल इसकी उपस्थिति या अनुपस्थिति, व्यक्ति के कथनों के आधार पर जानी जा सकती है।

दूसरे शब्दों में, रुचि के विषय में केवल अनुमानांकन ही सम्भव है। इसी कारण से रुचि के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये अन्य प्रकार के मनोवैज्ञानिक साधनों का उपयोग किया जाता है ये साधन दो प्रकार के होते हैं-

1. व्यक्ति द्वारा दी गयी आत्म सूचना तथा 2. प्रश्नावली ।

आत्म सूचना रिपोर्ट के विश्लेषण तथा प्रश्नावली से प्राप्त रुचि विषयक जानकारी, व्यक्ति के व्यावसायिक चयन के निर्धारण में विशेष महत्व रखती है। सुनिर्देशन के द्वारा शिक्षालय जीवन तथा सामुदायिक क्रिया-कलापों का रुचियों के विकास के साधन के रूप में भी महत्वपूर्ण उपयोग किया जा सकता है।

5. व्यक्तित्व परीक्षण(Personality Tests)- व्यक्तित्व शब्द लैटिन शब्द परसोना से लिया गया है। इस शब्द का अर्थ लिबास, नकाब या मुखौटा। रंगमंच पर विभिन्न पात्रों का अभिनय करने के लिये पहले मुखौटों का प्रयोग किया जाता है। ये मुखौटे, पात्रों के व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करते थे। आईजेनैक के शब्दों में- व्यक्तित्व के चरित्र, स्वभाव बुद्धि और शारीरिक आकार का कुछ ऐसा स्थायी और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।

व्यक्तित्व क्या है? इस विषय में मूलतः तीन विचारधाराएँ प्रचलित हैं-

- व्यक्तित्व उन सभी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक गुणों, आकांक्षाओं, अभिरुचियों तथा रुचियों का एक संगठन है जो कि व्यक्ति की विशेषता है।
- व्यक्तित्व के समग्र व्यवहार का प्रतिरूप एवं उसकी संरचना है।
- व्यक्ति का जो प्रभाव दूसरों पर पड़ता है उसी के आधार पर व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है। व्यक्तित्व के विषय में अवधारणात्मक अन्तर के कारण, उसके विषय में जानकारी एकत्र करने की प्रविधियाँ भी अलग-अलग हैं। व्यक्तित्व के मूल्यांकन के क्षेत्र में प्रेक्षण या अवलोकन एक सामान्य विधि है। जिसका उपयोग बहुतायत से शिक्षकों एवं परामर्शदाता के द्वारा होता है।

व्यक्तित्व मापन एवं मूल्यांकन के क्षेत्र में प्रयुक्त उपकरणों या परीक्षणों को उनके विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया जाता है-

- व्यक्तित्व मूल्यांकन की अणुत्मक विधियाँ- जिसमें विशिष्ट व्यवहारों के प्रति पृथक्-पृथक् जानकारी एकत्र कर उनके आधार पर पूरे व्यक्तित्व के विषय में निष्कर्ष निकाले जाते हैं।
- मूल्यांकन की समग्र विधियाँ- इसमें सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विषय में एक साथ जानने या सूचनाएँ एकत्रित करने का प्रयास किया जाता है।

अणुत्मक विधियों में आत्मकथा विश्लेषण, समाजमतिक विधि, विकास सम्बन्धी रिकार्डों का विश्लेषण, इत्यादि सम्मिलित हैं। समग्र विधियों में प्रक्षेपण तकनीकों का उपयोग होता है।

मानकीकृत परीक्षणों के जिन पाँच प्रकारों का उल्लेख ऊपर किया गया है उनमें निम्नलिखित विशेषताएँ प्रायः पायी जाती हैं-

- मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय होते हैं।
- मानकीकृत परीक्षणों के प्रयोग द्वारा समय एवं शक्ति की बचत होती है।
- मानकीकृत परीक्षणों द्वारा एकत्र जानकारी की व्याख्या में मतभेद की सम्भावना बहुत कम होती है।

मानकीकृत परीक्षणों के उपयोग से जहाँ अनेक लाभ हैं वहीं इनकी कुछ सीमाएँ भी हैं। दूसरे शब्दों में-“मानकीकृत परीक्षणों की उपयोगिता सीमित होती है” इसमें अग्रलिखित कारण हैं-

- समान रूप से उपयोग नहीं- मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग सभी देशों में समान रूप से नहीं किया जा सकता है।
- न्यादर्श से प्रभावित- मानकीकृत परीक्षण की उपयोगिता प्रतिचयन सेम्पलिंग से प्रभावित होती है। दूसरे शब्दों में-“यदि प्रतिचयन ग्रामीण क्षेत्र किया गया है तो उस पर आधारित मानकीकृत परीक्षण केवल ग्रामीण क्षेत्रों के लिये ही उपयोगी होगा।”
- निश्चित प्रयोजन- मानकीकृत परीक्षणों का निर्माण कुछ निश्चित प्रयोजन से होता है। फलतः यह परीक्षण प्रयोजनबद्ध होते हैं और इनका उपयोग इसमें निहित प्रयोजन के अनुसार ही किया जा सकता है।
- विशेष सन्दर्भ- मानकीकृत परीक्षण व्यक्ति-सम्बन्धी सूचनाएँ एक विशेष स्थिति के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। अतः किसी व्यक्ति से सम्बन्धित जानकारी सम्पूर्ण नहीं मानी जा सकती।
- अधिक बल प्रभावहीन- कभी-कभी मानकीकृत परीक्षणों द्वारा प्राप्त जानकारी पर इतना अधिक बल दिया जाता है कि निर्देशन की दृष्टि से उनकी उपयोगिता ही समाप्त हो जाती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग करते समय सावधानी से काम लेना चाहिए और इनकी सीमित उपयोगिता को भी ध्यान में रखना चाहिए।

9.9.2 अमानकीकृत परीक्षण (Non Standardized Tests)-

गैर-मानक परीक्षण एक छात्र द्वारा निर्देश के माध्यम से सीखी गई राशि को निर्धारित करने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। "गैर-मानक परीक्षण एक निश्चित समय पर एक परीक्षार्थी की प्राप्ति पर

ध्यान केंद्रित करते हैं।" मूल रूप से शिक्षक निर्मित परीक्षणों का उपयोग एक बच्चे के कौशल या प्रगति को माप सकते हैं, लेकिन वे उनकी तुलना समूह के साथियों से नहीं करते हैं।

9.9.3 प्रक्षेपी प्रविधियाँ-

‘प्रक्षेपण’ का अर्थ ‘आरोपण’ से है। अर्थात्, व्यक्ति अपने मनोभावों एवं विचारों को दूसरों पर आरोपित करता है। व्यक्ति के सम्मुख जब कोई तटस्थ या अर्थहीन वस्तु या परिस्थिति उपस्थित होती है, तब वह उन वस्तुओं में किसी अर्थपूर्ण वस्तु को देखता है। ऐसा देखने में व्यक्तिगत विभिन्नता पाई जाती है, अर्थात् एक ही तटस्थ परिस्थिति में विभिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न वस्तुएँ देखते हैं। उदाहरण के लिए, कभी-कभी हम आकाश में छाए हुए बादलों में मानव-आकृति का अनुभव करते हैं। लेकिन, जब कोई दूसरा व्यक्ति उसे देखता है तब उसे पेड़ नजर आता है, तीसरे को कोई पशु, चौथे को महल इत्यादि। इसी तरह के अनुभवों के आधार पर मनोवैज्ञानिकों ने तटस्थ अथवा अपरिचित अथवा अस्पष्ट परिस्थितियों या तस्वीरों के प्रामाणिक सेट बनाकर प्रयोज्यों के समक्ष उपस्थित किया है तथा उनके द्वारा प्रक्षेपित या आरोपित विचारों का विश्लेषण कर उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने की विधि विकसित की है। इन परिस्थितियों में व्यक्ति जिन सार्थक वस्तुओं को देखता है अथवा जिन विचारों को व्यक्त करता है, उनका संबंध व्यक्ति के अंतःमन की प्रकृति या उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं से रहता है।

व्यक्तित्व की प्रक्षेपण-मापों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि इस विधि द्वारा व्यक्तित्व-संबंधी विशेषताओं के प्रेरक तत्वों का भी पता आसानी से चल जाता है।

व्यक्तित्व की प्रक्षेपण-मापों को गहरी जाँच की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि इस विधि द्वारा अचेतन प्रवृत्तियों का भी पता चल जाता है।

व्यक्तित्व की प्रक्षेपण प्रविधियों में मर्रे का थीमेटिक-एपरसेप्शन टेस्ट या टी0ए0टी0, रोर्शा का इंक ब्लॉट टेस्ट या आर0टी0, काहन का टेस्ट ऑफ सिम्बॉल अरेंजमेंट, युंग का शब्द-साहचर्य विधि, वाक्यपूर्ति जाँच आदि प्रविधियाँ मुख्य रूप से उल्लेखनीय हैं।

9.6 सारांश

साक्षात्कार का अर्थ है- दो व्यक्ति यो का किसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आपसी वार्तालाप। सूचना देने वाला तथा सूचना लेने वाला, दोनों ही किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिये वार्तालाप करते हैं। पोलिन युंग के शब्दों में- ‘साक्षात्कार वह क्रमबद्ध विधि है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपेक्षाकृत अजनबी व्यक्ति के जीवन में प्रवेश करता है।’

व्यक्ति के विषय में जानकारी एवं सूचनाएँ प्राप्त करने की दूसरी अमानकीकृत प्रविधि साक्षात्कार है।

व्यक्ति अध्ययन करते समय निर्देशन एवं परामर्श की दृष्टि से यह आवश्यक है कि उसकी बुद्धि, अभिरुचियों, मूल्यों तथा आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक घटकों की आरे ध्यान दें। व्यक्ति के जीवन सम्बन्धी जानकारी एकत्र करने के लिये अनेक प्रकार की प्रविधियाँ प्रयोग किया जाता है। इन प्रविधियों को दो वर्गों में विभाजित करते हैं- 1. अमानकीकृत प्रविधियाँ, 2. मानकीकृत परीक्षण।

अमानकीकृत प्रविधियाँ- व्यक्ति के जीवन में विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने के लिये जिन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। इन प्रविधियों को दो वर्गों में विभाजित करते हैं-1. प्रश्नावली, 2. साक्षात्कार, 3. प्रेक्षण, 4. संचयी अभिलेख पत्र, 5. समाजमिति, 6. व्यक्ति अध्ययन, 7. क्रम निर्धारण, 8. उपाख्यानक अभिलेख, 9. आत्मकथा।

मानकीकृत परीक्षण- व्यक्ति से सम्बन्धित जानकारी एकत्र करने के लिये अनेक मनोवैज्ञानिक मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है। ऐसा इसलिये करते हैं कि इनके माध्यम से जो जानकारी प्राप्त होती है वह अधिक विश्वसनीय मानी जाती है। साथ ही मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की सहायता से व्यक्ति के जीवन में उन बातों का भी ज्ञान होता है जो निर्देशन एवं परामर्श की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

व्यक्ति के सम्बन्ध जानकारी एकत्र करने के लिये प्रायः निम्नलिखित प्रकार के मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को काम में लाया जाता है।

1. बुद्धि-परीक्षण 2. उपलब्धि परीक्षण 3. विशेष योग्यता अथवा अभिरुचि परीक्षण, 4. रुचि परीक्षण

5. व्यक्तित्व परीक्षण।

मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग करते समय सावधानी से काम लेना चाहिए और इनकी सीमित उपयोगिता को ध्यान में रखना चाहिए।

अनौपचारिक रूप से जानकारी एकत्र करते समय व्यक्ति के परिवार एवं पड़ोस के लोगों से भी पूछताछ करना अच्छा होता है। व्यक्ति के निकट के लोगों के साथ किस प्रकार का सामाजिक सम्बन्ध रखता है एवं व्यवहार करता है इसकी भी जानकारी निर्देशन एवं परामर्श की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी होती है।

व्यक्ति अध्ययन एवं उससे सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने में प्रक्षेपी प्रविधियाँ सहायक होती हैं। कुछ लेखकों के अनुसार प्रक्षेपी प्रविधियाँ अमानकीकृत प्रविधियों के अन्तर्गत होनी चाहिए। लेकिन आजकल प्रक्षेपी प्रविधियों का व्यक्तित्व के अध्ययन में इतना अधिक उपयोग होने लगा है कि इनका स्थान मानकीकृत परीक्षणों के निकट माना जाने लगा है।

9.7 तकनीकी पद

नियुक्ति	Appointment
निदानात्मक	Diagnostic
तथ्य संकलन	Fact-finding
अनुमोदन	Permissiveness
विनोद	Humorous
निशेधात्मक भावना	Negative Feeling
साफल्य	Achievement
प्रमापीकृत	Standardized
अप्रमापीकृत	Non-standardized

9.8 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न -

वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

1. परामर्शन सम्बन्ध लक्ष्य पर केन्द्रित रहता है। हाँ/नहीं
2. परामर्शन सम्बन्ध संविदा आधारित गतिविधि होती है। हाँ/नहीं

उत्तर: 1. हाँ 2. नहीं

बहुविकल्पीय प्रश्न -

1. व्यक्ति का अध्ययन किया जाता है-
 - क. व्यक्ति के व्यवहारात्मक दोषों को जानने के लिये
 - ख. व्यक्ति के विकास के लिये
 - ग. व्यक्ति के समायोजन के लिये
 - घ. उपरोक्त सभी
2. व्यक्ति अध्ययन में जानकारी चाहिए-
 - क. सामान्य ख. स्वास्थ्य
 - ग. सामाजिक पर्यावरण घ. उपरोक्त सभी
3. सूचना एकत्र करने की कितनी विधियाँ हैं?
 - क. तीन ख. दो

ग. चार

घ. सभी

4. बुद्धि परीक्षणों का उपयोग होता है-

क. छात्रों के लिये

ख. नौकरी में चयन के लिये

ग. अधिकारियों की नियुक्ति के लिये

घ. उपरोक्त सभी

5. परामर्शदाता की संगति का अर्थ होता है:-

क. परामर्शदाता और परामर्शी मित्र होते हैं।

ख. परामर्शदाता और परामर्शी की अच्छे लोगों के साथ मित्रता है।

ग. परामर्शदाता के अनुभवों और क्लायंट के संप्रेषित हो रहे परामर्शदाता के अनुभव के मध्य कोई अन्तराल अथवा द्वन्द्व नहीं है।

घ. दोनों पक्ष संविदा के बिन्दुओं पर सहमत है।

6. परामर्शन परिवेश की विशेषता होती है:-

क. लचीलापन

ख. सन्निकट सम्बन्ध

ग. संलिप्तता

घ. उपरोक्त सभी विशेषताएँ

उत्तर:- 1.घ 2.घ 3.ख 4.घ 5.ग 6.घ

9.10 निबन्धात्मक प्रश्न -

1. निर्देशन एवं परामर्शन में साक्षात्कार प्रविधि क्यों अधिक उपयोगी सिद्ध हुई है?
2. व्यक्ति के अध्ययन की कौन सी विधि आपकी दृष्टि में सबसे अधिक उपयोगी है? कारणों सहित उत्तर दीजिये?
3. साक्षात्कार के विभिन्न प्रकार कौन-कौन से हैं? साक्षात्कार को सफल बनाने के लिये आप क्या-क्या सावधानियाँ बरतेंगे? साक्षात्कार की परिसीमाएँ हैं?
4. सूचनायें प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि एकत्रित सूचनाओं की उपयोगिता उनके रखने के ढंग पर निर्भर करती है। इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

9.11 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Anastasi (1959) Psychological testing Newyork: Macmillan co.
- अमरनाथ राय, मधु अस्थाना, निर्देशन एवं परामर्श न, (संप्रत्यय क्षेत्र उपागम) मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी।
- डॉ. रामपाल सिंह, डॉ राधाबल्लभ उपाध्याय “शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन” विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
- डॉ. एस0सी0ओबराय “शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श” इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ।
- डॉ. सीताराम जायसवाल “शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श”, अग्रवाल पब्लिकेशन ।

इकाई 10. परामर्श में नाटक, कला एवं अन्य चिकित्सा (व्यक्ति और समाधान केंद्रित परामर्श) (Drama, Art and other Therapy (Person and solution centered counselling))

- 10.1 प्रस्तावना
- 10.2 उद्देश्य
- 10.3 नाट्य चिकित्सा
 - 10.3.1 नाट्य चिकित्सा की तकनीकियाँ
 - 10.3.2 नाट्य चिकित्सा के उद्देश्य
 - 10.3.3 नाट्य चिकित्सा के उपयोग
 - 10.3.4 नाट्य चिकित्सा की सीमायें
- 10.4 कला चिकित्सा
 - 10.4.1 कला चिकित्सा के चरण
 - 10.4.2 कला चिकित्सा के उपागम
 - 10.4.3 कला चिकित्सा के चरण
 - 10.4.4 कला चिकित्सा की तकनीके
 - 10.4.5 कला चिकित्सा के संभावित फायदे
- 10.5 व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा
 - 10.5.1 व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा के लक्ष्य
 - 10.5.2 व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा के गुण व कमियाँ
- 10.6 समाधान केंद्रित चिकित्सा
 - 10.6.1 मूलभूत अभिग्रह
 - 10.6.2 चिकित्सकीय प्रक्रिया
 - 10.6.3 चिकित्सकीय लक्ष्य
 - 10.6.4 चिकित्सकीय तकनीकी तथा प्रक्रिया
 - 10.6.5 उपयोगिता
 - 10.6.6 गुण एवं दोष
- 10.7 सारांश
- 10.8 शब्दावली
- 10.9 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न
- 10.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
- 10.11 निबंधात्मक प्रश्न

10.1 प्रस्तावना (Introduction)-

इस इकाई में आप नाट्य चिकित्सा, कला चिकित्सा, समाधान केंद्रित चिकित्सा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। यह चिकित्सा विधियां क्लाइंट को समाधान खोजने में बहुत मदद करती है क्योंकि इससे क्लाइंट की सृजनात्मक शक्ति को बढ़ावा मिलता है। क्लाइंट अनेक प्रकार से अपनी समस्या का समाधान करते हैं। वर्तमान में इन चिकित्सा विधियों के उपयोग में लगातार वृद्धि हो रही है।

10.2 उद्देश्य (Goals)-

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- नाट्य चिकित्सा की परिभाषाएँ, उद्देश्य, तकनीक, लाभ तथा हानि को समझ पायेंगे
- कला चिकित्सा की परिभाषा, उद्देश्य, तकनीक, लाभ तथा हानि को समझ पायेंगे।
- व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा के प्रत्यय, विधियों, लाभ तथा हानि को समझ पायेंगे।
- समाधान केंद्रित चिकित्सा का साधारण परिचय, अभिग्रह, चिकित्सकीय प्रक्रिया, लाभ, हानि व उपयोगिता को समझ सकेंगे।

10.3 नाट्य चिकित्सा (Dance Therapy)

नाट्य चिकित्सा का विकास जेकब एल मोरेना (Jacob L. Moreno) के मनोचिकित्सकीय उपागम जिसे मनोनाट्य (Psychodrama) कहते हैं से हुआ था। इसके द्वारा नाटकीय कार्यप्रणाली अपनायी जाती है।

राष्ट्रीय नाट्य चिकित्सा संस्थान में नाट्य चिकित्सा को परिभाषित करते हुये कहा है कि 'नाट्य चिकित्सा नाट्य/रंगमंचीय प्रक्रियाओं व उत्पादों का क्रमबद्ध उपयोग करते हुये उसे लक्षणों से मुक्ति, सांवेगिक तथा भौतिकीय एकीकरण तथा व्यक्तिगत विकास के लक्ष्यों से संबंधित करती है।

Drama शब्द प्राचीन ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है जो कार्य हो चुका है। (टेरेसन, 1913)। नाट्य चिकित्सा में कार्यात्मक तकनीकियाँ जैसे रोल प्ले, नाट्य खेल, कठपुतली का खेल, मुखौटा तथा रंगमंचीय प्रदर्शन आदि का प्रयोग व्यवहार परिवर्तन तथा व्यक्तिगत विकास के लिये किया जाता है।

अरस्तू के अनुसार नाट्य का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं बल्कि व्यक्ति के अंदर एकत्रित हानिप्रद संवेग को प्रदर्शित करना होता है, जिससे बाद में व्यक्ति को समुदाय में संतुलन बनाने में सहायता मिलती है। 1970 के पश्चात यह एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत होने लगा। प्रारंभ में इसका प्रयोग अस्पताल तथा सामुदायिक कार्यक्रमों में किया जाता था।

10.3.1 नाट्य चिकित्सा की तकनीकियाँ (Techniques of Dance Therapy)

- रूपक का उपयोग- प्रथम तकनीक है कार्य के द्वारा रूपक का प्रयोग। व्यवहार, समस्या तथा संवेग रूपक के रूपों में प्रस्तुत किये जा सकते हैं। जैसे गुस्से की ज्वालामुखी के रूप में, विस्फोटक बम, दहकती आग के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इन छवियों को थोड़ा नाटकीय बनाया जा सकता है जिसमें क्लाइंट को संवेग के बारे में और अधिक जानकारी मिल सके और यह समझ सके कि वह जीवन में कैसे नकारात्मक या सकारात्मक भूमिका निभाते हैं।
- मूर्त अभिव्यक्ति- इस तकनीक में अमूर्त को मूर्त बनाया जाता है जिसके लिये क्लाइंट के शरीर की सहायता ली जाती है। अभिव्यक्ति के द्वारा क्लाइंट नये व्यवहार का अनुभव करता है या फिर पुराने व्यवहार में कैसे परिवर्तन किया जाये यह सीखता है।
- नाटकीय प्रक्षेपण- इसके द्वारा क्लाइंट के अंदर के संवेग या विचार को जाना जा सकता है तथा इसे नाट्य चिकित्सा के द्वारा प्रक्षेपित किया जा सकता है।

10.3.2 नाट्य चिकित्सा के उद्देश्य (Aims of Dance Therapy)

नाट्य चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य है व्यक्ति को सुरक्षित अनुभव प्रदान करना होता है जिसमें वह अपनी संवेगात्मक आवाज को नाट्य क्रियाओं के रूप में प्रदर्शित करता है। नाट्य चिकित्सा के उद्देश्य हैं-

- आत्म विश्वास का निर्माण करना
- अन्य लोगों के साथ विश्वास तथा संबंध का विकास करना
- संवेगों की खोज व व्याख्या
- काल्पनिकता का विकास
- सांवेगिक अन्वेषण
- स्वतंत्रता का विकास
- शरीर तथा आवाज में संबंध

10.3.3 नाट्य चिकित्सा के उपयोग (Applications of Dance Therapy)

नाट्य चिकित्सा का उपयोग निम्न रोगों के इलाज के लिये किया जा सकता है -

उत्तर प्रतिघात प्रतिबल (Post Traumatic Stress)

चिंता (Anxiety)

अवसाद (Depression)

अंतर्व्यक्तिक संबंध (Inter personal Relation)

स्वलीनता (Autism)

पुनर्वास (Rehabilitation)

मनोविदलता (Schizophrenia)

मादक द्रव्य से संबंधित विकृतियाँ (Drug Addiction)

चित्त -विक्षेप

भोजन से संबंधित विकृतियाँ (Eating Disorder)

अधिगम से संबंधित विकृतियाँ (Learning Disorder)

शोक से हानि (Trauma)

10.3.4 नाट्य चिकित्सा की सीमायें (Limits)

नाट्य चिकित्सा संबंधित साहित्य कुछ सीमाओं का उल्लेख करते हैं। अन्य तकनीकियों के समान ही नाट्य चिकित्सा के लिये भी कुशल प्रशिक्षण की आवश्यकता है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के लिये नाट्य तकनीकियों थियेटर या रंगमंच का प्रयोग आकर्षक लग सकता है परंतु वास्तव में बिना किसी कुशल प्रशिक्षण के चिकित्सा जोखिम में आ सकती है।

10.4 कला चिकित्सा (Art Therapy)

इसकी शुरुआत सर्वप्रथम 1940 में वालर व गिलोरी ने 1978 में की थी। ब्रिटेन में सर्वप्रथम एड्रियन हिल ने ' कला चिकित्सा ' शब्द का प्रयोग किया था। उन्होने इस चिकित्सा का प्रयोग टी0बी0 की बीमारी से ग्रस्त रोगियों के स्वास्थ्य लाभ के लिये रेखांकन व चित्रकारी के रूप में किया।

समसामयिक परिदृश्यों के अनुसार, कला चिकित्सा चिकित्सा का एक ऐसा रूप है जिसमें आकृतियाँ व वस्तुओं की रचना तथा मनोचिकित्सकीय संबंध जो कला व चिकित्सक व कलाइंट के बीच बनता है, की केन्द्रीय भूमिका होती है। कलात्मक प्रक्रियाओं तथा कलात्मक उपकरणों के उपयोग से, कला के सृजन से, व्यक्ति अपने बारे में जागरूकता बढ़ा सकता है, त्रासदी पूर्ण अनुभव तथा तनाव के लक्षणों का सामना कर सकता है, संज्ञानात्मक योग्यता को बढ़ा सकता है तथा जीवन के जटिल पहलुओं को कला के रूप में परिवर्तित करके सुखद आनंद का अनुभव कर सकता है। कला चिकित्सा का महत्व कला तथा चिकित्सा के मध्य संबंध पर आधारित होता है।

कला चिकित्सा के अंतर्गत मानव विकास, दृश्य कला, रेखाचित्रण, चित्रकला, मूर्तिकला तथा अन्य कला के प्रकार तथा सृजनात्मक प्रक्रियाओं को परामर्श व मनोचिकित्सा के प्रतिरूपों को समाहित किया जाता है। इसका उपयोग बच्चों, किशोरों, व्यस्कों, समूहों तथा परिवारों पर किया जाता है जिससे चिंता, अवसाद तथा अन्य मानसिक व सांवेगिक समस्याओं तथा शारीरिक, संज्ञानात्मक तथा तंत्रिका संबंधी समस्याओं तथा मानसिक रोगों से संबंधित मनोसामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

10.4.1 कला चिकित्सा के उपागम (Approaches of Art Therapy)-

कला चिकित्सा का उपयोग करने वाला चिकित्सक दो उपागमों का प्रयोग कर सकता है। प्रथम उपागम में चिकित्सक प्रक्रिया पर अधिक ध्यान देता है तथा इसका उपयोग वह अपने क्लाइंट को स्वयं के बारे में जानने में मदद करने के लिये करता है। कला का उपयोग रेचन विधि (Catharsis) के रूप में किया जाता है। चिकित्सक इसका उपयोग एक संवेगात्मक यात्रा के रूप में करता है जिसका अंतिम लक्ष्य आत्म-सिद्धिकरण (self-Actualization) को प्राप्त करना है। इडिथ क्रैमर (Edith Kramer) पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने इस विचार को जन्म दिया है।

दूसरे उपागम में व्यक्ति के कला बनाने की प्रक्रिया पर ध्यान नहीं दिया जाता है बल्कि इस पर ध्यान दिया जाता है कि वह चेतन तथा अचेतन रूप से कला के द्वारा क्या प्रस्तुत कर रहा है। इसके द्वारा व्यक्ति के अंदर छिपी हुयी समस्याओं को पहचानने में सहायता मिलती है। बच्चों के लिये जिनके पास अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के शब्द नहीं होते उनके लिये कला चिकित्सा का उपयोग एक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में किया जा सकता है।

10.4.2 कला चिकित्सा के चरण

I. मापन (Assessment)- मूल्यांकन प्रायः कला चिकित्सा के प्रारंभ में होता है तथा यह क्लाइंट के साथ प्रथम सत्र से ही प्रारंभ हो जाता है। इस चरण में चिकित्सक को यह पता चलता है कि कला चिकित्सा रोगी के लिये उपयुक्त है अथवा यह समय की बर्बादी होगी।

II. प्रारंभिक उपचार (Initial Treatment)- रोगी के साथ सौहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित करने के पश्चात तथा क्लाइंट के परिदृश्य को समझने के पश्चात कला चिकित्सक क्लाइंट को कला चिकित्सा की पृष्ठभूमि को समझाता है तथा अगर क्लाइंट के मन में कोई प्रश्न उठता है तो वह उसका उत्तर देता है। इस बिंदु पर चिकित्सक कुछ कलाकृतियों का सुझाव देता है। इस सत्र के पश्चात कला चिकित्सक के लिये यह महत्वपूर्ण है कि वह चिकित्सकीय लक्ष्य का विकास करें। इसमें चिकित्सक क्लाइंट को यह कहता है कि वह कला के स्थान पर आत्म - अभिव्यक्ति पर महत्व दे।

III. मध्य - अवस्था उपचार (Mid Phase Treatment) - चिकित्सक के लिये यह जटिल कार्य होता है कि वह यह कैसे निर्धारित करे कि उपचार अब प्रारंभिक अवस्था से मध्यावस्था में आ गया है। यह ज्ञात करना चिकित्सक के लिये जटिल कार्य होता है। फिर भी वह निम्न दो बातों के आधार पर ज्ञात कर सकता है कि चिकित्सा मध्यावस्था में आ गयी है -

- 1) जब क्लाइंट व चिकित्सक के मध्य विश्वास स्थापित हो जाता है।
- 2) जब सत्र अधिक लक्ष्योन्मुखी हो जाता है।

उपचार की मध्यावस्था में चिकित्सक पहले दिशा निर्देश तथा सीमा रेखा का निर्धारण व्यक्तिगत तथा व्यवसायिक दोनों रूपों में करता है। कला चिकित्सा की अनेक विधियां प्रयुक्त होती हैं तथा

यह जानकारी रखना की कौन सी चिकित्सा कहा प्रयुक्त होगी यह चिकित्सक के लिये एक जटिल कार्य है।

IV समापन (Termination)-

समापन उस अवस्था में होता है जब चिकित्सक अथवा क्लाइंट को यह लगने लगता है कि चिकित्सा अब संपूर्ण हो चुकी है। चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह क्लाइंट को पहले से ही तैयार करे। इसके लिये चिकित्सक क्लाइंट को समापन की महत्ता बताता है।

जब चिकित्सा का समापन होना होता है, तब क्लाइंट तथा चिकित्सक पुनः प्रत्येक सेशन में बनायी कलाकृतियों को देखते हैं तथा क्लाइंट ने इस संदर्भ में क्या प्रगति की है, इसके बारे में चर्चा करते हैं। समापन के सत्र में एक प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्लाइंट द्वारा बनायी गयी कलाकृति का क्या किया जाये इसका उत्तर भी क्लाइंट के द्वारा ही दिया जाता है या तो इसे वे अपने पास अपनी चिकित्सा यात्रा के स्मरण के रूप में इसे रख सकते हैं।

10.4.3 कला चिकित्सा की तकनीके (Techniques of Art Therapy)

कला चिकित्सा की प्रमुख तकनीकि निम्न है -

(1) अन्वेषण कार्य - इस तरह की तकनीकि का उद्देश्य क्लाइंट को अपने सभी चेतन विचारों को स्वतः व स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्त करने के लिये प्रेरित करना होता है। प्रमुख अन्वेषण कार्य निम्न है-

(अ) स्वचालित रेखाचित्रण - इस तकनीकि में सर्वप्रथम क्लाइंट को विश्रामपूर्वक बैठाया जाता है इसके पश्चात क्लाइंट को कुछ लाइन खींचने को कहा जाता है। इसके द्वारा क्लाइंट अपनी सुरक्षात्मक प्रवृत्तियों को त्याग देता है। किंगोट ने इस उपागम का प्रयोग चिकित्सकीय उद्देश्यों के लिये किया था।

(ब) मुक्त चित्रण - मुक्त चित्रण में क्लाइंट से यह कहा जाता है कि वह अपने आपको स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्त करे तथा चित्रण की योजना के बारे में चिंता न करें। यह तकनीकि इस लिये उपयोगी है कि क्लाइंट जो छवि बनाते हैं वह अधिकतर क्लाइंट की समस्याओं तथा शक्ति का दर्पण होती है। मुक्त चित्रण के पश्चात प्रायः क्लाइंट को अपने द्वारा बनाये गये रेखांकित चित्र के बारे में बताने के लिये कहा जाता है।

(स) रेखांकित पूर्णता- इस तकनीकि में क्लाइंट को एक या एक से अधिक कागज के टुकड़े दिये जाते हैं जिन पर कुछ पंक्तिया या आकृतियाँ बनी होती हैं। ये आकृतियाँ या पंक्तियाँ क्लाइंट के लिये शुरूआती बिन्दु के समान होती है। इसमें चूँकि एक ही उद्दीपक के प्रति भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया मिलती है। अतः यह समूह में विचार-विमर्श करने के लिये अद्भुत तकनीकि होती है।

(2) सौहार्द्र-पूर्ण संबंध बनाना (Rapport Building) - सौहार्द्रपूर्ण संबंध के अभ्यास के पीछे का यह उद्देश्य होता है कि वे कला के सृजन के समय क्लाइंट द्वारा महसूस किये जाने वाले अकेलेपन को दूर कर सके। सौहार्द्रपूर्ण संबंध निर्माण के प्रमुख अभ्यास निम्न है-

(अ) संवादी रेखाचित्रण - संवादी रेखाचित्रण में समूह को दो जोड़ों में बाँट दिया जाता है। दो लोग जिन्हें साथ में काम करना होता है, उन्हें एक दूसरे के साथ बैठाया जाता है। आकृति तथा पंक्तियाँ ही संवाद का माध्यम बनी है। इस तरह जोड़े आपस में न केवल संवाद स्थापित करते हैं बल्कि वे आपस में चीजों को बाँटते भी हैं। इसके द्वारा क्लाइंट एक दूसरे को ज्यादा अच्छे तरीके से समझ पाते हैं।

(ब) समूह के द्वारा चित्रकारी- इस तरह के समूह में, समूह के प्रत्येक सदस्य को कहा जाता है कि यह किसी वस्तु, भावना या घटना का नाम बताये और फिर उसे चित्रित करें। इसके पश्चात समूह के एक या एक दो से अधिक सदस्य उसमें सुधार करते हैं। इसके द्वारा लोगों को यह ज्ञात होता है कि जब वो कुछ बनाना चाह रहे थे और उस पर अन्य लोग अपनी इच्छा की थोप रहे हैं तो उन्हें कैसा लगता है।

(स) विश्राम चित्रण - अधिकांश लोगों के लिये चित्रकला विश्राम करने की एक विधि होती है। इसमें बिना किसी कारण या उद्देश्य के चित्रण करने को कहा जाता है। परामर्शन में व्यक्ति या क्लाइंट को ऐसा समय देता है जिसमें वह मुक्त रूप से चित्रण कर सके। वैसे क्लाइंट जो अपने जीवन में बहुत अधिक तनाव या दबाव महसूस करते हैं उनके लिये यह एक विश्राम प्रदाता विधि है।

(द) निरीक्षक के साथ चित्रकारी- इसमें जोड़े का एक सदस्य इसमें व्यक्ति की चित्रकारी करते हुये देखकर जो कुछ उसके दिमाग में आता है उसे बताना होता है। इसके पश्चात् जो व्यक्ति चित्रण कर रहा है यह बताता है कि यह चित्रण पर लागू हो रहा है या नहीं। इस अभ्यास के द्वारा निर्भरता तथा स्वीकार्यता का पता चलता है।

(3) आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति (Expression of Internal Feelings) - इस तकनीक का प्रयोग इस उद्देश्य से किया जाता है कि क्लाइंट इसके द्वारा अपनी आंतरिक भावनाओं, इच्छाओं तथा कल्पनाओं को समझ सके तथा उनका दृश्य प्रतिनिधित्व कर सके। इसका उदाहरण तीन अभिलाषाओं वाली एक तकनीक है –

तीन अभिलाषायें (Three Wishes) – इस तकनीक में क्लाइंट को कहा जाता है कि वह अपनी तीन या तीन से अधिक इच्छाओं को चित्रित करें। इसके द्वारा क्लाइंट को परिपक्वता का स्तर तथा स्वकेन्द्रिता की मात्रा आदि का पता चलता है। इसके द्वारा चिकित्सक क्लाइंट को इन भावनाओं का सामना करने में मदद करता है। इसके पश्चात विचार विमर्श द्वारा इन अभिलाषाओं की शक्ति का गहन अध्ययन किया जाता है।

(4) आत्म प्रत्यक्षीकरण - आत्म प्रत्यक्षीकरण की तकनीक के द्वारा क्लाइंट स्वयं के बारे में जान सकता है। इसके कुछ उदाहरण निम्न है -

(i) तात्कालिक अवस्था - इसमें क्लाइंट 'मैं हूँ (I am), मुझे महसूस होता है (I feel), मेरे पास है (I have) जैसे कथनों का प्रयोग अधिक करता है।

(ii) आत्म-चित्र- आत्म-चित्र वास्तविक से अलग हो सकता है। इस तकनीक में थोड़ी तब्दीली करके कलाकार को समय सीमा दी जा सकती है, जैसे एक मिनट को समय। इसमें क्लाइंट को यह कहा जाता है कि वह जल्दी ही यह निर्णय ले कि वह अपने बारे में कौन सी महत्वपूर्ण विशेषता को चित्रित करना चाहता है।

(iii) स्वयं को जानवर के रूप में चित्रित करना - इसमें क्लाइंट के यह कहा जाता है कि वह स्वयं को किसी प्रकार के जानवर या वे जानवर जो उन्हें अपने समान लगते हैं।

(5) अंतर्वैयक्तिक संबंध- अंतर्वैयक्तिक संबंध का निर्माण इस उद्देश्य से किया जाता है कि क्लाइंट अन्य लोगों के बारे में समझ विकसित कर सके तथा उसे यह पता चल सके कि अन्य लोग उसे कैसे देखते हैं।

इस तकनीक के प्रमुख उदाहरण निम्न है-

(i) समूह के सदस्यों का चित्र- उसमें समूह के सदस्यों की एक दूसरे का चित्रण करने को कहा जाता है। यह अभ्यास समूह के सदस्यों को अन्य लोगों के प्रति अपनी भावनायें बताने में सुविधा बतायें।

(ii) समूह भित्ति- इसमें समूह बड़ी परियोजना पर सहयोग करते हुये एक साथ काम करते हैं। विषयवस्तु व सामग्रियों का चुनाव या तो समूह पर छोड़ दिया जाता है या फिर चिकित्सक इसका निर्धारण करता है। इस अभ्यास से समूह में सहयोग, एकता तथा समूह में आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिलता है।

(iii) संसार में व्यक्ति का स्थान- इस तकनीक को इस तरह से डिजाइन किया गया जाता है जिसकी सहायता से क्लाइंट की यह पता चलता है कि वह विश्व में कहाँ फिट होता है तथा वह वास्तविकता की स्वीकृत कर लेता है। इसके प्रमुख उदाहरण निम्न है-

- घर-वृक्ष-व्यक्ति - इसमें क्लाइंट को एक घर, वृक्ष तथा एक व्यक्ति को एक में ही चित्रित करने को कहा जाता है। इसके द्वारा क्लाइंट को यह कार्य दिया जाता है कि वह किसी तरह मानव आकृति को अन्य सामान वातावरणीय वस्तुओं से सम्बन्धित करें।

- कोलाज तथा संयोजन- इसमें क्लाइंट को कहा जाता है कि व्यक्तिगत दुनिया का सृजन करें। उसमें चिकित्सक परिदृश्य को निर्धारित कर सकता है या इसमें क्लाइंट तब तक कार्य करता रहता है जब तक उन्हें परिदृश्य खुद स्पष्ट नहीं दिखने लगता है।

10.4.4 कला चिकित्सा के संभावित फायदे (Merits)

लोगों के जीवन में संतुलन तथा प्रसन्नता लाना स्वयं के बारे में समझ को बढ़ाना तथा अपने जीवन में अपनी इच्छानुसार परिवर्तन को लाना अन्य लोगों के साथ स्वस्थ अंतर्सम्बन्ध बनाना तथा अधिक संतोषप्रद संबंध को महसूस करना, व्यक्तिगत संबंधों में अंतर्द्वन्द्वों को खत्म करना अवसाद चिंता तथा तनाव से दूर रहने का मार्ग खोजना, बेहतर संवाद कौशल को बढ़ाना, बेहतर माता पिता बनने की योग्यता को बढ़ाना, अपने संवेगों को व्यवस्थित करना, गुस्से दुख तथा चिंता पर नियंत्रण रखकर स्वयं के बारे में तथा अपनी उपलब्धियों के बारे में अच्छा सोचना जीवन की संक्रामक अवस्था में अच्छी तरह से सामंजस्य बिठाना, सम्पूर्ण जीवन को उत्साह से बीताना।

10.5 व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा (Person Centered Therapy)-

व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा का विकास मानवतावादी मनोविज्ञान से हुआ है। सेलिंगमैन, कार्ल रोजर्स ने मानवतावादी उपागम का प्रयोग क्लाइंट के साथ चिकित्सकीय संबंध बनाने के लिये किया है। इसमें क्लाइंट के जीवन में आत्म-सम्मान की भावना में वृद्धि होती है जिससे उन्हें अपनी शक्तियों का उपयोग करने में सहायता मिलती है।

व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा क्लाइंट को ही चिकित्सा का प्रमुख मानते हैं। जिससे क्लाइंट को स्वयं के बारे में, आत्म-अन्वेषण करने की तथा आत्म-प्रत्यय की जानकारी रखने की योग्यता में वृद्धि होती है। इस चिकित्सा विधि की सहायता से परानुभूति में वृद्धि होती है।

3.6.1 मुख्य प्रत्यय (Main Concepts)

व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा में मानवतावादी प्रभाव पाया जाता है। मानवता उपागम का व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा पर प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति केंद्रित चिकित्सकों का विश्वास होता है कि क्लाइंट अपने में योग्य तथा विश्वसनीय होता है तथा वे क्लाइंट को अपने में ही परिवर्तन लाने के लिये ध्यान केंद्रित करते हैं।

सिद्धिकरण- व्यक्ति के अंदर आत्म-सिद्धिकरण की तरफ कार्य करने की प्रवृत्ति होती है। आत्म सिद्धिकरण का अर्थ संपूर्ण विकास से है।

पूर्ण क्रियाशील व्यक्ति -पूर्ण क्रियाशील व्यक्ति वे होते हैं जिनके पास 'आदर्श सांवेगिक स्वास्थ्य होता है। अधिकतर पूर्ण क्रियाशील व्यक्ति अनुभव को ग्रहण करते हैं उनके पास जीवन का अर्थ तथा उद्देश्य होता है तथा अपने ऊपर तथा दूसरों पर भरोसा होता है।

प्रासंगिक परिप्रेक्ष्य- प्रासंगिक प्रतिरूप से आशय एक अद्वितीय प्रत्यक्षीकरण से है जिससे संसार के बारे में जानकारी मिलती है। व्यक्ति अपने संसार की अनुभूति तथा अपने संसार को प्रत्यक्षीकृत करके व्यक्तिगत रूप से उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा व्यक्ति की अनुभूतियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

10.5.1 व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा के लक्ष्य (Aims of Person Centered Therapy)

सेलिंगमैन, (2006) के अनुसार व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा के लक्ष्य हैं-

- 1) क्लाइंट के विश्वास तथा वर्तमान समय में ही रहने की योग्यता को बढ़ावा देना। इसमें क्लाइंट पूरी प्रक्रिया में ईमानदारी बरतता है क्योंकि इसमें चिकित्सक क्लाइंट को निर्व्यात्मक दृष्टि से नहीं देखता है।
- 2) आत्म-सम्मान तथा आत्म जागरूकता को बढ़ावा देना
- 3) क्लाइंट को परिवर्तन के लिये प्रोत्साहित करना।

10.5.2 व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा के गुण एवं दोष (Merits and Demerits)-

गुण -

- व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा का प्रतिरूप आशावादी तथा अद्यतन होता है।
- व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा को विभिन्न संस्कृतियों में प्रयुक्त किया जा सकता है।
- इसका प्रयोग अन्य चिकित्सा में आधार के रूप में किया जाता है, जैसे क्लाइंट चिकित्सक संबंध पर बला।
 - कई शोधों ने क्लाइंट चिकित्सा संबंध की महत्ता पर प्रकाश डाला है।
- क्लाइंट को चिकित्सा में सकारात्मक अनुभव होता है क्योंकि उन्हें ऐसा विश्वास हो जाता है कि चिकित्सा का केंद्रण उन पर तथा उनकी समस्याओं पर है।
- क्लाइंट को ऐसा अनुभव होता है कि उन्हें ध्यानपूर्वक सुना जा सकता है तथा उनका कोई मूल्यांकन नहीं हो रहा है।
- क्लाइंट को ऐसा लगता है कि व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा में उनके ऊपर निर्णय का पूरा दायित्व है।

कमियाँ-

 - इस उपागम के अनुसार चिकित्सक को केवल क्लाइंट से संबंध बनाने वाला ही बना देता है।
 - चिकित्सक द्वारा क्लाइंट को अपना स्वयं का मार्ग ढूंढने में कठिनाई होती है।
- अगर चिकित्सक पूर्ण रूप से निष्क्रिय तथा अप्रभावी होगा तो चिकित्सा को पूर्ण दिशा नहीं मिल पाती है।
 - यह चिकित्सा कभी-कभी साधारण तथा आवास्तविक प्राप्त होती है।
- व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा विकासात्मक मनोगत्यात्मक अथवा व्यवहारात्मक चिकित्सा पर आधारित नहीं है। अतः यह क्लाइंट की संपूर्ण समझ को सीमित कर देती है।
 - मात्र क्लाइंट की बातों को सुनना ही पर्याप्त नहीं है।
 - यह चिकित्सा उनके लिये लाभप्रद नहीं है जो बदलाव के लिये अभिप्रेरित है।
 - व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा रोगी मनोविकृति के लिये उपयोगी नहीं है।
 - चिकित्सक द्वारा क्लाइंट को शर्तहीन धनात्मक सम्मान दिया जाता है अतः यह क्लाइंट को वास्तविक जीवन का सामना करने के लायक बनाने में असमर्थ है।

- क्लाइंट के अंदर स्वयं की समस्या का समाधान करने की योग्यता में कमी का होना।

व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा का विकास कार्ल राजर्स द्वारा किया गया जिन्होंने मानवतावादी उपागम को प्रस्तुत किया। यह उपागम व्यक्ति को योग्य तथा स्वतन्त्र रूप में देखता है। यह उपागम व्यक्ति को इतना उपयोगी समझता है कि वह अपनी योग्यताओं को समझ सके तथा अपनी समस्याओं का समाधान कर सके तथा अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सके। संक्षेप में, व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा अनिदेशात्मक तथा सकारात्मक चिकित्सा है जो व्यक्ति की योग्यताओं पर ध्यान केंद्रित करती है तथा यह मानती है कि व्यक्ति अपने जीवन में परिवर्तन करके आत्म सिद्धीकरण की अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

10.6 समाधान केंद्रित चिकित्सा (Solution Focused Therapy)-

समाधान केंद्रित संक्षिप्त चिकित्सा (SFBT) अथवा उपाय केन्द्रित चिकित्सा का विकास स्टीप डी शेजर(19400- 2008) तथा Insuo Kim Birg (1934-2007) द्वारा किया गया। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है उपाय केंद्रित चिकित्सा भविष्यमुखी, लक्ष्य-निर्देशित होती है तथा यह समस्या के स्थान पर समाधान पर ध्यान केंद्रित करती है।

समाधान केंद्रित चिकित्सा का इतिहास 50 वर्ष पुराना है। समाधान केंद्रित चिकित्सा प्राचीन चिकित्सा से इस अर्थ में भिन्न है कि इसमें भूतकाल को वर्तमान तथा भविष्य दोनों के पक्ष में किया जाता है। चिकित्सक की रुचि प्रायः यह देखने में होती है कि क्या संभव है तथा उनकी रुचि समस्या की जानकारी लेने में बिल्कुल नहीं रहती है। समाधान केंद्रित चिकित्सा में क्लाइंट लक्ष्य को खोजता है तथा उसे पूरा करना चाहता है। निदान, इतिहास तथा समस्या के अन्वेषण पर बहुत कम समय दिया जाता है।

10. 6.1 मूलभूत अभिग्रह (Basic Assumptions)-

वाल्टर वचेलर (1992-2000) ने समाधान केंद्रित चिकित्सा को एक ऐसे मॉडल के रूप में परिभाषित किया है जो इस बात की व्याख्या करता है कि व्यक्ति में बदलाव कैसे आता है तथा वो अपने लक्ष्य तक कैसे पहुँच पाते हैं।

समाधान केंद्रित चिकित्सा के प्रमुख अभिग्रह निम्न हैं-

- चिकित्सा के लिये जो व्यक्ति आते हैं उनके अंदर इतनी क्षमता होती है कि वे प्रभावशाली ढंग से व्यवहार कर सके। समस्या केंद्रित विचार होने से व्यक्ति समस्या का सामना ठीक से नहीं कर पाते हैं।
- समाधान के बारे में तथा भविष्य के बारे में सोचना लाभकारी होता है। अगर क्लाइंट आत्म-संवाद के द्वारा स्वयं को अपनी शक्तियों की तरफ पुर्नउन्मुख कर लेता है तो इसकी संभावना बहुत अधिक होती है कि चिकित्सा संक्षिप्त हो जाये।

- हर समस्या के कुछ न कुछ अपवाद होते हैं। इन अपवादों के बारे में बात करके क्लाइंट उन सभी समस्याओं पर नियंत्रण कर सकता है जो कि अभेद्य लगती हैं। अपवादों का ऐसा वातावरण क्लाइंट को समाधान के बारे में संभावना का अवसर प्रदान करता है। तीव्र परिवर्तन तब संभव होता है जब क्लाइंट अपनी समस्या के बारे में अपवाद को समझ लेता है।

- क्लाइंट प्रायः अपने बारे में एकतरफा प्रस्तुतीकरण करते हैं। समाधान केंद्रित चिकित्सा के द्वारा वे अपनी कहानी के दूसरे पक्ष को भी समझ पाते हैं। छोटे-छोटे परिवर्तन वृहद परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

क्लाइंट परिवर्तन को चाहते हैं परिवर्तन लाने की योग्यता रखते हैं तथा वे बदलाव लाने की पूरी कोशिश करते हैं। चिकित्सक को क्लाइंट के साथ सहयोगी रवैया रखना चाहिये न कि प्रतिरोधक प्रतिरूप को रोकने के लिये रणनीति बनानी चाहिये। सहयोगी रवैया अपनाते हैं तो प्रतिरोध नहीं उत्पन्न होता है।

चिकित्सक क्लाइंट संभावनाओं की बात करते हैं तथा सकारात्मक भविष्य का सृजन करने में सहायता देते हैं।

10.6.2 चिकित्सकीय प्रक्रिया (Therapeutic Process)

वाल्टर तथा पेलर (1992) में चार चरण बताये जो समाधान केंद्रित चिकित्सा प्रक्रिया की विशेषज्ञ को बताते हैं-

- i. क्लाइंट क्या चाहते हैं इसका पता लगाना चाहिये न कि क्लाइंट क्या नहीं चाहता।
- ii. चिकित्सक न तो इसमें रोग निदान करता है और न ही उन्हें कोई नैदानिक पहचान देते हैं। इसके स्थान पर वे यह देखते हैं कि क्लाइंट क्या कर रहे हैं जो कि पहले से ही प्रभावशाली है तथा वे क्लाइंट को इस दिशा में कार्य रहने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।
- iii. अगर क्लाइंट ऐसा कुछ कर रहे हैं जो प्रभावशाली नहीं है तो चिकित्सक क्लाइंट को कुछ भिन्न करने के लिये प्रोत्साहित करता है।
- iv. चिकित्सा को संक्षिप्त रखने का प्रयास किया जाना चाहिये।

डी0 शेजर (1991) का विश्वास है कि क्लाइंट अपनी समस्या की प्रकृति का किसी तरह का मापन करके भी उनका समाधान कर सकते हैं। समाधान केंद्रित चिकित्सा प्राचीन समस्या के प्राचीन उपागम से अलग दिखाता है इस चिकित्सा विधि के प्रमुख चरण हैं-

- 1) क्लाइंट को एक अवसर दिया जाता है जिसमें वे अपनी समस्या के बारे में विस्तारपूर्वक बता सके। चिकित्सक क्लाइंट से पूछता है मैं आपकी किस तरह से सहायता कर सकता हूँ। जब क्लाइंट चिकित्सक का उत्तर देता है तो वह उसके उत्तर को सम्मानपूर्वक तथा ध्यानपूर्वक सुनता है।
- 2) चिकित्सक क्लाइंट के साथ जल्द से जल्द सुनिश्चित लक्ष्य को बनाता है। इस संबंध में पूछा जाता है कि 'आपके जीवन में जब समस्या का समाधान हो जायेगा तो क्या अंतर आयेगा।'

3) चिकित्सक क्लाइंट से कहता है कि उस समय के बारे में बताये जब क्लाइंट के जीवन में समस्या इतनी जटिल नहीं थी। क्लाइंट की इन अपवादों को खोजने में सहायता की जाती है।

4) समाधान निर्माण संवाद के अंत में चिकित्सक क्लाइंट को सारांश में प्रतिपुष्टि (Feedback) प्रस्तावित करता है, प्रोत्साहित करता है तथा अगले सत्र से पहले क्लाइंट क्या अवलोकन कर सकता है जिसमें वह अपनी समस्या का समाधान कर सके।

चिकित्सक तथा क्लाइंट एक मूल्यांकन मापनी के द्वारा संतोषप्रद समाधान के संदर्भ में की जा रही प्रगति का मूल्यांकन करते हैं। क्लाइंट से यह प्रश्न किया जाता है कि समस्या का समाधान करने से पूर्व क्या किया जानो चाहिये तथा उनका अगला कदम क्या होगा।

10.6.3 चिकित्सकीय लक्ष्य (Goals)

समाधान केंद्रित चिकित्सक यह विश्वास रखते हैं कि व्यक्ति के अंदर यह योग्यता होती है कि वे अर्थयुक्त व्यक्तिगत लक्ष्य को परिभाषित कर सके तथा उनके पास समस्या का समाधान करने के लिये पर्याप्त संसाधन होते हैं।

वाल्टर तथा पेलर (1992) में सुपरिभाषित लक्ष्यों का निर्माण करने पर बल दिया है-

1) क्लाइंट की भाषा में सकारात्मकता प्रस्तुत करना।

2) कार्य उन्मुखी होना।

3) यहाँ तथा तभी अभी पर संरचित होना।

4) प्राप्य तथा विशिष्ट।

5) क्लाइंट को ऐसा लगना चाहिये कि उनकी बातों को सुना व समझा जा रहा है। ऐसा उन्हें अर्थपूर्ण व्यक्तिगत लक्ष्य के निर्माण से पहले करना होता है।

समाधान केंद्रित चिकित्सा अनेक प्रकार के लक्ष्यों को प्रस्तावित करती है- परिस्थिति को देखने के नजरिये को बदलना, समस्यात्मक परिस्थिति का सामना करने के तरीके को बदलना तथा क्लाइंट के सामर्थ्य व उसकी कमियों को जानना आदि।

चिकित्सक का कार्य तथा भूमिका (Roles and Responsibilities of Therapist)

क्लाइंट चिकित्सकीय प्रक्रिया में पूरी तरह से तब भागीदारी करते हैं जब वे देखते हैं कि वे स्वयं संवाद की दिशा व उद्देश्य को निर्धारित करते हैं। चिकित्सकीय प्रक्रिया में क्लाइंट अपने भविष्य के बारे में सोचते हैं।

गटरमैन (2006) के अनुसार चिकित्सक, परिवर्तन की प्रक्रिया में विशिष्ट होते हैं लेकिन क्लाइंट इसमें विशेषज्ञ होते हैं कि वे क्या बदलना चाहते हैं। चिकित्सक का कार्य क्लाइंट को बदलाव की दिशा में अग्रसर करना होता है न कि यह बताना होता है कि क्या बदलाव लाना है।

3.5.7 चिकित्सकीय संबंध (Therapeutic Relationship)-

चिकित्सक का व्यवहार चिकित्सकीय प्रक्रिया की प्रभावशीलता पर बहुत असर डालता है। यह आवश्यक है कि विश्वास का माहौल बनाया जाये जिसमें क्लाइंट अन्य सत्रों के लिये वापस लौटे

तथा गृहकार्यों को पूरा करे। यदि विश्वास का माहौल नहीं बनाया गया तो क्लाइंट अन्य सत्र में नहीं आयेगा। प्रभावशाली संबंध बनाने के लिये यह आवश्यक है कि वह क्लाइंट को यह समझा सके कि वह अपनी शक्तियाँ तथा संसाधनों (जो उनके पास पहले से हैं) का प्रयोग समाधान के लिये कैसे कर सकते हैं। क्लाइंट को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे कुछ अलग कर सके तथा वे अपने वर्तमान तथा भविष्य के विषय के बारे में सृजनात्मक रूप से कैसे सोच सकते हैं।

10.6.4 चिकित्सकीय तकनीक तथा प्रक्रिया (Therapeutic Technique and Process)-

सहयोगपूर्ण संबंध की स्थापना-समाधान केंद्रित चिकित्सक क्लाइंट की समाधान को खोजने तथा अधिक संतुष्टिप्रद जीवन देने व प्राप्त करने के लिये अनेक विधियों से सहायता कर सकते हैं। ये सभी तकनीकें जिनका यहाँ विश्लेषण किया जा रहा है वे सभी कार्यकारी सहयोगी संबंध के निर्माण के पूर्व ही प्रयुक्त की जानी चाहिये।

चिकित्सा के पूर्व परिवर्तन - साधारणतया मिलने का समय निश्चित करने से सकारात्मक परिवर्तन शुरू होता है। प्रारंभिक चिकित्सकीय सत्र में साधारणतया ऐसे प्रश्न चिकित्सक पूछता है 'हमारी मुलाकात से पहले आपने अपनी समस्या का समाधान के लिये क्या किया था?' ऐसे परिवर्तन के बारे में पूछकर चिकित्सक क्लाइंट को उत्साहित कर सकता है।

अपवाद प्रश्न- समाधान केंद्रित चिकित्सा इस बात पर विश्वास रखती है कि क्लाइंट के जीवन में ऐसा भी समय था जब चिह्नित की गयी समस्या इतनी कष्टदायक नहीं थी। ऐसे समय को अपवाद कहते हैं तथा ये भिन्नता के समाचार का प्रतिनिधित्व करता था। अपवाद क्लाइंट के जीवन के ये भूतकालीन अनुभव होते हैं जिसमें समस्या का प्रकट होना तर्कसंगत होता लेकिन यह किसी तरह नहीं उत्पन्न हुयी।

क्लाइंट की ऐसे अपवादों को पहचानने में मदद करने से क्लाइंट समाधान की तरफ कार्य करेंगे।

अगर क्लाइंट यह कहता है कि यह और अधिक आत्मविश्वास तथा सुरक्षा चाहता है तो चिकित्सक यह कह सकता है 'आप कल्पना कीजिये कि आज आपने ऑफिस को जल्दी छोड़ दिया तथा और अधिक सुरक्षा तथा आत्मविश्वास के मार्ग पर है। आप अलग क्या करेंगे?' इस प्रकार के काल्पनिक समाधान से प्रत्यक्षीकृत समस्या में परिवर्तन आता है।

मापनी प्रश्न -समाधान केंद्रित चिकित्सा मापनी प्रश्नों का भी उपयोग करता है। ऐसे प्रश्नों का उपयोग किया जाता है जब व्यक्ति के अनुभवों में परिवर्तन को प्रत्यक्ष तरीके से अवलोकित नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिये, एक महिला जो कि चिंता की भावना को बता रही है, उससे पूछा जा सकता है, '0 से 10 की मापनी पर जिसमें शून्य का अर्थ है कि जब आप पहली बार

चिकित्सा के लिये आये थे तथा 10 का अर्थ है कि आपने उस चमत्कारिक दिन जिसमें आपकी समस्या खत्म हो गयी, कैसा महसूस किया। अब आप अपनी चिंता को कैसे मूल्यांकित करेंगे। प्रथम सत्र कार्य सूत्र- प्रथम सत्र कार्य सूत्र एक प्रकार का गृहकार्य होता है जिसे चिकित्सक क्लाइंट को प्रथम सत्र व दूसरे सत्र के बीच में पूरा करने को कहता है। चिकित्सा कह सकता है ' इस समय तथा उस समय जब हम मिलेंगे , उसके बीच में मैं चाहूँगा कि आप अवलोकन करे ताकि बता सके कि आपके (परिवार, विवाह, जीवन, संबंध)में क्या घटित होता है जिसे आप जारी रखना चाहते हैं।

दूसरे सत्र में पूछा जा सकता है कि उन्होंने क्या अवलोकित किया तथा वे भविष्य में क्या घटित होता देखना चाहेंगे। इस प्रकार के कार्य से क्लाइंट में आशा उत्पन्न होती है कि परिवर्तन अवश्यंभावी है।

चिकित्सक द्वारा क्लाइंट की प्रतिपुष्टि- समाधान केंद्रित चिकित्सक प्रायः प्रत्येक सत्र की समाप्ति पर 5 से 10 मिनट का ब्रेक लेते, जिससे क्लाइंट के लिये सारांश में संदेश बना सके। इस ब्रेक में चिकित्सक क्लाइंट के लिये प्रतिपुष्टि का निर्माण करता है जिससे क्लाइंट को ब्रेक के बाद दिया जाता है।

प्रशंसा के द्वारा क्लाइंट जो कर रहा है उसे स्वीकारोक्ति दी जाती है। जिससे उनमें आशा का संचार हो सके कि वे अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

10.6.5 उपयोगिता (Applications)

समाधान केंद्रित चिकित्सा समाधान केंद्रित होती है न कि यह देखती है कि समस्या क्यों व कैसे उत्पन्न हुयी। समाधान केंद्रित चिकित्स संक्षिप्त होती है क्योंकि इसका बल मुख्यतः क्या कार्य करना है पर होता है।

समाधान केंद्रित चिकित्सा का सफलतापूर्वक उपयोग विभिन्न प्रकार के क्लाइंट के ऊपर किया जा सकता है जिनमें मादक द्रव्यों का सेवन, अवसाद , संबंधों में दिक्कत, संबंधों का टूटना, गुस्से पर नियंत्रण, संवाद में दिक्कत , भोजन विकृति आदि। यह चिकित्सा वृहद समूह पर लागू होती है जैसे बच्चे, परिवार आदि।

10.6.6 गुण एवं दोष (Merits and Demerits)-

गुण – यह एक समाधान केंद्रित उपागम है।

यह क्लाइंट की योग्यता पर ध्यान केन्द्रित करता है।

यह एक संक्षिप्त विधि है जो कम समय लेती है।

दोष- चूँकि यह एक संक्षिप्त चिकित्सा विधि है यह क्लाइंट की समस्या का गहन अध्ययन नहीं कर पाती।

समाधान केंद्रित चिकित्सा परामर्शदाता को क्लाइंट के तात्कालिक संसाधनों को खोजने व उपयोग में सहायता प्रदान करते हैं। समाधान केंद्रित चिकित्सा क्लाइंट की समस्या केंद्रित होने के

स्थान पर समाधान केंद्रित होना सीखाती है। यह एक कठिन कार्य है खासतौर पर जब क्लाइंट ने कई वर्षों तक इस स्थिति में बिताये हैं। चमत्कारिक प्रश्न तथा अपवाद प्रश्न नयी सोच व नये विचार को जन्म देने में सहायक होते हैं।

10.7 सारांश(Summary)-

नाट्य चिकित्सा, नाट्य, रंगमंचीय प्रक्रियाओं व उत्पादों का क्रमबद्ध उपयोग करते हुये उसे लक्षणों से मुक्ति , सांवेगिक तथा भौतिकीय एकीकरण तथा व्यक्तिगत विकास के लक्षणों से संबंधित करती है।

कला चिकित्सा ,चिकित्सा का एक ऐसा रूप है जिसमें आकृति व वस्तुओं की रचना, मनोचिकित्सकीय संबंधों जो कला चिकित्सा के बीच में बनता है, में केंद्रीय भूमिका निभाता है। समाधान केंद्रित चिकित्सा भविष्यमुखी तथा लक्ष्य निर्देशित होती है तथा यह समस्या के स्थान पर समाधान पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है। व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा क्लाइंट को ही चिकित्सा में प्रमुख मानते है जिससे क्लाइंट को स्वयं के बारे में , आत्म अन्वेषण करने की विधि तथा आत्म प्रत्यय को जानने की योग्यता में वृद्धि होती है।

10.8 शब्दावली

अन्वेषण कार्य - इस तरह की तकनीक का उद्देश्य क्लाइंट को अपने सभी चेतन विचारों को स्वतः स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्त करने के लिये प्रेरित करने के लिये होता है।

स्वचालित रेखाचित्र - इस तकनीक में सर्वप्रथम क्लाइंट को विश्रामपूर्वक बैठाया जाता है। इसके पश्चात क्लाइंट को कुछ लाइनें खींचने को कहा जाता है। कुछ केसों में क्लाइंट को यह निर्देश दिया जाता है कि अभ्यास के खत्म होने तक वह अपनी पैर न उठाये।

मुक्त चित्रण - मुक्त चित्रण में क्लाइंट से यह कहा जा सकता है कि वह अपने आपको स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्त करें तथा चित्रण की योजना के बारे में चिंतन न करें।

रेखांकित पूर्णता - इस तकनीक में क्लाइंट को एक या एक से अधिक कागज के टुकड़े दिये जाते है जिन पर कुछ पंक्तियां या आकृति बनी होती है।

घर वृक्ष व्यक्ति - इससे क्लाइंट को एक घर , वृक्ष तथा एक व्यक्ति को एक ही में चित्रित करने को कहा जाता है। इसके द्वारा क्लाइंट को यह कार्य दिया जाता है।

नाटकीय प्रक्षेपण - यह नाट्य चिकित्सा की एक तकनीक है। इसके द्वारा क्लाइंट के अंदर के संवेब या विचार को जाना जा सकता है तथा इसे नाट्य चिकित्सा के द्वारा प्रक्षेपित किया जा सकता है।

अपवाद प्रश्न -समाधान केंद्रित चिकित्सा इस बात पर विश्वास रखती है कि क्लाइंट के जीवन में कष्टदायक नहीं था। ऐसे समय को अपवाद कहते है।

चमत्कारिक प्रश्न - समाधान केंद्रित चिकित्सा से संबंधित कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जिसमें चिकित्सक प्रश्न करता है कि अगर एक चमत्कार घटित होता है तथा जो समस्या रातों रात हल हो जाती है , आपको ऐसा पता चलेगा कि यह समस्या हल हो गयी है तथा इसमें भिन्न बात क्या होगी ।

पूर्ण क्रियाशील व्यक्ति - ये वे व्यक्ति होते हैं जिनके पास आर्दश सांवेगिक स्वास्थ्य होता है ।

प्रासंगिक परिप्रेक्ष्य - प्रासंगिक प्रतिरूप से आशय एक अद्वितीय प्रत्यक्षीकरण से है जिससे संसार के बारे में जानकारी मिलती है ।

संगतता - संगतता से तात्पर्य है चिकित्सक के कहने व करने में एकरूपता का होना ।

परानुभूति-परानुभूति वह योग्यता है जिसे व्यक्ति केंद्रित चिकित्सक क्लाइट के संवेग को समझने के लिये करते हैं ।

10.9 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

(1) कला चिकित्सा की शुरुआत सर्वप्रथम मेंने की थी । (वालर व शिलोरी ने 1948 में)

(2) ब्रिटेन में सर्वप्रथमने कला चिकित्सा शब्द का प्रयोग किया । (एड्रियन हिल)

(3)ने नाट्य चिकित्सा में पाँच चरण सिद्धांत को चिन्हित किया । (रीनी इमुयात)

(4) आधुनिक समाधान केंद्रित चिकित्सा का विकास ने किया था। (स्टीव डी शेजर तथा इनमु किम बर्ग)

(5)से आशय है कि चिकित्सक को क्लाइट को स्वीकार करना चाहिये व सम्मान देना चाहिये । (शर्तहीन

धनात्मक सम्मान)

10.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

- Edward D. Art Therapy – Sage Publication. www.Sagepub.com.
- [www. ep. Liu.se](http://www.ep.Liu.se).
- Art Therapy Workbook : An Alderian Application: A master's Project. The Faculty of Adler Graduate School. In Partial fulfillment of the requirement of the Degree of Master of Arts in Alderian Counseling and Psychotherapy by MarishaWeihe.
- David , R. , Johnson, R. E. (2009) Current Approaches in Drama Therapy. Charls E. Thomas- Publisher LTd.
- Judith, A., R. (1998) Art Therapy : An Introduction . Publisher- Bruner – Routeldge.
- Sue, J. (1997) Drama Therapy: Theory and Practice, 3 Publisher Routledge

- Robort, J. Landy (1994). Drama Therapy, Concepts, Theories and Practices.
- Cory, G. (2010). Theory and Practice of Counseling and Psychotherapy. Cenage Learning.
- Andrews, J. & Clark, D. J. (1996). In the case of a depressed women: Solution Focused or narrative therapy approaches? The Family Journal 4(3), 243-250.
- Berg, J.K.. & Miller, S.D. (1992). Working with the Problem Drinker: A solution focused approaches. New York: Norton.
- Bohrat, A. C., & Greenberg, L.S. (Eds.). (1997). Empathy reconsidered: New Directions in Psychotherapy. Washington, DC: American Psychological Association.
- Boy, A.V., & Pine, G.J. (1999). A person Centered foundation for counseling and psychotherapy (2nd ed.). Springfield , IL: Charles C Thomas.
- www.nadta.org
- www.goodtherapy.org
- www.ivcc.edu.
- www.elementsuk.com
- [www. First Psychology. Co.U.K.](http://www.FirstPsychology.Co.U.K)

10.11 निबंधात्मक प्रश्न

- (1) कला चिकित्सा के स्वरूप पर प्रकाश डाले। इसकी उपयोगिता बताये।
 - (2) नाट्य चिकित्सा का संक्षिप्त इतिहास बताइये तथा इसकी उपयोगिता, लाभ व सीमार्ये बताइये।
 - (3) समान उपाय केंद्रित चिकित्सा का परिचय दीजिये तथा इसके अभिग्रह बताइये। इसकी तकनीकि बताइये
 - (4) व्यक्ति केंद्रित चिकित्सा का परिचय दीजिये। इसके चरण, लाभ व सीमार्ये बताइयें।
-

इकाई 11- मूल्यांकन एवं परामर्श के लिए संज्ञानात्मक, व्यक्ति केन्द्रित एवं वर्णनात्मक दृष्टिकोण (Cognitive, Person Centered and Narrative Approaches to Assessment and Counselling)

इकाई संरचना

- 11.1 प्रस्तावना
- 11.2 उद्देश्य
- 11.3. परामर्श के उपागम
- 11.4 संज्ञानात्मक उपागम
- 11.5 व्यक्ति-केन्द्रित उपागम
- 11.6 परामर्श प्रक्रिया के वृत्तान्त हेतु पद/उपागम
- 11.7 सारांश
- 11.8 तकनीकी पद
- 11.9 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न
- 11.10 निबन्धात्मक प्रश्न
- 11.11 सन्दर्भ सूची

11.1 प्रस्तावना (Introduction):

व्यक्ति की समस्याओं और आवश्यकताओं के रूप अनेक होते हैं जैसे- लक्ष्य का नियंत्रण, लक्ष्य का चयन, लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सामर्थ्य का विकास और बाधाओं का निराकरण। व्यक्ति को आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये परामर्शदाता उनके संज्ञान, अनुभूति/संवेग, व्यवहार को प्रभावित करता है तथा इस हेतु अनेक तकनीकों को प्रयुक्त करता है। परामर्शदाता द्वारा प्रयुक्त तकनीक या तकनीकों का समुच्चय उसकी अभिमुखता का विकास समस्याओं की उत्पत्ति और परिवर्तन की व्याख्या प्रस्तुत करने वाले किसी सिद्धान्त के अनुरूप होता है। फेलथम और हार्टन- 'परामर्शन और मनोचिकित्सा ऐसी गतिविधियाँ हैं जो किसी सिद्धान्त द्वारा रूपरचित, समर्थित होती हैं। अर्थात् परामर्शन कार्य में सैद्धान्तिक आधार की विशेषता पायी जाती है। परामर्शन के सैद्धान्तिक आधारों, तकनीकी भिन्नताओं, प्रक्रिया लक्ष्यों में विविधता पायी जाती है। जिसे सैद्धान्तिक प्रतिरूप, अभिमुखता, उपागम, सम्प्रदाय, ब्राण्ड नेम्स आदि अनेक रूपों में सम्बोधित किया जाता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से परामर्शन और मनोचिकित्सा के क्षेत्र में उपागमों/सम्प्रदायों का सम्बन्ध व्यक्तित्व के सिद्धान्तों के साथ रहा है। उपचार और परिवर्तन के तत्व ही व्यक्ति सिद्धान्त की सीमा के बाहर होते थे और शेष समस्त आधार/दृष्टिकोण एक निश्चित व्यक्तित्व सिद्धान्त के भीतर ही पाये जाते थे। हार्पर ने ऐसे 36 सम्प्रदायों का वर्णन किया है। नारक्रॉस और ग्रेन केवेज ने 1959 से 1986 के मध्य के विभिन्न पुनर्मूल्यांकनों का सर्वेक्षण करके पाया कि 400 से अधिक भिन्न या विशिष्ट परामर्शन या मनोचिकित्सा के मॉडल अथवा उपागम प्रचलन में हैं। विगत एक दो दशकों में यह प्रवृत्ति भी पनपती हुई देखी गयी है कि परामर्शन/मनोचिकित्सा के उपागम/प्रतिरूप आवश्यक रूप में किसी व्यक्तित्व सिद्धान्त के साथ पूर्णतः जुड़ा हुआ नहीं है; यद्यपि सिद्धान्त के कुछ पक्षों को उसमें थोड़े परिवर्तित महत्व के साथ-साथ देखा जा सकता है।

11.2 उद्देश्य (Aim)-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे कि-

- परामर्श के विभिन्न उपागम क्या हैं ?
- व्यक्ति की विश्वदृष्टि , अर्थात् यह कि व्यक्ति वास्तविकता की संरचना कैसे करता है और अपने जीवन के अनुभवों का कारणात्मक रोपण किस प्रकार करता है।
- हम जैसा सोचते हैं वैसे ही होते हैं। हम जो कुछ है उसका उद्भव हमारे विचारों में कैसे होता है, अपने विचारों से हम संसार की रचना कैसे कर सकते हैं।
- व्यक्ति-केन्द्रित या रोगी केन्द्रित उपचार का विकास मनोविश्लेषणात्मक उपागमों की भांति ही मनोपचार सम्बन्धी अनुभवों के आधार पर किस प्रकार किया जाता है।
- समस्या की प्रकृति पर परामर्श का प्रकार निर्भर करता है, लेकिन समस्या से क्षेत्रों को सीमित नहीं किया जा सकता। परामर्शदाता किस तरह से समस्याओं को सुलझाने या उनका सामना करने के लिए तैयार रहता है।

11.3. परामर्श के उपागम (Approaches to Counselling)-

परामर्शन उपागमों के वर्णन में बहुधा चार तत्वों का समावेश देखा जा सकता है-

- i. मूल अभिग्रह या दर्शन
- ii. मानव व्यक्तित्व और विकास का औपचारिक सिद्धान्त
- iii. नैदानिक सिद्धान्त
- iv. परामर्शन/मनोचिकित्सीय संक्रियाएँ और तकनीकें

मूल अभिग्रह या दर्शन के अन्तर्गत दो प्रकार का वर्णन देखा जा सकता है। प्रथम, व्यक्ति की विश्वदृष्टि, अर्थात् यह कि व्यक्ति वास्तविकता की संरचना कैसे करता है और अपने जीवन के अनुभवों का कारणात्मक रोपण किस प्रकार करता है। कुछ उपागम व्यक्ति के मूल्यों, विश्वासों और

सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों का भी वर्णन करते हैं। द्वितीय श्रेणी के अभिग्रह परामर्शन/मनोपचार प्रक्रिया से सम्बन्धित होते हैं। उसके अर्न्तगत परामर्शन सम्बन्धों की विशेषताओं और परामर्शन/मनोचिकित्सा के लक्ष्यों, उद्देश्यों, मूल्यों का वर्णन देखा जा सकता है।

व्यक्तित्व और विकास के औपचारिक सिद्धान्त के अर्न्तगत मानव व्यवहार के संगठन और विकास, विशेषतयः समायोजनात्मक समस्याओं या व्यक्तित्व विकृतियों के कारणों की व्याख्या देखी जा सकती है। इस व्याख्या द्वारा यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति की समस्या का मूल कहाँ पर अवस्थित है और परामर्शन/मनोचिकित्सा द्वारा व्यक्ति के जीवन के किस क्षेत्र में हस्तक्षेप की आवश्यकता है- संज्ञान, भावानुभूति, व्यवहार, विम्ब या अन्तर्वैयक्तिक जीवन क्षेत्र। आधुनिक उपागमों में से अनेक इस पक्ष पर ध्यान नहीं देते हैं क्योंकि उनका चिन्तन इस बिन्दु पर सक्रिय पाया जाता है कि समस्याओं का समाधान किस प्रकार किया जाये या लक्ष्यों को किस प्रकार अर्जित किया जा सकता है।

नैदानिक सिद्धान्त मुख्यतया औपचारिक सिद्धान्त के अमूर्त सम्प्रत्ययों की इस प्रकार व्याख्या करता है कि उनका उपयोग परामर्शन/उपचार कार्यों के क्षेत्र में सरलतापूर्वक किया जा सके। इस प्रकार नैदानिक सिद्धान्त परिवर्तन के नियमों और सन्निहित परिवर्तन प्रक्रिया का वर्णन करता है।

तकनीकी वर्णन के अर्न्तगत परिवर्तन की प्रक्रिया का वर्णन किया जाता है। विविध उपागम परामर्शी के साथ सम्बन्धों की विशेषता, भावनात्मक अभिव्यक्ति, भावनाओं, के अन्तरण, प्रतिअन्तरण, जीवन प्ररिप्रेक्ष्य एवं अर्न्तदृष्टि के विकास, व्यक्तिगत एवं परिवेशीय बोध, सामर्थ्य विकास, दोष निवारण, पुर्नशिक्षण जैसी प्रक्रियात्मक तकनीकों का वर्णन प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार नैदानिक सिद्धान्त का कार्यरूप में कैसे उपयोग किया जायेगा इसका वर्णन अत्यन्त मूर्तरूप में इस पक्ष में किया जाता है।

11.4 संज्ञानात्मक उपागम (Cognitive Approach)-

परामर्शन एवं मनोचिकित्सा की मनोविश्लेषणात्मक प्रणाली का आरम्भ में व्यापक प्रभाव क्षेत्र विकसित हो गया किन्तु शीघ्र ही उक्त प्रणाली के समर्थकों एवं अनुयायियों में बीच उपागम के अभिग्रहों के बारे में मतभेद उभरने लगा। मनोविश्लेषणात्मक उपागम के साथ असहमति का स्तर तीव्र होने के साथ-साथ दूसरी मनोवैज्ञानिक उपचार प्रणालियों को विकसित करने का प्रयास भी आरम्भ हो गया। आरोन बेक् ने मनोविश्लेषणात्मक उपागम से असंतुष्ट होकर संज्ञानात्मक उपागम विकसित किया। बेक के विचारों पर तार्किक संवेगात्मक उपागम के प्रणेता अल्बर्ट एलिस की भांति ही ग्रीक, रोमन और पूर्वी दार्शनिकों के विचारों का प्रभाव दृष्टि गोचर होता है। दर्शन के इस क्षेत्र में यह सोच प्रभावशाली पायी गयी है कि हम अपने विश्व और स्वयं के बारे में जैसा चिन्तन करते हैं उसका हमारे संवेग और व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है गौतम बुद्ध ने कहा- 'हम जैसा

सोचते हैं वैसे ही होते हैं। हम जो कुछ है उसका उद्भव हमारे विचारों में होता है, अपने विचारों से हम संसार की रचना करते हैं।“

बेक(Beck) ने 1963 और 1964 में चिन्तन और विषाद के सम्बन्धों पर शोधपत्र प्रस्तुत करके विषाद में नकारात्मक संज्ञान त्रिपद का संप्रत्यय किया। जिसमें यह कहा गया है कि विवाद से पीड़ित व्यक्ति विश्व, भविष्य तथा स्वयं के बारे में नकारात्मक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करते हैं। विषाद चिन्तन का विकार है। बाद में अन्य मानसिक समस्याओं में भी संज्ञानात्मक विकार प्रदर्शित किया जा सके इसलिये उपचार हेतु संज्ञान के स्तर पर हस्तक्षेप की प्रणाली विकसित की गयी। संज्ञानात्मक उपागम में अनेक व्यवहार हस्तक्षेप तकनीकों को भी सम्मिलित किया गया है। इसलिये इस उपागम का प्रमुख रूप संज्ञानात्मक व्यवहार उपागम को होता है।

11.4.1 संज्ञानात्मक उपागम के मूलभूत अभिग्रह (Basic Assumptions of Cognitive Approach)-

हम सभी लोगों को परिवेश के साथ समायोजन स्थापित करने की आवश्यकता होती है। उपर्युक्त समायोजन स्थापित होने के लिये परिवेश, स्वयं अपने बारे में एवं अन्य लोगों के बारे में यथार्थपूर्ण सूचना की आवश्यकता होती है। हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ परिवेश के साथ मध्यस्थता स्थापित करके मौलिक सूचनाएँ अर्जित करती हैं। ज्ञानेन्द्रियों के स्तर पर प्राप्त सूचनाओं के चिन्तन, तर्क, कल्पना की प्रणालियाँ सम्मिलित होकर हमारे अन्तर व्यक्तियों, परिवेश और घटनाओं के बारे में जिस स्वरूप में विकास करती हैं उसमें घटना का वस्तुनिष्ठ वर्णन ही नहीं अपितु हमारी व्याख्या, मूल्यांकन और निष्कर्ष का समावेश होता है।

संज्ञान का हमारी अनुभूतियों, व्यवहार और दैहिक अवस्था के साथ सम्बन्ध के बारे में विश्वास इस सिद्धान्त का मूलभूत अभिग्रह है। इस प्रकार यदि सामने उपस्थित व्यक्ति का प्रत्यक्षण/संज्ञान एक आतंकवादी के रूप में हो रहा है तो व्यक्ति की दैहिक अवस्था प्रभावित होगी। उसकी श्वसन क्रिया और हृदयगति तीव्र हो जायेगी, व्यक्ति को भय/क्रोध की अनुभूति होगी तथा हमारा व्यवहार पलायन/आक्रमण के रूप में होगा। व्यक्ति उत्पन्न हुए संज्ञान के औचित्य का मूल्यांकन कर सकता है और उसमें संशोधन कर सकता है।

बेक ने व्यक्ति की अनुभूतियों और व्यवहार को प्रभावित करने वाले तीन प्रकार के संज्ञान का वर्णन किया है-

- **सूचना संसाधन (Information Processing)-** व्यक्ति को निरन्तर बाहरी परिवेश और आन्तरिक संरचना से सूचनाएँ प्राप्त होती रहती हैं जिसको आधार बनाकर हमारा मस्तिष्क उसे संज्ञानात्मक अर्थपूर्णता के रूप में प्रस्तुत करती है।

- **स्वचालित विचार (Automatic Thoughts)**- व्यक्ति के अनेक संज्ञान स्वतः स्फूर्त होते हैं, इनकी उत्पत्ति आन्तरिक संवाद द्वारा होती है। व्यक्ति के लिये ऐसे संज्ञानों का चेतन बोध प्राप्त होना आवश्यक नहीं होता है।
- **स्कीमा (Schema)**- स्कीमा ऐसी काल्पनिक संज्ञानात्मक संरचनाएँ होती हैं जो वर्तमान प्रसंग में आवश्यक सूचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने और आवश्यक सूचनाओं की उपेक्षा करने के लिये अवछन्न प्रणाली की भाँति हमारी सहायता करती हैं स्कीमा अनकहा नियम या अन्तर्निहित विश्वास होता है। जिसका आरम्भिक अनुभवों के माध्यम से विकास होता है।

11.4.2 संज्ञानात्मक उपागम में समस्या की उत्पत्ति और अनुरक्षण की व्याख्या-

बेक के संज्ञानात्मक प्रतिरूप की अवधारणा यह है कि व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक या सांवेगिक समस्याओं का कारण परिस्थितियों और अनुभव में नहीं, व्यक्ति के विकृत चिन्तन की प्रणाली में निहित होता है।

जब अस्वस्थ या कुसमायोजनात्मक स्कीमा जो कि नकारात्मक, दृढ़ और निरपेक्ष होता है, विकसित और सक्रिय हो जाता है तब सूचना संसाधन में विकृति आ जाती है-सूचना को व्यक्ति के अन्तर्निहित विश्वासों के अनुरूप परिवर्तित कर लिया जाता है या प्रतिकूल सूचनाओं की उपेक्षा कर दी जाती है। बेक ने विकृत सूचना संसाधन के तीन रूपों का वर्णन किया है:-

1. मनमाना निष्कर्ष - अर्थात् ऐसा संज्ञानात्मक निष्कर्ष जिसका कोई आधार या समर्थन करने वाला साक्ष्य नहीं है।
2. द्विभाजी चिन्तन- चिन्तन की ऐसी शैली जिसमें व्यक्ति सदैव द्विध्रुवीय मूल्यांकन में किसी एक छोर पर पाया जाता है, मध्यवर्ती मूल्यांकन का स्वरूप नहीं पाया जाता है।
3. अधिकरण एवं अल्पीकरण- इस प्रकार का विकार आने पर संज्ञानात्मक प्रक्रिया घटनाओं का मूल्यांकन या तो बढ़ा-चढ़ाकर या अत्यन्त घटाकर प्रस्तुत करती है।

11.4.3 संज्ञानात्मक उपागम में परिवर्तन सम्बन्धी लक्ष्य-

संज्ञानात्मक उपागम का लक्ष्य सुव्यवस्थित प्रक्रिया के माध्यम से सांवेगिक समस्याओं का उपचार और व्यवहार में परिवर्तन स्थापित करना होता है। संज्ञान में परिवर्तन स्थापित करना इस उपागम का प्रथम लक्ष्य होता है। इस कार्य के लिये क्लायंट की सक्रिय सहभागिता आवश्यक होती है परिवर्तन के लक्ष्य और प्रक्रिया की निम्न अवस्थायें होती हैं:-

- क्लायंट को संज्ञानात्मक प्रतिरूप और संवेग एवं व्यवहार में विचार की भूमिका के बारे में शिक्षित करना, क्लायंट में समस्या का सम्प्रत्ययन विकसित करना।

- परामर्शदाता क्लायंट को संज्ञानात्मक त्रुटियों, स्वतः स्फूर्त विचार और स्कीमा को चुनौती देने एवं व्यवहार में परिवर्तन की योजना बनाने तथा लक्ष्य निर्धारित करने के लिये सहायता देता है।
- क्लायंट को स्वयं के लिये परामर्शदाता/उपचारक बनने हेतु सहायता दी जाती है।
- क्लायंट के विकृत विचारों में दीर्घकालिक लाभ के लिये परिमार्जन उत्पन्न किया जाता है।
- क्लायंट में उसकी समस्याओं की उत्पत्ति और अनुरक्षण के विषय में अंतरिम परिकल्पनाओं के रूप में विश्लेषण का प्रतिपादन किया जाता है। यह विश्लेषणात्मक प्रतिपादन संज्ञानात्मक विकृति, स्वतः स्फूर्त विचार, स्कीमा 2. पूर्वनिहित कारकों अधिगम 3. तात्कालिक कारकों के पदों रूप में तैयार किया जाता है।

11.4.4 संज्ञानात्मक उपागम में परिवर्तन अर्जित करने की प्रविधियाँ Techniques of acquiring change)-

जिल्ल मिट्टन के अनुसार संज्ञानात्मक परामर्शदाता/उपचारक सक्रिय-निर्देशात्मक परामर्शन पद्धति अपनाते हैं। परामर्शदाता द्वारा संज्ञानात्मक एवं व्यवहार प्रविधियों को प्रयुक्त करने के लिये अच्छे परामर्शन सम्बन्ध की आवश्यकता होती है। संज्ञानात्मक परामर्शदाता का कार्य शिक्षक जैसा होता है अतः उसमें अच्छे शिक्षक के गुण होने चाहिए कि वह परामर्शी को संज्ञान, संवेग, शरीर क्रिया और व्यवहार के सम्बन्धों के बारे में शिक्षित कर सके। परामर्शदाता में परामर्शी को अपने विचार एवं व्यवहार का प्रबोधक बनाने, उसके औचित्य का परीक्षण करने तथा विकृत एवं गलत ढंग से कार्य कर रहे विश्वास की प्रणाली का परिमार्जन करने के लिये शिक्षित करने की सामर्थ्य होना चाहिए।

11.5 व्यक्ति-केन्द्रित उपागम (Person-Centered Approach)-

व्यक्ति-केन्द्रित या रोगी-केन्द्रित उपचार का विकास मनोविश्लेषणात्मक एवं मनोगत्यात्मक उपागमों की भांति ही मनोपचार सम्बन्धी अनुभवों के आधार पर कार्ल रोजर्स द्वारा किया गया। यह उपागम जो कि अनेक दृष्टियों से अस्तित्ववादी उपागम के समीप है। आरम्भ में अनिर्देशात्मक प्रणाली के नाम से पुकारा गया किन्तु कालान्तर में इस व्यक्ति केन्द्रित उपागम के रूप में ही प्रसिद्धि मिली। रॉजर्स का उपागम अस्तित्ववादी उपागमों के साथ जोड़कर मानववादी उपागम की श्रेणी में रखा जाता है। मानववादी उपागम व्यक्तियों में अन्तर्निहित शक्तियों में असीमित विश्वास व्यक्त करता है तथा यह स्वीकार करता है कि व्यक्ति में अपना स्वस्थ एवं सृजनात्मक विकास सम्भव बनाने की सामर्थ्य होती है। इस प्रकार का उपागम मानव जीवन के बारे में अधिक आशावादी है।

रॉजर्स के व्यक्तित्व सिद्धान्त और उपचार में स्व को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह माना जाता है कि जब व्यक्ति के स्व और अनुभवों के मध्य असंगति का विकास हो जाता है जब व्यक्तित्व संरचना विघटित हो जाती हैं जब ऐसे परिवेश का निर्माण किया जाता है कि व्यक्ति को अप्रतिबंधित सम्मान की प्राप्ति हो तब व्यक्ति के स्व और अनुभव के मध्य संगति का विकास होता है तथा मनोपचार का लक्ष्य प्राप्त होता है।

11.5.1 मूलभूत अभिग्रह (Basic Assumptions):-

1. मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मनुष्य समस्त अनुभवों का केन्द्रक होता है। अनुभव के अन्तर्गत वह सब कुछ आता है जो सम्भाव्य रूप में किसी समय उपलब्ध होता है, अनुभवों की समग्रता दृष्य-प्रपंचीय क्षेत्र का गठन करती है। दृष्य-प्रपंचीय क्षेत्र की व्यक्ति की संदर्भ संरचना होती है।
2. व्यक्ति की चेतना या बोध अनुभवों का प्रतीकीकरण है। जिन अनुभवों का प्रतीकीकरण नहीं हो पाता उसे अवप्रत्यक्षण कहा जाता है।
3. व्यक्ति के दृष्य-प्रपंचीय क्षेत्र के एक पृथक भाग को स्व कहा जाता है। स्व या आत्म-सम्प्रत्यय "मैं" और "मुझ" की विशेषताओं और मैं तथा मुझ के अन्य लोगों एवं जीवन के विविध पक्षों के प्रत्यक्षण, इन प्रत्यक्षणों के साथ संलग्न मूल्यों से बना संगठित, संगतिपूर्ण, सम्प्रत्ययात्मक गेस्टाल्ट है। यह ऐसा गेस्टाल्ट है जो चेतन में बोध उपलब्ध होता है यद्यपि आवश्यक रूप में उसमें विद्यमान नहीं होता। यह एक परिवर्तनशील, तरल गेस्टाल्ट है, एक प्रक्रिया है, किन्तु किसी समय बिन्दु पर यह एक विशिष्ट तत्व होता है।
4. जब व्यक्ति के स्व की रचना करने वाले प्रतीकीकृत अनुभवों में प्राणी के अनुभव निष्ठापूर्वक प्रतिबिम्बित होते हैं तब व्यक्ति समायोजित, परिपक्व और पूर्णतः प्रकार्यात्मक अवस्था में होता है।
5. "व्यक्ति के अन्दर एकमात्र मूल प्रवृत्ति और तत्परता होती है- अनुभव कर रहे प्राणी का आत्मीकरण, अनुरक्षण और उन्नयन करना।"
6. प्राणी की आत्मीकरण प्रवृत्ति और स्व आत्मीकरण प्रवृत्ति की एकता सम्भव है। यदि व्यक्ति के स्व और उसके सम्पूर्ण अनुभवों में संगति व्याप्त होती है तो दोनों प्रवृत्तियाँ एकीकृत होती हैं और यदि स्व तथा अनुभव के बीच संगति का अभाव होता है तो प्राणी के आत्मीकरण की सामान्य प्रवृत्ति और स्व-आत्मीकरण की प्रवृत्ति एक दूसरे से पृथक विपरीत उद्देश्यों के लिये कार्य करते हैं।
7. आत्मीकरण की प्रवृत्ति सामर्थ्यों की सिद्धि और पूर्णता अर्जित करने की दिशा में कार्य करती है। इसका एक प्रकार्य व्यक्ति के अनुभवों के भाग को स्व के बाध के रूप में पृथक करना तथा आत्म-सम्प्रत्यय के रूप में संगठित करना होता है।

8. स्व-आत्मीकरण की प्रवृत्ति आत्म-संप्रत्यय के विकास के पश्चात् प्रकट होती है और उस सम्प्रत्यय के अनुरक्षण का कार्य करती है। स्व-आत्मीकरण प्रवृत्ति के कारण सदैव व्यक्ति अधिकतम प्रकार्यात्मक अवस्था में नहीं पहुँचता है क्योंकि मनोवैज्ञानिक रूप में स्वस्थ होने पर भी स्व-आत्मीकरण की प्रवृत्ति उसी सीमा तक कार्य करती है जहाँ तक कि व्यक्ति की आत्म-संरचना के अनुरक्षण की आवश्यकता होती है।
9. स्व के बारे में जानकारी को आत्म-अनुभव कहा जाता है। जब आत्म-अनुभव का अन्य व्यक्तियों द्वारा मूल्यांकन किया जाता है तब वह बाह्य मूल्यांकनों से प्रभावित होने लगता है। जब व्यक्ति आत्म-अनुभव का इस कारण परिहार करने लगता है कि वह आत्म-सम्मान के लिये कम या अधिक उपयुक्त है तब यह माना जाता है कि व्यक्ति ने आदर बोध के लिये शर्तों को अर्जित कर लिया है अर्थात् उसका आत्म-सादर अब अप्रतिबंधित नहीं है।
10. व्यक्ति-केन्द्रित उपागम मानव स्वभाव का सकारात्मक एवं आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। किन्तु परिवेश, विशेषतः अन्य लोगों के साथ सम्बन्धों से जुड़े कारकों के फलस्वरूप आत्म-सम्प्रत्यय सकारात्मक या नकारात्मक हो जाता है तथा इस प्रकार व्यक्ति प्रकार्यात्मक रूप में स्वस्थ या अस्वस्थ हो जाता है।
11. लोगों में पूर्ण प्रकार्यात्मकता, सृजन, सामाजिकता एवं संगतिपूर्णता की सामर्थ्य होना स्वीकार किया जाता है। अर्थात् व्यक्ति किसी विकृति या उपेक्षा के बिना अपने समस्त अनुभवों को स्वीकार कर सकता है।
12. यह उपागम यह विश्वास करता है कि यदि परामर्शी और परामर्शदाता के मध्य शक्ति और नियंत्रण की भागीदारी का सम्बन्ध स्थापित हो तो व्यक्ति आत्म-निर्देशन की क्षमता अर्जित कर सकता है।
13. लोगों के अन्दर व्यक्तिगत परिवर्तन के लिये संसाधन पाया जाता है। परामर्शन कार्य के लिये आवश्यक सम्बन्धों को विकसित करके ऐसे परिवेश का सृजन किया जा सकता है जिसमें व्यक्ति का संसाधन लक्ष्यों के लिये होने लगता है।

11.5.2 समस्याओं की उत्पत्ति एवं अनुरक्षण-

व्यक्तियों के अन्दर प्राणी-आत्मीकरण और स्व-आत्मीकरण की प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं। इन दोनों प्रवृत्तियों के मध्य एकता सम्भव है अर्थात् यह कि दोनों प्रवृत्तियों की दिशा और उद्देश्य एक जैसे हो सकते हैं। व्यक्ति के सम्पूर्ण अनुभव तथा अनुभवों का वह भाग जो स्व में अभिव्यक्त होता है, के मध्य संगति द्वारा मानसिक स्वास्थ्य का विकास होता है किन्तु जब दोनों प्रवृत्तियाँ प्रतिद्वन्द्वतात्मक रूप में कार्य करती हैं अर्थात् प्राणी के आत्मीकरण की प्रवृत्ति दूसरी दिशा में कार्य करती है तब दोनों प्रवृत्तियों के मध्य अन्तराल के अनुपात में असंगति व्याप्त हो जाती है।

जीवन के आरम्भिक वर्षों में व्यक्ति के अन्दर सभी अनुभव किसी भी प्रकार की उपेक्षा अथवा विकार के बिना स्वीकार किये जाते हैं अतः वह पूर्ण संगति की अवस्था में होता है। परिवेश में अन्य लोगों से प्राप्त होने वाली अस्वीकृति, तिरस्कार, उपेक्षा एवं नकारात्मक मूल्यांकन के कारण प्रार्थी के अनुभव और स्व के अनुभव के मध्य दूरी बढ़ने लगती है। यह वह मूल्यांकन विशुद्ध रूप में सकारात्मक होता, बालक/व्यक्ति का सम्मान अप्रतिबंधित होता तो प्राणी और स्व के मध्य दूरी या असंगति की उत्पत्ति नहीं होती। रॉजर्स के शब्दों में:- 'यदि कोई व्यक्ति मात्र अप्रतिबंधित सकारात्मक सम्मान का अनुभव करे तब महत्व की शर्तों का विकास नहीं होगा, आत्म-सम्मान प्रतिबंधित होगा, सकारात्मक सम्मान और आत्म सम्मान की प्राणी के मूल्यांकन से भिन्नता नहीं होगी तथा व्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूप में समायोजित होगा एवं पूर्णरूपेण कार्य करेगा।' किन्तु माता-पिता और अन्य महत्वपूर्ण लोग बच्चों का मूल्यांकन कभी सकारात्मक और कभी नकारात्मक रूप में करते हैं। इसके फलस्वरूप बच्चे को यह समझ में आने लगता कि उसके कुछ कार्य उपयुक्त/महत्वपूर्ण होते हैं। जिन्हें अनुमोदन प्राप्त होता है तथा अन्य कार्य महत्वहीन होते हैं, अनुपयुक्त होते हैं अतः उन व्यवहारों को अस्वीकार किया जाता है। महत्वहीन एवं अनुपयुक्त व्यवहारों से सम्बन्धित अनुभवों की स्व द्वारा उपेक्षा की जाती है। उसे ग्रहण नहीं किया जाता है अथवा उसे तोड़-मरोड़कर विकृत रूप में स्व के अनुभव में सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार आत्म-सम्प्रत्यय प्राणी के वास्तविक अनुभवों के अनुरूप नहीं रह जाता है।

उदाहरण के लिए, एक बच्चे को माता-पिता से अच्छा बच्चा रूपी मूल्यांकन प्राप्त हो रहा होता है , वह भोला है, सुन्दर है, प्यारा है वह अपने पाठ का अधिगम कर लेता है। उसे पढ़ना अच्छा लगता है वह पढ़ता है तो माता-पिता उसको सम्मान देते हैं, प्यार देते हैं, उसे पुरस्कार देते हैं उसे क्रिकेट खेलना और कार्टून शो देखना पसंद है किन्तु उसके माता-पिता को यह पसन्द नहीं है। उसके इस कार्य को नापसन्द किये जाने के अतिरिक्त उसे ऐसा करने पर तिरस्कृत किया जाता है। दंडित किया जाता है। अब चूंकि इस प्रकार के अनुभव उसके अच्छे-बच्चे रूपी आत्म-सम्प्रत्यय के अनुरूप नहीं है, नये अनुभवों के कारण गन्दे बच्चे रूपी सम्प्रत्यय के विकास की दशा उत्पन्न हो जाती है अतः बच्चे का स्व इन नवीन अनुभवों की उपेक्षा करता है या उसे विकृत करता है। यह विकृति यह रूप में हो सकती है। कि उसके स्व को यह अनुभव हो कि उसे क्रिकेट खेलना पसन्द नहीं है या कार्टून शो मुझे अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार व्यक्ति के स्व को प्राप्त अनुभव निष्ठापूर्वक प्राणी को प्राप्त हुए अनुभव से अलग हो जाता है, दोनों में विसंगति आ जाती है। यह मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन के लिये उपयुक्त नहीं होता है।

11.5.3 परामर्शदाता की दक्षता एवं परामर्शन नीतियाँ (Counsellor's Skill & Counselling Policies)-

व्यक्ति-केन्द्रित उपागम में क्लायंट के वास्तविक अनुभवों और स्व के अनुभवों के मध्य व्याप्त विसंगति को दूर करके संगति की अवस्था की पुनर्प्राप्ति हेतु उपयुक्त परामर्शन सम्बन्धों का विकास करके परामर्शन परिवेश का सृजन किया जाता है। परामर्शन परिवेश में क्लायंट को अप्रतिबंधित या अनिर्बाधित सकारात्मक सम्मान/आदर का अनुभव होता है। परामर्शदाता परामर्शी को जैसा है वैसा के आधार पर किसी पूर्व शर्त के बिना, परामर्शी के आत्मगत, आन्तरिक संदर्भ संरचना के आधार पर समझता है। अर्थात् परामर्शदाता की परामर्शी के बारे में समझ परानुभूति होती है तथा क्लायंट में भी परामर्शदाता के अन्दर उनके लिये व्याप्त सम्मान और समझ की परानुभूति हो रही होती है तथा क्लायंट में भी परामर्शदाता के अन्दर उसके लिये व्याप्त सम्मान और समझ की परानुभूति हो रही होती है। इस अवस्था का स्वाभाविक परिणाम क्लायंट में संगति की पुनर्स्थापना के रूप में देखा जा सकता है।

स्पष्ट है कि व्यक्ति केन्द्रित उपागम में परामर्शदाता के पास परामर्शन परिवेश के सृजन के लिये आवश्यक दक्षता का होना वांछित है किन्तु अन्य किसी प्रविधि की आवश्यकता नहीं होती है। व्यक्ति केन्द्रित उपागम का अनुसरण करने वाले कुछ परामर्शदाताओं का यह मत है कि इस उपागम की सीमा में रहते हुए भी दूसरी पद्धतियों में प्रयुक्त अन्य प्रविधियाँ उपयोग में लायी जा सकती हैं किन्तु अधिकतर परामर्शदाता की दृष्टि में ऐसी प्रविधि के न्यूनतम उपयोग की नीति अधिक उपयुक्त मानी जाती है।

11.5.4 परामर्शन परिवेश का क्लायंट पर प्रभाव (Effect of Counselling Climate on Client)-

परामर्शन परिवेश की मर्म दशाओं के अस्तित्व के द्वारा एक ऐसी प्रक्रिया का विकास होता है जिसे निम्नांकित विशेषताएँ पायी जाती हैं-

- क्लायंट उत्तरोत्तर अधिक स्वतंत्रता एवं स्व-संदर्भों की वृद्धि के साथ अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करता है।
- क्लायंट के स्व के अनुभव में प्राणी के वास्तविक अनुभवों का अधिक सच्चाई, निष्ठा एवं शुद्धता के साथ प्रतीकीकरण होता है।
- परामर्शदाता द्वारा दिये गये अप्रतिबंधित सम्मान के कारण क्लायंट को अपनी पुरानी अनुभूतियों और बोध में व्याप्त उपेक्षाओं, निषेधों एवं विकृतियों को पहचान होती है।

- आत्म-सम्प्रत्यय अब अधिक संगठित होता है, जिसमें उन अनुभवों का भी प्रतीकीकरण सम्मिलित रहता है जिसकी अतीत में या तो उपेक्षा कर दी गयी थी अथवा व्यक्ति के बोध में उनका रूप विकृत बना दिया गया था।
- क्लायंट में उत्तरोत्तर परामर्शदाता के बारे में परानुभूति का विकास होता है, क्लायंट में लिये परामर्शदाता द्वारा दिये जा रहे सम्मान और समझ का क्लायंट को बोध होता है।
- क्लायंट की अपने अनुभवों के प्रति प्रतिक्रिया अब सम्मान/अर्थ की दशाओं के आधार पर कम और प्राणीगत मूल्यांकन प्रक्रिया के आधार पर अधिक होती है।

उपर्युक्त परिवर्तनों के परिणामस्वरूप क्लायंट के व्यवहार एवं मनोदशा में निम्नांकित प्रतिफल देखे जाते हैं:-

- परामर्शी में संगति की अधिकता और रक्षात्मक उपागम की कमी पायी जाती है, समस्या समाधान में परामर्शी अधिक यथार्थवादी, वस्तुनिष्ठ और प्रभावशाली होता है।
- परामर्शी को अन्य व्यक्तियों द्वारा अधिकता के साथ स्वीकार किया जाता है।
- परामर्शी के समायोजन में वृद्धि पायी जाती है, असुरक्षा की प्रवृत्ति में कमी आती है।
- उसका व्यवहार अधिक सामाजिक होता है।
- उसका व्यवहार अधिक सृजनात्मक होता है।
- परामर्शी यह स्वीकार करता है कि अपने व्यवहार में व्याप्त समस्याओं के समाधान के लिये वह स्वयं जिम्मेदार है।

11.6 परामर्श प्रक्रिया के वृत्तान्त हेतु पद/उपागम -

मिस ब्रैगडन ने निम्नलिखित परिस्थितियों की चर्चा की है जिनमें परामर्श चाहिए:-

- जब विद्यार्थी ने केवल विश्वसनीय सूचना ही चाहे, बल्कि वह उन सूचनाओं का रुचिकर व्याख्या चाहता है जिससे उसकी व्यक्तिगत कठिनाइयों का हल निकल सके।
- जब विद्यार्थी को बुद्धिमान सुनने वाले या श्रोता की आवश्यकता होती है जिसका अनुभव उससे अधिक हो, जिसको वह अपनी कठिनाइयों का ध्यान कर सकें। जिससे वह अपनी कार्य योजना के बारे में कुछ सुझाव कर सके।
- जब परामर्शदाता की जो पहुँच उन सुविधाओं तक हो जो विद्यार्थी की समस्याओं को सुलझाने में सहायक होती है लेकिन विद्यार्थी की पहुँच वहाँ तक न हो।
- जब विद्यार्थी को कोई समस्या हो लेकिन वह इस समस्या से अनभिज्ञ हो और उसके उत्तम विकास के लिये उस समस्या के प्रति उसे सचेत करना हो।
- जब विद्यार्थी समस्या तथा उससे उत्पन्न कठिनाई से परिचित हो लेकिन वह इसे परिभाषित और समझने में कठिनाई अनुभव कर रहा हो।

- जब विद्यार्थी समस्या की उपस्थिति और उसकी प्रकृति से परिचित होता है परन्तु अस्थाई तनाव और विकर्षण के कारण वह समस्या का सामना करने के अयोग्य होता है।
- जब विद्यार्थी उस प्रमुख कुसमायोजन के समस्या या किसी दोष से ग्रस्त हो जो अस्थाई हो और जो किसी विशेषज्ञ के द्वारा अधिक लम्बे समय तक के लिये ध्यानपूर्वक निदान की मांग करता हो।

11.11.1 परामर्श-प्रक्रिया के पद (Terminology of Counselling Process)

परामर्श-प्रक्रिया के विलियमसन और डरले ने निम्नलिखित 6 पदों की चर्चा की है-

- विश्लेषण - यह वह प्रक्रिया है जिससे तथ्यों का संकलन किया जाता है ताकि विद्यार्थी का अध्ययन किया जा सके।
- संश्लेषण - इस पद में एकत्रित की गई जानकारी को संगठित किया जाता है।
- निदान - इस पद में समस्या के कारणों के बारे में निष्कर्ष निकाला जाता है।
- पूर्व अनुमान- निदान के उपयोग के बारे में कथन देने को पूर्व-अनुमान कहते हैं।
- परामर्श- परामर्शदाता और प्रार्थी द्वारा समायोजन के लिये उठाये गये कदमों को इस पद में रखा गया है।
- अनुवर्तन- परामर्शदाता की सेवाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने या नई समस्याओं के हल में विद्यार्थी की सहायता करने के प्रयास इस पद में शामिल रहते हैं।

रोजर्स ने विभिन्न पदों का निम्नलिखित पदों में संक्षिप्तीकरण किया है-

- व्यक्ति सहायता के लिये आता है तथा उसने एक अनुमानित कदम उठा लिया है।
- सहायता-परिस्थिति को प्रायः परिभाषित किया जाता है। प्रार्थी को इस ख्याल से परिचित कराया जाता है कि परामर्शदाता के पास उत्तर नहीं होते। प्रार्थी को स्वयं ही अपने उत्तर ढूँढने होते हैं। परामर्श का समय अपना है यदि वह चाहे।
- परामर्शदाता स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है। यह स्वतंत्र अभिव्यक्ति समस्या के संदर्भ में होती है। वह चिन्ता तथा अपराधी होने की भावना को रोकता है। परामर्शदाता प्रार्थी को यह मनाने का प्रयास नहीं करता कि वह गलती पर है या वह सही है। परामर्शदाता प्रार्थी को वैसा ही स्वीकार करता है जैसा वह है। वह केवल स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है।
- परामर्शदाता नकारात्मक भावनाओं को स्वीकार करता है, उन्हें पहचानता और स्पष्ट करता है। परामर्शदाता को प्रार्थी की भावनाओं का उत्तर देना चाहिए।
- जब व्यक्ति की नकारात्मक भावनाओं को पहचानता है और उन्हें स्वीकार करता है।
- परामर्शदाता सकारात्मक भावनाओं को पहचानता है और उन्हें स्वीकार करता है।

- इससे स्वयं का बोध और अन्तर्दृष्टि होती है।
- संभावित निर्णयों और संभावित कार्य-दिशा का स्पष्टीकरण।
- व्यक्ति द्वारा महत्वपूर्ण सकारात्मक क्रियाओं का प्रारम्भ।
- आगे फिर अन्तर्दृष्टि तथा अधिक उपयुक्त बोध का विकास।
- विकसित स्वतंत्रता की भावना तथा सहायता की घटती हुई आवश्यकता।

परामर्श द्वारा प्रयुक्त प्रविधियाँ विद्यार्थी की विशेषता और व्यक्तित्व के अनुसार होनी चाहिए। विलियमसन ने परामर्श-प्रविधियों को निम्नलिखित शीर्षकों के अर्न्तगत वर्णित किया है:-

- i. **मधुर सम्बन्ध स्थापित करना-** जब पहली बार प्रार्थी परामर्शदाता के पास आता है तो परामर्शदाता को सबसे पहला कार्य होता है कि उसके साथ स्वागतपूर्ण पेश आना चाहिए। उसे आरामदेह स्थिति में लाकर प्रार्थी को विश्वास में ले लेना चाहिए। मधुर सम्बन्ध स्थापित करने का मुख्य आधार होता है-परामर्शदाता की योग्यता की ख्याति, व्यक्तिगतता का सम्मान तथा साक्षात्कार से पहले विश्वास और विद्यार्थी के साथ सम्बन्धों को विकसित करना है।
- ii. **स्वयं-बोध उत्पन्न करना-** विद्यार्थी या प्रार्थी को स्वयं की योग्यताओं और उत्तरदायित्वों का स्पष्ट ज्ञान एवं समझ होनी चाहिए। इन सबकी समझ प्रार्थी को इन योग्यताओं और उत्तरदायित्वों के प्रयोग से पहले ही हो जानी चाहिए। इसके लिये परामर्शदाता को परीक्षण-संचालन और परीक्षण अंको की व्याख्या का अनुभव होना आवश्यक है। परीक्षण-अंक निदान और पूर्वानुमान का परामर्श प्रक्रिया में ठोस-आधार प्रदान करते हैं।
- iii. **क्रिया के लिये कार्यक्रम का नियोजन और सुझाव-** परामर्शदाता प्रार्थी के लक्ष्यों, उसकी अभिवृत्तियों या दृष्टिकोणों आदि से प्रारम्भ करता है तथा अनुकूल और प्रतिकूल आंकड़ों या तथ्यों की ओर संकेत करता है। वह साक्षियों या प्रमाणों को तोलता है और वह इस तथ्य को समझता है कि वह विद्यार्थी को कोई विशेष सुझाव क्यों दे रहा है। विलियमसन का मानना है कि परामर्शदाता को अपने दृष्टिकोण का कथन निश्चितता से करना चाहिए।

परामर्शदाता प्रत्यक्ष सुझाव या सलाह देने से नहीं डरता क्योंकि विद्यार्थी आंकड़ों का उपयोग नहीं समझ सकता है।

- **प्रत्यक्ष सलाह-** इसमें परामर्शदाता निर्भय होकर अपनी राय बता देता है। इस प्रकार की पद्धति बड़े कठोर मस्तिष्क वाले लोगों के लिये उपयुक्त है जो किसी भी क्रिया या गतिविधि का विरोध करते हैं तथा फेल होने से भी डरते।
- **विधि-** यह विधि तब लाभकारी होती है जब आंकड़े स्पष्ट रूप से कोई निश्चित विकल्प की ओर इंगित करते हैं। परामर्शदाता प्रमाणों का केवल विश्लेषण करता है और विकल्पित क्रियाओं के परिणामों को देखता है।

- **व्याख्यात्मक विधि-** व्याख्यात्मक विधि परामर्श में सबसे अधिक वांछित विधि है। इसमें परामर्शदाता ध्यानपूर्वक लेकिन धीरे-धीरे निदानात्मक आंकड़ों को समझता है और उन संभावित स्थितियों की ओर संकेत करता है जिनमें विद्यार्थी की शक्तियों या क्षमताओं का प्रयोग किया जा सकता हो। इसमें आंकड़ों के उपयोग को सविस्तार और ध्यानपूर्वक तर्क सहित समझाया जाता है। इसके पश्चात प्रार्थी के निर्णय या रुचि को जानकर साक्षात्कार इस निर्णय को लाकर करने के लिये प्रत्यक्ष सहायता प्रदान कर सकता है। इस सहायता में उपचारात्मक कार्य और शैक्षिक या शिक्षण नियोजन का कार्य सम्मिलित होते हैं।
- **अन्य कार्यकर्ताओं का सहयोग-** कोई भी परामर्शदाता सभी प्रकार की विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। उसे अपनी सीमाओं को पहचानना चाहिए तथा उसे विशिष्टीकृत सहायता के स्रोतों से सहायता प्राप्त करने की सलाह देनी चाहिए। इन उपरोक्त प्रविधियों के अतिरिक्त कुछ अन्य परामर्श प्रविधियाँ भी हैं जो निम्नलिखित हैं:-

है:-

- i. **मौन धारण-** कभी-कभी कई परिस्थितियों में मौन रहकर किसी की बात को सुनना बोलने से अधिक प्रभावशाली होता है। जब प्रार्थी अपनी समस्या का वर्णन कर रहा होता है तब परामर्शदाता मौन धारण कर लेता है। इससे प्रार्थी को यह विश्वास हो जाता है कि परामर्शदाता प्रार्थी की बात को बड़े गौर से सुन रहा है तथा उस पर गंभीरता से विचार कर रहा है।
- ii. **स्वीकृति-** परामर्शदाता प्रार्थी की बात को अस्थायी स्वीकृति दे। कई बार परामर्शदाता कुछ शब्द इस प्रकार से कह देता है कि उनसे यह मालूम पड़ जाता है कि प्रार्थी जो कुछ कह रहा है उसे वह स्पष्टतः समझ रहा है। परन्तु इन शब्दों को परामर्शदाता इस तरह कहता है कि जिससे प्रार्थी के बोलने के धारा प्रवाह में कोई रुकावट नहीं आती। उदाहरणार्थ- ठीक है, बहुत अच्छा हूँ इत्यादि। कई अवसरों पर परामर्शदाता अपनी स्वीकृति प्रदान करने के लिये कई शब्द नहीं कहता, केवल स्वीकारात्मक ढंग से सिर ही हिला देता है।
- iii. **स्पष्टीकरण -** कई अवसरों परामर्शदाता को चाहिए कि वह प्रार्थी की बातों का या उस दिये गये वर्णन का स्पष्टीकरण करे। परामर्शदाता का यह कर्तव्य है कि वह प्रार्थी को इस बात से परिचित करा दे कि वह उसे समझ रहा है। तथा स्वीकार करता है। परन्तु कभी-कभी परामर्शदाता को यह आवश्यक हो जाता है कि वह प्रार्थी के वर्णन का स्पष्टीकरण कर दे किन्तु स्पष्टीकरण करते समय प्रार्थी को किसी प्रकार की जोर-जबरदस्ती का आभास न हो।

- iv. **पुनःकथन** - स्वीकृति और पुनरावृत्ति दोनों ही प्रार्थी को यह बोध होता है कि परामर्शदाता उनकी बात को समझ रहा है तथा स्वीकार करता है। पुनरावृत्ति के द्वारा परामर्शदाता उसी बात को दोहराता है कि जिसे प्रार्थी ने वर्णित किया है परन्तु परामर्शदाता पुनःकथन के समय किसी प्रकार का संशोधन या स्पष्टीकरण प्रार्थी के मापन में नहीं करता है।
- v. **प्रश्न पूछना**- प्रार्थी को अपनी समस्याओं के सम्बन्ध में अधिक विचार करने की प्रेरणा देने के लिये परामर्शदाता को कुछ प्रश्न पूछने चाहिए। ये प्रश्न प्रार्थी के वक्तव्य को अंश समाप्त होने के पश्चात ही पूछे जाने चाहिए।
- vi. **हास्य रस**- परामर्श के दौरान प्रार्थी के तनाव दूर करने के लिये तथा वार्तालाप को रुचिकर बनाने के लिये हास्य-रस का प्रयोग करना भी एक आवश्यकता सी बन जाता है।
- vii. **सारांश स्पष्टीकरण** - प्रार्थी के वक्तव्य का कुछ भाग लाभकारी नहीं हो सकता। इसके कारण समस्या स्वयं ही प्रार्थी को अस्पष्ट दिखाई देती है। ऐसी स्थिति में परामर्शदाता के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि वह प्रार्थी के भाषण को संक्षिप्त करें तथा उसका संगठन करें जिससे विद्यार्थी समस्या को अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकें। परामर्शदाता का प्रयास यही रहना चाहिए कि वह कभी अपनी ओर से विचार न जोड़े।
- viii. **विश्लेषण** - प्रार्थी की समस्या के लिये परामर्शदाता समाधान प्रस्तुत करने की पहल कर सकता है। लेकिन परामर्शदाता प्रार्थी से उस हल पर अमल नहीं करवा सकता। परामर्शदाता प्रार्थी पर ही छोड़ देता है। कि वह उस समाधान को स्वीकार करे या अस्वीकार करे या उसमें कुछ संशोधन करें इस सम्बन्ध में प्रार्थी पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डाला जाता।
- ix. **व्याख्या या विवेचना**:- परामर्शदाता को प्रार्थी के वक्तव्य की ही विवेचना या व्याख्या करने का अधिकार होना चाहिए। उसे अपनी तरफ से कुछ नहीं जोड़ना चाहिए। परामर्शदाता व्याख्या द्वारा प्रार्थी के वक्तव्य का परिणाम निकालता है। इन निष्कर्षों को निकालने में अकेला प्रार्थी असमर्थ रहता है। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि परामर्शदाता द्वारा निकाले गये निष्कर्ष अन्य परीक्षणों द्वारा निकाले निष्कर्षों से मेल खा सकते हैं और नहीं भी।
- x. **परित्याग**- कई बार प्रार्थी जो कुछ सोचता या कहता है वह त्रुटिपूर्ण होता है। इस प्रकार की त्रुटिपूर्ण विचार धाराओं को त्यागना चाहिए। इसका परित्याग करने के लिये परामर्शदाता को बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए ताकि प्रार्थी विद्रोही प्रवृत्ति का न हो जाये और इस परित्याग का प्रार्थी उल्टा अर्थ न निकाल ले।
- xi. **आश्वासन** - परामर्श की सबसे महत्वपूर्ण तथा मनोवैज्ञानिक पक्ष से जुड़ी प्रविधि के रूप में आश्वासन प्रदान करने से विद्यार्थी की समस्या हल होने की आशा बंध जाती है। आश्वासन द्वारा परामर्शदाता प्रार्थी के कथनों को स्वीकार भी करता है और स्वीकृति के साथ-साथ अनुमोदित या समर्थन प्रदान करता है। आश्वासन के समान प्रभाव दिखाई देते हैं। आश्वासन को स्वीकृति से अधिक विस्तृत या व्यापक माना जाता है। अतः आश्वासन भी सम्मिलित होती है।

11.7 सारांश (Summary)-

व्यक्ति की समस्याओं और आवश्यकताओं के रूप अनेक होते हैं जैसे- लक्ष्य का नियंत्रण, लक्ष्य का चयन, लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सामर्थ्य का विकास और बाधाओं का निराकरण। व्यक्ति को आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये परामर्शदाता उनके संज्ञान, अनुभूति/संवेग, व्यवहार को प्रभावित करता है तथा इस हेतु अनेक तकनीकों को है। आरोन बेक् 1921-ने मनोविश्लेषणात्मक उपागम से असंतुष्ट होकर संज्ञानात्मक उपागम विकसित किया। बेक के विचारों पर तार्किक संवेगात्मक उपागम के प्रणेता अल्बर्ट एलिस की भांति ही ग्रीक, रोमन और पूर्वी दार्शनिकों के विचारों का प्रभाव दृष्टि गोचर होता है। दर्शन के इस क्षेत्र में यह सोच प्रभावशाली पायी गयी है कि हम अपने विश्व और स्वयं के बारे में जैसा चिन्तन करते हैं उसका हमारे संवेग और व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है गौतम बुद्ध ने कहा- 'हम जैसा सोचते हैं वैसे ही होते हैं। हम जो कुछ है उसका उद्भव हमारे विचारों में होता है, अपने विचारों से हम संसार की रचना करते हैं।'

बेक ने व्यक्ति की अनुभूतियों और व्यवहार को प्रभावित करने वाले तीन प्रकार के संज्ञान का वर्णन किया है-

1. सूचना संसाधन
2. स्वचालित विचार
3. स्कीमा

बेक के संज्ञानात्मक प्रतिरूप की अवधारणा यह है कि व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक या सांवेगिक समस्याओं का कारण परिस्थितियों और अनुभव में नहीं, व्यक्ति के विकृत चिन्तन की प्रणाली में निहित होता है।

जब अस्वस्थ या कुसमायोजनात्मक स्कीमा जो कि नकारात्मक, दृढ़ और निरपेक्ष होता है, विकसित और सक्रिय हो जाता है तब सूचना संसाधन में विकृति आ जाती है-सूचना को व्यक्ति के अन्तर्निहित विश्वासों के अनुरूप परिवर्तित कर लिया जाता है या प्रतिकूल सूचनाओं की उपेक्षा कर दी जाती है। बेक ने विकृत सूचना संसाधन के तीन रूपों का वर्णन किया है:-

1. मनमाना निष्कर्ष
2. द्विभाजी चिन्तन
3. अधिकारीकरण एवं अल्पीकरण

व्यक्ति-केन्द्रित या रोगी-केन्द्रित उपचार का विकास मनोविश्लेषणात्मक एवं मनोगत्यात्मक उपागमों की भांति ही मनापचार सम्बन्धी अनुभवों के आधार पर कार्ल रोजर्स द्वारा किया गया। यह उपागम यह विश्वास करता है कि यदि परामर्शी और परामर्शदाता के मध्य शक्ति और

नियंत्रण की भागीदारी का सम्बन्ध स्थापित हो तो व्यक्ति आत्म-निर्देशन की क्षमता अर्जित कर सकता है।

स्पष्ट है कि व्यक्ति केन्द्रित उपागम में परामर्शदाता के पास परामर्शन परिवेश के सुजन के लिये आवश्यक दक्षता का होना वांछित है किन्तु अन्य किसी प्रविधि की आवश्यकता नहीं होती है। व्यक्ति केन्द्रित उपागम का अनुसरण करने वाले कुछ परामर्शदाताओं का यह मत है कि इस उपागम की सीमा में रहते हुए भी दूसरी पद्धतियों में प्रयुक्त अन्य प्रविधियों उपयोग में लायी जा सकती है किन्तु अधिकतर परामर्शदाता की दृष्टि में ऐसी प्रविधि के न्यूनतम उपयोग की नीति अधिक उपयुक्त मानी जाती है।

परामर्श के विभिन्न उपागमों के अपने भिन्न-भिन्न उद्देश्य हैं जो कि उनकी अपनी मानव स्वभाव की धारणा के विश्लेषण पर आधारित हैं फिर भी ये सभी उपागम परामर्श के क्षेत्र में सकारात्मक पारस्परिक संबंधों को आधार मानती हैं।

11.8 तकनीकी पद:-

रोपण	Attribution
मूलभूत अभिग्रह	Basic Assumption
अनुरक्षण	Maintenance
उत्पत्ति	Origin
परामर्शन नीतियाँ	counselling Strategies
विरत	Non-judgemental
परानुभूति	Empathic
वृत्तान्त	Narrative
विश्लेषण	Analysis
संश्लेषण	Synthesis
निदान	Diagnosis
अनुवर्तन	Follow Up
नियोजन	Planning

आश्वासन

Assurance

11.9 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न -**वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

1. प्रतिरूप अधिगम संज्ञानात्मक व्यवहार उपचार की पद्धति में सम्मिलित किया जाता है।
हाँ/नहीं
2. संज्ञानात्मक उपागम के विकास में बेक की भूमिका सर्वप्रमुख है।
हाँ/नहीं
3. व्यक्ति-केन्द्रित उपागम निर्देशात्मक प्रविधि है।
हाँ/नहीं
4. रोजर्स का व्यक्ति के सामर्थ्य के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण है।
हाँ/नहीं

उत्तर: 1.नहीं 2.हाँ 3.नहीं 4.हाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सॉकरेटिक प्रश्न पृच्छा एक प्रविधि के रूप में किस उपागम में प्रयुक्त की जाती है।
क. गेस्टाल्ट उपागम ख. संज्ञानात्मक उपागम
ग. अस्तित्ववादी उपागम घ. मानवतावादी उपागम
2. परामर्शन में समूह कार्य की तकनीक होती है।
क. मनोनाटक ख. इनकाउन्टर ग्रुप
ग. टी-ग्रुप तकनीक घ. सभी
3. व्यक्ति में विश्व, भविष्य और स्वयं के बारे में नकारात्मक संज्ञान के कारण विषाद होता है। यह विचार किस मनोवैज्ञानिक का है:
क. ऑरोन बेक ख. ड्रायरेन
ग. फ्रायड घ. रोजर्स
4. “जब व्यक्ति के स्व और अनुभव के मध्य असंगति का विकास हो जाता है तब व्यक्तित्व संरचना विघटित हो जाती है और परामर्शन परिवेश में अप्रतिबंधित सम्मान के अनुभव के माध्यम से संगति का विकास किया जा सकता है” यह किस उपागम से सम्बन्धित है:
क. अस्तित्ववादी उपागम ख. गेस्टाल्ट उपागम

ग. व्यक्ति-केन्द्रित उपागम

घ. संज्ञानात्मक-विश्लेषात्मक उपागम

उत्तर: 1. ख

2. घ

3. क

7. ग

11.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. परामर्शन के संज्ञानात्मक उपागम के विविध पक्षों का वर्णन प्रस्तुत कीजिए।
2. “हम जैसा सोचते हैं वैसे ही होते हैं” (बुद्ध)। इस कथन का परामर्शन एवं मनोचिकित्सा के संदर्भ में संज्ञानात्मक उपागम में सार्थकता की समीक्षा कीजिए।
3. व्यक्ति के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण रोजर्स के व्यक्ति-केन्द्रित उपागम का मूल आधार है। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
4. परामर्शन प्रक्रिया में परामर्शन के मूल्यांकन के महत्व पर प्रकाश डालिए।

परामर्शदाता की भूमिका पर एक निबन्ध लिखो।

11.11 सन्दर्भ सूची

- Anastasi (1959) Psychological testing Newyork: Macmillan co.
- Beck, J.S. 1995, Coglitive Therapy : Basic and Beyond, N.Y.: Guilford.
- Kochhar, S.K. (1984) Guidance and Counselling in Colleges and Universities New Delhi : Sterling Publisher Pvt. Ltd.
- अमरनाथ राय, मधु अस्थाना, निर्देशन एवं परामर्शन, (संप्रत्यय क्षेत्र उपागम) मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी।
- डॉ रामपाल सिंह, डॉ राधाबल्लभ उपाध्याय “शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन” विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
- डॉ.एस0सी0ओबराय “शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श” इंटरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस मेरठा।
- 1. डॉ सीताराम जायसवाल “शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श”, अग्रवाल पब्लिकेशन।

इकाई 12 परामर्श कार्यक्रम:- उद्देश्य आयोजन और विकास (Counselling Programmes:- Purpose, Organization and Development)

इकाई की संरचना

- 12.1 प्रस्तावना
- 12.2 उद्देश्य
- 12.3 निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम
- 12.4 निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रमों को संगठित करने के सिद्धांत
- 12.5 निर्देशन कार्यक्रमों का रूप
- 12.6 निर्देशन कार्यक्रम की विशेषताएँ-
- 12.7 अच्छे निर्देशन के आयोजन की मुख्य विशेषताएं-
- 12.8 निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम को आयोजित करने के उद्देश्य
- 12.9 विद्यालय में निर्देशन सेवाओं का आयोजन
- 12.10 सारांश
- 12.11 कठिन शब्दार्थ
- 12.12 अभ्यास प्रश्न
- 12.13 निबंधात्मक प्रश्न
- 12.14 संदर्भ ग्रन्थ

12.1 प्रस्तावना:

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इसलिए, यह आम तौर पर सहमति है कि एक नागरिक को इस तरह से शिक्षित किया जाना चाहिए कि वह अपने स्वयं के साथ-साथ राष्ट्र की प्रगति के लिए कुछ वांछनीय जीवन कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित करे।

यह एक उद्देश्यपूर्ण और सफल जीवन जीने के लिए सहायक उनके बौद्धिक और सामाजिक कौशल को समृद्ध कर सकता है। जीवन कौशल आधारित शिक्षा बच्चों को स्वयं, उनके दोस्तों और उनकी दुनिया को समझने में मदद करती है। प्रभावी परामर्श सेवाओं को छात्रों के अनुभवों (मटी और नदबुकी, 2004) की पूरी समझ और स्वीकृति पर आधारित होना चाहिए। इसलिए, सभी छात्रों को उनकी शैक्षणिक, सामाजिक और व्यक्तिगत दक्षताओं को विकसित करने के लिए परामर्श सेवाएँ की आवश्यकता होगी। प्रभावी परामर्श उन्हें उन मनोवैज्ञानिक समस्याओं से निपटने में सक्षम करेगा जो और अकादमिक, सामाजिक और व्यक्तिगत चुनौतियों का समाधान या सामना करने के तरीके पर तर्कसंगत निर्णय ले सकते हैं।

यह एक व्यक्ति को कौशल और दृष्टिकोण प्राप्त करने में मदद करता है, जो उसे या उसे जीवन स्थितियों में ठीक से समायोजित व्यक्ति बनाते हैं। स्कूल के छात्रों के बीच शैक्षिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, मानसिक भावनात्मक और अन्य समान समस्याओं को रोकने में मार्गदर्शन और परामर्श एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निर्देशन सेवाओं का क्षेत्र एवं कार्य विद्यार्थियों को शैक्षिक एवं व्यावसायिक चयन (choices) में सहायता तक ही सीमित नहीं है अपितु कहीं अधिक व्यापक हैं। निर्देशन का लक्ष्य समायोजन (Adjustment) एवं विकास (Development) दोनों में सहायता पहुँचाना है। निर्देशन जहाँ बालक को स्कूल एवं घर की परिस्थितियों में सर्वोत्तम संभावित समायोजन प्राप्त करने में सहायता पहुँचाता है, वहाँ बालक के व्यक्तित्व के सभी पक्षों का विकास भी उसका लक्ष्य है। इसलिए निर्देशन को शिक्षा का संघटक अंग माना जाना चाहिए। केवल शैक्षिक उद्देश्यों से प्रदान की जाने वाली मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक सेवा तक ही वह सीमित नहीं है अपितु सभी विद्यार्थियों के लिए अपरिहार्य है, यह एक निरंतर चलने वाला प्रक्रम (Continuous Process) है जो व्यक्ति को समय-समय पर निर्णय करने एवं समायोजन में सहायता करता है।

यह कार्य न तो किसी एक विशिष्ट क्षेत्र तक सीमित है और न ही कुछ विशिष्ट मानवीय एवं भौतिक साधनों तक। प्रायः प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित समस्याओं के समाधान में यह प्रक्रिया सहायक सिद्ध हो सकती है तथा अनेक व्यक्तियों के इस प्रक्रिया में निरंतर अपनी भूमिका निर्वाह करना पड़ता है।

निर्देशन कार्यक्रमों को समुचित रूप में सुसंगठित करने के संबंधमें क्रो एवं क्रो ने अपनी पुस्तक, निर्देशन एक परिचय, में व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। उनके अनुसार प्रभावशाली निर्देशन कार्यक्रम लचीला होना चाहिए, जिससे उस कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किये जा सके। साथ ही यह भी आवश्यक है कि निर्देशन प्रक्रिया से संबद्ध समस्त व्यक्तियों का सहयोग समन्वित रूप से प्राप्त हो सके। इस समस्त के अतिरिक्त अनेक अन्य बातों का भी निर्देशन कार्यक्रम के आयोजन में ध्यान रखना आवश्यक है जिसे इस इकाई में पढ़ेंगे।

12.2 उद्देश्य (Aim)-

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आप -

- निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के स्वरूप को समझ सकेंगे,
- निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रमों के अच्छे संगठनको समझ सकेंगे।
- विभिन्न प्रकार के निर्देशन कार्यक्रमों के बारे में जान सकेंगे।
- निर्देशन कार्यक्रम की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- निर्देशन कार्यक्रम के प्रकार को जान सकेंगे।
- निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रमों की व्यवस्था समझ सकेंगे।

निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रमों का आयोजन का उद्देश्य जान सकेंगे।

12.3 निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम का परिचय (Introduction)-

शिक्षा संस्थाओं को प्रमुख रूप से तीन कार्य करने होते हैं, शिक्षण, प्रबंध एवं निर्देशन। शिक्षण संस्थाओं में केवल ज्ञान प्रदान करने का कार्य ही नहीं चलता है अपितु यहाँ शिक्षार्थी को जीवन के लिए तैयारी करने का अवसर मिलता है। निर्देशन का प्राथमिक परिचय तथा विकासात्मक स्वरूप प्रस्तुत करते समय हम देखते हैं कि कई वर्तमान विकासमान विषय क्षेत्रों की सैद्धान्तिक मान्यताओं को एक व्यावहारिक रूप प्रदान करने हेतु निर्देशन का नवीन विज्ञान आधुनिक युग में अवर्तीर्ण हुआ है। किसी भी क्षेत्र में व्यावहारिक कार्य करने के कतिपय मूल अधिग्रहण होते हैं। निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रमों में इनके कार्य का मूल आधार है व्यक्ति-व्यक्ति के व्यक्तित्व की बहुपक्षीयता के कारण मानव से संबंधित आज कोई भी विषय क्षेत्र नहीं होगा जिसके विशेषज्ञ एकांकी रूप से अपने व्यावसायिक उत्तरदायित्वों को निभा सकें। विविध विषय क्षेत्रों की सीमाओं में निर्देशन के आधारों का निहित होना इस तथ्य की पुष्टि करता है। आज वर्तमान में व्यक्तित्व की वैयक्तिक अपेक्षाएं हैं और कुछ समाज के स्वीकृत शिक्षा दर्शन के अनुसार आज के विद्यार्थी से समाज वैयक्तिक गुणों की अपेक्षा करता है जिससे सफल वह संतोषप्रद एवं प्रभावपूर्ण जीवनयापन कर सके। निर्देशन कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी कई क्षेत्र एवं उद्देश्य से अवगत होता है।

निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम बालकों की रुचि विकसित एवं सामाजिक संबंध स्थापित करने में मदद करता है।

12.4 निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रमों को संगठित करने के सिद्धांत (Theories of organization of Guidance and Counselling Programme)-

निर्देशन कार्यक्रमों को संगठित करते समय कतिपय सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए समस्त प्रकार के निर्देशन संगठन हेतु यह सिद्धान्त उपयोगी होते हैं।

1. कार्यक्रम के उद्देश्य (Goals of Programme)- कार्यक्रम बनाने से पूर्व यह निर्धारित कर लेना चाहिए कि कार्यक्रम का उद्देश्य क्या होगा? अथवा कार्यक्रम का आयोजन किन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किया जा सकता है। क्योंकि उद्देश्यों से के अभाव में कोई भी कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता? निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रमों का गठन विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने तथा उन आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता करने के उद्देश्य से किया जाता है। परिवार एवं पड़ोस के परिवेश का प्रभाव विद्यार्थियों की आवश्यकताओं पर पड़ता है। अतः निर्देशन कार्यक्रम विद्यार्थियों को प्रभावित करने वाले, विभिन्न तत्वों की खोजने का प्रयास करती है।

2. कार्यक्रम का निष्पादन (Performance of Programme) - कार्यक्रम के उद्देश्य निर्धारित के पश्चात निर्देशन कार्यक्रम के कार्यों को निश्चित किया जाना चाहिए, इन कार्यक्रम के कार्यों का लक्ष्य होगा – निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति। निर्देशन कार्यक्रम, परिस्थिति एवं समयानुसार बदलता रहा है। सन् 1947 उपरान्त भारत में विभिन्न परिवर्तन हुए हैं तथा 21 सीबीटी शताब्दी में तो जबरदस्त बदलाव आ रहा है। देश के विभिन्न नवीन उद्योग धंधों को स्थापित किया जा रहा है गांव एवं शहर में कोई ज्यादा अंतर नहीं रहा है। शिक्षण संस्थानों में निर्देशन के लक्ष्य एवं कार्यों में भी उनके अनुसार ही परिवर्तन हो रहा है। अतः निर्देशन एवं परामर्श के कार्यक्रमों में नमनीयता होना अत्यंत आवश्यक है।

3. उत्तरदायित्वों का निर्धारण (Deciding Responsibilities) - शिक्षा संस्थाओं में समस्त शिक्षकों का सहयोग प्राप्त होने पर ही, निर्देशन कार्यक्रम सफल हो सकता है। अतः निर्देशन कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु शिक्षकों का सहयोग प्राप्त करने के लिए समस्त शिक्षकों को निर्देशन में रूचि एवं योग्यता के संबंध में जानकारी प्राप्त करनी अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि शिक्षकों की रूचियों तथा योग्यताओं के आधार पर ही उनको उत्तरदायित्वों एवं कर्तव्यों को सौंपा जा सकता है। प्रत्येक अध्यापक को अपने निर्देशन संबंधी कार्य से परिचित होना। ये कार्य अध्यापकों की क्षमताओं के आधार पर होने चाहिए।

4. कार्यक्रम का मूल्यांकन (Evaluation of Programme) - निर्देशन कार्यक्रम प्रारंभ करने के बाद उसकी प्रगति तथा उपयुक्तता का मूल्यांकन करना होता है। इस मूल्यांकन का उद्देश्य यह ज्ञात करना होगा कि जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया है उसमें कहां तक सफलता प्राप्त हुई। मूल्यांकन का दूसरा उद्देश्य यह देखना है कि कार्यक्रम वर्तमान समय के अनुकूल है या नहीं। सामाजिक अवस्था छात्रों की आवश्यकताओं एवं निर्देशन विधियों में निरन्तर परिवर्तन होने से निर्देशन भी सदैव परिवर्तित होता रहता है। निर्देशन एवं परामर्श कार्यकर्ताओं को इन परिवर्तनों के प्रति सजग रहना चाहिए जिससे कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार नवीन परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन कर सकें।

5. निश्चित अधिकार क्षेत्र - जिस प्रकार अध्यापकों को उनके कार्य सौंपे जाये उसी प्रकार उन्हें उनके अधिकार क्षेत्रों से परिचित करवाना आवश्यक है।

6 संबंधों को परिभाषित करना (Defining Relationship) - निर्देशन कार्यक्रम में कार्य कर रहे कर्मचारियों, चाहे वे अंशकालिक कर्मचारी हो या फिर पूर्णकालिक कर्मचारी हो, उनके संबंधोंकी स्पष्ट परिभाषा होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उसी संस्था के अन्य कर्मचारियों के साथ उनके निर्देशन उत्तदायित्वों के अनुरूप निश्चित हो।

7. निर्देशन कार्यक्रम का स्वरूप (Nature of Guidance Programme)- संस्थओं में निर्देशन कार्यक्रम को आयोजित करने से पहले इसके स्वरूप को भी निश्चित कर लेना सही रहता है। जैसे कर्मचारियों की संख्या, आकार, धन की व्यवस्था आदि इसके स्वरूप का आधार संस्था के उद्देश्यों तथा आर्थिक साधन और विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या आदि हो।

8. सरलता (Simplicity)— संस्था निर्देशन कार्यक्रम का आयोजन बहुत जटिल प्रकृति का नहीं होना चाहिए। इसके आयोजन की रूपरेखा जहां तक संभव हो सके, सरल ही रहनी चाहिए। क्योंकि सरल रूपरेखा वाले कार्यक्रम में ही व्यक्ति रूचि लेने लगेगा।

क्रो एवं क्रो ने अपनी पुस्तक में निर्देशन कार्यक्रम की योजना शुरू करने से पहले निम्नलिखित बातों का ध्यान में रखने का सुझाव दिया है।

1- सबसे पहले से तय कर लेना चाहिए कि इस निर्देशन कार्यक्रम को शुरू करने में कितने व्यक्तियों तथा कितने समय की आवश्यकता होगी।

2- कर्मचारियों में कितनी वृद्धि करने की आवश्यकता है?

3- क्या निर्देशन की विभिन्न गतिविधियों का संचालन करने के लिए स्थान तथा भवन पर्याप्त है?

4- विभिन्न प्रस्तावित कार्यक्रमों को प्रदान करने के लिए कौन कौन से अध्यापक उपलब्ध हैं।

5- विद्यालय में उपलब्ध अध्यापक एवं अन्य कर्मचारी निर्देशन कार्यक्रम में अपेक्षित समय और शक्ति लगाने के योग्य और सक्षम हैं।

6- क्या कर्मचारी कार्यक्रम में रूचि का प्रदर्शन करते हैं? यदि करते हैं तो किस सीमा तक।

7- क्या निर्देशन एवं परामर्श संबंधी नियोजित कार्यक्रम में माता-पिता भी रूचि रखते हैं तथा क्या वे इस कार्यक्रम में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

8- निर्देशन कार्यक्रम के विस्तार संबंधी विद्यालय तथा समाज का दृष्टिकोण क्या है?

9- विद्यार्थियों को कौन कौन से अनुभव क्षेत्रों में सेवा करने की आवश्यकता है?

10- निर्देशन कार्यक्रम के लिए क्या संस्था बजट में धन की व्यवस्था हो पायेगी

11-विद्यार्थियों को स्वयं के लिए निर्देशन कार्यक्रम का मूल्य समझने की अवस्था में किस प्रकार प्रेरित किया जा सकता है।

12.5 निर्देशन कार्यक्रमों का रूप (Form/Structure of Guidance Programme)-

1- केन्द्रिय रूप (Centralized) - इस प्रकार के निर्देशन कार्यक्रम में सहायता देना विशेष रूप से प्रशिक्षित व्यक्तियों का कार्य होता है। निर्देशन कार्यक्रम के केन्द्रिय रूप में अधिकांश निर्देशन क्रियाएं केन्द्रित कार्यलय से नियंत्रित होती है, अध्यापक भी निर्देशन मण्डल के निरीक्षण तथा आदेशों के अनुसार कार्य करते हैं।

2- विकेन्द्रीय रूप (Decentralized)- विकेन्द्रीय रूप में निर्देशन सहायता देना अध्यापको का उत्तरदायित्वों माना जाता है। अध्यापक अपनी कक्षा के छात्रों के घनिष्ठ सम्पर्क में रहता है। यह उनकी आवश्यकताओं तथा समस्याओं का अच्छी प्रकार से समझ सकता है। अतः अध्यापक छात्रों की अधिक सहायता कर सकता है। कुछ लोगों को यह भय भी है कि विद्यालय में निर्देशन का पृथक विभाग स्थापित करने से अध्यापक निर्देशन कार्य को अपना उत्तरदायित्व स्वीकार नहीं करेंगे। अतः निर्देशन देना अध्यापक का ही कार्य होना चाहिए।

उपरोक्त दोनों प्रकार के रूपों में कुछ गुण है तो उनमें कुछ दोष भी हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि निर्देशन कार्यक्रम का रूप इन दोनों का मिश्रित रूप होना चाहिए।

3-मिश्रित रूप (Mixed) - अध्यापकों और विशेषज्ञों को सामूहिक रूप से निर्देशन कार्यक्रम में प्रशासक, अध्यापक, निर्देशन आजीविका में संलग्न कर्मचारी, सामाजिक संस्थायें आदि सभी की समन्वित सेवाएं निहित होती हैं।

कुछ कार्य अध्यापक कर सकते हैं। उदाहरण के लिए छात्रों से संबंधित सूचनाएं एकत्रित करना। कुछ क्षेत्रों में विशेषज्ञों की सहायता आवश्यक हो जाती है। यह निश्चित करना कठिन है कि अध्यापक तथा विशेषज्ञ किन किन क्षेत्रों में कार्य करेंगे।

12.6 निर्देशन कार्यक्रम की विशेषताएँ (Characteristics of Guidance Programme)-

निर्देशन कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए यह आवश्यक है कि निर्देशन कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप प्रदान किया जाये अनेक व्यक्तियों को इस प्रक्रिया में निरन्तर अपनी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता। निर्देशन कार्यक्रम की विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिए। जो निम्नलिखित है -

- निर्देशन कार्यक्रम हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक होना चाहिए प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों को, व्यवस्थित निर्देशन कार्यक्रम को नेतृत्व करना चाहिए। निर्देशन कार्यक्रम किस प्रकार का हो? यह शिक्षालयों के रूप पर निर्भर करता है। छोटे विद्यालयों में एक ही प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति निर्देशन एवं शिक्षण दोनों कार्यों को कर सकता है, जबकि बड़े शिक्षालयों में निर्देशन प्रदान करने के लिए निर्देशन प्रदाता अलग अलग से होता है। इसका कार्य मात्र निर्देशन क्रियाओं तक ही होता है।
- निर्देशन कार्यक्रम के अन्तर्गत समस्त कार्य संबंधितरूप में किए जाने चाहिये। कार्यक्रम में सभी शिक्षकों को अपनी अपनी क्षमता के अनुसार सहयोग प्रदान करना चाहिये। निर्देशन प्रदाता का यह कार्य है कि वह कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन करने हेतु अन्य शिक्षकों का सहयोग प्राप्त करने हेतु प्रयास करें इसके अतिरिक्त अध्यापकों को उनकी रुचि के अनुसार ही निर्देशन कार्य प्रदान किया जाये।
- सभी के समन्वित प्रयास एवं सहयोग से ही निर्देशन कार्यक्रम सफल हो सकता है। छात्रों की विभिन्न आवश्यकताओं एवं समस्याओं को समझने हेतु नैदानिक सेवाएं स्वास्थ्य सेवा, परिवार कल्याण इत्यादि की सहायता ली जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त नियोक्ता एवं अभिभावकों को भी, निर्देशन कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने में सहयोग प्रदान करना चाहिए।
- निर्देशन कार्यक्रम निवास्क होनी आवश्यक है। आरंभ में विद्यार्थी के समुचित समायोजन हेतु प्रयास किया जाये। निर्देशन प्रदाता की इस प्रतिक्षा में नहीं रहना चाहिये कि विद्यार्थी के कुसामयोजित होने पर भी सहायता प्रदान की जाये।
- निर्देशन क्रियायें सतत् रूप से चलती रहनी चाहिये अर्थात् विद्यार्थी के विद्यालयी जीवन में प्रविष्ट होने के समय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक उसको निर्देशन सेवाएं प्राप्त होनी चाहिए। मात्र विद्यालयों तक ही निर्देशन सेवाओं का काल सीमित नहीं होता वरन् शिक्षण की समाप्ति पर व्यवसायों में नियुक्त अथवा सामाजिक सेवाओं में लगे, व्यक्तियों को भी निर्देशन सेवाएं प्राप्त होती हैं।
- निर्देशन कार्यक्रम शिक्षकों की रुचियों, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं के ज्ञान पर ही आधारित होनी चाहिये।
- निर्देशन का कार्य शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करना है। शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षार्थी के विकास एवं समायोजन में सहायता करना होता है। शिक्षा प्रक्रिया का शिक्षण एवं निर्देशन क्रियाएं, अन्तरंग भाग होती हैं। लेकिन इन दोनों की पद्धतियां भिन्न भिन्न होती हैं। निर्देशन की परामर्श प्रक्रिया व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर आधारित होती है तथा इसमें एक व्यक्ति का एक व्यक्ति से ही संबंध होता है।

- निर्देशन कार्यक्रम के आयोजन हेतु प्रथम महत्वपूर्ण कार्य है - कार्यक्रम के उद्देश्य को निर्धारित करना, क्योंकि निर्देशन कार्यक्रम असफल भी होता है। निर्देशन सेवाओं का गठन छात्रों की आवश्यकता को समझने एवं उनकी संतुष्टि में सहायता करने के उद्देश्य से किया जाता है। अतः निर्देशन सेवाओं के कार्यक्षेत्र को भी निर्धारित किया जाना आवश्यक है।

12.7 अच्छे निर्देशन के आयोजन की मुख्य विशेषताएं-

- हमारा देश प्रजातंत्रात्मक देश है। अतः इस देश में प्रत्येक छात्र के निर्देशन प्राप्त करने का अधिकार है। साधारणतः आजकल विद्यालयों में शिक्षक शान्त अथवा विचारों में लीन रहने वाले विद्यार्थियों पर कोई ध्यान नहीं देते। बरन् शिक्षकों का ध्यान, अनुशासनहीन बालकों अथवा ऐसे बालक जो विद्यालय छोड़कर चले जाते हैं उन पर ही अधिक रहता है, जो कि अनुचित हैं। अतः निर्देशन प्रदाताओं को प्रत्येक बालक पर ध्यान देना चाहिये।
- निर्देशन कार्यक्रम का सेवार्थी केन्द्रित होना चाहिए। यही निर्देशन कार्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य है। सेवार्थी को अन्तिम निर्णय लेने हेतु स्वतंत्र छोड़ दिया जाना चाहिए।
- निर्देशन कार्यक्रमाओं को अपनी योग्यता एवं ज्ञान में वृद्धि करने हेतु अवसर खोजने चाहिए निर्देशन कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक अंग है - संचयी आलेख पत्र की समुचित व्यवस्था करना। निर्देशन प्रदाता को चिकित्सक के समान ही प्रत्येक सेवार्थी का संचयी आलेख पत्र रखना चाहिये। विद्यार्थी के विद्यालय में प्रविष्टि होने के समय से ही, आलेख को लिखना प्रारंभ कर देना चाहिये न कि उसे अपनी स्मृति पर निर्भर रहना चाहिये। निर्देशन कार्यक्रम में निर्देशन कार्यकर्ता को निर्देशन देते समय विभिन्न विधियों का प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि एक विधि की सहायता से वह छात्रों के संबंधमें विश्वसनीय सूचनायें ज्ञात नहीं कर सकता है।
- परामर्शदाता को सूचनाएं गुप्त रखनी चाहिए ऐसा विश्वास होने पर ही छात्र सही जानकारी देगा।
- विद्यालय के बजट में ही निर्देशन कार्यक्रम को स्थान मिलना चाहिये।
- कार्यक्रम को अधिक उपयोगी बनाने के लिए आवश्यक है कि कार्यक्रम स्थानीय परिस्थितियों के ही अनुकूल हो।
- निर्देशन कार्यक्रम में परामर्श प्रक्रिया एवं परीक्षण के लिए तथा आलेख पत्र रखने के लिए पर्याप्त स्थान भी होना चाहिए।
- निर्देशन एवं परामर्श कार्यकर्ताओं को परामर्श सहायता देने के लिए पर्याप्त समय मिलना चाहिए।

- उचित निर्देशक - सामग्री भी निर्देशन कार्यकर्ताओं को प्राप्त होनी चाहिये। निर्देशन कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए समाज की अन्य निर्देशन एजेन्सियों का सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

12.8 निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम को आयोजित करने के उद्देश्य (Goals of Conducting Guidance & Counselling Programme)-

भारत में निर्देशन कार्यक्रम विद्यालय स्तर पर जिस गति के साथ आयोजित हो रहा है वह अधिक संतोषप्रद नहीं है। किसी विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने से पूर्व प्रश्नों पर विचार करना चाहिए -

- विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की कौन-कौन सी और किस प्रकार की आवश्यकताएँ हैं जिनकी संतुष्टि के लिए उसी प्रकार के संगठन का रूप हो।
- निर्देशन कार्यक्रम में कार्य भार एवं कार्य क्षेत्रों के आधार पर कितने कर्मचारी योग्य हैं।
- विविध सेवाओं को प्रारंभ करने के लिए विद्यालय में कौन-कौन से अध्यापक आवश्यक हैं।
- क्या विद्यालय के अध्यापकों के पास शिक्षण कार्य के अतिरिक्त निर्देशन के कार्य भार सम्भालने के लिए समय बचता है।
- निर्देशन कार्य के विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं एवं सामग्री की आवश्यकता पड़ती है। क्या विद्यालय के बजट में से इनको खरीदा जा सकता है।
- क्या कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए विद्यालय में उचित स्थान की व्यवस्था हो सकेगी?
- माता पिता तथा अन्य संस्थायें इस प्रकार के कार्यक्रम में रुचि रखते हैं या नहीं?

12.9 विद्यालय में निर्देशन सेवाओं का आयोजन -

कोठारी आयोग ने निर्देशन संबंधी अपनी सिफारिशों में लिखा है कि निर्देशन को शिक्षा का अभिन्न अंग माना जाये और इसे प्राथमिक स्तर से ही शुरू किया जाये। इसी सिफारिश के अनुरूप ही विद्यालय की क्रियाओं को बालकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनके विकास के विभिन्न चरणों के अनुसार हो। निर्देशन कार्यक्रम नियोजित किये जाने चाहिए, ताकि वे बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक और व्यावसायिक क्षेत्रों में सुसमायोजित हो सकें। इस दृष्टि से बालकों के विकास की अवस्था के अनुरूप तथा विभिन्न विद्यालय स्तरों के अनुरूप ही निर्देशन कार्यक्रमों के उद्देश्य तय किये जाते हैं, एक बात ध्यान देने योग्य है कि कोई निर्देशन व्यवस्था सभी विद्यालय में उपयोगी नहीं हो सकती है। अतः इसमें लचीलापन होना आवश्यक है जिसमें विद्यालय की आवश्यकताओं तथा आर्थिक साधनों के अनुरूप परिवर्तन किया जा सके।

प्रारंभिक विद्यालयों की निर्देशन कार्यक्रम का आयोजन -

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले बालकों की समस्याएँ कम होती हैं एवं अधिक गंभीर भी नहीं होती हैं। अतः इस स्तर निर्देशन कार्य अध्यापक ही सम्पन्न करता हैं। किसी विशेषज्ञ की आवश्यकता नहीं होती हैं। प्राथमिक स्तर पर निर्देशन व्यवस्था का निम्नांकित चित्र हो सकता हैं।

प्राथमिक स्तर पर निर्देशन व्यवस्था का प्रशासन विद्यालय के हाथों में होता हैं कक्षा अध्यापक छात्रों के अधिक संपर्क में रहता है अतः वह उनकी समस्याएँ भली भाँति समझता हैं निर्देशन कार्य को पूर्ण करने के लिए अध्यापक एवं प्रधानाचार्य समाजिक संस्थाओं एवं विद्यालय के बाहर की संस्थाओं की सहायता भी लेते हैं माता पिता, चिकित्सक, उपस्थिति अधिकारी आदि सभी का सहयोग प्रदान करना होता हैं।

प्राथमिक स्तर पर निर्देशन कार्यक्रम के उद्देश्य -

इस स्तर में 5 से 11 वर्ष की आयु के बालक अर्थात् कक्षा एक से पांच तक के छात्र शामिल होते हैं इस स्तर पर निर्देशन कार्यक्रम निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं -

- 1- घर से विद्यालय में विद्यालयों का संतोषजनक परिवर्तन करवाने में सहायता करवाना।
- 2- मूलभूत शैक्षिक कौशलों को सीखने में आ रही कठिनाइयों के निदान में सहायता करना।
- 3- विद्यार्थियों को विशेष शिक्षा प्रदान करने के लिए जरूरतमंद विद्यार्थियों की पहचान करने में सहायता जैसे प्रतिभाशाली, पिछड़े, तथा विकलांग बालक।
- 4- संभावित विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों को स्कूल ठहराये रखना।
- 5- विद्यार्थियों को उनकी आगामी शिक्षा या प्रशिक्षण की योजना बनाने में सहायता करना।

क्रियाएँ या गतिविधियाँ - उपरोक्त विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्त करने के लिए प्राथमिक स्तर पर क्रियाएँ करनी होती हैं इस स्तर पर अध्यापक की केन्द्रीय भूमिका होती है, क्योंकि अध्यापक बालकों की रुचियाँ, योग्यताओं और आवश्यकताओं तथा प्रतिभाओं की खोज करने के लिए उत्तम स्थिति में होता हैं प्राथमिक स्तर पर यह गतिविधियाँ की जाती हैं

विद्यार्थियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम - इसमें विद्यालय वातावरण के बारे में बच्चों को तथा उनके माता पिता को बताया जाता है कि उनको विद्यालय तथा निर्देशन कार्यक्रम में उनकी भूमिका आदि से परिचित कराया जाता हैं

- निदानात्मक और मूलभूत कौशलों का परीक्षणों का प्रयोग प्राथमिक कक्षाओं में खूब किया जाना चाहिए। क्योंकि दोषपूर्ण पठन से बहुत ही अवांछित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

- प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की खोज - विभिन्न विधियों और प्रविधियों की सहायता से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की खोज की जाती है। इन प्रतिभाओं के वैज्ञानिक योग्यता, सर्जनात्मक योग्यता, नेतृत्व की योग्यता, संगीत की योग्यता आदि शामिल होती हैं।
- कुसमायोजित और विभिन्न दोषमुक्त विद्यार्थियों की खोज- ऐसे विभिन्न दोषों से युक्त और कुसमायोजित विद्यार्थियों की खोज करना अति आवश्यक है इसके लिए निरीक्षण परीक्षणों एवं अन्य विधियों का प्रयोग किया जाता है।

प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर निर्देशन की बाधाएं

- यद्यपि भारत में निर्देशन कार्य का श्रीगणेश हो चुका है, किन्तु इसकी प्रगति अत्यंत अपर्याप्त एवं धीमी है। निर्देशन का जो थोड़ा बहुत कार्य हो रहा है उसे भी दोषमुक्त नहीं कहा जा सकता। इसका कारण निर्देशन के मार्ग में आनेवाली अनेक बाधाएं हैं-
- **शिक्षकों का रुढ़िवादी रुख-** भारत देश में शिक्षा के क्षेत्र में जो लोग प्रवेश करते हैं उनमें से अधिकांश जीवन के अन्य क्षेत्रों के अवसर से वंचित लोग होते हैं। बहुत कम लोग इस प्रकार के होते हैं, जिनकी शिक्षण के क्षेत्र में रुचि होती है। परिणामतः कोई भी नवीन य रचनात्मक कार्य सौंपे जाने पर वे उसमें अपना उत्साह प्रदर्शित नहीं करते। उनके अध्यापन का ढंग भी (बावजूद प्रशिक्षण के) प्रायः परम्परागत ही रहता है। शिक्षकों के इस रुढ़िवादी रुख के कारण निर्देशन कार्य गतिशील नहीं हो पाता।
- **संसाधनों का अभाव-** इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे देश में विकसित देशों जैसी आर्थिक समृद्धि नहीं है किन्तु जो भी संसाधन उपलब्ध है उनका उचित उपयोग न किये जाने के कारण शिक्षा और निर्देशन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र पिछड़ जाते हैं और तत्संबंधी अधिकांश योजनायें कागजी रिपोर्ट रह जाती हैं।
- **शिक्षक छात्र अनुपात-** देश में शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने के बावजूद भी शिक्षक छात्र अनुपात निर्धारित मानक स्तर तक नहीं पहुँच पा रहा है और एक कक्षा में इतने अधिक छात्र होते हैं कि अध्यापक को छात्रों से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करने में कठिनाई होती है और ऐसी स्थिति में वैयक्तिक परामर्श या निर्देशन कार्य कठिन हो जाता है।
- **शिक्षकों पर कार्यभार की अधिकता-** निर्देशन का प्रारंभिक दायित्व शिक्षकों पर होता है, किन्तु हमारे देश में रजिस्टर अभिलेख, कापियों को जांचने सम्बन्धी कार्य, जनगणना, मतदान सम्बन्धी कार्य एवं अनेक गौण कार्यों की अधिकता के कारण शिक्षक अपने मूल कार्य शिक्षण व निर्देशन सम्बन्धी दायित्वों का पूर्णतः निर्वहन करने में कठिनाई महसूस करता है।
- **निर्देशन के विभिन्न अभिकरणों के बीच सामंजस्य का अभाव-** निर्देशन की जो थोड़ी बहुत सुविधाएँ उपलब्ध हैं, सामंजस्य के अभाव में उनका उपयोग नहीं हो पाता। घर,

विद्यालय, मनोचिकित्सा एवं राज्य निर्देशन ब्यूरो आदि अनेक निर्देशन एवं परामर्श अभिकरणों के कार्यों में परस्पर सहयोग एवं आदान-प्रदान के अभाव में निर्देशन कार्यों की समुचित प्रगति संभव नहीं है। निर्देशन के प्रति जागरूकता एवं संसाधनों के उपलब्धता द्वारा इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

माध्यमिक विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम का आयोजन -

प्राथमिक विद्यालय की अपेक्षा माध्यमिक विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम व्यवस्था निश्चित रूप धारण कर लेती हैं। इस स्तर पर संगठन कुछ जटिल हो जाता है। माध्यमिक स्तर पर निर्देशन कार्यक्रम की व्यवस्था को निम्नांकित चित्र हो सकता है।

माध्यमिक स्तर पर निर्देशन के उद्देश्य -

कक्षा 6 से 8 तक माध्यमिक स्तर होता है। इन कक्षाओं में 11 से 14 वर्ष की आयु समूह शामिल होता है, इन वर्षों में बच्चे किशोर अवस्था में प्रवेश कर लेते हैं। यह अवधि कई बालकों के लिए कठिन होती है। इस अवस्था में परिवार, विद्यालय तथा समाज में समायोजन समस्याएँ प्रकट होनी शुरू हो जाती है, इस स्तर पर निर्देशन के उद्देश्य है -

- 1- विद्यार्थियों को परिवार, विद्यालय और समाज में समायोजन में सहायता करना,
- 2- विद्यार्थियों की योग्यताओं, अभिरूचियों और रूचियों को खोजना और उनका विकास करना
- 3- विद्यार्थियों को विभिन्न शैक्षिक और व्यवसायिक अवसरों और आवश्यकताओं के बारे में सूचनाएँ प्राप्त करने योग्य बनाना।
- 4- मुख्याध्यापक और अध्यापकों को उनके विद्यार्थियों को समझने तथा अधिगम को प्रभावी बनाने में सहायता करना।
- 5- विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों को शैक्षिक और व्यवसायिक योजनाएं बनाने में सहायता करना।
- 6- इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम किये जा सकते हैं।

क्रियाएँ या गतिविधियाँ -

- 1- विद्यालय में मुख्याध्यापक के साथ निर्देशन कार्यक्रम पर विचार विमर्श करना।
- 2- विद्यालय संकायको परिचित करना,
- 3- विद्यालय के मुख्याध्यापक द्वारा विद्यालय निर्देशन समिति बनाना जिसमें कैरियर अध्यापक, शारीरिक शिक्षा अध्यापक और अध्यापक अभिभावक एसोसिएशन का एक प्रतिनिधि शामिल हो।

4- विद्यार्थियों के तथ्यों को इकट्ठा करना।

अभिविन्यास कार्यक्रम - जैसे विद्यालय का वातावरण, पाठ्यक्रम विद्यालयों में सुविधाओं के बारे में परिचय, नियमित अध्ययन आदतों का परिचय तथा खाली समय के सदुपयोग के बारे में अभिविन्यास

3- अधिगम वातावरण में सुधार करना।

4- के लिए उपचारात्मक कार्यक्रमों के आयोजन में सहायता करना।

सैकेण्डरी स्तर एवं सीनियर सैकेण्डरी स्तर पर निर्देशन कार्यक्रम का आयोजन – इन उच्चतर कक्षाओं में छात्राओं को मुख्यतः निर्देशन की सहायता की आवश्यकता होती है इसी समय छात्र विभिन्न व्यवसायों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं या विश्वविद्यालय शिक्षा प्राप्त करने के लिए सूचना प्राप्त करना चाहते हैं। सीनियर सैकेण्डरी स्तर पर निर्देशन कार्यक्रम व्यवस्था का निम्न रूप हो सकता है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाचार्य पर कार्यभार अधिक होने से वह निर्देशन विभाग पर विशेष ध्यान नहीं दे पाता है अतः निर्देशन कार्य के संगठन का काम निर्देशन - संचालन का सौंप देता है। निर्देशन कार्य के कक्षाध्यापक, कक्षा - परामर्शदाता आदि सभी सहयोग देते हैं। इस स्तर पर विशेषज्ञों की विशेषरूप से आवश्यकता होती है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर निर्देशन के उद्देश्य -

- 1- विद्यार्थियों को उनकी दुर्बलताओं और शक्तियों को समझने के योग्य बनाना।
- 2- शैक्षिक एवं व्यावसायिक अवसरों और आवश्यकताओं के बारे में सूचना इकट्ठी करने के योग्य बनाना।
- 3- विद्यार्थियों को शैक्षिक और व्यावसायिक चयन करने में सहायता देना।
- 4- व्यक्तिगत सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में सहायता करना।

क्रियाएँ या गतिविधियाँ -

- योग्यताओं, अभिरूचियों, रूचियों, उपलब्धियों और अन्य मनोवैज्ञानिक चरों के बारे में आंकड़े एकत्रित करना
- क्षेत्र भ्रमों का आयोजन करना।
- कैरियर कान्फ्रेंसिंग और कैरियर प्रदर्शनी का आयोजन
- कोर्स का चयन करने में सहायता करना,
- माता पिता को निर्देशन प्रदान करना।
- अल्प उपलब्धियों और विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों की पहिचान करना

- इस स्तर पर स्थानीय व्यावसायिक अवसरों और स्वयं रोजगार अवसरों के बारे में सूचनायें प्रदान करने पर अधिक बल दिया जाता है।
- परामर्श सेवा व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षिक व्यावसायिक समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध कराई जाती है।
- निर्देशन एवं परामर्श कार्य की सफलता निर्देशन प्रदाताओं एवं कर्मचारियों पर निर्भर करती है। समाजिक संस्थाओं का भी निर्देशन व्यवस्था में महत्वपूर्ण कार्य होता है।

12.10 सारांश

निर्देशन कार्यक्रम को विद्यालयों में सफलतापूर्वक चलाने के लिए आवश्यक है कि यह संगठित तथा व्यवस्थित रूप में हो निर्देशन को विद्यालय के सामान्य जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता है, न इसको विद्यालय के किसी एक विशेष भाग में केन्द्रित किया जा सकता है, न इसको परामर्शदाता या प्रधानाचार्य के कार्यालय तक सीमित किया जा सकता है क्योंकि निर्देशन सहायता देना विद्यालय के प्रत्येक अध्यापक का कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का सहयोग होना चाहिए। जिससे शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

12.11 कठिन शब्दार्थ

- निष्पादन - क्रियान्वित कार्य को पूर्ण करना।
- मुख्याध्यापक- प्रधानाध्यापक

12.12 अभ्यास प्रश्न

नीचे कुछ कथन दिये गये हैं। जो कथन सत्य है उनके आगे सही का निशान एवं जो गलत है, उनके आगे क्रॉस का निशान लगाये।

- 1- निर्देशन कार्यक्रम में केन्द्रित रूप से निर्देशन सहायता देना प्रशिक्षित व्यक्तियों का कार्य होता है।
- 2- कार्यक्रम के उद्देश्य निश्चित करना प्रथम कार्य है।
- 3- निर्देशन कार्यक्रम में सभी स्तर पर एक ही विधि प्रयोग करनी चाहिये।
- 4- प्राथमिक स्तर पर पढ़ने वाले छात्रों की समस्यायें कम होती हैं।
- 5- निर्देशन कार्यक्रम के आयोजन में विद्यालय बजट की जरूरत नहीं पडती है।

उत्तर (1) सही (2) सही (1) गलत (4) सही (5) गलत

12.13 निबंधात्मक प्रश्न

- 1- निर्देशन कार्यक्रम के अच्छे संगठन से आप क्या समझते हैं?
 - 2- निर्देशन सेवाओं के संगठन के मुख्य सिद्धान्तों के बारे में लिखिए?
 - 3- विद्यालय में निर्देशन सेवाओं का आयोजन के बारे में बताये?
 - 4- निर्देशन कार्यक्रम के उद्देश्य बताइये?
-

12.14 संदर्भ ग्रन्थ

- Bhatnagar A.B. (2004) "Educational and mental measurement, R. lall, Book Depot, Meerut
- Bhatnagar R.P (1977) "Guidance and counselling in Education and psychology R. Lall Book Depot, Meerut
- शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन स्व' परामर्श - डॉ. एस.सी. ओबराय लायल बुक डिपो मेरठ
- भार्गव, महेश (2007) - आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, एच.पी. भार्गव, बुक हाऊस, आगरा
- दुबे, एल.एन. (2009) - परामर्श मनोविज्ञान शिक्षा प्रकाशन जयपुर
- राय अमरनाथ एवं अस्थाना मधु (2014) निर्देशन एवं परामर्श, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली

इकाई 13 परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन (Evaluation of Counselling Programme)

इकाई संरचना

- 13.1 प्रस्तावना
- 13.2 उद्देश्य
- 13.3 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन का अर्थ
- 13.4 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन का उद्देश्य
- 13.5 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन के लक्ष्य
- 13.6 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन की आवश्यकता
- 13.7 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन के सिद्धान्त
- 13.8 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन आकड़ों का उपयोग
- 13.9 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन में समस्याएँ
- 13.10 निर्देशन कार्यक्रम व परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन की विधियाँ
- 13.11 परामर्श कार्यक्रम में परामर्शदाता का स्वमूल्यांकन
- 13.12 सारांश
- 13.13 शब्दावली
- 13.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- 13.15 निबंधात्मक प्रश्न
- 13.16 संदर्भ सूची

13.1 प्रस्तावना (Introduction)-

परामर्श कार्यक्रम में परामर्शदाता व्यक्ति को समस्याओं के समाधान करने योग्य बनाता है। जैसे छात्रों में कोई कठिनाई व समस्या आ जाती है तो वह परामर्शदाता के पास जाता है और परामर्शदाता छात्रों की क्षमता रूचि योग्यता आदि का मूल्यांकन कर उन्हें सही शैक्षिक व व्यवसायिक निर्देशन देता है। परामर्श कार्यक्रम में परामर्श कार्यक्रम की प्रक्रिया और परिणाम का मूल्यांकन सम्पूर्ण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। परामर्श एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है इसके पीछे कोई न

कोई उद्देश्य अवश्य होता है, परामर्श कार्यक्रम के द्वारा हम इन उद्देश्यों को पूरा करना चाहते हैं और हमने इन उद्देश्यों को पूरा करने में कितनी सफलता प्राप्त की है इसका मूल्यांकन करना आवश्यक है। मूल्यांकन कार्य को परामर्श प्रक्रिया का महत्वपूर्ण सोपान माना जाता है। परामर्श की प्रक्रिया और परिणाम का मूल्यांकन मनोचिकित्सा एवं परामर्श का अभिन्न अंग होता है। इसके द्वारा आरम्भिक सम्बन्धों का निर्माण होता है (Bordin E.S.1994)। परामर्श, प्रार्थी की प्रगति में सहायक है, (F Wills, 1997)। परामर्श के मूल्यांकन को परामर्श कार्य की गुणवत्ता में उपयोगी मानते हैं। नई सामाजिक, शैक्षिक व अन्य परिवर्तनों के कारण भी हमें अपनी कार्ययोजना के सम्बन्ध में मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है। मूल्यांकन के द्वारा हमें यह पता चलता है कि परामर्श कार्यक्रम सफल तथा प्रभावशाली रहा है या नहीं। मूल्यांकन का वर्णन परिणाम मूल्यांकन के रूप में करते हैं (मैक्लीआड, 1994) अधिकांश उपागम परामर्श मूल्यांकन को उद्देश्य गुणवत्ता सुधार व कुछ उपागम परामर्श मूल्यांकन को परामर्श का अभिन्न अंग के रूप में मानते हैं, जो कि परामर्श प्रक्रिया के साथ निरंतर चलते रहते हैं व परामर्श के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होता है।

13.2 उद्देश्य (Goals)-

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप इस योग्य हो जायेंगे कि आप-

1. परामर्श कार्यक्रम में परामर्श के बाद मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों पड़ती है, आप यह समझ सकेंगे,
2. परामर्श कार्यक्रम में मूल्यांकन के सद्धान्तों को समझ सकेंगे।
3. परामर्श कार्यक्रम में मूल्यांकन के उद्देश्यों को समझ सकेंगे।
4. परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन पद्धति को समझ सकेंगे।
5. परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन में आकड़ों के उपयोग को समझ सकेंगे।

13.3 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन का अर्थ-

परामर्श कार्यक्रम में मूल्यांकन का अर्थ जानने से पहले यह जानना आवश्यक है कि मूल्यांकन का अर्थ क्या है मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी वस्तु का मूल्य निश्चित किया जाता है। मूल्यांकन हमें क्यों और कैसे का उत्तर देता है। टारगर्सन एवं एडमस (Targarson and Adams) के अनुसार “किसी वस्तु का महत्व निर्धारित करना ही मूल्यांकन है। शिक्षण प्रक्रिया की मात्र के सम्बन्ध में निर्णय करना ही मूल्यांकन है।” क्रानबैक (Cronbach) के अनुसार- मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा अध्यापक एवं छात्र यह निर्णय करते हैं कि शिक्षण लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है अथवा नहीं। विवलिन एवं हना (Vivlin and Hannah) के अनुसार विद्यार्थियों के

व्यवहार में विद्यालय द्वारा किये गए परिवर्तनों के विषय में प्रमाणों को संकलित करना तथा उसकी व्याख्या करना ही मूल्यांकन है।

परामर्श प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण चरण मूल्यांकन है, मूल्यांकन के अभाव में परामर्श प्रक्रिया पूर्ण नहीं होती है। परामर्श देने के बाद परामर्श की प्रगति, सफलता परामर्श के उद्देश्यों को पूर्ण करने की जाँच, परामर्श का प्रभाव, परामर्श देने से परामर्श प्रार्थी को प्राप्त लाभ/हानि, परामर्श की उपयोगिता, परामर्श प्रक्रिया आदि की जाँच करना ही परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन कहलाता है।

दूसरे शब्दों में परामर्श के सम्बन्ध में मूल्यांकन का अर्थ यह भी है कि यह निर्धारित करना कि परामर्श लक्ष्यों की प्राप्ति हुई है या नहीं, यदि हाँ तो किस सीमा तक। ऐसे अनेक परामर्श उपागमों और स्थितियों का मूल्यांकन का भी अवश्यक है जिसमें परामर्श सबसे अधिक प्रयोग किया जाता है।

13.4 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन का उद्देश्य

परामर्श कार्यक्रम में मूल्यांकन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. मूल्यांकन के द्वारा हमें यह ज्ञात होगा कि निर्देशन कार्यक्रम क्यों आवश्यक है।
2. परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन में रुचि लेने वाले उपागम में परामर्श प्रार्थी की अन्तर्दृष्टि जाग्रत करना।
3. परामर्श प्रार्थी की अपनी सहायता कर पाने सम्बन्धी क्षमताओं में वृद्धि करना।
4. परामर्श प्रार्थी में आत्मविश्वास का विकास करना।
5. परामर्श प्रार्थी की सफलता में वृद्धि।
6. सभी परामर्श प्रार्थियों के लिए समानता सुनिश्चित करना।
7. परामर्श प्रार्थी में आत्मबोध का विकास करना।
8. परामर्श कार्यक्रम की गुणवत्ता के विषय में जानकारी देने वाली उपयुक्त विधियों का उपयोग करना।

13.5 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन के लक्ष्य

परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन का मुख्य लक्ष्य परामर्श प्रार्थी को दिए जाने वाले परामर्श के गुणों के विषय में जानकारी देने वाली विधियों का उपयोग करना व कमियों को पहचानना तथा परामर्श प्रक्रिया में सहयोग देना है।

क्लार्क व बारखम ने छः प्रमुख व्यवहारिक लक्ष्यों का वर्णन किया है।

1. सेवा संरचना की उपयुक्तता का निर्देशन।

2. सेवा व्यवस्था की सुलभता में वृद्धि।
3. सेवा प्रक्रिया की स्वीकार्यता की जाँच।
4. समस्त प्रार्थियों के लिए समानता सुनिश्चित करना।
5. सेवा प्रणालियों की प्रभावशीलता का निर्देशन।
6. सेवा वितरण की सफलता में वृद्धि।

13.6 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन की आवश्यकता

परामर्श कार्यक्रम में मूल्यांकन की आवश्यकता निम्न कारणों से पड़ती है-

1. परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन से हमें यह ज्ञात होता है कि परामर्श कार्यक्रम परामर्श के उद्देश्यों के अनुसार सम्पन्न हो रहा है या नहीं, अगर परामर्श कार्यक्रम परामर्श उद्देश्यों के अनुसार सम्पन्न नहीं हो रहा है, तो उसमें संशोधन की क्या आवश्यकता है।
2. परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन परामर्शदाता को उचित मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए आवश्यक है।
3. परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन परामर्श के उद्देश्यों को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है।
4. परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन परामर्श कार्यक्रम को और अधिक व्यवहारिक उपयोगी और सक्षम बनाने के लिए आवश्यक है।
5. मूल्यांकन के द्वारा परामर्श प्रार्थी द्वारा परामर्श केन्द्रों से प्राप्त सफलता प्रगती और सन्तुष्टि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
6. परामर्शदाता मूल्यांकन के द्वारा परामर्श का लाभ ले चुके परामर्श प्रार्थी की सफलता और संतुष्टि का मूल्यांकन कर अपनी परामर्श सेवाओं की सफलता के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकता है।
7. परामर्श सेवा को जनसाधारण तक फैलाने के लिए भी मूल्यांकन जरूरी है, क्योंकि मूल्यांकन के द्वारा जनसाधारण को अपनी कुशलता व कमजोरियों के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती है उन्हें यह भी जानकारी हो जाती है, कि उन्हें और किन-किन नए क्षेत्रों में अभी प्रगति करनी है।

13.7 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन के सिद्धान्त

परामर्श कार्यक्रम की सफलता के लिए उसका मूल्यांकन करना अत्यधिक आवश्यक है, मूल्यांकन करते समय मूल्यांकन के कुछ सामान्य सिद्धान्तों को ध्यान में रखना

आवश्यक है, क्योंकि इसके अभाव में परामर्श कार्यक्रम का उचित मूल्यांकन नहीं हो सकता है।

1. परामर्श कार्यक्रम से सम्बन्धित अधिकारियों, उनके कार्यों, परामर्श में प्रयोग की गई विधियों, पद्धतियों, परामर्श के परिणामों व उनकी विवेचना में प्रयोग की गई भाषा में समानता होनी चाहिए।
2. परामर्श कार्यक्रम के उचित मूल्यांकन के लिए आवश्यक है, कि बड़े-बड़े उद्देश्यों के स्थान पर छोटे-छोटे उद्देश्यों का चुनाव करना चाहिए, यदि किसी विशेष उद्देश्य का चुनाव किया गया है तो उसकी सम्बन्धित व्यवहारिक उपलब्धियों का भी वर्णन करना चाहिए।
3. परामर्श कार्यक्रम उपलब्ध साधनों के अनुसार ही करना चाहिए, क्योंकि अधिकारियों के असहयोग, धन का अभाव, परामर्श के उद्देश्यों को पूरा करने वाले साधनों की कमी आदि के कारण से परामर्श कार्यक्रम में कठिनाई होती है,
4. छात्रों के व्यवहार को विद्यालय के कार्य ही प्रभावित नहीं करते बल्कि घर समाज व मित्रता आदि भी प्रभावित करते हैं इन सब पर एक साथ नियंत्रण नहीं किया जा सकता है और न ही एक साथ सबकी व्याख्या की जा सकती है, अतः मूल्यांकन का निष्कर्ष केवल मापन योग्य वास्तविकता घटना के आधार पर ही निकालना चाहिए।
5. परामर्श कार्यक्रम का मूल्यांकन गहन व विस्तृत होना चाहिए। मापन के लिए यदि उपकरण नहीं है, तो स्वयं उपकरण का निर्माण करना चाहिए।
6. परामर्श प्रार्थी के व्यवहार का मापन उसके व्यवहार की योग्यता के अनुसार जैसे-मानसिक, बौद्धिक तथा सामाजिक व्यवहार की एक दूसरे से अलग व्याख्या नहीं कर सकते हैं, करना चाहिए।
7. मूल्यांकन के परिणाम स्पष्ट, वस्तुनिष्ठ तथा अर्थपूर्ण होने चाहिए जिससे कि वे छात्र, अभिभावक, विद्यालय अधिकारी व समस्त जनसाधारण की समझ में सरलता व सीघ्रता से आ जाए।
8. मूल्यांकन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, एक सोपान के समाप्त होने पर दूसरा सोपान स्वतः ही प्रारम्भ हो जाता है।

13.8 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन आकड़ों का उपयोग (Application of Evaluation Data)-

परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन के आकड़ों की उपयोगिता के दो प्रकार हैं।

1. **परामर्श की प्रभावशीलता का मापन** – अधिकतर परामर्शदाताओं का मानना है की अगर परामर्शप्रार्थी की संतुष्टि का मापन कर लिया जाये तो उससे परामर्श की

प्रभावशीलता का भी मापन हो जायेगा। इसकी कुछ कमियां भी है जो निम्न प्रकार हैं-

1. परामर्श प्रार्थी की संतुष्टि का मापन करके ही उसकी असंतुष्टि का मापन नहीं कर सकते हैं।
2. कभी-कभी परामर्श प्रार्थी असंतुष्ट होने पर भी असंतुष्टि की भावना को मापन नहीं कर सकते हैं।
3. अधिकांश संतुष्टि मापनियों के प्रति परामर्श प्रार्थी हाँ में उत्तर देता है।

2. परामर्श कार्यक्रम की गुणवत्ता बढ़ाना – परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन से प्राप्त आकड़ों से प्राप्त परामर्श कार्यक्रम की गुणवत्ता का मूल्यांकन परिणाम मूल्यांकन की तुलना में नया है। इस प्रकार प्राप्त की सूचना के द्वारा परामर्श की गुणवत्ता का विकास किया जाता है। मूल्यांकन की गुणवत्ता के लिए परामर्शसेवा की सरलता, परामर्श की प्रभावशीलता व परामर्श की कार्यकुशलता से सम्बंधित अनेक प्रश्नों से प्राप्त उत्तर के द्वारा परामर्श कार्य की गुणवत्ता का विकास किया जाता है।

13.9 परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन में समस्याएँ (Problems in Counselling Evaluation Program)-

1. **मापदंडों का चुनाव** – परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन के लिए ऐसे मानदंड निर्धारित होने चाहिए जिससे परिणामों की जाँच की जा सके। अच्छा मानदंड वह है जो अध्ययन की जाने वाली समस्या से सम्बंधित हो, संख्यात्मक रूप में निर्धारित होने पर ये अस्पष्ट व अव्यवहारिक भी हो जाते हैं। यदि परामर्शदाता की प्रभावितता की जाँच परामर्शप्रार्थी की व्यक्तिगत राय से करे तो निष्कर्ष व्यक्तिनिष्ठ होंगे।
2. **मूल्यांकन किये जाने वाले लक्ष्य की जटिलता**- परामर्श का लक्ष्य आत्म निर्देशन व आत्म निर्भरता को प्राप्त करना होता है। इन लक्ष्यों का मूल्यांकन सरल नहीं होता है क्योंकि ये जटिल और गतिशील होते हैं, गतिशील होने के कारण लक्ष्य बदलते रहते हैं जिससे मूल्यांकन करने में कठिनाई होती है। यह समस्या अधिकांशतः व्यक्तिगत परामर्श में होता है।
3. **पर्याप्त आकड़ों का अभाव**- इसका सम्बन्ध पूर्व के परामर्श की स्थिति से व सबसे अच्छे परामर्श की स्थिति की तुलना से है। आकड़ों के अभाव में परामर्श अव्यावहारिक रूप ले लेता है।
4. **मूल्यांकन** - परामर्श में मूल्यांकन एक ऐसे प्रक्रिया है जिसमें काफी समय लगता है।
5. **प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव** - प्रशिक्षित कर्मचारियों के अभाव में उचित मूल्यांकन की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

13.10 निर्देशन कार्यक्रम व परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन की विधियाँ (Techniques of Evaluation Program in Guidance)-

निर्देशन कार्यक्रम और परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन में तीन पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है।

1. प्रयोगात्मक पद्धति (Experimental Method)-

प्रयोगात्मक विधि के द्वारा मूल्यांकन करने के लिए निर्देशन कार्यक्रम के प्रारम्भ में ही योजना बनानी होती है, सामान्य रूप से प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग दो समूहों पर किया जाता है। एक समूह नियंत्रित समूह व दूसरा समूह प्रयोगात्मक समूह होता है। जैसे वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर एक समूह को निर्देशन दिया जाता है व दूसरे समूह को कोई निर्देशन नहीं दिया जाता है। जिसे निर्देशन नहीं दिया गया वह नियंत्रित समूह है। निर्देशन देने के बाद उसके प्रभाव की जांच के लिए दोनों समूहों की तुलना की जाती है। इसके द्वारा यह पता चलता है कि क्या निर्देशन कार्यक्रम का प्रयोगात्मक समूह पर कोई प्रभाव पड़ता है, यदि प्रभाव पड़ता है तो किस मात्रा तक पड़ता है। परामर्श कार्यक्रम में भी प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाता है। प्रयोगात्मक पद्धति के द्वारा परामर्शदाता परामर्श कार्यक्रम के बाद परामर्श प्रार्थी के व्यवहार में जो भी परिवर्तन होता है उसका अध्ययन करते हैं। इसके लिए परामर्श प्रार्थी के परामर्श कार्यक्रम से पहले व परामर्श कार्यक्रम के बाद के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं। मूल्यांकन के द्वारा यह ज्ञात होता है कि परामर्श प्रार्थी का परामर्श कार्यक्रम से पहले व्यवहार क्या था और परामर्श कार्यक्रम के बाद व्यवहार क्या है। इस विधि के मूलभूत आधार हैं-

- उद्देश्यों का निर्धारण करना या उपकल्पनाओं का निर्माण करना।
- प्रयोग के लिए उपयुक्त विधि का चयन करना।
- दो या दो से अधिक समूहों का चयन करना।
- परामर्श के तकनीकों का प्रयोग जिससे परिणामों की निष्पक्ष जाँच हो सके।
- परामर्श प्रार्थी से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण व निष्कर्षों की व्याख्या।

इसका सबसे महत्वपूर्ण चरण समान समूहों का चयन करना है। शैक्षिक व परामर्श के मूल्यांकन में इस विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रयोगात्मक पद्धति के द्वारा परामर्श प्रार्थी के व्यवहार के सम्बन्ध में बनाई गई उपकल्पना की जांच के लिए आकड़े व प्रमाण एकत्रित किये जाते हैं। प्रयोगात्मक पद्धति अत्यधिक जटिल पद्धति, अधिक खर्चीली, व अधिक समय लेने वाली पद्धति है। क्योंकि इसमें परामर्श प्रार्थी के परामर्श कार्यक्रम से पहले व परामर्श कार्यक्रम के बाद दोनों

व्यवहारो का अध्ययन किया जाता है, इस पद्धति का प्रयोग विद्यालयों के मूल्यांकन में कम किया जाता है।

2. सर्वेक्षण विधि (Survey Method)

सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली सामान्य विधि है। इस विधि के द्वारा मूल्यांकन करने के लिए व्यक्तियों के व्यवहार और समायोजन पर निर्देशन कार्यक्रम के प्रभाव के सम्बन्ध में मतों, अभिवृत्तियों, सूचनाओं और अन्य आकड़ों का संकलन प्रश्नावली के द्वारा या साक्षात्कार प्रणाली द्वारा किया जाता है। साथ ही इसकी व्याख्या भी की जाती है। इस प्रकार सर्वेक्षण मूल्यांकन द्वारा एक समय में सर्वेक्षण प्रणाली द्वारा समूह की दशा का अध्ययन करके पुनः दूसरे समय में सर्वेक्षण प्रणाली द्वारा अध्ययन करके समूह की दशा में परिवर्तन का अनुमान लगाया जाता है। इस प्रकार निर्देशन के प्रभाव का मूल्यांकन होता है। परामर्श कार्यक्रम में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते समय निश्चित किये गए उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए चयन किये गए प्रतिदर्श से आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं, इस विधि में जनसंख्या को पहचानना, उद्देश्य पूर्ण करने वाले प्रतिदर्श का चयन, जानकारी एकत्रित करना, मूल्यांकन में उपयोग की जाने वाले कार्य की सूची, अंत में निष्कर्ष निकलते हैं व व्याख्या करते हैं। इस विधि की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि इसमें कम समय में अधिक संख्या में आंकड़े एकत्रित हो जाते हैं जिससे वैध परिणाम प्राप्त होते हैं। जबकि इसमें दोष यह है कि प्रतिदर्श में सम्मिलित व्यक्तियों से अविश्वसनीय उत्तरों की प्राप्ति, सामाजिक रूप से वांछित उत्तर अधिक होते हैं। प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग अधिक होता है, और प्रतिचयन त्रुटि की सम्भावना बढ जाती है, जिससे दोषपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन में सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग अधिक किया जाता है। इस पद्धति में प्रयोगात्मक पद्धति की तरह परामर्श प्रार्थी के परामर्श कार्यक्रम से पहले के व्यवहार व परामर्श कार्यक्रम के बाद के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन न करके वर्तमान व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, और अगर कोई सुधार करना है तो सुधार किया जाता है। सर्वेक्षण विधि के द्वारा हम निर्देशन की समस्त सेवाओं-सूचना सेवा, अनुवर्ती सेवा, परामर्श सेवा व स्थानन सेवा आदि का मूल्यांकन कर सकते हैं।

- a. **सूचना सेवा (Information Service)-** निर्देशन कार्यक्रम की सफलता प्राप्त सूचनाओं की विश्वसनीयता, वैधता व विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। सूचना सेवा के मूल्यांकन से हमें यह जानकारी प्राप्त होगी कि सूचना सेवायें विभिन्न छात्रों को उनकी क्षमता व आवश्यकता के अनुसार शिक्षा व व्यवसाय से सम्बंधित सूचनाएं देने में कितनी सफल हुई हैं। इन सर्वेक्षणों के द्वारा सूचना सेवा की प्रभावशीलता व उपयोगिता से सम्बंधित राष्ट्रीय व स्थानीय मानक तैयार किये जा सकते हैं।

b. **अनुवर्ती सेवा (Follow up Service)**- अनुवर्ती सेवा में हमें व्यक्ति के कार्य क्षेत्र में समायोजन व प्रगति के बारे में पता चलता है, इसे एक उदहारण द्वारा समझ सकते हैं, जैसे एक विद्यालय यह ज्ञात करता है कि एक छात्र किसी क्षेत्र में चला जाता है चाहे वह अध्ययन क्षेत्र है या नियुक्ति क्षेत्र में किस सीमा तक छात्र अपने आपको समायोजित कर पाया है या उस क्षेत्र में उसने कितनी प्रगति प्राप्त की है। इस प्रकार अनुवर्ती सेवा विद्यालय के समस्त निर्देशन कार्यक्रमों की सफलता व असफलता को बताता है। यदि छात्र ने संतोषजनक प्रगति की है और क्षेत्र विषय में संतुलित रूप से समायोजन कर लिया है तो इसका अर्थ है कि विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम सफल है। इस प्रकार अनुवर्ती सेवा समस्त निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन करती है और उसके बाद कार्यक्रमों में सुधार की योजना बनाती है। अतः इसके लिए आवश्यक है कि अनुवर्ती सेवा का भी मूल्यांकन हो।

c. **परामर्श सेवा (Counselling Service)**- परामर्श सेवा का मूल्यांकन परामर्शदाता परामर्श के समय प्रयोग में लाये जाने वाले अभिलेखों के सर्वेक्षण के द्वारा करता है। उदहारण यदि विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन करना है तो विद्यालय में प्रत्येक परामर्शदाता अपने प्रतिदिन के कार्यों, परामर्श के लिए आये छात्रों, उनकी समस्या के समाधान के लिए किया प्रयास, उसमें सफलता, असफलता व कठिनाई आदि का लेखा-जोखा एक विवरण पुस्तिका में रखना चाहिए, यह विवरण पुस्तिका परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन में सहायक हो सकती है। इस विवरण पुस्तिका के विश्लेषण से निर्देशन कार्यक्रम की वैधता व विश्वसनीयता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

d. **स्थानन सेवा (Placement Service)**- सूचना सेवा, अनुवर्ती सेवा तथा परामर्श सेवा की तरह स्थानन सेवा का भी मूल्यांकन किया जा सकता है। व्यक्ति के स्थानन सेवा तभी दक्षतापूर्ण कार्य कर सकती है, जबकि उनके पास उन क्षेत्रों की पूर्ण जानकारी हो, जहाँ विद्यालयी शिक्षा समाप्त करने के बाद नियुक्ति प्राप्त की हो। इसके लिए स्थानन सेवा को समय-समय पर अपने शहर तथा पड़ोसी शहरों में सर्वेक्षण करने की आवश्यकता होती है। इनसे आधुनिक आँकड़े तथ्यों तथा क्षेत्रों के ज्ञान के साथ-साथ व्यवसाय में वर्तमान समय में कहाँ-कहाँ वर्तमान में नियुक्ति होनी है, और कहाँ-कहाँ भविष्य में रिक्त पद होने की संभावना है और किन-किन शैक्षिक योग्यता वाले छात्रों की आवश्यकता है। स्थानन सेवा छात्रों को सेवा में नियुक्ति करने व हटाने वाले अधिकारियों के व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों का अध्ययन कर सकती है। स्थानन सेवा का मूल्यांकन करते समय हमें यह देखना चाहिए कि स्थानन सेवा के द्वारा कितने छात्रों को नियुक्ति मिली है? नियुक्तियाँ दिलाने का प्रतिशत अन्य

संस्थाओं की उपेक्षा कितना है। यदि प्रश्नों के उत्तर स्थानन सेवा के द्वारा नियुक्तियां नहीं दिला पाते तो इसकी दक्षता बढ़ाने पर विचार करना चाहिए।

2. व्यक्ति इतिहास विधि (Case Study Method)

इस विधि का प्रयोग व्यक्ति के निरन्तर दीर्घकालीन व विस्तारपूर्वक अध्ययन करने के लिए एक निश्चित समय तक किया जाता है। इसमें निर्देशन प्रार्थी से लगातार सम्पर्क बना कर उसके सम्बन्ध में सम्पूर्ण सूचनाये एकत्रित की जाता है उसका एक व्यक्तिगत अभिलेख तैयार किया जाता है इसके द्वारा यह पता चलता है कि व्यक्ति पर निर्देशन कार्यक्रम का क्या प्रभाव पड़ता है। परामर्श कार्यक्रम में परामर्शदाता परामर्शप्रार्थी के व्यक्तिगत बातों की ओर अधिक ध्यान देता है, सभी बातों का गहनता से अध्ययन करता है, जिससे परामर्शदाता द्वारा दिए गए निर्देशन के प्रभाव का पता चलता है, इसके बाद परामर्श प्रार्थी के व्यक्तिगत मूल्यांकन के द्वारा पुनः मूल्यांकन किया जाता है, उदहारण- परामर्श प्रार्थी परामर्श कार्यक्रम के प्रति क्या सोचता है, या अपने हित को ध्यान में रखते हुए परामर्श के प्रति उसके विचार कैसे हैं। इस विधि का प्रमुख लाभ व्यक्तिगत मामलों में दिए जाने वाले हित में है। इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें समय अधिक लगता है, क्योंकि परामर्श प्रार्थी के व्यक्तिगत जीवन के प्रत्येक पहलू का मूल्यांकन करना होता है इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में अलग होता है। ऐसे में उसके आंकड़ों पर कठोर राय देना उचित नहीं होगा। इसके विपरीत अगर हम अलग-अलग परामर्श प्रार्थी से सम्बन्धित आंकड़ों को अनदेखा करते हैं तो व्यक्तिगत विधि के विशिष्ट लक्षणों को भी अनदेखा करना ही होगा।

13.11 परामर्श कार्यक्रम में परामर्शदाता का स्वमूल्यांकन (Self-Assessment of Counsellor)

परामर्श प्रक्रिया में परामर्शदाता के स्वमूल्यांकन के लिए आत्मप्रबंधन दक्षताओं की आवश्यकता होती है। जिनके द्वारा परामर्शदाता स्वयं का मूल्यांकन कर सकता है। ये दक्षतार्ये निम्न प्रकार हैं-

1. आत्म स्वीकृति का विकास व स्वयं के अन्दर न्यायपूर्ण ढंग से देखना-
2. अपने सीखने, सावेगिक, शारीरिक, आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पहचानना और उन्हें पूरा करने के लिए संसाधनों का उपयोग करना व स्वयं का मूल्यांकन करना।
3. स्वयं के मूल्यांकन, विश्वासों के सिद्धांतों को पहचानना और उनकी जाँच करना।

4. स्वयं के प्रतिबिम्ब, अभिलेख को प्रस्तुत करना और पर्यवेक्षण का उपयोग करके परामर्शदाता स्वयं का मूल्यांकन कर सकता है।
5. परामर्श प्रार्थी के साथ मिलकर पुनः स्वयं का मूल्यांकन।
6. परामर्श प्रार्थी से फीडबैक की मांग करना जिससे कि स्वयं की कमियां भी पता चलती है।

13.12 सारांश (Summary)-

निर्देशन कार्यक्रम के मूल्यांकन में यह ज्ञात किया जाता है कि कार्यक्रम के उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया गया है। निर्देशन कार्यक्रम में मूल्यांकन का अर्थ है कि किसी संस्था द्वारा निर्देशन कार्यक्रम में दी जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता के मूल्यांकन से है। मूल्यांकन की मुख्य आवश्यकता व्यक्ति के व्यवहार में निर्देशन का प्रभाव, उसकी गुणवत्ता, उसकी व्यवहारिकता व कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए प्रयोग की जाने वाली तकनीकों के अध्ययन में है। निर्देशन कार्यक्रम में उद्देश्यों का निर्धारण, जाँच का मापन, योजना बना व निष्कर्षों की व्याख्या करना मुख्य चरण है। निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन सर्वेक्षण, प्रयोग व व्यक्ति इतिहास विधि द्वारा किया जा सकता है। निर्देशन मूल्यांकन की प्रक्रिया के क्षेत्र में सबसे अधिक ध्यान नवीन प्रवृत्तियों पर दिया जा रहा है इसके अंतर्गत कार्यक्रम लक्ष्यों के स्पष्टीकरण, कार्यकर्ता सर्वेक्षण सुविधाओं के विचार, रिकार्डों की पूर्णता, आकड़ों, सहयोग का प्रसार उद्देश्यों की प्राप्ति आदि के विषय में नवीन योजनाएँ प्रस्तुत की गयी है।

मूल्यांकन का अर्थ निर्धारित मानकों के अन्तर्गत कार्यक्रम के प्रभाव की जांच करना है, परामर्श कार्यक्रम परामर्श लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है या नहीं। परामर्श कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य परामर्श प्रार्थी को दिए जाने वाले परामर्श के विषय में जानकारी देना। परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन की मुख्य आवश्यकता है कि परामर्श कार्यक्रम अपने उद्देश्यों के अनुसार सम्पन्न हो रहा है या नहीं। मूल्यांकन करते समय मूल्यांकन के सामान्य सिद्धांतों को ध्यान में रखना आवश्यक है, क्योंकि इसके अभाव में परामर्श कार्यक्रम का उचित मूल्यांकन नहीं हो सकता है। परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन में प्रयोगात्मक सर्वेक्षण और व्यक्ति इतिहास विधि का प्रयोग किया जाता है। परामर्श कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले परामर्शदाता को स्वयं अपना भी मूल्यांकन करना चाहिए, जिससे कि अपनी कमियों का भी पता चलता है।

13.13 शब्दावली

निर्देशन कार्यक्रम- निर्देशन कार्यक्रम वह है की जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विकास के विभिन्न चरणों में आयी हुई शिक्षा सम्बन्धी, व्यासाय सम्बन्धी, वैयक्तिक अथवा सामाजिक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होता है।

अनुवर्ती सेवा— अनुवर्ती सेवा के द्वारा व्यक्ति को यह पता चलता है कि उसकी जिस क्षेत्र में नियुक्ति नहीं है उसमें वह कितना समायोजित हुआ है और उस क्षेत्र में उसकी प्रगति क्या है।

परामर्श कार्यक्रम - परामर्श कार्यक्रम वह है जिसमें परामर्शदाता किसी परामर्श प्रार्थी की इस प्रकार सहायता करता है कि परामर्श प्रार्थी अपनी योजनाओं का चुनाव जो वह करना चाहता है की व्याख्या कर सके।

परामर्श मूल्यांकन – परामर्श मूल्यांकन का अर्थ यह निर्धारित करना है कि जिन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए परामर्श कार्यक्रम चलाता था उन लक्ष्य की प्राप्ति हुई है या नहीं। यदि हुई है तो किस सीमा तक।

परामर्शदाता – परामर्शदाता वह व्यक्ति है जो किसी क्षेत्र विशेष में विशेषज्ञता रखता है जो दूसरो को समस्या का समाधान करने योग्य बनाता है।

परामर्श प्रार्थी - परामर्श प्रार्थी वह है, जो किसी समस्या का समाधान के लिए परामर्शदाता के पास आता है, और परामर्शदाता उसे समस्या का समाधान करने योग्य बनाता है।

अभ्यास प्रश्न- ख

प्रश्न 1- निम्नलिखित में से कौन सा परामर्श मूल्यांकन का उद्देश्य नहीं होता है?

क- परामर्श कार्यक्रम की प्रभावशीलता

ख- परामर्श शुल्क का निर्धारण

ग- परामर्श प्रार्थी का प्राप्त हुए लाभ की प्रगति का मूल्यांकन

घ- परामर्श प्रार्थी की अपनी सहायता कर पाने की समता में वृद्धि का मूल्यांकन

प्रश्न 2- परामर्श कार्यक्रम में मूल्यांकन परामर्शदाता के मूल्यांकन में सहायक होता है- हां/नहीं

13.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

अभ्यास प्रश्न-क

(1) असत्य

(2) (घ) उपयुक्त तीनों

(3) (ख) प्रश्नावली

(4) (क) अर्द्धसंरचित साक्षात्कार

(5) उद्देश्यों का निर्धारण

अभ्यास प्रश्न- ख

उत्तर 1- परामर्श शुल्क का निर्धारण

उत्तर 2- हाँ

13.15 निबंधात्मक प्रश्न

- (1) निर्देशन कार्यक्रम में मूल्यांकन क्यों आवश्यक है?
- (2) निर्देशन कार्यक्रम में मूल्यांकन के चरणों का वर्णन कीजिए।
- (3) निर्देशन कार्यक्रम में मूल्यांकन की विभिन्न विधियों का वर्णन कीजिए।
- (4) निर्देशन कार्यक्रम में मूल्यांकन के विभिन्न सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।
- (5) निर्देशन कार्यक्रम में मूल्यांकन के स्रोतों और तकनीको का वर्णन कीजिए।
- (6) परामर्श कार्यक्रम में परामर्श मूल्यांकन का अर्थ समझाते हुए उसकी आवश्यकताओं पर प्रकाश डालिए।
- (7) परामर्श कार्यक्रम में मूल्यांकन के सिद्धान्तों को समझाइए।
- (8) परामर्श मूल्यांकन परामर्श कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग है इस कथन कि विवेचना कीजिए।
- (9) परामर्श कार्यक्रम में मूल्यांकन की पद्धतियों का वर्णन कीजिए।
- (10) परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन आकड़ों के उपयोग को समझाइए।
- (11) परामर्श कार्यक्रम में मूल्यांकन का क्या अर्थ है।

13.16 संदर्भ सूची (References)-

1. निर्देशन एवं परामर्श राय अमरनाथ, अस्थाना मधु, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन
2. शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका- उपाध्याय राधाबल्लभ, जायसवाल सीताराम, अग्रवाल पब्लिकेशन
3. वोकेशनल गाइडेंस एवं कैरियर काउन्सिलिंग में पी० जी० डिप्लोमा – उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, शान्तिपुरम (सेक्टर-एफ) फाफामऊ इलाहाबाद।
4. निर्देशन तथा उपबोधन –ES363, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।

इकाई 14. परामर्श के लिए शिक्षण एवं प्रशिक्षण, भविष्य में शोध हेतु दिशा-निर्देश (Teaching and Training for Counselling, Guidelines for future research)

इकाई संरचना

- 14.1 प्रस्तावना
- 14.2 उद्देश्य
- 14.3 परामर्श के लिए शिक्षण एवं प्रशिक्षण
 - 14.3.1 व्यक्तिगत विशिष्टतायें
 - 14.3.2 परामर्शदाता की दक्षतायें
 - 14.3.3 सामान्य दक्षताये
 - 14.3.4 परामर्श की विशद् एवं सूक्ष्म दक्षतायें
 - 14.3.5 परामर्श की गौण दक्षतायें
- 14.4 भावी शोध हेतु दिशा निर्देश
- 14.5 शब्दावली
- 14.6 सारांश
- 14.7 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न
- 14.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

14.1 प्रस्तावना (Introduction)-

मनुष्य एक सभ्य प्राणी है, सभ्यता का आधुनिक स्वरूप सदियों से चले संघर्ष एवं विकास के कारण आया। यह माना जाता है कि मानव स्वभाव का सर्वोत्तम गुण दुःखियों एवं पीड़ितों को मदद पहुँचाना है, अगर कोई व्यक्ति दुःखी, पीड़ित या समस्याग्रस्त होता है तो कई व्यक्ति उसकी सहायता स्वरूप आ जाते कुछ राय मशवरा देते। भारत में यह कार्य घर के बड़े बुजुर्ग एवं गणमान्य व्यक्ति किया करते थे चूँकि वर्तमान समय में एकाकी परिवारों का दौर है साथ ही वर्तमान समय वैश्वीकरण का समय भी है इस दौर में अधिकांशतः लोग कैरियर का आपा-धापी में भाग रहे हैं बच्चों पर पढ़ाई का दबाव, और माता-पिता पर अपनी नौकरी के साथ-साथ बच्चों की अच्छी परवरिष का दबाव, विभिन्न संस्कृतियों से मेल-जोल का दबाव, नई तकनीक सीखने का दबाव

आदि- इन तमाम दबावों से कई बार व्यक्ति विशेष अपनी समस्याओं में उलझ कर रह जाते हैं। कई बार वह अपने माता-पिता, भाई-बहिन एवं संगी साथियों से राय मशवरा लेता है परन्तु समस्या सुलझाने में असफल होने पर अवसाद में भी चला जाता है।

आधुनिक दौर में जहाँ शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों का विकास हुआ है, वहीं परामर्शन (Counselling) भी एक मुख्य विषय बन चुका है जिससे लोगों को अपनी समस्या सुलझाने में मदद मिलती है। वर्तमान समय में बाकायदा परामर्श के लिए शिक्षण और प्रशिक्षण लिया जाता है। शिक्षण प्रशिक्षण के संदर्भ में जानने से पूर्व विद्यार्थियों को यह बताना आवश्यक है कि परामर्श क्या है, परामर्श अंग्रेजी शब्द बवनदेसपदह का हिन्दी रूपान्तरण है, जिसका अर्थ राय मशवरा एवं सुझाव देना होता है।

कार्ल रोजर्स (Carl Rogers) के अनुसार परामर्श एक निश्चित रूप से निर्मित स्वीकृत सम्बन्ध है जो परामर्श प्रार्थी को पर्याप्त मात्रा में अपने को समझने में सहायता देता है, जिससे वह अपने नवीन ज्ञान के परिपेक्ष्य में ठोस कदम ले सकें। (“A definitely structured permissive relationship which allows the client to gain an understanding to himself to a degree which enables him to take positive steps in the light of his orientations.”)

रुथ स्ट्रॉंग - “परामर्शन प्रक्रिया एक संयुक्त प्रयास है, परामर्शन प्रक्रिया का सार-तत्व ऐसा सम्बन्ध है जिसमें व्यक्ति जिसका परामर्शन हो रहा है, स्वयं को पूर्णतः अभिव्यक्त करने के लिए स्वतंत्रता का अनुभव करता है तथा अपने लक्ष्यों से उसकी सिद्धि के बारे में स्पष्टीकरण व उनकी सिद्धि हेतु अपने सामर्थ्यों और समस्याओं के प्रकट होने पर उनके समाधान की विधियों या साधन के बारे में आत्मविश्वास अर्जित करता है।”(The counseling process is a joint quest. The essence of the counseling process is a relationship in which the individual being counseled feels free to express himself fully and gain clarification of his goals, self confidence in his abilities to realize them and methods or means of solving difficulties as they arise.)

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि परामर्श दो व्यक्तियों के मध्य होने वाली वार्तालाप है, जिसमें एक समस्याग्रस्त है और दूसरा उसकी समस्या के संदर्भ में परामर्श प्रार्थी को सलाह या सुझाव देता है या उन प्रक्रियाओं की चर्चा करता है जिससे परामर्श प्रार्थी स्वयं की समस्या का समाधान कर ले और अपने वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में बेहतर समायोजन कर सके।

उपरोक्त प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि हम यह जाने कि परामर्श के शिक्षण एवं प्रशिक्षण की क्या आवश्यकता है ? आवश्यक है कि वह अपने व्यवहार में मधुरता बनाये रखे, मधुरता के साथ उसके व्यवहार से हास्य भी होना चाहिए ताकि दोनों के मध्य मधुर एवं मित्रता।

14.2 उद्देश्य (Goals)-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

- परामर्शन में शिक्षण की महत्ता के बारे जान पायेंगे।
- परामर्श सम्बन्धी दक्षता एवं प्रशिक्षण के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- परामर्श में भावी शोध निर्देशों की जानकारी द्वारा शोध कार्य में लाभान्वित हो सकेंगे।

14.3 परामर्श के लिए शिक्षण एवं प्रशिक्षण (Education and Training for Counselling) -

परामर्श की प्रक्रिया बहुत ही संवेदनशील प्रक्रिया है चूंकि यह किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याओं से जुड़ी होती है, इसलिए इस कार्य में परामर्शदाता की निपुणता एवं योग्यता का अधिक प्रभाव पड़ता है, यह भी माना जाता है कि अत्यधिक कुशल परामर्शदाता सुविधा के अभाव होने पर भी प्रभावशाली ढंग से परामर्श प्रदान कर सकता है अनुभवी परामर्शदाता जानते हैं कि परामर्श की प्रक्रिया को प्रभावशाली ढंग से सम्पादित करने के साधनों एवं सुविधाओं की आवश्यकता तो होती है पर शिक्षण एवं प्रशिक्षण बेहतर होने पर कम सुविधाओं में बेहतर परामर्श दिया जा सकता है।

यहाँ विद्यार्थियों के लिए यह जानना आवश्यक है कि परामर्श की सफलता के लिए परामर्शदाता को बेहतर शिक्षित एवं प्रशिक्षित होना चाहिए जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे:-

संयुक्त राज्य अमेरिका के निर्देशन तथा परामर्शन में संलग्न संगठनों ने परामर्शदाताओं के लिए आवश्यक बातों की रूपरेखा तैयार करने का प्रयत्न किया है उन्होंने निर्देशन व प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे परामर्शदाताओं के आठवें सम्मेलन में, परामर्शदाताओं के कर्तव्यों, मानदण्डों (Standards) तथा अर्हताओं (Qualification) के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट तैयार की उसके कुछ भागों का निम्न वर्णन किया जा रहा है-

14.3.1 वैयक्तिक योग्यता (Personal Abilities)-

परामर्श के लिए वैयक्तिक अर्हताओं का बहुत महत्व है, एक सफल परामर्शदाता में निम्न अर्हतायें एवं विशेषतायें होना आवश्यक है:-

a. शिक्षा (Education)- शिक्षा अनादि काल से चली आ रही मानव व्यवहार को परिमार्जित करने वाली प्रक्रिया रही है। शिक्षा ने मनुष्य को सामाजिक मान्यताओं के अनुसार विकसित करने में विशेष योगदान दिया है शिक्षा न केवल व्यक्ति को अपने वातावरण से अनुकूलन करने में भी सहायता करती है वरन् उसके व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन भी करती है जिससे व्यक्ति अपना व अपने समाज का कल्याण करने में सफल होता है एक परामर्शदाता तभी बेहतर परामर्श दे पायेगा जब वह शिक्षित होगा। या यूँ कहे कि उसे अपने विषय विशेष का पूर्ण ज्ञान होगा शिक्षा को यहाँ निम्न भागों में बाटा गया है-

b. सामान्य शिक्षा (General education)- परामर्शदाता को किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त होनी चाहिए साथ ही जिस क्षेत्र में उसे परामर्श का कार्य करना है उसी स्तर के लिए राज्य द्वारा निर्धारित योग्यताओं एवं मानदण्डों के अनुरूप प्रशिक्षित अध्यापक का प्रमाण पत्र होना चाहिए।

c. वृत्तिक शिक्षा (Professional education)- परामर्शदाता को अपने परामर्शन एवं निर्देशन क्षेत्रों के लिए विस्तृत अध्ययन से युक्त उपाधि प्राप्त करनी चाहिए जो कम से कम मास्टर उपाधि (Master Degree) के समकक्ष अवश्य है। इस संदर्भ में उसे परामर्शदाता को निर्देशन कार्य के सिद्धान्त एवं व्यवहार सम्बन्धित आधारभूत पाठ्यक्रम का अध्ययन करना आवश्यक हो, इनके अतिरिक्त परामर्श के लिए अन्य व्यक्तिगत योग्यताओं का होना भी जरूरी है -

- परामर्श के लिए शिक्षण अभिक्षमता पूर्ण होनी चाहिए वह अच्छा परामर्श तभी दे पायेगा जब उसे विषय विशेष का अच्छा ज्ञान होगा, अच्छे ज्ञान की वजह से ही परामर्शी (Counsellor) का विश्वास परामर्शदाता पर बना रहेगा जैसे- अगर परामर्शदाता विद्यालय परिवेश में कार्य कर रहा है, तो उसे शैक्षिक परिवेश के संदर्भ जानकारी होनी चाहिए साथ ही अध्यापकों एवं छात्रों के साथ कार्य करने में रूचि होनी चाहिए।
- परामर्शदाता का व्यक्तित्व सहज एवं सरल होना चाहिए उसमें लोगों के दुःख दर्द को महसूस करने का गुण होना चाहिए यदि वह (परामर्शदाता) संवेदनशील होगा तभी वह बेहतर राय भी दे जायेगा।
- उसका कौशल यह भी है कि उका व्यवहार मित्रतापूर्वक हो वह परामर्शी (Counsellor) का विश्वास जीत कर उसके जीवन के गोपनीय पक्षों को जानने में सफल हो, उसका व्यवहार मधुरतम होना चाहिए यदि परामर्शदाता अधिकारी की तरह पेश आयेगा तो परामर्शी (Counsellor) उससे भयभीत होगा और उसे अपनी वास्तविक गोपनीय जानकारी देने से बचेगा, साथ ही परामर्शदाता को अपनी भाशा शैली में आलोचना एवं व्यंग्य से भी बचना चाहिए और

परामर्शी को प्रोत्साहित एवं सहज बनाये रखने के लिए हास्य का प्रयोग भी आना चाहिए।

- परामर्शदाता में निर्णय लेने की क्षमता एवं दृढ़ता का होना आवश्यक है यदि काउन्सलिंग के समय परामर्शप्रार्थी मुख्य विषय से भटक जाता है या वह विषय को मोड़ने की कोशिश करता है तो परामर्शदाता को अपने कौशल एवं दृढ़ता से मुख्य विषय को केन्द्र में लाने का परिचय देना चाहिए, कई बार काउन्सलिंग में उपबोध भावनात्मक रूप परामर्शदाता से जुड़ जाता है जिससे उसकी अपेक्षाएँ बढ़ जाती हैं, ऐसी स्थिति में भी उसे अपनी बेहतर निर्णय क्षमता का परिचय देना चाहिए।
- अच्छे परामर्श की सफलता विचारों के परस्पर आदान-प्रदान पर निर्भर करती है, परामर्शदाता (Counsellor) अपने विचारों में लीन हो जाता है ऐसी स्थिति में उपबोध को चाहिए कि वह प्रासंगिक बात कह कर उसे वार्तालाप के लिए प्रेरित करें, परामर्शदाता का भाषा पर भी पूर्ण अधिकार होना चाहिए तथा उसे अपनी कार्यक्षमता पर विश्वास और अपनी कार्यशैली का ज्ञान होना चाहिए।

(3) अनुभव (Experience)- परामर्शदाता के पास अपना परिचय देने के लिए

अनुभव होना चाहिए यदि परामर्शदाता स्कूल के क्षेत्र में काउन्सलिंग कर रहा है तो वह उसक परिवेश से परिचित होना चाहिए या यँ कहें कि उसकी क्षमता स्कूली परिवेश की जानकारी लेने के लिए रूचिकर होनी चाहिए कार्य जगत के संदर्भ में परामर्शदाता की समझ और अनुभव परामर्श में उपयोगी सिद्ध होता है। यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि किसी परामर्श में शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए परामर्शदाता (Counsellor) की दक्षता बहुत महत्वपूर्ण है ताकि परामर्श का कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हो सके इस हेतु आधुनिक मनोविज्ञान में तीन श्रेणियों की दक्षता का वर्णन किया जाता है

परामर्शदाता की दक्षतायें

1 सामान्य दक्षता

2 विषद एवं सूक्ष्म दक्षतायें

3 अनुषांगि/ गौण दक्षतायें

(1) सामान्य दक्षतायें (Generic Skills) किसी की परामर्श में परिवेश क्षमतायें या दक्षता होनी चाहिए साथ ही परामर्श की विभिन्न विधियों के उपयोग के लिए सामान्य दक्षता को आवश्यक माना जाता है।

रोजर्स (1957) ने परानुभूतिक बोध (मूडचंजीपब नदकमतेजंद) अप्रतिबन्धित सकारात्मक सम्मान तथा सर्वांग क्षमता संगति (ब्वदहतनमदबमद्ध और उनके समुचित संप्रेक्षण को परामर्शदाता के उन गुणों का आवश्यक तत्व बताया है कि जिसके आधार पर परामर्शदाता परामर्शी को वांछित परिवर्तन स्थापित करने में सहायता प्रदान करता है।

कर्क हफ़ (Cark Haff, 1969) ने सामान्य दक्षता में चार दक्षताओं को आवश्यक माना। निष्चयात्मकता आत्म-अभिव्यक्ति (Self Disclosure) सामना (Confrontation) और तात्कालिता (Immediacy)

केगन (Kagan, 1995) - ने उनकी वैयक्तिक प्रक्रिया प्रत्यावान (Interpersonal Process Recall) प्रणाली की प्रक्रिया को परामर्शदाताओं के प्रशिक्षण के लिए जरूरी बताया, इस प्रक्रिया में ऑडियो-वीडियो रिकॉर्ड का मूल्यांकन किया जाता है यह प्रक्रिया अन्तर्क्रिया के दौरान संवेदनाओं, विचारों एवं व्यवहार के पक्षों को समझने में मदद करती है।

पिछले दशक में ब्रिटेन में “नेशनल काउंसल फोर वोकेशनल क्वालिफिकेशन” एक दल का गठन किया जिसे **CAMPAG** के नाम से पुकारा जाता है इस संगठन ने परामर्शदाताओं को मान्यता देने के लिए सामान्य दक्षताओं की एक सूची तैयार की है जो निम्न है-

- i. रोगी क्लार्ईट के साथ सम्पर्क स्थापित करने की दक्षता
- ii. परामर्शन दशा की संरचना सुनिश्चित करने की दक्षता
- iii. क्लॉयंट के साथ अन्तर्क्रिया के विकास और अनुरक्षण की दक्षता
- iv. परामर्शन सम्बन्ध को विकसित करने की दक्षता और अनुरक्षण की दक्षता
- v. अपने कार्य एवं आत्म मूल्यांकन की दक्षता
- vi. परामर्शन उपचारात्मक प्रक्रिया में स्वयं का अनुश्रवण (डंडपजंतपदह) करने की दक्षता

उपरोक्त छः दशाओं के अन्तर्गत परामर्शन की अनेक आन्तरिक एवं बाह्य दशायें भी शामिल की गई हैं।

- आन्तरिक दक्षतायें (**Internal skills**) - में परामर्श प्रार्थी का निरीक्षण, सुनना, उसकी संवेदनाओं संवेगों विचारों की पहचान के लिए शरीर की भाषा का अध्ययन, तटस्थ मूल्यांकन, निर्णय, परामर्शी के संदर्भ में अन्य व्यक्तियों के संदर्भ से जानकारी आदि को सम्मिलित किया जाता है। आन्तकरिक दक्षता प्राप्त करने के लिए कई बार काउन्सलर ‘निर्देशन एवं परामर्श’ (Guidance and Counselling) का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त डिग्री एवं डिप्लोमा का भी सहारा लेते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि जो उपयुक्त विषय पर अभ्यास कर रहे हैं तो उनके साथ कार्य कर या उनसे प्रशिक्षण ले कर परामर्शी को अपनी समस्या को सुलझाने में मदद की जाती है।
- बाह्य दक्षतायें (**External skills**) - में परामर्शी का अभिवादन करना, उस पर ध्यान देना, उसकी अनुभूतियों की व्याख्या करना, प्रश्न पूछना, उसके उद्देश्य को वरीयता तथा प्रदत्त अभिलेखों के लिए ओडियो वीडियो की दक्षता होनी चाहिए।

उपरोक्त दक्षताओं के कारण परामर्शदाता परामर्शी को सुरक्षा की एक ऐसी अनुभूति अर्जित करने में सहायता देता है, जिसके आधार पर क्लायंट स्वयं अपना व अपनी परिस्थितियों का अन्वेषण आरंभ कर देता है, परन्तु कभी-कभी परामर्शी के चुनौतीपूर्ण लक्ष्य होने के कारण परामर्शदाता को उसे चुनौतीपूर्ण परिवेश, परिस्थिति से सामना कराने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करना पड़ता है ऐसी स्थिति के लिए उपयुक्त समय का ध्यान रखते हुए विचारों के आदान-प्रदान में बेहतर भाषा शैली का प्रयोग करते हुए परामर्शी को प्रोत्साहित करना होता है ताकि वह अपने उद्देश्य की दिशा में अग्रसर होते रहे।

(2) परामर्शदाता की विशद एवं सूक्ष्म दक्षतायें (Macro- Micro Skills of Counsellor)- परामर्शदाता के प्रशिक्षण कार्यक्रम में अनेक सूक्ष्म दक्षताओं का अभ्यास कराया जाता है जैसे- समस्या सुनना उसका सार संक्षेपण करना और अनुभूतियों को प्रतिबिम्बित करने की योग्यता परामर्शदाता में परानुभूति (Empathy) की योग्यता को विकसित कर देती हैं।

(3) परामर्शदाता की गौण दक्षतायें (Auxiliary Skills of Counsellor)- गौण दक्षताओं के अन्तर्गत भवन या कार्यालय उसकी साज सज्जा एवं उसकी सुरक्षा आदि आते हैं -

- भौतिक साज सज्जा - परामर्शन के लिए उपयुक्त परिवेश की रचना के लिए भौतिक साज सज्जा पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है, जैसे- प्रवेश कक्ष, प्रतीक्षा कक्ष, शोर से सुरक्षित कक्ष का निर्माण तथा गोपनीयता, सुरक्षा एवं सुविधा को ध्यान में रख कर कार्यालय स्थापित किया जात है।
- सुरक्षा गौण दक्षताओं में नैतिक, कानूनी एवं व्यक्तिगत सुरक्षा को ध्यान में रखकर कार्यस्थल का निर्माण किया जाता है साथ ही परामर्शी के हृदयागत, श्वास या मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ने पर उसे उसकी मेडिकल सुविधाओं का भी ध्यान रखा जाता है।
 - अभिलेखों का रख रखाव (Record Keeping)- अभिलेखों के रिकॉर्ड से अर्थ है कि परामर्शी से सम्बन्धित समस्त जानकारियों जैसे व्यक्ति इतिहास विधी (Case Study) की फाईल, अन्य जानकारियों से सम्बन्धित फाईल, ऑडियो-विडियो आदि का बेहतर रख रखाव होना चाहिए इनकी सुरक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए ताकि कोई भी व्यक्ति इन सूचनाओं का दुरुपयोग न कर सके और परामर्शी की गोपनीयता बनी रहे।

उपरोक्त दक्षताओं के अतिरिक्त भी किसी परामर्शदाता को अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्टता लाने के लिए निम्नांकित क्षेत्र विशेष पर भी ध्यान देना चाहिए-

- परामर्शदाता को सामान्य एवं असामान्य मानव व्यवहार की समझ होनी चाहिए।
- व्यक्तियों के अध्ययन के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक विधियों की जानकारी।
- निर्देशन एवं परामर्शन के सिद्धान्त और दर्शन का ज्ञान।

- प्राप्त आंकड़ों का परामर्शन कार्य हेतु उपयोग कर लेने की दक्षता।
- नैतिक संहिता (Ethical code) की जानकारी।
- परामर्शन के लिए हो रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी एवं उसमें भागीदारी।
- मूल्यांकन एवं शोध कार्य करने के लिए शोध विधियों का ज्ञान आदि।
- तकनीकी विधियों का ज्ञान आदि।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है, कि किसी भी परामर्श की सफलता काफी हद तक परामर्शदाता के शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रतिभा तथा दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, वर्तमान समय वास्तव में परामर्शदाता के कार्य में विशेषता की मांग करता है और यह विशेषता शिक्षण, और प्रशिक्षण के साथ विविध विषयों के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान के परिणाम स्वरूप ही सम्भव है।

14.4 भविष्य में शोध हेतु दिशा निर्देश (Directions for Future) –

आधुनिक युग में परामर्शन को एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में देखा जाने लगा है क्योंकि इसका सम्बन्ध समाज के विभिन्न व्यक्तियों की व्यक्तिगत समस्याओं के निदान से जुड़ा है, अगर परामर्शदाता क्लायंट को समस्याओं के समाधान की तरफ अग्रसर कर देता है, तो परामर्शी (Counsellor) के आत्मबोध या आत्मज्ञान में वृद्धि होती है जो उसे बेहतर जीवन यापन के लिए प्रेरित करता, दूसरी तरफ परामर्शदाता भी विभिन्न परामर्शीयों की वैयक्तिक भिन्नता से प्रभावित होता है जो उसकी कार्य करने की अभिक्षमता में वृद्धि करती है, परन्तु कई बार जब परामर्शदाताओं एवं मनोवैज्ञानिकों के सम्मुख विकट समस्या आ जाती है, तो उन्हें भी कोई दिशा निर्देश नहीं मिल पाता है ऐसी स्थिति में कार्य कर रहे मनोवैज्ञानिकों एवं परामर्शदाताओं के लिए शोध एक महत्वपूर्ण विषय है, जो किसी भी कार्य को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, प्रस्तुत अध्याय में विद्यार्थियों के लिए यह जानना भी आवश्यक है कि शोध क्या है इस सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप से चर्चा को जा रही है-

शोध या अनुसंधान- शोध शब्द का प्रयोग अब ज्ञान की प्रत्येक शाखा के गहन अध्ययन के निर्मित होने लगा है, अनुसंधान के क्षेत्र के अन्तर्गत केवल नये सत्यों एवं नये सिद्धान्तों की खोज नहीं की जाती वरन् पुराने सत्यों एवं पुराने सिद्धान्तों को नये कलेवर देना, पुराने, नियमों को युगानुरूप नवीनता प्रदान करना, प्रदत्तों एवं तथ्यों को नये सिरे से स्पष्ट करते हुए उनमें व्याप्त अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण करना भी सम्मिलित है।

उपरोक्त कारकों को देखते हुए कहा जा सकता है कि “शोध का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा परिवेश प्रश्नों का उत्तर अथवा परिवेश समस्याओं का समाधान करना है”।

प्रस्तुत इकाई में हम परामर्श के संदर्भ में चर्चा कर रहे हैं, चूँकि परामर्श वर्तमान समय की आवश्यकता है, अधिकांशतः लोग अपने वैयक्तिक जीवन में किसी ना किसी समस्या में उलझे हैं, कुछ तो स्वयं ही सामाधान खोज लेते हैं परन्तु अधिकतम अपनी समस्याओं को सुलझाने में जब स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं तो कई बार अवसाद के शिकार भी हो जाते हैं, अतः वर्तमान समय में परामर्शन एक महत्वपूर्ण विषय बन कर उभर रहा है। परन्तु यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक भी है कि यह क्षेत्र मनोवैज्ञानिक एवं परामर्शदाताओं के लिए चुनौती पूर्ण भी है।

वर्तमान समय वैश्वीकरण का युग है पूरे विश्व की संस्कृतियाँ एक-दूसरे से मिल रही हैं, रोजगार के लिए युवक अपने देश से कोसों दूर दूसरे देशों में पलायन कर रहे हैं, स्त्री-पुरुषों के बराबरी में कई तरह के अन्तर्द्वन्द्व दिखाई दे रहे हैं, भौतिकवादी संस्कृति जीवन में हावी हो रही है, रिश्तों में अपनापन व संवेदनशीलता घटी है, परामर्शदाता व मनोवैज्ञानिक भी नई-नई समस्याओं से जूझ रहे हैं इसलिए शोध या अनुसंधान एक ऐसा मार्ग है जो आगे का मागदर्शन कर सके - प्रस्तुत इकाई में शोध से सम्बन्धित निम्न क्षेत्रों पर चर्चा की जा रही है।

(1) परिवार परामर्श से सम्बन्धित शोध (Research related to family)- परिवार जीवन का आधार होता है, परिवार एवं माता-पिता से ही बच्चे प्रेम, सदाचार नैतिकता धर्म, मूल्य एवं संस्कार सीखते हैं, इन्हीं गुणों की आधारशिला पर बच्चों का व्यक्तित्व एवं भविष्य निर्धारित होता है इसीलिए परिवार एवं माता-पिता को शिक्षा की पहली पाठशाला कहा गया है परन्तु अगर परिवार में राग-द्वेष, कलह अलगाव, हिंसा या चरित्रहीनता है एक परामर्शदाता को यह जानना जरूरी होता है कि परिवार के सदस्यों की एक-चरित्र के साथ राग द्वेष या हिंसा क्यों करते हैं, अगर परामर्शदाता उनकी समस्या को चरित्र को समझ लेता है तो निदान आसान होता है परन्तु अगर परिवार के सदस्यों के व्यवहारों को समझना मुश्किल है तो शोध के द्वारा कारणों तक पहुँचा जा सकता है।

वर्तमान समय लगभग एकांकी परिवारों का है जो बच्चों को शिक्षा, परवरिश से लेकर आर्थिक उपजिन आदि अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं अतः परिवार सम्बन्धी तमाम व्यवहार पर शोध भविष्य में मागदर्शन के रूप में कार्य कर सकते हैं।

(2) प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों के शैक्षणिक परिवेश पर शोध (Research in educational environment of primary and secondary schools)- किसी भी बच्चे के शैक्षणिक क्षमता को नींव उसके प्राथमिक ध्माध्यमिक विद्यालयों में पड़ती है अतः माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालयों का परिवेश वहाँ पढ़ाने वाले शिक्षकों का बच्चों के साथ अन्तर्क्रिया किस प्रकार है यह जानना महत्वपूर्ण है साथ ही किसी बच्चे की वैयक्तिक प्रतिमा को पहचानकर उसे उस दिशा में प्रोत्साहित करने का गुण शिक्षकों में है अथवा नहीं यह भी जानना जरूरी होता है - वैसे तो राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (National Curriculam Framework) ने के सम्बन्ध में

अपनी गाईड लाईन दी है तत्पश्चात् भी वो परिणाम देखने को नहीं मिल रहे है जिनकी संभावना की जा रही थी इसलिए इस क्षेत्र में शोध एक महत्वपूर्ण कड़ी है- जो बच्चों को उनके रूचिकर विषयों की ओर अग्रसर कर उनके बेहतर व्यक्तित्व निर्माण की तरफ प्रेरित करती है।

(3) कैरियर परामर्श पर शोध (Research in the field of Career Counselling)- वृत्तिक या कैरियर आज के समय का ज्वलन्त मुद्दा है हर विद्यार्थी 10वीं के या 12वीं के पश्चात् इस द्वन्द में रहता है कि उसे किस क्षेत्र में जाना चाहिए - इसलिए परामर्शदाता के कैरियर सम्बन्धी सूचनाओं की प्रकृति को जानना जरूरी है किस तरह से परामर्शदाता विभिन्न व्यवसायिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में कैरियर की प्रकृति को समझ सकता है इन पर शोध की आवश्यकता है, साथ ही कैरियर के लिए नये क्षेत्र कैसे इजाद किये जायें - अगर विद्यार्थियों को उचित समय पर कैरियर सम्बन्धी परामर्श मिल जाता है तो वो अपनी क्षमताओं का उचित प्रयोग कर लेते है और जीवन की नकारात्मकता से बच जाते हैं इस विषय पर शोध वास्तव में समाज के लिए भी उपयोगी होंगे और समाज में उपलब्ध मानव शक्ति का उपयोग भी सार्थक होगा।

(4) विवाह सम्बन्धी परामर्श में शोध (Research in the field of marriage Counselling)- भारत में विवाह को एक पवित्र तथा स्नेहयुक्त सम्बन्ध माना जाता था, लेकिन सामाजिक धार्मिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के दौर में यहाँ भी विवाह -विच्छेदों की संख्या में वृद्धि हो रही है विवाह सम्बन्धों में कटुता के कारण अनेक हैं - जैसे - एक दूसरे के प्रति प्रेम का अभाव, चारित्रिक सन्देह, गृह कार्य में पुरुषों की भागीदारी का अभाव, विचारों का न मिलना, आर्थिक स्थिति का कमजोर होना, यौनिक सम्बन्धों से सन्तोश न होना, द्रव्य दुरुपयोग, एक दूसरे के सम्बन्धों से टकराव, गृह हिंसा आदि।

इसलिए विवाह से पूर्व एवं विवाह के पश्चात् दोनों को परामर्शन दिये जाने की आवश्यकता होती है, विवाह के असफल होने पर उससे मुगल से उत्पन्न सन्तान को भी इसका खामियाजा भुगतान पड़ता है और कई बार वो बच्चे ही जीवन में अवसाद से घिर जाते है इसलिए यह एक ज्वलन्त मुद्दा है जिस पर शोध मार्गदर्शित कर सकता है ताकि भविष्य में विवाह- विच्छेदों को रोकने एवं एक सौहार्दपूर्ण वैवाहिक परिवेश बनाने में सफलता मिल सके।

(5) मादक पदार्थों के सेवन से सम्बन्धित शोध (Research in the field of Drug Addiction) - वर्तमान समय में कालेज स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में मादक पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति लगातार बढ़ रही है वास्तव में यह समाज एवं शिक्षाविदों के लिए चिन्ता का विषय है, क्योंकि अगर देश का युवा ही स्वस्थ नहीं होगा तो स्वस्थ समाज की संकल्पना करना बेकार है, नशे के कारण युवाओं का व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन तो नष्ट होता ही है कई बार परिवार के लिए भी वह षंका का कारण बन जाता है।

नशे की प्रवृत्ति क्यों बढ़ रही है या उस तरफ किशोरों का रूझान क्यों जा रहा है यह शोध अनुसंधान का विषय है अगर शोध से इस समस्या का सही मार्गदर्शन मिलेगा तो युवाओं को नशे से रोका जा सकता है। यह क्षेत्र परामर्श के लिए भी चुनौती है क्योंकि देखा गया है कि जिन युवाओं की काउन्सलिंग होती है वह अधिकांशतः कुछ समय पश्चात पुनः नशा करते हुए दिखाई देते हैं।

ऐसा नहीं है कि इस संदर्भ में अनुसंधान न हुए हो परन्तु जो शोध सभी तक हुए है उनसे भी समस्या का हल नहीं निकल पा रहा है अतः और शोधों की आवश्यकता है।

(5) बाल मनोविज्ञान से सम्बन्धित शोध (Research in the field of Child Psychology)- बाल मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो बच्चों के विकास का अध्ययन गर्भकाल से किशोरावस्था तक करता है ताकि उनका शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक विकास सम्पन्न हो और वो एक आदर्शवान युवा बने-परन्तु वर्तमान में यह स्थिति नहीं है बहुत से बच्चे अपराध की दुनिया में चले जाते हैं वो चोरी चकारी एवं मारपीट व दंगों में शामिल मिलते हैं - इसका कारण बच्चे कम हमारी परवरिश एवं वातावरण अधिक जिम्मेदार है, अतः बाल मनोविज्ञान में शोध की बहुत जरूरत है, शोध से माता-पिता, शिक्षकों सभी को मार्गदर्शन मिले कि उनकी परवरिश के लिए कौन से कदम उठाये जाये, जिससे बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक सन्तुलन बेहतर होने के लिए अच्छा वातावरण तैयार हो सके।

उपरोक्त तथ्य के अतिरिक्त यहाँ बाल शोषण पर भी ध्यान केन्द्रित करना अनिवार्य प्रतीत होता है, भारत की बात करें तो बाल शोषण एक बहुत बड़ी समस्या है, शारीरिक शोषण के विरोध में कानून होने बाल मजदूरी विरोध अधिनियम/के पश्चात भी हमारे यहाँ बाल बधुवा देखे जाते हैं जिन्हें मानसिक व शारीरिक शोषण होता है ऐसा नहीं है कि इस संदर्भ में अनुसंधान न हुए हों परन्तु जो शोध अभी तक हुए हैं, उनसे भी समस्या का हल नहीं निकल पा रहा है अतः और शोध की प्रशिक्षित है ताकि बच्चों को स्वस्थ, सुरक्षित परिवेश एवं अच्छा परामर्शन मिल सके और वह बेहतर जीवन जी सके।

इसके अतिरिक्त मानसिक रूप से कमजोर या मानसिक मंदता से ग्रस्त बच्चों पर भी शोध मार्गदर्शन दे सकते हैं चाहे दो मानसिक मंदता, आटिज्म, शारीरिक विकलांगता आदि किसी भी समस्या से ग्रस्त हो वहाँ भी हम शोध से उन्हें समाज को मुख्य धारा में जोड़ने में सफल हो सकते हैं।

वृद्धावस्था से सम्बन्धित शोध (Research related to Old Age) - वृद्धावस्था में व्यक्ति को अनेक संवेगात्मक एवं शारीरिक क्षीणताओं से गुजरना पड़ता है यह 60 की आयु वर्ग के पश्चात मानी गई है भारत के संबन्ध में अगर बात करें तो जब तक संयुक्त परिवार प्रथा थी उनकी

देख - रेख बेहतर होती थी परन्तु वैश्वीकरण एवं भौतिकवादी युग में अधिकांशतः वह अकेले पड़ जाते हैं

इस आयु वर्ग में अधिकांशतः बुर्जग अकेलेपन, संवेगात्मक एवं शारीरिक क्षीणताओं, आर्थिक कमजोरियों स्मृति ह्रास आदि कई समस्याओं से जूझ रहे हैं अतः ऐसे समय में इन्हें परामर्शन की अत्यधिक आवश्यकता होती है, वृद्धावस्था से सम्बन्धित समस्याओं पर शोध एक प्रेरक के रूप में कार्य कर सकते हैं ताकि उन्हें एक खुषहाल एवं सुरक्षित परिवेश प्राप्त हो सके।

(6) मनोदैहिक एवं मनोचिकित्सा सम्बन्धी शोध (Research in the field of Psychosomatic disorders and Psychotherapy)- मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक दोनों रूपों में बीमार होने पर बीमार समझा जाता है, मन एवं शरीर किसी एक के अस्वस्थ होने पर सम्पूर्ण रूप से अस्वस्थ होने का बोध होता है, इसी तरह व्यक्ति के विभिन्न संवेग (emotions) या मानसिक संघर्ष की स्थितियाँ (State of mind) भी शरीर के विभिन्न अंगों की कार्यशीलता को प्रभावित करते हैं, मनोदैहिक विकार मुख्यतः उसे कहते हैं। जिसके लक्षण स्पष्टः शारीरिक होते हैं लेकिन कारण शारीरिक न होकर मानसिक या मनोवैज्ञानिक होते हैं इसलिए अमेरिकी मनोवैज्ञानिक संघ (American Psychological Association - APA ने इसे (Psycho physiological disorder) कहा है। अब तो अनुसंधान यह भी कहने लगे हैं कि स्वास्थ्य सम्बन्धी तमाम् समस्याओं का कारण अधिकांशतः मानसिक है, अतः इस समस्या पर अनुसंधान और होने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि भविष्य में उचित दिशा - निर्देश मिल सके।

जहाँ तक मानसिक चिकित्सा सम्बन्धी समस्या है उस पर सम्पूर्ण विश्व में शोध हो रहे हैं परन्तु वर्तमान समय में भी ऐसी समस्या या मनोविकार आ रहे हैं जिनका निराकरण असम्भव हो रहा है, आज भी कई लोग मनोविदालिता (Schizophrenia), अवसाद (Depression) चित्त विकृति, परानोईया आदि अनेक मानसिक रोगों से जूझ रहे हैं अतः यह क्षेत्र भी अनुसंधान के लिए उपयोगी है, इन क्षेत्रों में हुए शोध से असमान्य व्यक्ति के जीवन सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे या यूँ कहें कि मनोदैहिक, मनोविकार मनोचिकित्सा या किसी भी तरह की स्वास्थ्य समस्या पर शोध जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण या मार्गदर्शक के रूप में प्रेरित करेंगे।

(7) औद्योगिक मनोविज्ञान से सम्बन्धित शोध (Research in the field of Industrial Psychology)- औद्योगिक मनोविज्ञान में उन व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। जो औद्योगिक कार्यों में संलग्न रहते हैं। औद्योगिक विकास के लिए जरूरी है कि मालिक एवं कर्मचारियों के मध्य सौन्दर्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो, वर्तमान में देखा जा रहा है कि कई उद्योग अपने कर्मचारियों के लिए कम्पनी में बेहतर वातावरण का निर्माण कर रहे हैं उन्हें अपनी कम्पनियों में विभिन्न सुविधाओं का प्रस्ताव देते हैं ताकि उनको सन्तुष्ट रख सके परन्तु आज भी

उद्योगों में आये दिन हड़ताल, तालाबन्दी, या कर्मचारियों एवं प्रशासन के मध्य होने वाली अन्तक्रिया और व्यवहार पर किये जाने वाले शोध इस परिवेश को उत्तम बनाने और कर्मचारियों की क्षमता का पूर्ण उपयोग करने में मार्गदर्शन करेंगे।

उपरोक्त तथ्यों के अतिरिक्त समाज में व्याप्त विभिन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं तथा व्यवसाय कर रहे विभिन्न परामर्शदाताओं, मनोवैज्ञानिक, एवं मनोचिकित्सकों के सम्मुख आ रही विभिन्न समस्याओं पर शोध या अनुसंधानों को प्राथमिकता देनी होगी ताकि भविष्य में उपलब्ध शोध परिणामों से समस्याओं के निदान में मार्गदर्शन मिल सके।

14.5 सारांश (Summary)-

मनुष्य एक सभ्य प्राणी है, सभ्यता का यह स्वरूप सदियों के परिणाम स्वरूप आया, आज हम 21 वीं शताब्दी में हैं, परन्तु आज का मानव भी तमाम सुविधाओं के पश्चात् भी स्वयं को समस्याग्रस्त पाता है, अगर हम आदिकाल से वर्तमान तक की बात करें तो जब भी व्यक्ति परेशानी में आता है वह अपने बुर्जुगों, गणमान्य व्यक्तियों अथवा संगी साथियों से सलाह, मशवरा या राय लेता है, यही परामर्श है।

परामर्श दो व्यक्तियों के मध्य होने वाली वार्तालाप है जिसमें एक समस्याग्रस्त होता है और दूसरा उसकी समस्या के निदान के संदर्भ में उसको राय देता है ताकि यह स्वयं समस्या का समाधान कर सके।

वर्तमान समय में परामर्शन का स्वरूप बदल गया है अब यह एक विषय विशेषज्ञ के रूप उभर कर आया है, जिसमें परामर्शदाता को विभिन्न शिक्षण प्रशिक्षण की प्रशिक्षित होती है, साथ ही उसकी वैयक्तिक क्षमता इस कार्य को बेहतर ढंग से करने में सहयोग करती है वर्तमान समय में व्यक्ति इस कोर्स के लिए मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से डिग्री के साथ विभिन्न प्रकार के परामर्श जैसे कैरियर, विवाह, परिवार, मानसिक स्वास्थ्य आदि अनेक क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त कर प्रशिक्षण भी प्राप्त करता है।

वैश्वीकरण एवं भौतिकवादी युग में जब मानव सम्पूर्ण विश्व में रोजगार के सिलसिले में जा रहा है, विश्व की तमाम संस्कृतियों का आदान प्रदान हो रहा है जहाँ दुनियाँ को देखना एवं समझना सरल हुआ है वहीं बहुत सी परेशानियाँ या समस्याएँ भी दिखाई दी हैं, व्यक्ति तमाम सुविधाओं के पश्चात में संवेगात्मक रूप से कमजोर, संवेदनहीन, अकेला व स्वार्थी होते जा रहा है जिस कारण परामर्शदाताओं एवं मनोवैज्ञानिकों के सम्मुख अनेकानेक समस्याओं को उत्पन्न की हैं वो चाहे परिवार, शिक्षा, विवाह, कैरियर, वृद्धावस्था अथवा उद्योगों आदि से सम्बन्धित है, उनके समाधान के लिए भविष्य में शोध करने की प्रशिक्षित है ताकि वो भविष्य में मार्गदर्शन दे सके।

14.6 शब्दावली-

- परामर्श (Counselling)- किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याओं को दूर करने के लिए दी जाने वाली सहायता, सलाह एवं मागदर्शन परामर्श कहलाता है।
- परामर्शदाता (Counsellor)- परामर्श देने वाले व्यक्ति को परामर्शदाता या परामर्शदाता कहते हैं।
- परामर्शप्राथी (Counsee)- वह व्यक्ति जो अपनी नीति समस्याओं के समाधान के लिए परामर्शदाता से सहयोग लेता है, परामर्शी या उपबोध्य कहलाता है।

14.7 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न:-

नोट- नीचे दिये गये प्रश्नों का सही विकल्प चुनिये-

(1)- परामर्शदाता कोहोना चाहिए।

- a. शिक्षित
- b. प्रशिक्षित
- c. सवेदनशील
- d. उपरोक्त सभी

(2) परामर्श की सफलता परामर्शदाता की पर निर्भर करती है।

- a. सामान्य योग्यता
- b. वैयक्तिक योग्यता
- c. गौण योग्यता
- d. उपरोक्त में कोई नहीं

(3) परामर्शदाता में परानुभूति का गुण होना चाहिए - सत्य /सत्य

(4) परामर्शदाता को शरीर की भाषा का प्रशिक्षण लेना चाहिए- सत्य/ असत्य

(5) प्रशिक्षण से परामर्शदाता की कार्यक्षमता में कमी आती है- सत्य/ असत्य

(6) गौण दक्षतायें परामर्शन के कार्य को अव्यवस्थित करते है- सत्य/असत्य

उत्तर - 1- d; 2. B; 3- सत्य; 4- सत्य; 5- असत्य; 6- असत्य

14.8 निबन्धात्मक प्रश्न-

(1) परामर्श से आप क्या समझते हैं, परामर्शदाता के वैयक्तिक योग्यता पर प्रकाश डालिये ?

(2) परामर्शन में शिक्षण एवं प्रशिक्षण क्यों आवश्यकीय है स्पष्ट कीजिये ?

(3) परामर्श में आ रही विभिन्न समस्याओं को देखते हुए भविष्य में शोध हेतु दिशा निर्देश दीजिये ?

14.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची (References)

- राम अमरनाथ, अस्थाना मधु- 'निर्देशन एवं परामर्शन' (सम्प्रव्यय क्षेत्र एवं उपागम) प्रकाशक-मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली।
- सिंह रामपाल, सिंह डा० एस डी, शर्मा डा० देवदत्त- व्यावहारिक-मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
- उपाध्याय राधाबल्लभ, जायसवाल सोवाराम-“शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्शन की भूमिका” अग्रवाल पब्लिकेशन।
- Suri Dr. S. P, SODHI Dr. T.S.& “Guidance and Counselling” Bawa Publications, 4141, urpan Estate phase II Patiala.
- फातिमा डा० निगार- “असामान्य मनोविज्ञान” राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली 110002
- भाई योगेन्द्रजीत- “मानव विकास का मनोविज्ञान” प्रकाशक विनोद पुस्तक मन्दिर हास्पिटल रोड आगरा-3
- पाठक पी० डी० - शिक्षा मनोविज्ञान प्रकाशन विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा,
- <https://www.counselling foundation.org-Counselling Training /Counselling Training / Counselling>.
- <https://hi.m.wikipedia.org>